ख़ुतबात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी

खुत्बात ज़ुलफ़क़ार फ़क़ीर

1

इफ़ादात

हज़रत मौलाना ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी

तर्तीब

प्रोफ़ेसर मुहम्मद असलम नक़्शबंदी

विषय-सूची

❋ ❋ ❋

मेहनत में अज़मत

❋ ❋ ❋

तक्वे की बरकतें

❋ ❋ ❋

हिफ़ाज़त-ए-ज़बान

❋ ❋ ❋

इस्लाह-ए-दिल

❋ ❋ ❋

साइंस और इस्लाम

❋ ❋ ❋

सोहबत-ए-औलिया

❋ ❋ ❋

रमज़ानुल मुबारक की बरकतें

❋ ❋ ❋

रोज़े क्यों फ़र्ज़ किए गए

❋ ❋ ❋

नमाज़ की अहमियत

❋ ❋ ❋

मक़सद-ए-हयात

❋ ❋ ❋

उलमा अंबिया के वारिस हैं।

❋ ❋ ❋

सुन्नते नबवी और जदीद साइंस

❋ ❋ ❋

पेश-ए-लफ़्ज़

यह आजिज़ बंदा महज़ गंदा अपनी ख़ताओं पर नादिम और शर्मिन्दा सन् 1991 ई० के रमज़ानुल मुबारक में हज़रत दामत बरकातुहुम से बैअत हुआ। मुख़्तलिफ़ मज्लिसों में हज़रत दामत बरकातुहुम की नफ़ा बख़्श ज़बान ऐसी असर करने वाली और पुर मग़ज़ बातें सुनीं कि दिल पर छाप सी लगती है। बे इख़्तियार इल्म व हिकमत के इन क़ीमती नगीनों को अपने फ़ायदे के लिए लिखना शुरू कर दिया। थोड़े ही अरसे में अच्छा ख़ासा ज़ख़ीरा इकठ्ठा हो गया तो कुछ लोगों के इसरार पर इन बयानों को छापने की फ़िक्र हुई। यह तमन्ना इस तरह पूरी हुई कि 'रावलपिंडी पोली टैकनीक कॉलेज' तदरीस के दौरान 'मेहनत और अज़मत' किताबच्चा (छोटी किताब) शाए (प्रकाशित) की गई। अहले इल्म लोगों ने उसको पसन्द किया। कुछ स्कूलों में उस्तादों ने कई सौ की तादाद में यह छोटी सी किताब ख़रीदकर पढ़ने वाले बच्चों को पढ़ने के लिए दिए जिससे बच्चों में मेहनत का जज़्बा परवान चढ़ा। अल्लाह का शुक्र है कि पहला ऐडीशन हाथों हाथ ख़त्म हो गया तो दूसरा ऐडीशन शाए किया गया। उसके बाद मौक़े-मौक़े बहुत सी छोटी किताबें शाए होती रहीं और आम आदमी तो क्या उलमा और स्कॉलर भी इन बयानात से फ़ायदा उठाते रहे। 'मुश्ते नमूना अज़्र ख़रवार' के तौर पर कुछ लोगों के ज़बानी तास्सुरात या वसूल हुए ख़तों के कुछ इक़्तिसाबात नीचे लिखे हैं :

"ये बयानात जदीद नफ़सियाती और साइंसी अन्दाज़ के मुताबिक़ हैं।"

"जब इन बयानों को पढ़ना शुरू किया जाता है तो ख़त्म किए बग़ैर उठने को दिल नहीं चाहता।"

किसी ने कहा,

"यह किसी दिल वाले के बयानात हैं।"

किसी ने इस शे'र की सूरत में तब्सरा किया :

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है
पर नहीं ताक़ते परवाज़ मगर रखती है

अल्लाह का शुक्र है कि "इस्लाही बयानात" अब किताबी शक्ल में आपके हाथों में है। पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि अगर कहीं कोई कमी नज़र आए तो निशानदेही फ़रमाकर हौसला अफ़ज़ाई फ़रमाएं। किताब की इशाअत के लिए आजिज़ मोहतरमी मुफ़्ती अहमद अली सहाब, जनाब डाक्टर अब्दुस्सुबूर साहब और मुहम्मद हनीफ़ साहब की प्यारी कोशिशों का तहे दिल से शुक्रगुज़ार है।

आजिज़ अल्लाह तआला के एहसानों का शुक्र किस मुँह से अदा करे। बस इतना कहना ही काफ़ी है कि जो कुछ हुआ सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआला के करम से हुआ :

क्या फ़ायदा फ़िक्र बेश व कम से होगा
हम क्या हैं जो कोई काम हम होगा
जो कुछ हुआ हुआ करम से तेरे
जो कुछ कि होगा तेरे करम से होगा

बंदा आजिज़

फ़कीर मुहम्मद असलम नक़शबंदी मुजद्दी

इस्लाम और इज़्दिवाजी ज़िन्दगी

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم الله الرحمٰن الرحيم

ومن ايته خلق لكم من انفسكم ازواجا لتسكنوا اليها وجعل بينكم مودة ورحمة ان في ذلك لايت لقوم يتفكرون. سبحان ربك رب العزة عما يصفون. وسلام على المرسلين .والحمد لله رب العالمين.

मुख़्तलिफ़ समाजों में औरत की हैसियत

इज़्दिवाजी (शादी-शुदा) ज़िन्दगी के उनवान पर बात करते हुए इस बात को ज़हन में रखना ज़रूरी होगा कि इस्लाम से पहले दुनिया की मुख़्तलिफ़ तहज़ीबों और मुख़्तलिफ़ समाजों में औरत को क्या मुक़ाम हासिल था? दुनिया की तारीख़ को पढ़ा जाए तो यह बात साफ़ ज़ाहिर होती है कि इस्लाम से पहले दुनिया के मुख़्तलिफ़ मुल्कों में औरत अपने बुनियादी हुक़ूक़ से बिल्कुल महरूम थी। फ़्रांस में औरत के बारे में यह तसव्वुर था कि यह आधा इंसान है इसलिए समाज की तमाम ख़राबियों का ज़रिया

बनती है। चीन में औरत के बारे में तसव्वुर था कि इसमें शैतानी रूह होती है। लिहाज़ा ये बुराईयों की तरफ़ इंसान को दावत देती है। जापान में औरत के बारे में यह तसव्वुर था कि यह नापाक पैदा की गई है। इसलिए इबादतगाहों से इसको दूर रखा जाता था। हिंदूमत में जिस औरत का शौहर मर जाता उसको समाज में ज़िन्दा रहने के क़ाबिल नहीं समझा जाता था। इसलिए ज़रूरी था कि वह अपने शौहर की लाश के साथ ज़िन्दा जलकर अपने आपको ख़त्म कर ले। अगर वह इस तरह न करती तो उसको समाज में इज़्ज़त की निगाह से नहीं देखा जाता था। ईसाई दुनिया में औरत को अल्लाह की पहचान के लिए रुकावट समझा जाता था। औरतों को तालीम दी जाती थी कि कुँवारी रहकर ज़िन्दगी गुज़ारे जबकि मर्द सन्यासी बनकर रहना इज़्ज़त की चीज़ समझते थे। अरब में बेटी का पैदा होना शर्म की चीज़ समझा जाता था। लिहाज़ा माँ-बाप खुद अपने हाथों से बेटी को ज़िन्दा क़ब्र में दफ़न कर दिया करते थे। औरत के हुक़ूक़ इतने पामाल किए जा चुके थे कि अगर कोई आदमी मर जाता तो जिस तरह विरासत की चीज़ें उसकी औलाद में तक़्सीम होती थीं। इसी तरह बीवी भी उसकी औलाद के निकाह में आ जाती थी। अगर किसी औरत का शौहर पर जाता तो मक्का मुकर्रमा से बाहर एक काल कोठरी में उस औरत को दो साल के लिए रखा जाता था। तहारत के लिए पानी और दूसरी ज़िन्दगी की ज़रूरियात भी पूरी न दी जाती थीं। अगर दो साल ये जतन काटकर भी औरत ज़िन्दा रहती तो उसका मुँह काला करके मक्का मुकर्रमा में फिराया जाता। उसके बाद उसको घर में रहने की इजाज़त दी जाती थी। अब सोचिए

तो सही कि शौहर तो मरा अपनी मौत से भला बीवी का क्या क़ुसूर? मगर यह मज़लूमा इतनी बेबस थी कि अपने हक़ में आवाज़ नहीं उठा सकती थी। ऐसे माहौल में जब कि चारों तरफ़ औरत के हुक़ूक़ को पामाल किया जा रहा था ऐसे वक़्त में अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी को इस्लाम की नेमत देकर भेजा। आप दुनिया में तशरीफ़ लाए और आपने आकर औरत के मुक़ाम को निखारा बतलाया कि ऐ लोगो! अगर यह बेटी है तो तुम्हारी इज़्ज़त है, बहन है तो तुम्हारी इज़्ज़त है अगर बीवी है तो ज़िन्दगी की साथी है। अगर माँ है तो उसके क़दमों में तुम्हारी जन्नत है।

इस्लाम में औरत का मुक़ाम

मौज़्ज़िज़ सामईन! वे लोग किस क़दर सख़्त दिल होंगे जो अपनी बेटियों को ज़िन्दा दफ़न कर दिया करते थे। दफ़न होने वाली मासूम बच्चियों की चीख़ पुकार उनके कानों में पड़ती होगी मगर उनका ज़मीर उनको नहीं छिंछोड़ता होगा। ऐसे हालात में नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी दो उंगलियों का इशारा करके फ़रमाया जिस आदमी के घर में दो बेटियाँ हों वह उनकी अच्छी परवरिश करे यहाँ तक कि उनका निकाह कर दे तो वह आदमी जन्नत में मेरे साथ ऐसे होगा जैसे हाथ की दो उंगलियाँ एक दूसरे के साथ होती हैं।

इज़्दिवाजी ज़िन्दगी की अहमियत

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने औरत की खोई हुई इज़्ज़त को

वापस दिलाया और बतलाया कि ﴿لا رهبانية فى الاسلام﴾ इस्लाम में रहबानियत (सन्यास) नहीं है बल्कि साफ़ अलफ़ाज़ में वाज़ेह किया कि अगर औरत के साथ तुम इज़्दिवाजी ज़िन्दगी गुज़ारोगे तो अल्लाह तआला की माअरिफ़त के रास्ते में तुम्हारी मददगार बनेगी। इस्लाम ने वाज़ेह किया कि सन्यासी बनकर जंगलों और गुफ़ाओं में जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। अल्लाह तआला की तरफ़ जो रास्ता जाता है वह जंगलों और गुफ़ाओं से होकर नहीं जाता, इन गली कूचों और बाज़ारों से होकर जाता है यानी इसी समाज में रहोगे और जो हुक़ूक़ तुम पर लागू होते हैं उन्हें पूरा करोगे तो तुम्हें अल्लाह तआला की पहचान नसीब होगी गोया इस्लाम ने सन्यास के बजाए समाजी ज़िन्दगी का सबक़ दिया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ﴿النكاح من سنتى﴾ निकाह मेरी सुन्नत है फिर फ़रमाया ﴿فمن رغب عن سنتى فليس منى﴾ जो मेरी सुन्नत को छोड़ेगा वह मेरी उम्मत में नहीं है। भला निकाह की अहमियत बताने के लिए इससे ज़्यादा और क्या ज़ोर दिया जा सकता है।

अंबिया-ए-किराम की सुन्नतें

तिर्मिज़ी शरीफ़ की रिवायत है कि चार चीज़ें अंबिया अलैहिमुस्सलाम की सुन्नतें हैं :

1. ﴿والحياء﴾ हयादारी यानी तमाम नबी हया वाले होते थे।
2. ﴿والعطر﴾ यानी तमाम नबी ख़ुशबू का इस्तेमाल किया करते थे।
3. ﴿والسواك﴾ यानी सभी नबी मिसवाक किया करते थे।

4. ﴿والنكاح﴾ यानी सभी नबी शादी-शुदा ज़िन्दगी गुज़ारते थे।

क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला का इर्शाद है :

﴿ولقد ارسلنا رسلا من قبلك وجعلنا لهم ازواجا وذرية﴾

ऐ मेरे महबूब! हमने आपसे पहले कितने ही अंबिया अलैहिमुस्सलाम को भेजा और हमने उनके लिए बीवियाँ और औलादें बनायीं।

यह बात बिल्कुल खुली हुई है कि सब अंबिया अलैहिमुस्सलाम दीन की दावत का मुक़द्दस फ़रीज़ा अदा करने के लिए भेजे गए। वे लोगों को अल्लाह से मिलाया करते थे मगर औलाद या बीवी उनके रास्ते की रुकावट नहीं बना करती थी। गोया कि इस बात को पक्का कर दिया कि शादी-शुदा ज़िन्दगी से भागना हक़ीक़त में समाजिक हुक़ूक़ की अदाएगी से भागना है।

निकाह आधा ईमान है

हदीस पाक में है,

﴿النكاح نصف الايمان﴾

निकाह तो आधा ईमान है।

एक कुँवारा आदमी चाहे कितना ही नेक क्यों न हो जाए वह ईमान के कामिल रुत्बे को नहीं पहुँच सकता जब तक वह शादी-शुदा ज़िन्दगी में दाख़िल होकर ज़िम्मेदारियों और हक़ूक़ को अदा न करे। जब तक उसका ईमान कामिल नहीं होता। इसलिए जिस लड़के की शादी न हो और वह जवान उम्र हो हदीस में उसको मिस्कीन कहा गया है। जिस लड़की की शादी न हो और

जवान उम्र हो हदीस में उसको मिस्कीना कहा गया है। गोया ये लोग रहम के क़ाबिल हैं कि उम्र के इस हिस्से में ये शादी-शुदा ज़िन्दगी गुज़ारने से महरूम हैं।

पाँच वसीयतें

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि मुझे मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पाँच कामों को जल्दी करने की वसीयत फ़रमाई :

1. ﴿عجلوا بالصلوة قبل الفوت﴾ तुम नमाज़ के फ़ौत हो जाने से पहले उसे अदा करो।
2. ﴿عجلوا بالتوبه قبل الموت﴾ मौत से पहले तौबा करने में जल्दी करो।
3. जब कोई आदमी मर जाए तो उसके कफ़न-दफ़न में जल्दी करो।
4. तुम्हारे सर पर कर्ज़ हो तो उसको अदा करने में जल्दी करो।
5. जब बेटी या बेटे के लिए कोई मुनासिब रिश्ता मिल जाए तो उसके निकाह में जल्दी करो।

खुश क़िस्मत इंसान

यह एक बात हकीकत है कि किसी को अच्छा जीवन साथी मिल जाए तो वह यकीनन खुश क़िस्मत इंसान है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि जिस इंसान को पाँच चीज़ें मिल जाएं वह अपने आपको दुनिया का खुश क़िस्मत इंसान

समझे। वे पाँच चीज़ें ये हैं :

1. **शुक्र करने वाली ज़बान :** यह अल्लाह तआला की बड़ी नेमत है। आज तो लोगों का अक्सर यह हाल है कि अल्लाह की नेमतें खाते-खाते दाँत तो गिर जाते हैं मगर उसका शुक्र अदा करते करते ज़बान नहीं घिसती। मिसाल मशहूर है जिसका खाइए उसके गीत खाइए। हमें चाहिए कि हम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते रहें।
2. **ज़िक्र करने वाला दिल :** यानी जिस दिल में अल्लाह की याद रहती हो।
3. **मुशक्क़त उठाने वाला बदन :** कहावत मशहूर है कि सेहतमंद जिस्म में ही सेहतमंद अक़्ल होती है।
4. **वतन की रोज़ी :** यह भी बड़ी नेमत है। कहावत मशहूर है, "वतन की आधी परदेस की सारी फिर भी बराबर नहीं।"
5. **नेक बीवी :** यानी हमदम व हमसाज़ नेक हो तो ज़िन्दगी का मज़ा दुगना हो जाता है।

जिस आदमी को ये पाँच नेमतें नसीब हों वह यूँ समझे कि अल्लाह तआला की तमाम नेमतें अता कर दी हैं।

निकाह की अहमियत

यह सौ फ़ीसद पक्की बात है कि जहाँ निकाह नहीं होगा वहाँ ज़िना होगा। इसलिए शरिअत ने निकाह की अहमियत को वाज़ेह किया है। आज जिस समाज में लोग निकाह से भागते हैं यानी निकाह करने से बचते हैं, आप देखिए कि वहाँ सैक्स की ज़रूरत

के लिए बेहयाई के अड्डे खुले होते हैं। शरिअत शरीफ़ा ने इस बात को नापसंद किया है कि इंसान गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारे। इसलिए कहा गया कि तुम निकाह करो ताकि तुम्हें अपने आपको पाकबाज़ रखना आसान हो जाए। अगर निकाह का हुक्म न दिया जाता तो मर्द औरत को सिर्फ़ एक खिलौना समझ लेते, औरत अपने लिए कोई मुक़ाम न रखती, उसकी ज़िम्मेदारी उठाने वाला कोई न होता। शरिअत ने कहा कि अगर तुम चाहते हो कि इकठ्ठे रहो तो तुम्हें उसकी ज़िम्मेदारियों का बोझ भी उठाना पड़ेगा।

हक़-ए-मेहर की अहमियत

निकाह एक मुआहिदा है जो मियाँ-बीवी में तय पाता है। इस मुआहिदे में अगर कोई औरत अपनी तरफ़ से शर्त रखनी चाहे तो शरिअत ने इसकी गुंजाइश दी है। मिसाल के तौर पर वह कहे कि मुझे अच्छे मकान की ज़रूरत है, मुझे महीने के इतने ख़र्च की ज़रूरत है, वह कहे कि मैं निकाह तब करूँगी अगर तलाक़ का हक़ मुझे दिया जाए। शरिअत ने इसकी इजाज़त दी है कि वह निकाह से पहले अपनी शर्तें मनवा सकती है लेकिन जब निकाह हो गया और तलाक़ का हक़ मर्द के पास है या मर्द अपनी मर्ज़ी से ख़र्चा देगा तो अल्लाह की बंदी अब रोने से क्या फ़ायदा। शरिअत ने निकाह को एक मुआहिदा कहा है। जबकि हमें इसकी अहमियत का पता नहीं होता। आजकल लड़की वाले अपनी सादगी में मारे जाते हैं। मेहर के हक़ के लिखने का वक़्त आया तो किसी ने कहा पाँच सौ रुपया किसी ने कहा पचास काफ़ी हैं।

ओ ख़ुदा के बंदो! पचास काफ़ी नहीं क्योंकि यह बच्ची की ज़िन्दगी का मामला है। इसे ऐब न समझो अगर तुम समझते हो कि कोई बात निकाह से पहले तय कर लेना बेहतर है तो शरिअत ने तुम्हें इसकी इजाज़त दी है। लड़के वालों की यही चाहत होती है कि लड़की वाले मेहर का हक़ न ही लिखवाएं तो बेहतर है। क्यों? ज़िम्मेदारी जो होती है। सुनिए और दिल के कानों से सुनिए मेहर के हक़ के बारे में तीन सुन्नतें हैं। आदमी को अपनी हैसियत के मुवाफ़िक़ इन तीनों में से किसी एक सुन्नत पर अमल कर लेना चाहिए :

1. मेहर फ़ातमी यानी सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का हक़े मेहर था फिर हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा को जो हक़े मेहर नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अदा फ़रमाया था। उसको बाँध लिया जाए तो यह भी सुन्नत है।
2. मेहर मिस्ल: लड़की के क़रीबी रिश्तेदारों में आमतौर पर लड़कियों का जो मेहर रखा जाता है। उसको कहा जाता उनको बराबर उसका मेहर बाँधना भी सुन्नत है।
3. लड़की की दानिशमंदी नेकी और शराफ़त को सामने हुए उसका मेहर बाँधा जाए। यह भी सुन्नत है।

शरिअत ने तीन तरीक़े बताए हैं उनमें से किसी एक को पसन्द कर ले। उसे सुन्नत का सवाब मिलेगा।

निकाह के वक़्त मेहर का हक़ मुक़र्रर करते हुए कहते हैं कि मेहर मुअज्जिल होगा या मौज्जल होगा। उजलत (जल्दी) का लफ़्ज़ आपने पढ़ा होगा। उजलत का मतलब है जल्दी तो मुअज्जिल का मतलब है जल्दी अदा करना गोया मियाँ-बीवी के इकट्ठे होने से

पहले मेहर मुअज्जिल अदा करना ज़रूरी है। शौहर अदा नहीं करेगा तो गुनाहगार होगा। मेहर की दूसरी क़िस्म मौअज्जल है। इसका मतलब है 'इंदत्तलब' यानी जब बीवी उसको तलब करे वह ख़ाविन्द से ले सकती है। ख़ाविन्द की शान के मुनासिब नहीं कि वह मेहर माफ़ करवाने के लिए बीवी पर दबाव डाले। हाँ अगर कोई बीवी मेहर की रक़म वापस लौटा दे तो क़ुरआन के हिसाब से इस रक़म में बकरत होती है,

﴿فان طبن لكم عن شئ منه نفسا فكلوه هنيئا مريئا.﴾

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ऐसी रक़म से शहद ख़रीदते थे और पानी में मिलाकर मरीज़ों को पिलाते थे।

निकाह की शोहरत

शरिअत ने निकाह की शोहरत का हुक्म दिया है।

﴿افشو النكاح بينكم.﴾

निकाह की तश्हीर (शोहरत) करो।

सुन्नत यह है कि जुमा का दिन हो। जुमा के मजमे में निकाह करे या कोई और बड़ा मजमा हो, उस वक़्त निकाह करे। दोस्तों और रिश्तेदारों को बुलाएं ताकि सबके इल्म में आ जाए कि आज के बाद यह लड़का और लड़की अपने नए घर की बुनियाद रख रहे हैं।

शादी-शुदा के लिए अज्र ज़्यादा

जब इंसान शादी-शुदा बन जाता है तो अल्लाह तआला उसकी

इबादत का अज्र बढ़ा देते हैं, सुब्हानल्लाह। उलमा ने लिखा है कि जब इंसान निकाह कर लेता है और शादी-शुदा ज़िन्दगी गुज़ारता है उसको एक नमाज़ अदा करने पर अल्लाह तआला इक्कीस नमाज़ों का सवाब अता फ़रमा देते हैं। ऐसा क्यों? इसलिए कि यह इंसान अल्लाह तआला के हक़ तो पहले भी अदा कर रहा था अब बंदों के हक़ निभाते हुए अल्लाह के हक़ पूरे करेगा तो अल्लाह तआला उसकी इबादत का सवाब बढ़ा देंगे। गोया निकाह के बाद इबादत का सवाब बढ़ा दिया जाता है, सुब्हानअल्लाह। जब निकाह किया जाता है तो लड़के वाले लड़की में कुछ सिफ़ात देखते हैं और लड़की वाले लड़के वाले के अंदर कुछ सिफ़ात देखते हैं। आइए ज़रा उनका जाएज़ा लें :

अच्छी बीवी कौन है?

हदीसे पाक में आता है कि इमाम बुख़ारी रह०, हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत नक़ल करते हैं, ﴿تنكح المرأة لاربع.﴾ औरत से चार वजूहात से निकाह किया जाता है,

﴿لمالها ولحسبها ولجمالها ولدينها فاظفر بذات الدين تربة يداك.﴾

अव्वल माल की वजह से निकाह किया जाता है कि कोई मालदार घराना हो तो लोग निकाह का पैग़ाम भेजते हैं कि चलो कारोबार ही करवा देंगे, जहेज़ में कोई घर लेकर देंगे और कार तो कहीं गई ही नहीं। फ़रमाया उसके माल की वजह से उससे निकाह करते हैं। दूसरी वजह बताई उसके हसब-नसब की वजह से निकाह करते हैं यानी ऊँचे ख़ानदान की वजह से निकाह करते हैं।

तीसरी वजह फ़रमाई उसकी ख़ूबसूरती की वजह से निकाह किया जाता है। चौथी वजह फ़रमाई उसकी नेकी और दीनदारी की वजह से निकाह किया जाता है। फ़रमाया कि मैं तुम्हें इस बात की नसीहत करता हूँ कि तुम अपने लिए दीन की बुनियाद पर रिश्ते तलाश करो।

जब बुनियाद ही कमज़ोर होगी तो ज़िन्दगी कैसे निभेगी। जिसने सिर्फ़ ख़ूबसूरती को देखा तो बताइए शक्ल व ख़ूबसूरती कितने दिन रहती है। यह कुछ सालों की बात होती है। जवानी हमेशा तो रहती नहीं। जिसकी बुनियाद ही कमज़ोर होगी, उस पर बनने वाला घर भी कमज़ोर होगा—

जो शाख़ नाज़ुक पर आशियाना बनेगा नापाएदार होगा।

नेकी और शराफ़त ऐसी चीज़ है जो वक़्त के साथ बढ़ती चली जाती है। तो इस बुनियाद पर जो घर बनेगा वह हमेशा मज़बूत से मज़बूत होता चला जाएगा। नेकी और दीनदारी की बुनियाद पर बीवियों को तलाश करो। इसलिए कि ख़ूबसूरत औरत का शौहर जब उसे देखता है तो उसकी आँखें ख़ुश होती हैं और नेक सीरत औरत का शौहर जब भी उसे देखता है तो उसका दिल ख़ुश हुआ करता है तो आँखों को ख़ुश करने के बजाए अपने दिलों को ख़ुश किया करो।

सही मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है,

﴿الدنيا متاع وخير متاعها المرأة الصالحة﴾

दुनिया एक मताअ (माल) है और दुनिया की सबसे क़ीमती मताअ नेक बीवी है।

गोया अल्लाह तआला जिसे नेक बीवी अता करे वह समझे कि मुझे दुनिया की बहुत बड़ी नेमत मिल गई।

﴿انما الاعمال بالنيات.﴾

आमाल का दार व मदार नीयत पर है।

जब नीयत में माल होगा तो आप देखेंगे कि झगड़े खड़े होंगे। नीयत में सिर्फ़ हुस्न होगा, आप देखेंगे कि झगड़े खड़े होंगे, सिर्फ़ हसब-नसब की वजह से निकाह होगा झगड़े खड़े होंगे। तो शरिअत ने इस बात की तालीम दी कि निकाह का मक़सद यह हो कि मैं पाकबाज़ी की ज़िन्दगी गुज़ार सकूँ। जब मक़सद यह होगा तो इस मक़सद की वजह से घर आबाद हो जाएंगे। इब्ने माजा की रिवायत है,

ما استفاد المومن بعد تقوى الله عزوجل خير له من زوجة
صالحة ان امرها اطاعته وان نظر اليها سرته وان اقسم عليها
ابرته وان غاب عنها نصحته في نفسها وماله.

अल्लाह तआला के तक़्वे के बाद इंसान जिस चीज़ से सबसे ज़्यादा फ़ायदा उठाता है ﴿خير له من زوجة صالحة﴾ वह कोई चीज़ नहीं मगर नेक बीवी ﴿ان امرها اطاعته﴾ कि अगर उसे किसी बात का हुक्म दिया जाए तो उसकी इताअत करे। ﴿وان نظر اليها سرته﴾ जब उसकी तरफ़ आँख उठाकर देखा जाए तो उससे दिल खुश होना चाहिए ﴿وان اقسم عليها ابرته﴾ और अगर कोई ऐसी सूरत हो कि शौहर उसके लिए क़सम उठाए कि बीवी उसको पूरा करेगी तो उसको पूरा कर दे ﴿وان غاب عنها نصحته في نفسها وماله.﴾ और अगर वह बीवी से कुछ वक़्त के लिए दूर चला जाए तो बीवी उस

के माल और अपनी इज़्ज़त व आबरू के मामले में ख़्यानत न करे।

यह नेक बीवी की सिफ़ात बताई गयी हैं।

दुनिया की बेहतरीन औरत

एक बार नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महफ़िल में बात चली कि दुनिया की औरतों में से बेहतरीन औरत कौन सी है? किसी ने कोई सिफ़्त बताई और किसी ने कोई सिफ़्त बताई। ख़ैर बातचीत होती रही। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु किसी काम से घर तश्रीफ़ ले गए। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को बताया कि महफ़िल में यह ज़िक्र हो रहा है कि दुनिया की बेहतरीन औरत कौन सी है? अभी कोई फ़ैसला नहीं हुआ। हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि दुनिया सबसे बेहतरीन औरत कौन सी है? फ़रमाया हाँ बताइए। फ़रमाया कि दुनिया की सबसे बेहतरीन औरत वह है जो न ख़ुद किसी मर्द की तरफ़ देखे और न कोई ग़ैर मर्द उसकी तरफ़ देख सके। हज़रत अली महफ़िल में वापस तश्रीफ़ लाए और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मेरी बीवी ने दुनिया की बेहतरीन औरत की पहचान बताई कि जो न ख़ुद किसी ग़ैर-महरम को देखे न ही कोई ग़ैर-महरम उसे देख सके। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿فاطمة بضعة مني﴾ फ़ातिमा तो मेरे जिगर का टुकड़ा है।

अच्छी बीवी की सिफ़ात

अल्लाह वालों ने लिखा है कि बीवी में चार सिफ़ात ज़रूर

होनी चाहिएं। पहली सिफ़्त उसके चेहरे पर हया हो। यह बात बुनियादी हैसियत रखती है कि जिस औरत के चेहरे पर हया हो उसका दिल भी हया से लबरेज़ हो। कहावत मशहूर है, 'चेहरा इंसान के दिल का आईना होता है।' हज़रत सिद्दीक़े रज़ियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि मर्दों में भी हया बेहतर है मगर औरतों में बेहतरीन है। दूसरी सिफ़्त फ़रमाई जिसकी ज़बान में मिठास हो या जो बोले तो कानों में रस घोले। यह न हो कि हर वक़्त शौहर को जली-कटी सुनाती रहे या बच्चों को बात-बात पर झिड़कती रहे। तीसरी सिफ़्त उसके दिल में नेकी हो। चौथी सिफ़्त यह कि उसके हाथ काम-काज में मसरूफ़ रहें। यह ख़ूबियाँ जिस औरत में हों वह यक़ीनन बेहतरीन बीवी की हैसियत से ज़िन्दगी गुज़ार सकती है।

अच्छे ख़ाविन्द की सिफ़ात

आइए अब किताब व सुन्नत की रौशनी में शौहर की सिफ़ात का जाएज़ा लें।

यह बात ज़हन में रखिए कि अगर अपनी बेटी के लिए कोई आदमी रिश्ता ढूंढे तो उसके लिए दो मिसालें काफ़ी हैं जो हमें रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़िन्दगी से मिलती हैं। नबी पाक अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपनी बेटी के लिए कैसे दामाद पसन्द किया। एक मिसाल हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की जो रिश्ते में क़रीबी थे, जुर्रत और बहादुरी में उनकी मिसाल नज़र नहीं आती। अल्लाह तआला ने उनको शेर का दिल अता किया था। मुशक़्क़त उठाने वाला बदन था, ज़िम्मेदारियाँ निभाने वाले इंसान थे। सबसे बड़ी बात कि अल्लाह तआला ने

इल्म इतना अता किया था जिसकी कोई हद नहीं थी। मालूम हुआ कि अपनी बेटी के लिए रिश्ता ढूंढना हो तो उससे बेहतर मिसाल और कोई नहीं मिल सकती है। दूसरी मिसाल हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की है। अच्छा कारोबार था, समाज में इज़्ज़त का मुक़ाम था, इस्लाम लाने से पहले भी समाज के इज़्ज़त दार आदमी समझे जाते थे, तबियत में नरमी थी, इतने हया व शर्म वाले थे कि अल्लाह के नबी ने फ़रमाया कि उस्माने ग़नी से तो अल्लाह के फ़रिश्ते भी हया करते हैं। बेटी के लिए रिश्ता ढूंढना हो तो अल्लाह के नबी ने हमारे सामने मिसालें पेश कर दीं। इससे बेहतर मिसालें हमें दुनिया में कहीं और नहीं मिल सकतीं। शौहर की ख़ूबियों में से एक बड़ी ख़ूबी यह है कि उसमें बरदाश्त का मिज़ाज हो क्योंकि वह घर का ज़िम्मेदार होता है। जिस इदारे का ज़िम्मेदार ही बात-बात पर बिगड़ जाए तो वह इदारा तो ख़त्म हो जाएगा। इसलिए इर्शाद फ़रमाया गया है, ﴿وللرجال عليهن درجة﴾ अल्लाह तआला ने मर्दों को औरतों पर एक दर्जा अता फ़रमाया यानी उनको घर का ज़िम्मेदार बनाया। मर्द की मिसाल बादशाह की तरह है और औरत की मिसाल मलिका की तरह है। लिहाज़ा मर्द में बरदाश्त का मिज़ाज और संजीदगी का होना बहुत ज़रूरी है। आपने देखा होगा कि जब बरदाश्त नहीं होती तो बातों पर नोक झोंक होती है। मामूली बातें जैसे खाने में नमक क्यों कम है? रोटी ठंडी क्यों आ गई? गर्म आनी चाहिए थी, यह फ़लाँ काम ऐसे क्यों हुआ? बीवी बेचारी घर का काम करके थकी पड़ी हो तो कभी तारीफ़ के कलिमे ज़बान से नहीं निकलेंगे मगर ऐतिराज़ की बात जहाँ हाथ आ गई वहाँ बीवी की

ख़ैर नहीं। वह मर्द जिनमें तहम्मुल नहीं होता उनकी इज़्दिवाजी ज़िन्दगी रास्ते में कहीं न कहीं खड़ी हो जाती है। किसी निकम्मी सी बात पर मियाँ-बीवी में सर्दी-गर्मी हुई तो मियाँ ने फ़ौरन तलाक़ तलाक़ तलाक़ के गोले दाग़ दिए। पिछले साल की बात है, फ़क़ीर स्वीडन में था। वहाँ एक घर में तलाक़ हुई। उसकी वजह यह हुई कि शौहर किचन के सिंक में आकर ब्रुश किया करता था। बीवी उसको मना किया करती थी कि जब बाथरूम का सिंक है तो वहाँ ब्रुश करें। उसने कहा नहीं मैं तो यहीं करूँगा। इसी बात पर मियाँ-बीवी में तलाक़ हो गई। जिसने सुना हैरान हुआ। बहुत जग हंसाई हुई। काश! दोनों समझ से काम लेते—

पार उतरने के लिए तो ख़ैर बिल्कुल चाहिए
बीच दरिया डूबना हो भी इक पल चाहिए

बरदाश्त और संजीदगी न हो तो इंसान की ज़िन्दगी कभी भी कामयाब नहीं गुज़र सकती। जब घर के सब लोग इकठ्ठे रहते हैं तो आपस में झगड़े हो सकते हैं। कभी बेटा बेटी माँ की नाफ़रमानी कर सकते हैं कभी माँ बच्चों पर गुस्सा हो सकती है तो मसाइल पैदा होंगे। इन मसाइल को वही हल कर सकता है जो अपने अंदर बरदाश्त का मिज़ाज रखता हो।

मर्द की दूसरी बड़ी सिफ़्त यह कि वह घर की ज़िम्मेदारियों को निभाने में निखट्टू और काम चोर नहीं होना चाहिए। देखिए हमारे लिए इससे बढ़कर और मिसाल क्या हो सकती है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वक़्त के नबी हैं और घर के काम-काज करते हैं। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम वक़्त के नबी हैं।

सफ़र में बीवी बच्चे की पैदाइश के दर्द का शिकार हुई तो फ़रमाया कि बैठो मैं अभी जाता हूँ आग ढूंढने के लिए,

﴿فقال لا هله امكثوا انی آنست نارا.﴾

मैं तुम्हारे लिए कहीं न कहीं से आग ढूंढकर लाऊँ ताकि तुम्हें आराम मिले।

अब देखिए कि वक़्त के नबी हैं और बीवी की आसानी के लिए आग के अंगारे ढूंढते फिरते हैं। यह कितनी बड़ी इबादत बनाई गई है जिसमें अल्लाह के नबी मसरूफ़ हैं। इसलिए घर का कोई काम मर्द को करना पड़ जाए तो उससे भागना नहीं चाहिए। जिस तरह छोटे-छोटे पत्थर मिलकर पहाड़ बन जाते हैं। इसी तरह छोटे-छोटे मसाइल इकठ्ठे होकर इख़्तिलाफ़ों के पहाड़ बन जाते हैं। दो दिलों के बीच दीवार खड़ी हो जाती है। नतीजा घर की तबाही की सूरत में सामने आता है। कभी-कभी तो पैंतीस पैंतीस साल की शादी-शुदा ज़िन्दगी तलाक़ की भेंट चढ़ जाती है।

अगर मर्द चाहते हैं कि बीवी हमारी ख़िदमत गुज़ार बनकर रहे तो मर्द को भी बीवी की ज़रूरतें पूरी करना होगी। यह बराबरी तभी होगी बराबर रह सकती है कि मर्द अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाए और औरत अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाए। शरिअत ने दोनों के बीच एक मीज़ान क़रार दिया। मियाँ के ज़िम्मे है कि वह औरत का हक़ अदा करे और के ज़िम्मे है कि वह मर्द के हक़ अदा करे। इस तरह दोनो पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ार सकते हैं। यह इज़्दिवाजी ज़िन्दगी का मक़सद है। अल्लाह ताआला का इर्शाद है कि ﴿ومن اٰيته.﴾ और उसकी निशानियों में से है कि ﴿ان خلق لكم من

﴿انفسكم ازواجا﴾ कि उसने तुम्हारे लिए बीवियाँ बना दीं ﴿لتسكنوا
اليها﴾ ताकि तुम उनसे सुकून हासिल कर सको। ﴿وجعل بينكم مودة
ورحمة﴾ और तुम्हारे बीचे प्यार और रहमत पैदा कर दी ﴿ان في
ذلك لايت لقوم يتفكرون.﴾ सोचने वालों के लिए इसमें बड़ी निशानियाँ हैं। अब क़ुरआन मजीद से साबित हुआ कि शादी-शुदा ज़िन्दगी का असल मक़सद प्यार व मुहब्बत से रहना और पुरसुकून ज़िन्दगी गुज़ारना है। सोचिए जब हम खुद सुकून के परखच्चे उड़ाने वाले बन जाएंगे तो फिर शादी-शुदा ज़िन्दगी कैसे कामयाब होगी।

अच्छी और कामयाब ज़िन्दगी वही है जिस में शौहर को भी सुकून हो और बीवी को भी सुकून हो। अगर दोनों में से किसी एक को भी सुकून नसीब न हो तो इसका मतलब यह है कि कामयाब ज़िन्दगी नहीं और आज तो अल्लाह की शान ऐसा मामला बन गया है कि शायद ही कोई शौहर ऐसा हो जो दिन में एक बार की बीवी की क़िस्मत को न रोए और शायद ही बीवी कोई बीवी ऐसी हो जो दिन में एक बार अपने शौहर को न कोसे। यह सब हमारी बे-इल्मी और बे-अमली का नतीजा है। हम मक़सदे असली को भूल गए हैं। हम छोटी-छोटी बातों पर आपस में झगड़े करने बैठ जाते हैं और छोटी-छोटी बातों को अना और नाक का मस्अला बना लिया करते हैं। यह ग़लत है। हमें होश में आने की ज़रूरत है।

इज़्दिवाजी ज़िंदगी का हसीन तसव्वुर

क़ुरआन पाक ने मियाँ-बीवी के बारे में जो तसव्वुर दिया है

वह आज तक कोई दूसरा समाज पेश नहीं कर सका। क़ुरआन ने मियाँ-बीवी के बारे में कहा,

﴿هن لباس لكم وانتم لباس لهن﴾

वह तुम्हारा लिबास हैं और तुम उनका लिबास हो।

लिबास से मिसाल देने में दो हिकमतें हैं एक यह लिबास से इंसान को ज़ीनत मिलती है, लिबास से उसके ऐब छुपते हैं और दूसरी बात यह है कि इंसान के जिस्म के सबसे ज़्यादा क़रीब उसका लिबास होता है। तो बीवी को शौहर के लिबास कहा है और शौहर को बीवी के लिए लिबास कहा हैं कि अब तुम दोनों एक दूसरे के इतने क़रीब हो जितना क़रीब लिबास हुआ करता है। अब बताइए क़रीब होने का इससे बेहतरीन तसव्वुर दूसरा पेश कर सकता है? अल्लाहु अकबर। रिवायत है कि अल्लाह तआला ने अम्मा हव्वा रज़ियल्लाहु अन्हा को हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की पसली से पैदा किया, क्यों? सर से इसलिए पैदा नहीं किया कि सर पर न बिठा ले और पाँव से इसलिए पैदा नहीं किया कि पाँव की जूती न बना ले। पसली से इसलिए पैदा किया कि ज़िंदगी का साथी समझते हुए अपने दिल के क़रीब रखे। क़ुरआन पाक मे यह नहीं कि कहा कि तुम ज़िन्दगी गुज़ारो बल्कि फ़रमाया,

﴿وعاشروهن بالمعروف﴾

तुमने उन बीवियों के साथ अच्छे अंदाज़ में ज़िन्दगी गुज़ारनी है।

मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि यह बीवियों पर अल्लाह की बड़ी रहमत है कि अल्लाह तआला ने उनकी तरफ़ से मर्दों को

सिफ़ारिश कर दी। ऐ ख़ाविन्द! तुम्हारे लिए इससे बढ़कर और क्या बात हो सकती है कि तुम्हारी बीवियों के लिए तुम्हारे परवरदिगार सिफ़ारिश कर रहे हैं। आज तुम उसकी सिफ़ारिश का ख़्याल रखोगे तो कल क़यामत के दिन तुम्हारी बख़्शिश कर देगा। अल्लाहु अकबर कबीरा।

बेहतरीन ख़ाविन्द कौन

हदीस पाक में आता है,

﴿خير كم خير كم الاهلى.﴾

तुम में सबसे बेहतर वह है जो अपने घरवालों के लिए बेहतर हो।

और फ़रमाया,

﴿انا خير كم لاهلى.﴾

मैं अपने घरवालों के लिए तुम सबसे बेहतर हूँ।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने अपनी ज़िंदगी को मिसाल बनाकर पेश किया। किसी बंदे की अच्छाई का अंदाज़ा लगाना हो तो उसके दोस्तों से न पूछें, कारोबार में न देखें, पूछना हो तो उसकी बीवी से ज़रा पूछें कि यह कैसा इंसान हैं? अगर बीवी कि इसकी रहन-सहन अच्छा है तो वह अच्छा इंसान है। फ़रमाया,

﴿اكمل المومنين ايمانا احسنهم خلقا.﴾

ईमान वालों में सबसे से कामिल ईमान वाला वह है जिसके अख़्लाक़ अच्छे हों।

एक बार नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पास एक औरत आई और कहा कि मेरा शौहर बात-बात पर ग़ुस्सा करता है यहाँ तक कि मारता भी है। (यह बात दोनों कान खोलकर सुनने वाली है बाक़ी बातें तो चलो एक कान से भी सुन लेना मगर मर्दों से गुज़ारिश है कि यह बात ज़रा दोनों कान खोलकर सुनें) बीवी ने आकर नबी पाक की महफ़िल में कहा कि ऐ अल्लाह के नबी मेरा शौहर मुझे छोटी-छोटी बात पर झिड़कता है यहाँ तक कि मुझे मारता भी है तो अल्लाह के नबी ने फ़रमाया,

﴿يظل احدكم يضرب امراته ضرب العبد ثم يظل يعانقها ولا يستحى.﴾

तुम्हारा मुँह काला हो तुम अपनी बीवी को बाँदी की तरह मारते हो फिर उसके साथ प्यार व मुहब्बत करते हो, क्या तुम्हें इस बात से शर्म नहीं आती यानी एक वक़्त तुम उसे इतना क़रीब कर रहे हो और दूसरे वक़्त उसे बाँदी की तरह मार रहे हो।

यह अल्फ़ाज़ हमें पैग़ाम दे रहे हैं कि बीवी घर की नौकरानी नहीं है बल्कि जीवन साथी है। हाँ अगर वह कोई कबीरा गुनाह कर बैठे और समझाने से भी न समझे तो अब उसे शरिअत ने दायरे में मारने की इजाज़त है ताकि नसीहत हो सके। कहावत मशहूर है, 'लातों के भूत बातों से नहीं मानते।' दो बातें बड़ी आम हैं, एक यह कि औरत की ज़बान क़ाबू में नहीं रहती दूसरे यह कि मर्द के हाथ क़ाबू में नहीं रहते। अल्लाह माफ़ फ़रमाए।

औरत की ज़बान

याद रखिए मेर दोस्तो! बद ज़बान बीवी अपने शौहर को क़ब्र

तक पहुँचाने के लिए मेल-डाक का काम करती है। जिसकी बीवी बद ज़बान हो उसको सारी ज़िन्दगी सुकून नहीं मिल सकता। औरत को कहा गया है कि वह अपनी ज़बान के अंदर नरमी और मिठास पैदा करे और अच्छे अंदाज़ से बात करे। वैसे यह पक्की बात है कि मीठी से मीठी औरत क्यों न हो फिर भी उसके अंदर थोड़ी बहुत कढ़वाहट ज़रूर होगी क्योंकि तअल्लुक़ ही ऐसा नाज़ व अंदाज़ का होता है फिर भी औरत की ज़बान में नरमी होनी चाहिए। शरिअत ने कहा है कि बीवी अपने शौहर से नरम अंदाज़ करे। जहाँ तक किसी ग़ैर मर्द से बात करने का वक़्त हो तो सख़्ती से बात करे ताकि उसे दूसरी बात पूछने की हिम्मत न हो। आजकल की फ़ैशनपरस्त औरतों का मामल उल्टा है। शौहर से बात करनी हो तो सारी दुनिया की कड़वाहट सिमट आती है और किसी ग़ैर से बात करनी हो तो सारी दुनिया की शीरनी सिमट आती है। बहरहाल यह मानी हुई हक़ीक़त है कि जिन रिश्तों को तलवार नहीं काट सकती, ज़बान काट कर रख देती है। यह भी याद रखिए कि औरत की ज़बान वह तलवार है जिसको कभी ज़ंग नहीं लगता। कुछ औरतें तो इतनी बद ज़बान होती हैं कि अगर औरतें न होतीं तो बरदाश्त के लायक़ न होतीं। कई बार औरतें तो बद ज़बानी और बद गुमानी की वजह से घर बर्बाद कर लेती हैं। शरिअत ने हुक्म दिया है कि महरम मर्द से बात करो तो नरमी से, ग़ैर-महरम से बात करनी पड़े तो सख़्ती से करो। अंग्रेज़ दानिश्वरों से किसी का क़ौल है कि अगर औरत सारे दिन में एक बार अपने शौहर से नरमी से बात करे जिस तरह वह अपने पड़ौसी मर्द से बात करती है तो घर आबाद हो जाए। इस तरह

मर्द अगर पूरे दिन में एक बार बीवी को उस मुहब्बत की निगाह से देखे जिस नज़र से यह पड़ौसी औरत को देखता है तो भी घर आबाद हो जाए।

पिछले बुज़ुर्गों का मामूल

अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक की पूरी एक सूरत जिसे सूरहः निसा कहते हैं, उसमें मर्द व औरत की शादी-शुदा ज़िंदगी के अहकाम बताए हैं। पहले के बुज़ुर्गों का यह मामूल था कि वे अपनी बेटियों को निकाह से पहले सूरहः निसा और सूरहः नूर का तर्जुमा पढ़ा दिया करते थे। हमें भी चाहिए कि जिनके हाँ बेटी हो वह उसको अगर पूरा क़ुरआन पाक तर्जुमे के साथ नहीं पढ़ा सकते तो कम से कम सूरहः निसा और सूरहः नूर को तर्जुमे के साथ पढ़ा दिया करें ताकि लड़की अच्छी इज़्दिवाजी ज़िन्दगी गुज़ार सके। कुछ पुराने बुज़ुर्गों का अजीब मामूल था कि जब बच्ची पढ़ लिख जाती और अभी शादी का भी कोई इंतिज़ाम नहीं होता (उस वक़्त प्रिन्टिंग प्रेस नहीं होते थे) तो यह बेटी के ज़िम्मे लगाते कि बेटी अपने लिए क़ुरआन पाक लिख लो तो यह बच्ची रोज़ाना वुज़ू के साथ अच्छे तरीक़े से क़ुरआन पाक लिखती थी और जब क़ुरआने पाक पूरा हो जाता था, सुनहरी जिल्द बाँधकर बाप अपनी बेटी को दिया करता था। यह पहले वक़्त का जहेज़ हुआ करता था। गोया उसके शौहर को पैग़ाम मिल रहा होता था कि मेरी बेटी ने मेरे घर में जो ज़िंदगी गुज़ारी है उसका फ़ारिग़ वक़्त इस क़ुरआन पाक को लिखने में गुज़रा है।

ख़ाविंद के हुक़ूक़

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मियाँ-बीवी के हुक़ूक़ को बयान करते हुए औरतों को बताया कि अगर शरिअत में किसी और को सज्दा करने की इजाज़त होती तो मैं औरत को हुक्म करता कि अपने शौहर को सज्दा करे। हदीस पाक में आता है कि जो औरत फ़राईज़ को पूरा करने वाली हो और उसे ऐसी हालत में मौत आ जाए कि उसका शौहर उससे खुश हो तो अल्लाह तआला उसके लिए जन्नत का दरवाज़ा खोलते हैं ताकि बग़ैर हिसाब-किताब के जन्नत में दाख़िल हो सके। यह भी कह दिया कि अगर किसी औरत का ख़ाविंद जाएज़ वजह से नाराज़ हो और वह औरत ज़िद्द करके ख़ामोश रहे और ख़ाविंद ऐसी हालत में सो जाए तो सारी रात अल्लाह के फ़रिश्ते उस औरत पर लानत बरसाते रहते हैं। गोया ख़ाविंद की ख़ुशी में अल्लाह तआला की ख़ुशी को शामिल कर दिया गया। ख़ाविंद की इताअत और फ़रमांबरदारी में सहाबियात के वाक़िआत बड़े अजीब हैं।

एक सहाबिया के यहाँ बेटा पैदा हुआ। शौहर जिहाद में गया हुआ है। जिस दिन शौहर ने आना है तो उस दिन कुछ घंटे पहले बेटा मर गया। अब परेशान बैठी है कि ख़ाविंद इतने अरसे बाद आएगा और जब यह मालूम होगा कि बेटा मर गया है तो उसे कितना सदमा होगा, दिल में अफ़सोस होगा, काश बच्चे को ज़िन्दगी में आकर प्यार ही कर लेता। जब सहाबिया बहुत परेशान हुई तो उसने बच्चे को नहला धुलाकर कपड़ा डालकर चारपाई पर रख दिया। किसी को ख़बर न दी। ख़ाविंद घर आया तो पूछा कि

क्या हुआ। बताया कि अल्लाह ने बेटा दिया है। पूछा कि मेरा बेटा कहाँ है? कहा वह सुकून में है। ख़ाविंद समझा कि वह सो रहा है। लिहाज़ा ख़ाविंद ने खाना खाया, रात हो गई, मियाँ-बीवी इकट्ठे भी हुए, सफ़र की बातें भी हुईं लेकिन उस औरत को देखिए जो माँ थी। उसके दिल दिल पर क्या गुज़र रही होगी जिसके मासूम बेटे की लाश चारपाई पर पड़ी है मगर वह ख़ाविंद की ख़ुशी की ख़ातिर सीने पर पत्थर रखकर इस राज़ को छुपाए बैठी हैं कि मेरे ख़ाविंद का दिल ग़मज़दा न हो। वह उसके साथ खाना भी खा रही है, हँस बोल भी रही है, दोनों मिल भी रहे हैं, यहाँ तक कि इसी हाल में सुबह हो गई। सुबह अपने ख़ाविंद से पूछती है कि मुझे एक बात बताइए। ख़ाविंद ने कहा पूछो, कहने लगी कि अगर कोई किसी को अमानत दे और फिर कुछ अरसे बाद वापस मांगे तो वह ख़ुशी से देनी चाहिए या ग़मज़दा होकर। ख़ाविंद ने कहा ख़ुश होकर। कहा कि अच्छा आपको भी अल्लाह तआला ने अमानत दी थी, आपके आने से कुछ देर पहले अल्लाह ने वह अमानत वापस ले ली आप जाइए और ख़ुशी-ख़ुशी अल्लाह के हवाले कर दीजिए, अल्लाहु अकबर। इस सहाबिया ने हुस्ने माअशरत का हक़ अदा कर दिया। सुबह उनके ख़ाविंद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि अल्लाह के नबी मेरे घर में यह मामला हुआ। मेरी बीवी ने मेरी ख़ुशी की ख़ातिर इतने सब्र व ज़ब्त का मुज़ाहिरा किया। अल्लाह के नबी ने दुआ दी तो अल्लाह तआला ने उस रात में बरकत डाली और वह औरत अपने ख़ाविंद से मिलने की वजह से हामला हुई। अल्लाह तआला ने उसको एक और बेटा अता किया

जो हाफ़िज़ क़ुरआन भी बना और हाफ़िज़ हदीस भी बना।

बीवी के हुक़ूक़

आइए अब जाएज़ा लें कि औरत के ख़ाविन्द पर क्या हुक़ूक़ हैं? उनमें से पहला हक़ औरत के ख़र्चों को पूरा करना है। एक बात ज़हन में रख लेना कि अल्लाह तआला ने औरत के ज़िम्मे अपनी रोज़ी कमाने का बोझ नहीं रखा। औरत अपने ख़र्चों के लिए कमाने की ज़िम्मेदार नहीं है। अगर बेटी है तो बाप का फ़र्ज़ है कि वह अपनी बेटी का ख़र्चा पूरा करे अगर बहन है तो भाई के ज़िम्मे है कि वह अपनी बहन का ख़र्चा पूरा करे, अगर बीवी है तो ख़ाविन्द के ज़िम्मे है कि वह बीवी का ख़र्चा पूरा करे और अगर माँ है तो औलाद का फ़र्ज़ है कि वह अपनी माँ का ख़र्चा पूरा करे। बेटी से लेकर माँ बनने तक अल्लाह ने औरत पर अपनी रोज़ी कमाना कभी भी फ़र्ज़ नहीं किया। तो यह ख़ाविन्द की ज़िम्मेदारी होती है कि वह अपनी बीवी का ख़र्चा पूरा करे। इस ख़र्च के बारे में उलमा ने मस्अला लिखा है कि शौहर को चाहिए कि अपनी हैसियत के मुताबिक़ बीवी का ज़ाती ख़र्च तय करे। मुमकिन है कि कोई आदमी पचास डालर दे सकता हो, कोई आदमी सौ डालर देसकता हो और कोई आदमी सिर्फ़ दस डालर दे सकता हो, मिक़्दार की बात नहीं है। घर की सब्ज़ी वग़ैरह के लिए ख़र्चा देना और बात है। शरिअत कहती है कि वह तुम्हारी बीवी है अपने घर को छोड़कर तुम्हारा घर बसाने आई है। अब तुम इसको अपनी निजी ज़रूरतों के लिए कुछ पैसा दे दो और देने के बाद तुम्हें पूछने की ज़रूरत नहीं है कि कहाँ ख़र्च किया। इसमें

भी हिकमत है। हो सकता है कि औरत महसूस करे कि मेरी बहन ग़रीब है मैं उसको दे दूँ। मैं भाई की मदद करूँ। हो सकता है कि उसे तब ख़ुशी हो जब वह किसी ग़रीब औरत को दुखः बांटे। लिहाज़ा जब ज़ाती ख़र्चा दे दिया तो अब पूछने की ज़रूरत नहीं। वह जहाँ चाहे ख़र्च कर सकती है। बीवी के हुक़ूक़ के बारे में दूसरी बात सुनें। फ़क़्हा ने मस्अला लिखा है कि जब मर्द किसी औरत से निकाह करे उसकी ज़िम्मेदारी है कि उस औरत को सर छिपाने के लिए अपनी हैसियत के मुताबिक़ जगह बना दे। कहावत मशहूर है कि अपना घोंसला अपना कच्चा हो या पक्का। औरत को कोई ऐसी जगह देनी चाहिए जहाँ वह सर छुपाए। यह शौहर की ज़िम्मेदारी है। अगर मजबूरी हो कि घर के लोग इकट्ठे रहते हों तो उसे कोई एक कमरा ही दे दिया जाए जहाँ वह अपनी ज़रूरतों का सामान रख सके। यह न हो कि बीवी का भी वह कमरा है और उसी में माँ-बाप का सामान भी पड़ा हो, किसी और का सामान भी पड़ा हो। यह बात ठीक है कि हर बंदा मकान नहीं बना सकता लेकिन जो बना सकते हैं वह बनाकर दें। यह ख़ाविंद की ज़िम्मेदारियों में से एक ज़िम्मेदारी है। तीसरी बात क्योंकि ख़ाविंद अपने घर के लिए अमीर और सरदार है। लिहाज़ा उसे चाहिए कि अपनी रिआया यानी घर वालों के साथ नरमी का बरताओ रखे।

﴿ارحموا من فی الارض یرحمکم من فی السماء﴾

तुम ज़मीन वालों पर नरमी करो आसमान वाला तुम पर नरमी फ़रमाएंगे।

इसलिए फ़रमाया कि जो इंसान दूसरों के साथ नरमी करेगा,

अल्लाह तआला क़यामत के दिन उससे नरमी फ़रमाएंगे, जो दूसरों को जल्द माफ़ करने वाला होगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसको जल्दी माफ़ फ़रमा देंगे, जो दूसरों के ऐबों को छुपाने वाला होगा, अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसके ऐबों को छुपाएंगे। इस्लाम में बीवी का तसव्वुर जीवन साथी का तसव्वुर है, हमदम व हमराज़ का तसव्वुसर है कोई बाँदी का तसव्वुर नहीं और अच्छे दोस्त का तसव्वुर है। क़ुरआन पाक में जहाँ-जहाँ मियाँ-बीवी के हुक़ूक़ का ज़िक्र है वहाँ जगह-जगह फ़रमाया ﴿واتقوا الله﴾ और तुम अल्लाह से डरते रहना। यह इसलिए कि ﴿واعلموا انكم ملقوه﴾ और तुम जान लेना कि तुम्हें अल्लाह से मुलाक़ात करनी है। इसलिए कुछ मामले ऐसे होते हैं कि न बीवी शर्म से किसी को बता सकती है और न शौहर शर्म से किसी को बता सकता है मगर अंदर अंदर दोनों एक दूसरे के दिल को तकलीफ़ पहुँचा रहे होते हैं। फ़रमाया कि तुम इस तरह एक दूसरे का दिल जलाया करोगे तो याद रखना कि तुमने अल्लाह तआला से भी मुलाक़ात करनी है अगर एक दूसरे को सुकून नहीं पहुँचाओगे तो क़यामत के दिन उसको कैसे जवाब दे सकोगे। एक बेहतरीन उसूल यह है कि अगर कोई ग़लती या कोताही बीवी से हो जाए तो वह माफ़ी मांग ले और ख़ाविंद से हो जाए तो वह माअज़रत कर ले। अपनी ग़लती पर माअज़रत कर लेना अज़मत होती है। मुझे इस मौक़े पर अपने पीर व मुर्शिद की एक बात याद आई। ये हज़रात कितने ख़ालिस होते हैं। अपनी ज़िंदगी के वाक़िआत नमूना बनाकर पेश करते हैं। फ़रमाने लगे एक रोज़ मैं वुज़ू कर रहा था (बूढ़े थे) बीवी वुज़ू कराते वक़्त पानी ठीक तरह से नहीं डाल रही

थी जिस पर मैंने उन्हें ज़रा सख़्ती से बात कह दी कि तुम क्यों ठीक तरह वुज़ू नहीं करवा रहीं। मगर मेरे इस तरह गुस्से पर वह ख़ामोश रहीं और जिस तरह मैं चाहता था वैसे करवा दिया। ख़ैर मैं वुज़ू करके घर से चला। रास्ते में ख़्याल आया कि अभी तो अल्लाह की मख़्लूक़ के साथ यह बर्ताव कर रहा था, अभी मुसल्ले पर जाकर नमाज़ पढ़ाऊँगा। मेरी नमाज़ कैसे क़ुबूल होगी। कहने लगे मैं आधे रास्ते से वापस आया और बीवी से माअज़रत की। उसने मुझे माफ़ कर दिया, फिर मैंने जाकर मस्जिद में नमाज़ पढ़ाई।

मस्जिद ढा दे मंदिर ढा दे ढा दे जो कुछ ढैंढा
पर किसी का दिल न ढावें रब दिलां विच रहंदा

इज़्दिवाजी ज़िन्दगी और मशरिक़ी (पूर्वी) समाज

अज़ीज़ सामेइन! इज़्दिवाजी ज़िन्दगी के बारे में हमारा मशरिक़ी समाज आज भी अल्लाह का शुक्र है बहुत पुरसुकून है। हमारा तजुरिबा है कि सौ में से निन्नानवे लड़कियाँ जब अपने वालदैन के घर से रुख़्सत होती हैं तो उनके दिलों में घर बसाने की नीयत होती है। यह बात सिर्फ़ मशरिक़ी लड़की को हासिल है कि जब अपने माँ-बाप के घर से चलती है तो दिल में नीयत होती है कि मैंने घर बसाना है। यह आगे शौहर का मामला है अच्छी तरह चलाया तो घर आबाद हो गया, ग़लत चलाया तो वह घर बर्बाद हो गया। कुछ मशरिक़ी लड़कियाँ तो इतनी पाक दामन होती हैं कि उनमें हूरों की सिफ़ात झलकती है मसलन ﴿عربا﴾ यानी शौहर की आशिक़ और ﴿قاصرات الطرف﴾ यानी ग़ैर-मर्दों की तरफ़ माइल न होने वालियाँ। यह इस्लाम की बरकत है कि मशरिक़ में आज

भी कुछ ऐसी मासूम जवानियाँ होती हैं जो अपने घर से क़दम निकालती हैं तो उनके दिलों में किसी ग़ैर-मर्द का दख़ल नहीं हुआ करता। कई ऐसी होती हैं कि शौहर का साया सर पर उठ गया। बच्चों की ख़ातिर पूरी ज़िन्दगी गुज़ार देती हैं। हदीस पाक में इर्शाद है कि अगर कोई बेवा औरत यह समझे कि मुझे अपने बच्चों की परवरिश की ख़ातिर बैठना है और ख़ुद इसको पसंद करे तो अल्लाह तआला उसको जिहाद करने का सवाब अता फ़रमाते हैं। जिस औरत का शौहर फ़ौत हो जाए, उसकी बहार तो ख़िज़ां में बदल गई मगर यह ख़िज़ां के मौसम में भी अपने परों के नीचे अपने छोटे-छोटे मासूम बच्चों को छुपाकर अपनी ज़िन्दगी रही होती हैं, अल्लाहु-अकबर।

चमन का रंग गो तूने सरासर ऐ ख़िज़ां बदला
न हम ने शाख़े गुल छोड़ी न हम ने आशयां बदला

ख़ुशगवार इज़्दिवाजी ज़िन्दगी

इज़्दिवाजी ज़िन्दगी के बारे में एक बात ध्यान में रखिए कि जहाँ मुहब्बत पतली हुआ करती है वहाँ ऐब मोटे नज़र आते हैं और छोटी-छोटी बातों के बतंगड़ बन जाया करते हैं। इसलिए शरिअत ने हुक्म दिया तुम आपस में मुहब्बत व प्यार से ज़िन्दगी गुज़ारो। इंसान को बड़ा हौसला रखना चाहिए। इंगलिश का मक़ूला है

To run a big show one should have big heart.

एक बड़ा निज़ाम चलाने के लिए इंसान को दिल भी बड़ा रखना चाहिए।

इंसान को बरदाश्त और बुर्दबारी से घर के मामलात निभाने चाहिएं। कितनी अजीब बात है कि शौहर अपनी बीवी से झगड़ता है जो ज़िन्दगी शौहर के लिए वक़्फ़ कर चुकी होती है और बीवी अपने शौहर से झगड़ती हो जो उसकी ज़िन्दगी में इतना बड़ा मुक़ाम पा चुका होता है।

तर्जमा शे'र: हम ने सुना अल्लाह वाले दुश्मनों के दिलों को भी तंग नहीं किया करते। तुम्हें यह मुक़ाम कहाँ से नसीब हुआ कि तुम अपनों के साथ झगड़ रहे हो।

कभी-कभी दीनी जिहालत की वजह से या घमंड की वजह से पढ़े लिखे जोड़ों में झगड़ा रहता है। मियाँ-बीवी एक दूसरे के इस क़दर ख़िलाफ़ कि शौहर हर वक़्त बीवी की ग़लतियाँ और ऐब ढूंढने की कोशिश करता है और बीवी हर वक़्त शौहर की ग़लतियाँ और ऐब ढूंढने की कोशिश करती है। जिस्म एक दूसरे के कितने क़रीब और दिल एक दूसरे से कितनी दूर। इन दोनों का मामला पर यह शे'र सही साबित होता है

ज़िन्दगी बीत रही है दानिश
कोई बे जुर्म सज़ा हो जैसे

कभी-कभी ये झगड़े किसी तीसरी वजह से होते हैं। यह मेरी बात याद रखना कि मियाँ-बीवी एक दूसरे की वजह से नहीं झगड़ते हैं, जब भी झगड़ेगें किसी तीसरे की वजह से झगड़ेंगे। या तो वह सास-ससुर होंगे और या बीवी के मैके वाले होंगे। इसलिए शरिअत ने एक बात समझा दी। लड़की को कहा कि देखो निकाह से पहले एक माँ थी अब तुम्हारी दो माँऐं हैं और दो बाप हैं। इसी तरह लड़के को बता दिया कि तुम्हारी दो माँए और दो बाप

हैं। अल्लाह तआला ने सास-ससुर को माँ-बाप का दर्जा दिया है। इसमें एक बेहतरीन उसूल याद रख लीजिए कि शादी के बाद लड़की को चाहिए कि शौहर के घर वालों को खुश रखे और शौहर को चाहिए कि वह अपनी बीवी के घर वालों को खुश रखे। जहाँ यह उसूल दोनों मियाँ-बीवी अपना लेंगे वहाँ आप देखेंगे कि कभी लड़ाई नहीं होगी। कभी एक गुस्सा में आ जाए तो दूसरे को चाहिए कि बरदाश्त से काम ले। एक वक़्त दोनों का गुस्से में आ जाना मामले को बेहद ख़राब करता है। हदीस में आता है कि अगर कोई औरत शौहर के गुस्से पर सब्र करे तो अल्लाह तआला उसे हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम के सब्र का अज्र अता फ़रमाएंगे। इसी तरह अगर कोई मर्द अपनी बीवी के गुस्से पर सब्र करेगा, अल्लाह तआला उसे भी सब्रे अय्यूब का दर्जा अता फ़रमाएंगे तो जब सब्र का इतना अज्र व सवाब मिलता है तो उस पर ज़रा ख़ामोश हो जाया करें।

मुख़ालिफ़ सोच से बचें

मियाँ-बीवी दोनों को मुख़ालिफ़ सोच से बचना चाहिए। पंजाबी का मक़ूला है, *"भांदे दा सब कुछ भावे ते न भांदे दा कुछ वी न भावे"* यानी जो आदमी अच्छा लगता है उसका हर काम अच्छा लगता है और जो आदमी बुरा लगता हो उसका हर काम बुरा लगता है। मियाँ-बीवी में अगर मंफ़ी सोच हो तो एक दूसरे की हर बात ज़हर मालूम होती है। हिकायत है कि एक बुज़ुर्ग की बीवी उनसे हर वक़्त लड़ती झगड़ती रहती थी। उन्होंने एक दिन दुआ की कि या अल्लाह! मेरे हाथ पर कोई ऐसी करामत ज़ाहिर फ़रमा

जिसे देखकर मेरी बीवी भी मेरी अक़ीदतमंद बन जाए। तो क़ुदरते इलाही से उन्हें इल्हाम हुआ कि तुम उड़ना चाहो तो तुम्हें हवा में उड़ने की करामत मिलेगी। अब वह बुज़ुर्ग उड़ते-उड़ते अपने घर के ऊपर से गुज़रे। जब शाम को वापस घर आए तो बीवी ने आते ही कहा, लो तुम भी बड़े बुज़ुर्ग बने फिरते हो, बुज़ुर्ग तो आज मैंने देखे तो हवा में उड़ते जा रहे थे। उस बुज़ुर्ग ने कहा, खुदा की बंदी वह मैं ही तो था। तो बीवी ने फ़ौरन कहा, अच्छा मैं भी तो सोच रही थी कि यह उड़ने वाला टेढ़ा-टेढ़ा क्यों उड़ रहा है। देखा मंफ़ी सोच कितनी बुरी चीज़ है। मियाँ-बीवी को चाहिए कि अपने अंदर सही सोच पैदा करें। मियाँ-बीवी को चाहिए कि क़दम उठाने से पहले देख लें कि रास्ता किधर को जाता है।

जो आदमी अपनी बीवी पर एहसान करेगा यक़ीनन वह अपनी बीवी का दिल जीत लेगा। तो बीवी को ताक़त के ज़रिए जीतने की कोशिश न करें, बीवी को एहसान और अच्छे अख़्लाक़ के ज़रिए जीतने की कोशिश करें। इज़्दिवाजी ज़िंदगी में सबसे ज़्यादा नुक़सानदेह मंफ़ी सोच है। देखें सोचने के अलग-अलग अंदाज़ होते हैं। मैं मिसाल देता हूँ कि एक डाल पर फूल भी है कांटे भी हैं। ऐ मुख़ातिब तुझे शिकायत है कि फूल के साथ कांटे भी है और मुझे खुशी है कि कांटों के साथ फूल भी हैं। यह अपनी नज़र है कि किसी की नज़र कांटों पर गई और किसी की नज़र फूल पर गई। सच है नज़र अपनी अपनी पसंद अपनी-अपनी।

मुस्कराना भी नेकी है

हदीस पाक में आता है कि जब कोई बीवी अपने शौहर की

तरफ़ मुस्कराती है शौहर बीवी की तरफ़ देखकर मुस्कराता है तो अल्लाह तआला दोनों की तरफ़ देखकर मुस्कराते हैं।

अल्लाह! अल्लाह! हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की रिवायत है कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम जब भी घर में दाख़िल होते तो मुस्कराते चेहरे के साथ दाख़िल होते थे। शौहरों को चाहिए कि दफ़्तरों के झगड़े दफ़्तर में छोड़ आया करें। जब घर में दाख़िल हों तो मुस्कराहटें बखेरते हुए। सुन्नत पर अमल का सवाब भी मिलेगा और जवाब में बीवी की मुस्कराहट भी मिलेगी।

A smile

A smile is some thing nice to see, it does not cast a cent.

A smile is some thing all you own it never can be spent.

A smile is welcome every where, it does away with frown.

A smile is good for every one, to ease life's up and downs.

यह भी नहीं होना चाहिए कि शौहर को मुस्कराते चेहरे से घर आए मगर बीवी मुँह लटकाए फिरती रहे। शौहर की मुस्कराहट का जवाब बीवी को नीचे लिखे बोलों में देना चाहिए:

माइय्यत गर न हो तेरी तो घबराऊँ गुलिस्तान में
रहे तू साथ तो सहरा में गुलशन का मज़ा पाऊँ

लिखकर लटकाइए

इंगलिश का फ़िक़्रा है। इसको मेरे दोस्तो याद कर लीजिए बल्कि घर में कहीं लिखकर लटका लीजिए:

House built by hands but home is built by hearts.

कहने वाले ने कहा कि मकान तो हाथों से बन जाया करते हैं मगर घर हमेशा दिलों से बना करते हैं। ईंटें जुड़ती हैं मकान बन जाते हैं मगर जब दिल जुड़ते हैं तो घर आबाद हो जाया करते हैं। मेरे दोस्तो! हम इन बातों को तवज्जेह से सुनें और अच्छी इज़्दिवाजी ज़िन्दगी गुज़ारने की कोशिश करें। हम ग़ैरों के मुल्क में बैठे हैं। हमारी छोटी-छोटी बातों पर होने वाले झगड़े जब मुक़ामी इंतिज़ामिया को पहुँचते हैं तो वे इस्लाम पर हँसते हैं, वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तालीमात पर उंगली उठाते हैं। कितनी बुरी बात है अगर हमने अपनी कम समझी की वजह से किसी को इस्लाम पर उंगली उठाने का मौक़ा दे दिया। छोटी-छोटी बातें अपने घर में समेट लिया करें। ऐसा झगड़ा न बनाएं तो कम्युनिटी में चर्चा का मौज़ू बने। हम अपनी ज़ात के ख़ोल से बाहर निकलें। हम मुसलमानों की बदनामी के बजाए मुसलमानों की नेकनामी का ज़रिया बनें। आज ऐसी सोच रखने वाले इतने थोड़े हैं कि चिराग़ लेकर ढूंढने की ज़रूरत है।

एक हुजूम औलादे आदम का जिधर भी देखिए
ढूंढिए तो हर तरफ़ अल्लाह के बंदों का काल

आमतौर पर देखा गया है कि जब मियाँ-बीवी क़रीब होते हैं तो एक दूसरे से लड़ाईयाँ होती हैं। अगर इसी हालत में मियाँ मर जाए तो यही बीवी सारी ज़िन्दगी मियाँ को याद करके रोती रहेगी कि जी इतना अच्छा था, मेरे लिए तो बहुत ही अच्छा था। अगर बीवी मर जाए तो यही मियाँ सारी ज़िन्दगी याद करके रोता रहेगा कि बीवी कितनी अच्छी थी, मेरा कितना ख़्याल रखती थी तो

पंजाबी की एक कहावत है कि 'बंदे दी क़दर आंदी है टर गयां या मर गयां।'

हम बंदे की क़दर क़रीब रहते हुए कर लिया करें। कई मर्तबा देखा गया कि मियाँ-बीवी झगड़े में एक दूसरे को तलाक़ दे देते हैं। जब होश आती है तो मियाँ अपनी जगह पागल बना फिरता है और बीवी अपनी जगह पागल बनी फिरती है। फिर हमारे पास आते हैं कि मौलवी साहब कोई ऐसी सूरत हो सकती है कि हम फिर से मियाँ-बीवी बनकर रह सकें? ऐसी सूरते हाल हर्गिज़ नहीं आने देनी चाहिए। माफ़ और दरगुज़र और समझने-समझाने से काम लेना चाहिए बल्कि एक रूठे तो दूसरे को मना लेना चाहिए। किसी शायर ने क्या अच्छी बात कही है :

इतने अच्छे मौसम में रूठना नहीं अच्छा
हार जीत की बातें कल पे हम उठा रखें
आज दोस्ती कर लें

इस मज़मून को एक दूसरे शायर ने नए रंग से बाँधा है:

ज़िन्दगी यूँ ही बहुत कम है मुहब्बत के लिए
रूठ कर वक़्त गंवाने की ज़रूरत क्या है

अनोखा वाक़िआ

उलमाए किराम ने एक वाक़िआ लिखा है कि एक बीवी बहुत ख़ूबसूरत थी जबकि शौहर बहुत बदसूरत और शक्ल का बहुत अनोखा था, रंग काला था। बहरहाल ज़िन्दगी गुज़र रही थी। नेक समाज में ज़िन्दगियाँ गुज़र जाया करती हैं। एक मौक़े पर ख़ाविंद

ने बीवी की तरफ़ देखा तो मुस्कराया। बीवी देखकर कहने लगी हम दोनों जन्नती हैं। उसने पूछा यह आपको कैसे पता चला? बीवी ने कहा आप मुझे देखते हैं तो खुश होते हैं, शुक्र अदा करते हैं और जब मैं आपको देखती हूँ तो सब्र करती हूँ। शरिअत का हुक्म है कि सब्र करना वाला भी जन्नती है और शुक्र करने वाला भी जन्नती है।

शादी के बाद प्यार

एक अहम पहलू पर रौशनी डालना ग़लत न होगा। इस्लाम ने शादी से पहले मुहब्बत की इजाज़त नहीं दी है, शादी के बाद मुहब्बत की इजाज़त दी है। 'लव-मेरिज' की बुनियाद बनाएंगे तो यह बुनियाद कमज़ोर होगी। आप उसका अंजाम मग़रिबी (यूरोपी) समाज में देख रहे हैं। शादी के बाद मुहब्बत का क्या मतलब है कि जब माँ-बाप ने वकील बनकर लड़के के लिए बेहतरीन लड़की तलाश कर ली और लड़की के लिए बेहतरीन लड़का तलाश कर लिया तो वे अब मियाँ-बीवी बन चुके हैं। अब उन्हें एक दूसरे के साथ मुहब्बत व प्यार से ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिए। वे जिस क़दर मुहब्बत और प्यार से ज़िन्दगी गुज़ारेंगे, उस पर उन्हें अज्र व सवाब मिलेगा। मेरे आक़ा ने अपने एक-एक फ़रमान में ज़िन्दगी के सुनहरी उसूल बतला दिए।

आइए खुशगवार इज़्दिवाजी गुज़ारने के लिए मैं अपने प्यारे आक़ा और सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का एक अमल आपको बता देता हूँ।

मुहब्बत भरी ज़िन्दगी

एक बार नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम घर में तशरीफ़ लाए। सहन में देखा कि हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा प्याले में पानी पी रही हैं। दूर से देखा तो वहीं से फ़रमाया, हुमैरा! (नाम आएशा था मगर प्यार से हुमैरा कहा करते थे। नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें इसमें सबक़ दिया, दूर से फ़रमाया, हुमैरा!) बोलीं ऐ अल्लाह के नबी फ़रमाइए। फ़रमाया थोड़ा सा पानी मेरे लिए भी बचा देना। वह उम्मती थीं, बीवी थीं, आप ख़ाविंद भी थे और सैय्यदुल मुरसलीन भी थे, रहमतुल्लिल आलमीन भी थे, बकरतें तो आपकी ज़ात से मिलनी थीं मगर सुब्हानअल्लाह मुहब्बत भी अजीब चीज़ है कि जीवन साथी को देखा कि पानी पी रही हैं तो दूर से कहा कि कुछ पानी मेरे लिए भी बचा देना। तो हज़रत आएशा ने पानी बचा दिया। जब आप क़रीब तशरीफ़ लाए तो अपनी बीवी का बचा हुआ पानी हाथ में लेकर पीना चाहा। अचानक आप रुक गए और पूछा कि ऐ हुमैरा! तूने इस प्याले पर किस जगह लब लगाकर पिया था? हज़रत आएशा क़रीब आयीं और उस जगह को बताया। हदीस पाक में आता है कि आपने प्याले के रुख़ को फेरा और उस जगह अपने लबे मुबारक लगाकर पानी नोश फ़रमाया, अल्लाह! अल्लाह।

मेरे दोस्तो! अगर ख़ाविंद बीवी को इतना प्यार देगा तो क्या बीवी का दिमाग़ ख़राब है कि वह घर को आबाद नहीं करेगी बल्कि वह तो घर आबाद करने के लिए अपनी जान की बाज़ी लगा देगी। वह मुहब्बत का जवाब मुहब्बत से, उलफ़त का जवाब

उलफ़त से, प्यार का जवाब प्यार से और वफ़ा का जवाब वफ़ाओं से देगी। वह ख़ाविंद की मुहब्बत को दिल में बसाएगी और अंखियों के झरोखों में शौहर की तस्वीर सजाएगी। यह है इज़्दिवाजी ज़िंदगी का हसीन इस्लामी तसव्वुर। आइए नफ़रतों को दूर कीजिए और मुहब्बत भरी पाकीज़ा ज़िन्दगी की शुरूआत कीजिए। किसी शायर ने कहा–

फ़ुर्सते ज़िन्दगी कम है मुहब्बतों के लिए
लाते हैं कहाँ से वक़्त लोग नफ़रतों के लिए

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें ख़ुशगवार इज़्दिवाजी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। (आमीन)

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

❋ ❋ ❋

मेहनत में अज़मत

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم الله الرحمن الرحيم

وان ليس للانسان ما سعى. وان سعيه سوف يرى. سبحان ربك رب

العزه عما يصفون. وسلام على المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

इंसान के लिए वही कुछ होता है जो वह मेहनत करता है और उसकी कोशिश देखी जाएगी

इंसान की ज़िन्दगी का मक़सद

इंसान पेड़ नहीं कि खड़ा रहे और पत्थर नहीं कि पड़ा रहे। यह तो अशरफ़ुल-मख़्लूक़ात (मख़्लूक़ में सबसे अफ़ज़ल) है। इसे चाहिए कि यादे इलाही में लगा रहे। मक़सदे ज़िन्दगी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बंदगी और ज़िन्दगी का मक़सद अल्लाह तआला की याद है। यह इतनी लम्बी-चौड़ी काएनात हमारे सामने फैली हुई नज़र आती है यह सब इंसान के लिए बनाई गई है जबकि इंसान को अल्लाह तआला ने अपनी इबादत के लिए पैदा किया है—

न तू ज़मीं के लिए है न आसमां के लिए
जहाँ है तेरे लिए तू नहीं जहाँ के लिए

काएनात किस लिए है

यह आसमान की पोशीदा चीज़ें, यह ज़मीन की ख़ूबसूरती, ये समुंद्र की गहराईयाँ, ये आसमान पर चमकते हुए सितारे, ये पहाड़, ये मैदान, ये हवाएं और ये फ़िज़ाएं सबकी सब इंसान के लिए हैं। इनको पैदा करने वाला कितना अज़ीम और कितना बुलंद है कि उसने अपनी क़ुदरते कामिला से इंसान के लिए इतनी बड़ी काएनात पैदा कर दी।

खेतियाँ सरसब्ज़ हैं तेरी ग़िज़ा के वास्ते
चाँद सूरज और सितारे हैं ज़िया के वास्ते
बहर ओ बर शम्स ओ क़मर मा शुमा के वास्ते
यह जहाँ तेरे लिए है तू ख़ुदा के वास्ते

ज़िन्दगी के रास्ते

इंसान इस दुनिया में दो तरह से ज़िन्दगी गुज़ार सकता है, एक मन चाही ज़िन्दगी दूसरे रब चाही ज़िन्दगी। अब हमने इन दोनों बातों को देखना है कि इन दोनों में से बेहतर रास्ता कौन सा है। एक है अपनी मर्ज़ी से ज़िन्दगी गुज़ारना दूसरे है अल्लाह तआला की मर्ज़ी से ज़िन्दगी गुज़ारना। इंसान जब अपनी मर्ज़ी की ज़िन्दगी गुज़ारता है तो गोया अपनी सोच के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारता है। इंसान की सोच के कुछ रास्ते हैं। मसलन इंसान आँख से देखता है, कान से सुनता है, ज़बान से बोलता है। इन आज़ा के साथ इंसान गोया मालूमात इकट्ठी करता है या दूसरे लफ़्ज़ों में इल्म हासिल करता है। फिर इस इल्म पर इंसान अपनी ज़िन्दगी की बुनियाद उठाता है।

इंसान का देखना नाक़िस है

वह रास्ते जहाँ से इंसान इल्म हासिल कर रहा है उन पर अगर ग़ौर करें तो नाक़िस नज़र आएंगे। मिसाल के तौर पर इंसान का देखना नाक़िस है। हर चीज़ को नहीं देख सकता अगर रोशनी में देख सकता है तो अंधेरे में नहीं देख सकता हालाँकि बिल्ली अंधेरे में भी देखती है। फिर हम एक ख़ास हद तक देखते हैं उससे ज़्यादा नहीं देख सकते जबकि परिन्दे मसलन उक़ाब कई-कई फ़लांग के फ़ासले से देख सकता है। इस वक़्त हवा के अंदर जो हमारे सामने है अरबों और खरबों छोटे-छोटे ज़र्रात व जरासीम हैं मगर हमें नज़र नहीं आते अगर हमें नज़र आते तो शायद हमारा जीना मुश्किल हो जाता। इसलिए अल्लाह तआला ने हमें एक ख़ास हद तक देखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। उससे ऊपर नीचे नहीं देख सकते लेकिन अगर माइक्रोस्कोप से देखें तो वे साफ़ नज़र आते हैं बल्कि आजकल कई कैप्सूल ऐसे हैं कि अगर आप उन्हें खोलकर मेज़ पर रखें तो वह आपको एक पाउडर की शकल में नज़र आएंगे मगर माइक्रोस्कोप से देखें तो वे छोटे-छोटे जरासीम नज़र आएंगे जो हरकत कर रहे होंगे। ज़ाहिर है आँख समझती है कि यह पाउडर है लेकिन माइक्रोस्कोप की आँख बताती है कि वह ज़िन्दा जरासीम हैं जो हरकत कर रहे हैं। बस इंसान का देखना पूरा नहीं। देखता है मगर ख़ास हद और क़ैद में देखती है उससे ऊपर नीचे नहीं देखती। बस साबित हुआ कि इंसान का देखना कामिल नहीं बल्कि नाक़िस है।

देखिए सेंध से बचने के लिए जो अलार्म लगे हुए होते हैं उनके एक तरफ़ ट्राँसमीटर लगा हुआ होता है और दूसरी तरफ़

रिसीवर होता है और बीच में किरनें पार होती रहती हैं लेकिन आम आदमी इसको नहीं देख सकता। जब चोर गुज़रता है और किरनें कट जाती हैं तो फ़ौरन अलार्म बज जाता है और चोर पकड़ा जाता है फिर भी इसको ज़ाहिरी आँख से नहीं देख सकते। यह कुछ मिसालें इसीलिए दीं कि वाज़ेह हो जाए कि इंसान का देखना नाक़िस है।

इंसान का सुनना नाक़िस है

इंसान के सुनने पर ग़ौर कीजिए। हम कुछ चीज़ों की आवाज़ सुनते हैं मगर हर आवाज़ नहीं सुन सकते। देखिए आज इतनी तरक़्क़ी के बावजूद मुख़्तलिफ़ लैबाट्रियों में कुत्ते और बिल्लियाँ पाली जाती हैं। सांइसदान कहते हैं कि ज़लज़ले के आने से पहले कुछ आवाज़े ज़मीन से निकली शुरू हो जाती हैं जिनको इंसान महसूस नहीं कर सकता मगर जानवर उनको महसूस करते हैं। जानवर उछलना कूदना शुरू कर देते हैं और इशारा हो जाता है कि कोई ज़लज़ला आने वाला है। जो आवाज़ें इंसान नहीं सुन सकता वे जानवर सुनते हैं। इतनी मामूली आवाज़ें जानवर सुन लेते हैं मगर हम नहीं सुन सकते। हमारे अपने सुनने की एक फ्रीकुवेन्सी बैन्ड है। उस बैन्ड के अंदर अंदर आवाज़ होगी तो हम सुनेंगे वरना नहीं सुनेंगे।

इसी तरह कई और आवाज़ें इंसान नहीं सुन सकते। मसलन चूहों के लिए एक इलैक्ट्रानिक आला बनाया गया है जिसका नाम 'बाय बाय रैट' रखा गया है। 'बाय बाय रैट' एक आवाज़ों का निज़ाम है। इलैक्ट्रानिक आवाज़ को वह एक ऐसी फ्रीकुवैंसी से

निकालते या फेंकते हैं कि अगर आम इंसान उस जगह खड़ा हो तो उसे पता नहीं चलता कि यह क्या है मगर चूहे के दिमाग़ पर वह आवाज़ इस तरह पड़ रही होती है जैसे हथौड़े पड़ रहे हों। थोड़ी देर में चूहें उस जगह से भाग जाते हैं। यह रैट एक्सपैलर बनाया गया है। अब देखिए हम इसकी आवाज़ को नहीं सुन सकते मगर चूहा इस आवाज़ को सुनता है और उसके लिए इस जगह रहना मुसीबत बन जाता है यहाँ तक कि वह उस जगह से भाग जाता है। मालूम हुआ कि इंसान हर आवाज़ को नहीं सुन सकता। उसका एक बैंड है जैसे रेडियो के बैंड होते हैं। मसलन यह शार्ट वेज़ है, यह मीडियम वेज़ है। अब अगर हम शार्ट वेज़ पर रेडियों को ऑन करते हैं तो शार्ट को रिसीव करता है मगर मिडियम वेज़ को रिसीव नहीं करता और अगर मिडियम वेज़ पर उसको सैट कर दें तो वह शार्ट वेज़ को रिसीव नहीं कर सकता। इस तरह हमारी सुनने व देखने का एक बैंड है। उस बैंड के अंदर तो हम काम कर सकते हैं उससे आगे नहीं कर सकते। बताने की मक़सद यह था कि इंसान अपने ज़हन में जो मालूमात जमा करता है तो वे इन ज़रियों से हासिल करता है। जब ये इल्म के ज़रिए ही नाक़िस और कमज़ोर हैं तो उनसे मिलने वाली मालूमात भी कमज़ोर होंगी।

ज़िंदगी गुज़ारने के दो रास्ते

ज़िंदगी गुज़ारने के दो रास्ते हैं। अपने तजुरिबों और मुशाहिदों पर ज़िंदगी गुज़ारना और अपने ख़ालिक़ व मालिक के हुक्मों के

मुताबिक़ ज़िंदगी बसर करना। हम पहले जाएज़ा ले चुके हैं कि जिस तरह इंसान के इल्म के ज़रिए कमज़ोर और ज़ईफ़ हैं उसी तरह उसको तजुरिबे भी कमज़ोर और ज़ईफ़ हैं। अपने तजुरिबों को बुनियाद बनाने के बजाए जो इंसान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्मों को बुनियाद बनाएगा वह यक़ीनन कामयाब होगा। मसलन अगर कोई इंजीनियर किसी मशीन को बनाए तो वही बेहतर जानता है कि यह मशीन कैसे बेहतर काम कर सकती है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस मशीन (इंसान) को बनाया तो वही बेहतर जानता है कि यह कैसे बेहतर काम करेगी। आमतौर पर बाहर के मुल्क से कोई मशीन मंगाई जाए तो वे लोग मशीन भी भेजते हैं, मशीन के साथ इंजीनियर भी भेजते हैं और एक किताब भी भेजते हैं। वह इंजीनियर आता है और मशीन को लगाता है फिर मशीन को चलाता है फिर वह मुक़ामी लोगों को ट्रेनिंग देता है कि जिस तरह मैं काम कर रहा हूँ अगर मेरे बाद इसी तरह तुमने किया तो तुम कामयाब होगे अगर इसमें कोताही करोगे तो नाकाम होगे और अगर कहीं अटक जाओ तो रहनुमाई करने वाली किताब है इसको पढ़ लेना। इस मशीन के बारे में सारी बातें इसके अंदर लिखी हुई हैं। यह कहकर वह चला जाता है। अगर इस मिसाल को मुसलमान अपने दिमाग़ रखें तो हक़ीक़त ज़िंदगी को समझना आसान हो जाता है। अल्लाह तआला ने इंसान की मशीन को बनाया और अंबिया अलैहिमुस्सलाम को भेजा। उनमें आख़िर में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। आप इंसानों के इंजीनियर बनकर तशरीफ़ लाए और आप पर क़ुरआन पाक यानी इंसानों की ज़िंदगी के लिए किताब व रुश्द व हिदायत नाज़िल हुई।

आपने उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी और सहाबाए किराम से कहा कि ऐ लोगो! जिस तरह मैं ज़िंदगी गुज़ार रहा हूँ अगर तुम इस तरह ज़िंदगी गुज़ारोगे तो कामयाब हो जाओगे और फिर यह भी फ़रमाया कि मैं अपने पीछे हिदायत की किताब छोड़े जा रहा हूँ। अगर तुम उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारोगे तो कामयाब होगें और वाक़ई सही बात है कि क़ुरआन पाक सच्चाइयों को मजमूआ है, हक़ीक़तों का ख़ज़ाना है जो कि आज हमारे पास मौजूद है जब कि नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सुन्नत हमारे लिए नूर का मीनार है।

इल्म की अहमियत

दीने इस्लाम में इल्म हासिल करने की बड़ी अहमियत बयान की गई है कि इतनी अहमियत कभी किसी ने बयान नहीं की। चौदह सौ साल पहले जब अरब के लोग वहशी और जाहिल थे, क़ैसर व किसरा उन पर हुकूमत करना पसंद नहीं करते थे बल्कि मशहूर इतिहासकार गबन अपनी किताब में लिखता है :

At that time Arabia was the most degraded nation of the world.

> **उस वक़्त अरब दुनिया की ज़लील तरीन और हक़ीर तरीन क़ौम थी।**

उन लोगों में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को भेजा और नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने उन्हें अल्लाह की तरफ़ दावत दी। आप ने इस जाहिल क़ौम को इल्म के बारे में फ़ज़ाइल सुनाए। फ़रमाया,

﴿طلب العلم فريضة على كل مسلم و مسلمة.﴾

इल्म हासिल करना हर मुसलमान मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है।

फिर फ़रमाया,

﴿اطلبوا العلم من المهد الى اللحد.﴾

तुम इल्म हासिल करो पालने से लेकर क़ब्र में जाने तक।

इमाम ग़ज़ाली रह० का क़ौल है :

उलमा के क़लमों की स्याही शहीदों के ख़ून से भी ज़्यादा क़ीमती हुआ करती है।

अब बताइए इल्म की इतनी अहमियत कोई बता सकता है।

एक किताब पाकिस्तान में बहुत मशहूर हुई जिसका नाम था A ranking of the most influential personalities of the history. (तारीख़ में सबसे ज़्यादा असरदार हस्तियों की दर्जाबंदी) जिसे माइकल हार्ट ने लिखा और वह ईसाई था। उसने अपने हिसाब से तारीख़ा में जितने नामवर हज़रात गुज़रे हैं उनकी दर्जाबंदी की है। उस दर्जाबंदी में उसने सबसे पहले रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम लिखा है और इब्तिदाई जुमला बड़ा अजीब लिखता है कि :

कुछ पढ़ने वाले हैरान होंगे कि मैंने मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तारीख़ की सबसे ज़्यादा असरअंदाज़ हस्तियों में सबसे आगे क्यों रखा है?

मैंने उन्हें सबसे पहले क्यों लिखा है। उसके दिल दलील बड़ी

प्यारी देता है। लिखता है कि दुनिया में जितने भी नामवर लोग आए अगर उनकी ज़िंदगियों के हालात को आप पढ़ें तो वे अपने लड़कपन, जवानी के दौर में अपने वक़्त के बेहतरीन तालीमी इदारों में किसी उस्ताद के पास तालीम पाते नज़र आते हैं। न्युटन इतना बड़ा साइंसदान था मगर अपने वक़्त के उस्तादों के पास तालीम पाता नज़र आता है तो ये लोग अपने वक़्त की बेहतरीन युनिर्वसटियों में, बेहतरीन कालेजों में और बेहतरीन इदारों में तालीम पाते नज़र आते हैं मगर एक हस्ती पूरी काएनात में ऐसी मौजूद है जो सारी ज़िंदगी शार्गिद बनकर किसी उस्ताद के सामने बैठी नज़र नहीं आती। फिर उसने इंसानीयत को इल्म के ज़ेवर से सजाया। इस हक़ीक़त ने मजबूर कर दिया कि इस दर्जेबंदी में मैं उसे सबसे पहले लिखूँ। वाक़ई इस बात में कोई शक नहीं। देखिए एक मोटी सी बात पर ग़ौर करें कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़िंदगी में ख़ित्ताए अरब से बाहर क़दम नहीं रखा। लड़कपन में तिजारत के लिए तशरीफ़ ले गए थे लेकिन नबुव्वत के बाद आपने मुल्क अरब से बाहर क़दम ही नहीं रखा और आपकी नबुव्वत के ज़माने में सहाबाए किराम आप ही के गिर्द जमा रहे। कोई उनमें से क़ैसर व किसरा की हुकूमतों के पास मैनेजमैंट का कोर्स करने नहीं गया, एक्नामिक्स का कोर्स करने नहीं गया। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी वहीं रहे और आपके सहाबा भी आपके पास रहे। उसके बाद उन सहाबा के अंदर ऐसी सिफ़ात आ गयीं, ऐसे कमालात आ गए कि उन्होंने क़ैसर व किसरा का ताज छीना और इतनी बड़ी सलतनत को

उन्होंने बड़ी मात दी। दुनिया को उन्होंने दुनिया को जीतना और दुनिया का निज़ाम चलाना सिखाया। यह सब कुछ उन्होंने कहाँ से सीखा था। यह वही के ज़रिए अल्लाह तआला ने अपने महबूब को सिखाया था और सहाबाए किराम ने इन तालीमात को अपने पल्ले बाँध लिया था।

अजीब वाक़िआ

मुअज़्ज़िज़ सामेइन! इल्म के बारे में जितनी अहमियत रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बतलाई है। यक़ीन जानिए इतनी अहमियत किसी और ने नहीं बताई। हम एक दफ़ा कोर्स कर रहे थे। उसका मौज़ू था 'इफ़ैक्टिव मैनेजर' और इंगलैंड के मि० बोरोडी उस कोर्स के टीचर थे जो एक ही वक़्त में कई युनीवर्सिटियों में विज़िटिंग प्रोफ़ेसर थे। कैलीफ़ोर्निया की युनीवर्सिटी, इंगलैंड की युनीवर्सिटी, जर्मनी की युनीवर्सिटी और हौलैंड की युनीवर्सिटी। इतना क़ाबिल और माहिर बंदा हमें लैक्चर दे रहा था। लैक्चर के दौरान उन्होंने इल्म के बारे में बात की और बात करते करते कहने लगे कि हमारे साइंसदानों ने यह बात महसूस की कि आदमी सिर्फ़ पढ़ने के ज़माने में ही नहीं पढ़ता बल्कि अपने पेशे में आकर भी पढ़ता है मतबल यह कि सारी ज़िंदगी पढ़ पड़ता है। उसने यह बात बड़े नख़रे से की जैसे कोई बड़ी रिसर्च वाली बात की हो। जब उसने यह बात की तो मैं खड़ा हुआ। मैंने कहा कि मैं तुम्हें अपने आक़ा रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस सुना दूँ। उसने कहा ज़रूर सुनाओ। मैंने यह हदीस सुनाई

कि इल्म हासिल करो पालने से लेकर क़ब्र में जाने तक। जब मैंने यह हदीस सुनाई तो यक़ीन कीजिए कि उसने लैक्चर रोका और ब्रीफ़केस खोला, अपनी डायरी निकाली और मुझे कहा कि आप यह हदीस मुझे लिखवा दें। मैं आइंदा अपने लैक्चर में यह हदीस पढ़कर लोगों को सुनाया करूंगा कि चौदह सौ साल पहले मुसलमानों के नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इल्म की इतनी अहमियत बतलाई है, सुब्हानअल्लाह।

इल्म कैसे हासिल होगा

अब यह इल्म कैसे हासिल होगा। इसके लिए मेहनत करनी पड़ेगी। अरबी का मक़ूला है,

﴿من طلب فقد وجد.﴾

जिसने तलब किया बस बेशक उसने पा लिया।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿ليس للانسان الا ما سعى﴾

इंसान के लिए वही कुछ है जिसकी कोशिश करता है।

हम अपनी ज़िंदगी अपने हाथों से बनाते हैं या अपने हाथों से अपनी ज़िंदगी बिगाड़ते हैं। यह पक्की बात है कि मेहनत ऐसी मिठास है कि ज़िंदगी में उसको जितना दाख़िल करते जाएंगे, ज़िंदगी उतनी मीठी होती जाएगी।

पिछले बुज़ुर्गों की मेहनत के वाक़िआत

इमाम शाफ़ई रह० का वाक़िआ

हमारे पहले के बुज़ुर्गों ने अपनी ज़िंदगियों में इतनी मेहनत की कि आज आम आदमी उन वाक़िआत को सुनकर हैरान रह जाते हैं। आप अंदाज़ा कर सकते हैं कि इमाम शाफ़ई रह० तेरह साल की उम्र में इमाम शाफ़ई बन चुके थे। तेरह साल की उम्र में क़ुरआन व हदीस के उलूम को हासिल कर चुके थे और क़ुरआन पाक का दर्स देना शुरू कर दिया था। यह उनकी मेहनत थी, यह उनका शौक़ था कि इतनी कम उम्री में उन्होंने इल्म के इतने बड़े बड़े समुंद्र भी पार कर लिए थे।

मुहम्मद बिन क़ासिम रह० की वाक़िआ

मुहम्मद बिन क़ासिम रह० की क्या उम्र थी सत्रह साल। आज सत्रह साल के बच्चे को घर का ज़िम्मेदार बना दें तो वह घर को ठीक तरह से चला नहीं सकता और वह सत्रह साल का बच्चा कमांडर इन चीफ़ बना हुआ था और फ़ौज को लेकर जा रहा है। कहाँ? जहाँ राजा दाहिर की मज़बूत हकूमत थी। मैंने सिंध में वह मैदान देखा है जहाँ राजा दाहिर और मुहम्मद बिन क़ासिम रह० की लड़ाई हुई थी। मैं उसकी वुसअतों के देखकर हैरान हो रहा था। उस वक़्त मेरी अजीब कैफ़ियत थी। मैंने कहा कि यह नौजवान कहाँ से चला, उसके साथ कोई तर्बियत पाई हुई फ़ौज

नहीं थी। यह भी एक हकीकत है बल्कि हिज्जाज बिन यूसुफ़ ने उसे बुलाकर कह दिया कि मेरी फ़ौज दूसरे मुहिमों में मसरूफ़ है मगर मुझे यह बात पहुँचाई गई कि हमारी कुछ औरतें आ रही थीं। राजा दाहिर के डाकुओं ने क़ाफ़िले को लूट लिया। एक लड़की ने कहा मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। चुनाँचे मुहम्मद बिन क़ासिम रह० ने कार्नर मीटिंग कीं, नौजवानों को इकट्ठा किया। ये प्रोफ़ेशनल फ़ौजी नहीं थे। ये ईमान व जज़्बे के घोड़े पर सवार हुए। वे नौजवान इकट्ठे हुए और उन्होंने कहा कि हम आपके साथ चलते हैं। किताबों में लिखा है कि मुहम्मद बिन क़ासिम रह० के ज़हन में यह बात इतनी समाई हुई थी कि वह बैठे बैठे चौंक उठते थे और कहते थे, ﴿لبيك يا اختى، لبيك يا اختى﴾ मेरी बहन मैं हाज़िर हूँ, मेरी बहन मैं हाज़िर हूँ। ये कुछ नौजवानों की जमात वहाँ पहुँची और राजा दाहिर की लोहे में डूबी हुई फ़ौज के छक्के छुड़ा दिए फिर यही नहीं उसको कंट्रोल कर लिया बल्कि उसको काबू में करके अपनी सैकेंड लाईन के हाथ में उसने कमांड दे दी और खुद आगे मार्च किया। खुद कंट्रोल करना और चीज़ होती है मगर इतनी खुद ऐतिमादी होना कि उसको अपनी सैकेंड लाईन के हवाले कर दिया और फिर आगे चलते चलते सिंध से लेकर मुल्तान तक इस्लाम का झंडा लहराता रहा।

कामयाब ज़िंदगी

आज अगर हमारे नौजवान के अंदर यह शौक़ तरक़्क़ी कर जाए तो मेरे दोस्तो! दुनिया की कोई ताक़त हमारी तरफ़ मैली आँख नहीं देख सकती। आज इस बात की ज़रूरत है कि हम

मेहमत को अपनाएं। आराम तलबी की ज़िंदगी कामयाब ज़िंदगी नहीं है। कामयाब ज़िंदगी हमेशा मेहनत, लगन और मुजाहिदे की ज़िंदगी हुआ करती है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० का वाक़िआ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० के पास हदीस का इल्म सीखने के लिए इतना बड़ा मजमा हुआ करता था कि एक दफ़ा दवातों की तादाद को गिना गया तो चालीस हज़ार निकलीं। उस दौर में लाउड स्पीकर तो होते नहीं थे वह हदीस सुनाते तो कुछ लोग नमाज़ के मुकब्बिर की तरह उनके अलफ़ाज़ को ऊँची आवाज़ से दोहरा देते ताकि पूरे मजमे तक आवाज़ पहुँच जाए। इन मुकब्बिर हज़रात की तादाद बारह सौ हुआ करती थी। पूरा मजमा कितना बड़ा होगा। इतने बड़े मजमे में बैठकर हदीस का इल्म पढ़ाया।

एक मुहद्दिस का वाक़िआ

एक मुहद्दिस के ज़िदंगी के हालात में लिखा है कि उन्होंने इतनी किताबें लिखीं कि उनके पैदा होने के दिन से लेकर उनके मरने तक अगर सारे दिनों को गिन लिया जाए तो हर दिन के अंदर दस सफ़हात बनते हैं। यह कोई आसान काम नहीं है। पैदा होने से लेकर मरने तक पूरे दिन गिन लिए जाएं कि इतने हज़ार दिन ज़िंदा रहे और इतने उन्होंने सफ़हात लिखे और आपस में इन्हें तक़सीम किया जाए तो हर दिन में औसत दस सफ़हात बनते

हैं। अब बारह तेरह साल तो इल्म हासिल करने में ही गुज़रे होंगे अगर वे निकाल दें तो ये दस की बजाए बीस हो जाएंगे। बीस सफ़हात का हमारे लिए एक दिन में समझकर पढ़ना मुश्किल होता है बजाए उसे नए सिरे से तर्तीब व तालीफ़ कर लिया जाए। जो लोग तसनीफ़ व तालीफ़ करते हैं वे समझते हैं कि एक दिन में एक सफ़हा लिखना भी आसान काम नहीं होता। उन्होंने कितनी मेहनत की होगी।

वाक़िआत

इस्लाम के दौर का मशहूर घुमक्कड़ इब्ने मौक़ल अट्ठाईस साल तक घूमता रहा। आज उसको साहिबु मसालिक वल ममालिक वल मग़ादिर वल मुहालिक कहते हैं।

- हाफ़िज़ अबुल क़ासिम सुलेमान बिन अहमद तिबरानी साहब रह० मुआजिम सलासा तलबे हदीस में तैंतीस साल घूमे और एक हज़ार मशाइख़ से इल्म हासिल किया।
- अबू हातिम राज़ी रह० ने खुद बयान किया कि हदीस के इल्म को हासिल करने के लिए नौ हज़ार मील पैदल चले।
- इब्ने मक़री रह० ने एक किताब का नुस्ख़ा हासिल करने के लिए 840 मील का सफ़र पैदल तय किया।
- हाफ़िज़ अबू अब्दुल्लाह अस्फ़ेहानी रह० ने हदीस की तलब के लिए 120 जगहों का सफ़र किया।
- इल्मे अदब के इमाम सैबविया रह० शुरू में हम्माद बिन सलमा रह० के शार्गिद थे। उस्ताद ने कहा ﴿ليس ابا الدرداء﴾

शार्गिद ने लिखा ﴿ليس ابو الدرداء﴾ उस्ताद ने ग़लती पर पकड़ की। सैबविया रह० ने इल्मे नहू पढ़ने के लिए इतनी मेहनत की कि आज हर तालिब इल्म उनका नाम लेकर नहवी बनता है।

- अल्लामा इब्ने जौज़ी रह० ने एक बार मिंबर पर खड़े होकर कहा कि मैंने अपनी उंगलियों से दो हज़ार जिल्दें लिखी हैं। उनकी वसीयत के मुताबिक़ क़लमों के तराशे से ग़ुस्ले आख़िरत का पानी गर्म किया गया।
- इब्राहीम हर्बी रह० पचास साल तक इमामे अदब साअलब रह० की हर महफ़िल नात व अदब में हाज़िर रहे।
- इमाम राज़ी रह० ने एक बार कहा :

  "अल्लाह की क़सम! मुझे खाने पीने के वक़्त में इल्मी मशाग़िल के छूट जाने पर अफ़सोस होता है क्योंकि वक़्त बहुत क़ीमती और अज़ीज़ है।"
- इमाम ग़ज़ाली रह० की तालीक़ात जो उन्होंने अबू नस्र इस्माईली रह० से लिखी थीं लुट गयीं। आपने डाकुओं के सरदार से वापस मांगी। वह हँस पड़ा कि लड़के तुमने ख़ाक पढ़ा कि एक काग़ज़ न रहा तो तुम कोरे हो गए। तालीक़ात तो मिल गयीं मगर इमाम ग़ज़ाली रह० ने मसाइल को ज़बानी याद करना शुरू कर दिया यहाँ तक कि तीन साल में हाफ़िज़ बन गए।
- क़रतबी रह० से नक़ल किया गया है कि इमाम शातबी रह० ने जब क़सीदा शातबिया लिखा तो उसे लेकर बैतुल्लाह

शरीफ़ के बारह हज़ार तवाफ़ किए जब कि हर तवाफ़ के साथ चक्कर थे और दो रकूअत वाजिब तवाफ़ पढ़ीं। जब दुआ के मुक़ामों पर पहुँचते तो कहते,

اللهم فاطر السموات والارض عالم الغيب والشهادة
رب هذا البيت العظيم انفع بها كل من قرأها.

साइंसदानों की मेहनत के वाक़िआत

न्युटन का वाक़िआ

दुनिया में जिस किसी ने शोहरत और नामवरी हासिल की उसने मेहनत की है। चाहे दीन में कोई ऊपर पहुँचा या उलूम दुनिया कोई ऊपर पहुँचा। मेहनत उनको करना पड़ी। न्युटन के हालात में लिखा है कि उसने एक मसौदा तहक़ीक़ी मज़मून लिखा और वह रखकर लैट्रिन में चला गया। पीछे चिराग़ जल रहा था तो उसका कुत्ता जिसका नाम उसने टोनी रखा हुआ था, अंदर आया और उसने छलांग लगाई तो चिराग़ काग़ज़ों के ऊपर गिरा और पूरे के पूरे काग़ज़ जल गए। जब वापस आया और उसने देखा कि पूरे का पूरा तहक़ीक़ी मज़मून जलकर राख बन गया तो उसने सिर्फ़ इतना कहा, 'टोनी तूने मेरा काम बहुत बढ़ा दिया।' उसके बाद उसने फिर नए सिरे से मज़मून लिखना शुरू कर दिया और कई महीने की मेहनत के बाद दोबारा उसे लिखा। वाक़ई धुन

और ध्यान पड़ी नेमत है जिसको नसीब हो जाए।

आइन्सटाइन का वाक़िआ

दुनिया के मशहूर साइंसदान आइन्सटाइन के बारे में लिखा हुआ है कि बचपन में जब स्कूल में पढ़ने जाता तो उसको पैसों का हिसाब नहीं आता था। वह अक्सर अवक़ात कंडक्टर से लड़ता था कि तूने इतने पैसे लेने थे और इतने पैसे वापस करने थे। जब हिसाब किया जाता तो कंडक्टर ठीक होता था। जब दो चार बार ऐसा हुआ तो एक कंडक्टर ने कह दिया कि तू भी क्या ज़िंदगी गुज़ारेगा तुझे तो जोड़-घटा नहीं आती। वह बात उसके दिल में बैठ गई तो कहने लगा अच्छा मैं हिसाब पढूँगा। अब उसने हिसाब पर मेहनत करना शुरू कर दी। मेहनत करते करते वह वक़्त भी आया कि उसे 'थ्योरी आफ़ रिलेटिविटी' का नज़रिया पेश करके दुनिया के साइंस में एक इंक़लाब पैदा कर दिया। सच है कि मेहनत का फल ज़रूर मिलता है।

ज़ाती तजुर्बात और वाक़िआत

बोंड में सेकेंड आने वाले लड़के का वाक़िआ

एक नौजवान ने मैट्रिक का इम्तिहान दिया और वह अच्छे नंबरों से कामयाब हुआ। उसके वालिद और वालिदा दोनों बूढ़े हो चुके थे। उसका वालिद बीमार भी था और कमज़ोर भी था और काम भी नहीं कर सकता था। बच्चे ने कहा कि कालेज में दाख़िला दिलवा दें। वालिद ने कहा कि हम तो खाने-पीने को

तरसते हैं, बेटा तू दुकान बना ताकि कुछ हमारे लिए खाने पीने का बंदोबस्त हो। बाप ने तीन हज़ार रुपए से उसके लिए अपने घर की बैठक में एक पर्चून की दुकान बनाई। वह बेचारा स्कूल में अव्वल आने वाला बच्चा पर्चून की दुकान चलाने लगा। साथ ही साथ उसको पढ़ने का शौक़ भी था। उसने एफ़०एस०सी० की किताबें ले लीं और चोरी छुपे पढ़नी शुरू कर दीं। वालिद को पता नहीं, वालिदा को पता नहीं। लड़का फ़ारिग़ वक़्त में दुकान पर किताब पढ़ता। जब कोई ग्राहक आता तो उसे सौदा दे देता। ख़ैर उसने एफ़०एस०सी० की फ़िज़िक्स, कैमिस्ट्री और मैथ की सारी किताबें प्राइवेट ख़ुद पढ़ लीं। कहीं-कहीं अटकने लगा तो उसने एक प्रोफ़ेसर साहब से कहा कि मैं पढ़ना चाहता हूँ, मुझे प्रैक्टिकल भी करने हैं। आप मेरी मदद करें। प्रोफ़ेसर साहब ने कहा मैं प्रैक्टिकल करवाता हूँ, मुझे क्या ऐतिराज़ हो सकता है मुझे तो ख़ुशी होगी। अब देखो उस बच्चे ने कितनी अक़्लमंदी दिखाई कि जिस दिन प्रैक्टिकल होता अपने सौदा लाने का वही दिन तय करता और चार दिन पहले ही वालिद को कहता कि मुझे फ़लां दिन सौदा लाना है, वालिद कहता, बहुत अच्छा। उस दिन यह लड़का पैसे लेता और बाज़ार जाता और एक बहुत ही दीनदार और परहेज़गार आदमी को लिस्ट देता कि यह सौदा निकालकर रखो और मैं अभी आता हूँ। जितनी देर में दुकानदार सौदा निकालता यह लड़का उस वक़्त कालेज में जाकर प्रैक्टिकल कर लेता। प्रैक्टिकल करके वापस आता तो सौदा उठाकर घर आता। बाप को पता न चलता कि बेटा सिर्फ़ सौदा लेकर आया है या सौदे के साथ-साथ प्रैक्टिकल भी करके आया है। यहाँ तक कि

इम्तिहान शुरू हो गया। इम्तिहान भी उसने सौदे की आड़ में दे दिया। एफ़०एस०सी० का प्राइवेट इम्तिहान दे दिया। आप यक़ीन करें कि यह लड़का प्राइवेट इम्तिहान देने के बाद लाहौर बोर्ड में सेकेंड आया। जब अख़बार में ख़बर आई तो मौहल्ले के लोग वालिद को मुबारकबाद देने लगे। बाप कहता है कि मेरा बेटा तो पढ़ता ही नहीं, वह तो दुकानदारी करता है। लोग कहते कि तेरा बेटा बोर्ड में सेकेंड आया है और वालिद साहब कहते हैं कि मेरा बेटा पढ़ता ही नहीं। यहाँ तक कि लोगों ने तसल्ली दिलाई कि मामला यूँ था। फिर कुछ लोगों ने मिल मिलाकर कुछ एक साहिब हैसियत लोगों को सूरते हाल बताई और उनको कहा कि अगर अपनी तरफ़ से कोई प्राइवेट स्कालरशिप दे दें तो यह लड़का भी पढ़ जाएगा और माँ-बाप को भी कुछ मिल जाएगा। लिहाज़ा उसके लिए दो तीन हज़ार रुपए का बंदोबस्त किया गया। इस स्कालरशिप में से कुछ तो उसके माँ-बाप को दिया कि आप यह ले लें और मज़े से बैठकर खाएं, लड़के को युनीवर्सिटी में दाख़िल करवाएं ताकि वहाँ इंजीनियरिंग कर सके। उसने इंजीनियरिंग युनीवर्सिटी लाहौर में दाख़िला लिया। सिविल इंजीनियरिंग में कोर्स किया। आज वह लड़का एक्सेन लगा हुआ है। गाड़ी उसको मिली हुई, कोठी उसको मिली हुई है और उसके माँ-बाप उस कोठी में रहते हैं। यह सच्चा वाक़िआ है। इससे क्या नतीजा निकला कि जब इंसान दिल में पक्का इरादा कर लेता है तो वह काम कर गुज़रता है। सच है कि ख़ुदा उनकी मदद करता है जो अपनी मदद अपने आप करते हैं।

लेडी डाक्टर का वाक़िआ

हमारे कालेज में इस्लामियात के एक प्रोफ़ेसर थे। उनकी बेटी ने मैट्रिक का इम्तिहान अच्छे नंबरों से पास कर लिया। बेटी के दिल में शौक़ था कि लेडी डाक्टर बनूं। वालिद ने कहा कालेज में लड़का-लड़की एक साथ पढ़ते हैं मैं नहीं पसंद करता कि मेरी बेटी भी वहीं पढ़े। छंग में उस वक़्त लड़कियों का साइंस कालेज नहीं था सिर्फ़ आर्टस का था। साइंस की क्लासे नहीं थीं। उस लड़की ने कहा अब्बू मैं पढ़ना चाहती हूँ। बाप ने कहा अगर प्राइवेट पढ़ सकती हो तो पढ़ लो। लिहाज़ा बाप ने मैडिकल की सारी किताबें बेटी को लाकर दे दीं और उसकी बेटी ने प्राइवेट इम्तिहान के लिए तैयारी शुरू कर दी। बीच में उसको कहीं-कहीं मुश्किलें पेश आयीं तो उसने कहा कि अब्बू मुझे फ़लां चीज़ नहीं आती किसी प्रोफ़ेसर से कहें कि वह मुझे समझा दे। अब्बू ने कहा कि मैं तो अच्छा नहीं समझता कि कोई प्रोफ़ेसर आपको पढ़ाए। उस लड़की ने कहा अब्बू आप मुझे समझा दें। आप अंदाज़ा कीजिए कि वह इस्लामियात के प्रोफ़ेसर अपनी बेटी से मेडिकल की मुश्किलें समझते और कालेज में जाकर कालेज के प्रोफ़ेसर से पूछते कि इनका जवाब क्या है? इस्लामियात के प्रोफ़सर समझते क्या होंगे? सवाल को क्या समझते होंगे, जवाब को क्या समझते होंगे? लेकिन जो थोड़ा बहुत इशारे वहाँ से लेकर आते वह आकर बेटी को देते। बेटी उसे पिकअप कर लेती। यहाँ तक कि बेटी ने तैयारी की। मैडिकल का प्राइवेट इम्तिहान दिया यहाँ तक कि उसके इतने नंबर आए कि उसने लाहौर में फ़ातिमा जिन्नाह

मैडिकाल कालेज में दाखिला लिया जो कि लड़कियों का कालेज है। बाद में वह लड़की लेडी डाक्टर बन गई।

नौबल ईनाम पाने वाले डा० अब्दुस्सलाम का वाक़िआ

मैं आपको और ऐसी बात सुना दूँ। मुझे यक़ीन है कि आपने पहले नहीं सुनी होगी। मुझे एक बार कालेज के प्रन्सिपल की तरफ़ से ख़त मिला कि फ़लां तारीख़ को हमने एक फ़ंक्शन करता है और आपको इसमें रोल आफ़ ऑनर पेश करना है और रोल आफ़ ऑनर को पेश करने के लिए हमने अपने मुल्क के एक नामवर साइंसदान अब्दुस्सलाम ख़ुर्शीद को बुलाया है (जो हालाँकि ग़ैर-मुस्लिम है लेकिन पाकिस्तानी है उसको कनाडा से बुलवाया गया)। मैं उस वक़्त युनिर्वसिटी से छुट्टी लेकर कालेज पहुँचा। बहुत बड़ा फ़ंक्शन था। प्रिन्सिपल ने कहा कि इस बच्चे ने मेरे कालेज का बहुत बड़ा रिकार्ड बनाया है। मैं इस के लिए फ़ंक्शन भी शान के मुनासिब करूंगा। लिहाज़ा उसने अब्दुस्सलाम ख़ुर्शीद नौबल प्राइज़ पाने वाले को कालेज में बुलाया। वह भी इसी कालेज से पढ़े हैं जिससे मैंने पढ़ा है। ख़ैर अब्दुस्सलाम ख़ुर्शीद ने मुझे रोल आफ़ ऑनर पेश किया उसके बाद चाय की पार्टी में इकठ्ठे हुए, आपस में बातचीत हुई। हमारे एक प्रोफ़ेसर ने अब्दुस्सलाम ख़ुर्शीद से पूछ लिया कि आप नौबल प्राईज़ ऑनर कैसे बने? डाक्टर साहब ने कहा कि मैं बहुत मेहनती हूँ। प्रोफ़ेसर ने कहा कि साइंस के स्टूडेंट तो सारे ही मेहनती होत हैं, सारे ही

पढ़ाकू होते हैं, सारे की किताबी कीड़े होते हैं। उसने कहा नहीं मैं ज़्यादा मेहनती हूँ। इस पर प्रोफ़ेसर ने कहा डाक्टर साहब वह कौन सी मेहनत है जो दूसरे लड़के नहीं करते, सब साइंस पढ़ने वाले लड़के बड़े ज़हीन होते हैं, बड़ी मेहनत करते हैं। लेकिन नौबल प्राईज़ ऑनर तो नहीं बनते। डाक्टर साहब ने कहा नहीं मैं बड़ा मेहनती हूँ, फिर कहा मैं ज़हीन इतना नहीं हूँ मेहनती ज़्यादा हूँ।

प्रोफ़ेसर ने कहा नहीं नहीं आप ज़हीन ज़्यादा होंगे। उसने कहा कि मैं कह रहा हूँ मैं मेहनती ज़्यादा हूँ। उसने बड़ी अजीब मिसाल दी। डाक्टर अब्दुस्सलाम खुर्शीद ने कहा कि मैंने कैमिस्ट्री की एक किताब पढ़ी, वह मुझे समझ नहीं आई। मैंने फिर पढ़ी, मुझे समझ नहीं आई। मैंने तीसरी दफ़ा पढ़ा मुझे समझ नहीं आई यहाँ तक कि मैंने उसको किताब को शुरू से लेकर आख़िर तक 63 बार पढ़ा। वह किताब मुझे तक़रीबन हिफ़्ज़ याद हो गई। उसकी बात सुनकर हम हैरान हो गए कि ऐसा भी कोई बंदा हो सकता है कि जिसे एक किताब समझ में न आई तो वह उस किताब को 63 बार पढ़ता है। वाक़ई जिसके अंदर इतनी मेहनत का शौक़ हो तो वह हक़दार है कि उसे दुनिया में नोबल प्राईज़ दिया जाए।

मोहतरम सामेइन! मैंने यह आयत पढ़ी थी,

﴿وان ليس للانسان الا ما سعى وان سعيه يرى.﴾

इंसान के लिए वह कुछ है जो वह मेहनत करता है।

सब तलबा अपनी ज़िंदगी बनाने के इब्तिदाई दौर में हैं। इस वक़्त जो मेहनत आप करेंगे समाज में वही दर्जा पाएंगे। अगर इस सुनहरी मौक़े को आप गंवा बैठते हैं तो मेरे दोस्तो! सारी उम्र

कर्लकी के धक्के खाएंगे। इसलिए कि इस मौके पर मेहनत के उनवान पर मैंने कुछ बातें हकीकी मिसालों के साथ आपके सामने अर्ज़ कर दीं ताकि आप के ज़हन में यह बात बैठ जाए कि आप अपने हाथों से अपनी ज़िंदगी को बनाएंगे या अपने हाथों से अपनी ज़िंदगी को बिगाड़ेंगे—

अमल से ज़िंदगी बनती है जन्नत भी जहन्नम भी
यह ख़ाकी अपनी फ़ितरत में नूरी है न नारी है

जो आप मेहनत करेंगे वही आपको बदला मिलेगा। अल्लाह तआला हम सबको एक जद्दो जहद वाली ज़िंदगी गुज़ारने की तौफ़ीक अता फ़रमाए ताकि हम अपने समाज के लिए, उम्मते मुस्लिमा के लिए, पूरी दुनिया के लिए कुछ काम कर जाएं।

सोचने की बात

हमारी ज़ात से लोगों को कोई फ़ायदा पहुँच जाए ताकि यह हमारी आख़िरत की निजात का ज़रिया बन जाए। कितनी अजीब बात है कि कूड़ा करकट, गंदगी, पाख़ाना और फ़ुज़ला जब ख़ुश्क हो जाए तो देहाती लोग उसे खेत में डालते हैं। कहते हैं कि जिस खेत में यह डाल दिया जाए तो पैदावार का काम करता है। मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि ऐ इंसान! सोच तो सही, हम जिसे निजासत और गंदगी और फ़ुज़ला कहते हैं उसे किसी खेत में डाल दिया जाए तो उसने खेती को फ़ायदा पहुँच दिया। हम अगर अपने साथी को फ़ायदा न पहुँचा सके तो फिर हम तो इससे भी गए गुज़रे हो गए। हमने ज़िंदगी गुज़ारनी है। अपनी ज़ात का फ़ायदा देखें, अपने दोस्त अहबाब, उम्मते मुस्लिमा और इंसानीयत

का फ़ायदा देखें और इंसानीयत को हम कुछ न कुछ देकर जाएं। लांग फ़ैलो ने एक अजीब बात कही :

बड़े लोगों की ज़िंदगियाँ हमें यह बात याद दिलाती हैं

कि हम भी अपनी ज़िंदगी को रोशन बना सकते हैं

और दुनिया से जाते वक़्त हम भी अपने पीछे

वक़्त की रेत पर अपने क़दमों के निशान छोड़ सकते हैं।

❋ ❋ ❋

तक़्वे की बरकतें

الحمد لله و كفي وسلام على عباده الذين اصطفي اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم الله الرحمن الرحيم

يا ايها الناس انا خلقنكم من ذكر وانثي وجعلنكم شعوبا وقبائل لتعارفوا

ان اكرامكم عند الله اتقكم. ان الله عليم خبير. سبحان ربك رب

العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

ज़मीन की ज़ीनत

आसमान की ज़ीनत सितारों से है, ज़मीन की ज़ीनत परहेज़गारों से है। ज़िंदगी का मक्सद अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की बंदगी और ज़िंदगी का मक्सद अल्लाह तआला की याद है।

ज़्यादा इज़्ज़त वाला कौन

फ़रमाया गया, ﴿يا ايها الناس﴾ ऐ इंसानो! ﴿انا خلقنكم من ذكر وانثى﴾ हम ने तुम्हें एक नर व मादा से पैदा किया है यानी एक माँ और बाप से पैदा किया है ﴿وجعلنكم شعوبا وقبائل لتعارفوا﴾ और फिर तुम्हारे कबीले और ख़ानदान इसलिए बनाए कि आपस में

पहचान हो सके। ﴿ان اكرمكم عند الله اتقكم﴾ बेशक तुम में से अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इज़्ज़त वाला वह है जो ज़्यादा अल्लाह से डरने वाला है। लिहाज़ा न गोरे को काले पर फ़ज़ीलत न अरबी को अजमी पर फ़ज़ीलत न अमीर को ग़रीब पर कोई फ़ज़ीलत है।

﴿ان اكرمكم عند الله اتقكم.﴾

बेशक तुम में से अल्लाह तआला के नज़दीक इज़्ज़त वाला वह है जो ज़्यादा मुत्तक़ी हो।

अल्लाह के क़ुर्ब का पैमाना

अल्लाह तआला का क़ुर्ब बंदों के साथ उनके तक़्वे के मुताबिक़ है। जो जितना परहेज़गार होगा वह उतना ही अल्लाह तआला के क़रीब होगा। इसको एक पैमाना बना दिया गया है। अल्लाह तआला के क़ुर्ब को मापना हो तो इंसान के तक़्वे से मापना चाहिए। इसी लिए फ़रमाया,

﴿ان اولياءه الا المتقون.﴾

उसके वली वही होते हैं जो मुत्तक़ी होते हैं।

औलिया को न कोई ग़म न ख़ौफ़ होगा

﴿الا ان اولياء الله لا خوف عليهم ولا هم يحزنون.﴾

जान लो कि जो अल्लाह तआला के वली होते हैं उन पर न कोई ख़ौफ़ होता है न कोई हुज़्न होता है।

ख़ौफ़ कहते हैं बाहर का डर और हुज़्न कहते हैं अंदर का

ग़म। न कोई बाहर का डर न कोई अंदर का हुज़्न। यह शान किस की है? औलिया अल्लाह की। वली कौन होते हैं?

﴿الذين آمنوا وكانوا يتقون.﴾

वे लोग जो ईमान लाए और तक़्वा इख़्तियार किया।

﴿لهم البشرىٰ في الحيوة الدنيا وفي الآخرة.﴾

उनके लिए बशारतें हैं दुनिया की ज़िंदगी में भी और आख़िरत में भी।

﴿لا تبديل الكلمت الله.﴾

अल्लाह के फ़ैसले बदलते नहीं हैं।

﴿ذلك هو الفوز العظيم.﴾

यह बहुत बड़ी कामयाबी है।

इंसान को चाहिए कि तक़्वा और परहेज़गारी को इख़्तियार करके अल्लाह तआला के दोस्तों में शामिल हो जाए।

वली कौन होता है

विलायत के दर्जात हैं। विलायत का एक हिस्सा हर कलिमा पढ़ने वाले को नसीब है। वली कौन होता है? अल्लाह का दोस्त होता है। अब आप लोगों में से पूछें कि आप लोगों में से जो अल्लाह का दुश्मन हो वह खड़ा हो जाए तो कोई भी नहीं खड़ा होगा। अल्लाह का शुक्र है हम सब अल्लाह के दोस्त हैं, अल्लाह का शुक्र है।

आम विलायत और ख़ास विलायत

विलायत का एक अदना दर्जा इंसान को ईमान लाने पर नसीब हो जाता है। मगर यह आम विलायत है। ख़ास विलायत हासिल करने के लिए तक़्वा इख़्तियार करना पड़ता है। उसके बग़ैर अल्लाह के यहाँ अमल भी क़ुबूल नहीं होते,

﴿انما يتقبل الله من المتقين.﴾

बेशक अल्लाह तआला मुत्तक़ियों के ही आमाल का क़ुबूल करता है।

क़ुरआन तक़्वे से सजा हुआ है

क़ुरआने हकीम में देखें तो हर चंद आयतों के बाद तक़्वे का ज़िक्र है। जैसे कोई आदमी थाल सजाता है तो मेवे ऊपर-ऊपर रखता है। इसी तरह अल्लाह ताअला ने तक़्वे के लफ़्ज़ से अपनी किताब को सजाया है। क़ुरआन पढ़ते चले जाएं तो मुत्तक़ियों का तज़किरा यूँ आएगा कि यह लफ़्ज़ जगमगाता नज़र आएगा बल्कि एक आयत के अंदर दो दफ़ा तक़्वा अपनाने का हुक्म दिया गया है। यह कितनी अजीब बात है कि मैं एक फ़िक़रे में एक बात को दो बार दोहराऊँ। ऐसा करने से इस बात की बड़ी अहमियत वाज़ेह होती है कि एक साँस में दो बार यह बात कह गया। अल्लाह तआला ने एक फ़िक़रे में दो दफ़ा तक़्वा अपनाने का हुक्म दिया। अल्लाह तआला का हुक्म देना कोई मामूली बात नहीं। ﴿يا ايها الناس اتقوا ربكم﴾ देखा ﴿اتقوا ربكم﴾ अम्र (हुक्म) का सेग़ा है। हुक्म दिया जा रहा है ﴿اتقوا ربكم﴾ अपने रब से डरो, तक़्वा अपनाओ।

يايها الناس اتقوا ربكم الذى خلقكم من نفس واحدة وخلق

منها زوجها وبث منهما رجالا كثيرا ونساء. واتقوا الله.

देखा शुरू में भी तक़्वा आयत के आख़िर में भी तक़्वा। एक दूसरी जगह फ़रमाया,

﴿ياايها الذين آمنو اتقوا الله ولتنظر نفس ما قدمت لغدواتقوا الله.﴾

यहाँ भी एक आयत में दो बार तक़्वे को अपनाने का हुक्म दिया गया है। इसकी अहमियत वाज़ेह हो जाती है।

तक़्वे की कोई हद नहीं

शरिअत ने हर चीज़ की हद तय कर दी लेकिन जहाँ तक़्वे का ज़िक्र आया तो मैदान खुला छोड़ दिया। फ़रमाया,

﴿فاتقو الله ما استطعتم.﴾

तुम तक़्वा इख़्तियार करो जितनी तुम्हारे अंदर ताक़त है।

﴿يا ايها الذين امنوا تقوا الله حق تقاته.﴾

ऐ ईमान वालो! तुम तक़्वा इख़्तियार करो जैसा कि तक़्वा इख़्तियार करने का हक़ है।

अल्लाहु अकबर तक़्वे की कितनी अहमियत वाज़ेह होती है।

तक़्वे के फ़ायदे

तक़्वा अजीब नेमत है और इसको अपनाने से नेमतों के दरवाज़े खुल जाते हैं, बरकतों के दरवाज़े खुल जाते हैं, गुनाह माफ होते हैं, बसीरत (समझ) अता होती है। क़ुरआने पाक में है ﴿ومن

﴿ومن يتق الله﴾ और जो कोई तक़्वे इख़्तियार करता है ﴿يكفر عنه سيئاته﴾ ﴿ويعظم له اجرا.﴾ अल्लाह तआला उसके गुनाहों को माफ़ कर देता है और उसके अज्र को बढ़ा देता है यानी उसके अज्र को बहुत ज़्यादा अता फ़रमाता है। ﴿يا ايها الذين امنوا ان تتقوا الله.﴾ ऐ ईमान वालों अगर तुम तक़्वा इख़्तियार करोगे तो ﴿يجعل لكم فرقانا﴾ वह तुम्हें कुव्वते फ़ारिक़ा अता फ़रमाएगा। फ़ुरक़ान क्या होता है? ऐसा नूर जो सही और ग़लत में फ़र्क़ कर देता है। ऐसी बसीरत अता कर दी जाती है, फ़ुरक़ान अता कर दिया जाता है।

﴿ان تتقوا الله يجعل لكم فرقانا.﴾

अगर तुम तक़्वा इख़्तियार करोगे तो तुम्हें फ़ुरक़ान अता कर देगा।

जब इंसान तक़्वा इख़्तियार करता है तो बरकतों के दरवाज़े खुल जाते हैं, अल्लाहु अकबर कबीरा।

बरकत क्या है

बरकत क्या चीज़ है? यह लफ़्ज़ अंग्रेज़ी की डिक्शनरी में तो नहीं मिलेगा। हाँ इसकी हक़ीक़त अल्लाह वालों की ज़िंदगी में नज़र आएगी। आज की दुनिया बरकत को माने या न माने हम मानते हैं, माशाअल्लाह।

जिस्म की ग़िज़ा

﴿ولو ان اهل القرى﴾ अगर यह बस्तियों वाले ईमान लाते हैं और तक़्वे को अपनाते हैं,

﴿لفتحنا عليهم بركت من السماء والارض.﴾

हम आसमान से और ज़मीन से बरकतों के दरवाज़े खोल देते।

दूसरी जगह फ़रमाया कि अगर यह किताब पर ईमान लाते और अमल करते,

﴿لاكلو من فوقهم ومن تحت ارجلهم.﴾

हम इनको वे नेमतें खिलाते जो ऊपर से उतरते हैं और वे नेमतें खिलाते जो पाँव के नीचे से निकलते हैं।

मुफ़स्सिरीन इसकी अजीब तफ़्सीर बयान करते हैं। फ़रमाते हैं कि इंसान दो चीज़ों का नाम है। एक जिस्म और एक रूह। जिस्म मिट्टी से बना है ﴿من طين لازب﴾ जिस्म मिट्टी से बना है और उसकी जरूरतें भी मिट्टी से निकलती हैं। मसलन पानी ज़मीन से निकलता है, गेहूँ ज़मीन से निकलता है, लिबास की फ़सल ज़मीन से निकलती है, मकान ज़मीन से निकली हुई चीज़ों से बनता है, इंसान की दूसरी ज़रूरियात भी ज़मीन से निकलने वाली चीज़ें हैं। फल ज़मीन से निकलने वाली चीज़ें हैं। ये जितनी भी चीज़ें हैं सब ज़मीन से निलने वाली हैं, अल्लाहु अकबर। जी हाँ जिस्म मिट्टी से बना। इसलिए अल्लाह तआला ने इसकी ज़रूरियात को भी मिट्टी में रख दिया कि इधर से पूरी होती रहें।

रूह की ग़िज़ा

इंसान की रूह आलमे अम्र से आई हुई चीज़ है,

﴿يسئلونك عن الروح. قل الروح من امر ربي.﴾

आप कह दीजिए कि रूह मेरे रब का अम्र है।

रूह आलमे अम्र से आई हुई चीज़ है और उसकी ज़रूरत भी ऊपर से आने वाले अनवार और बरकात हैं। नतीजा यह निकला कि रूह की ग़िज़ा ऊपर से आने वाले अनवार व बरकात हैं और जिस्म की ग़िज़ा नीचे ज़मीन से निकलने वाले समरात हैं। फ़रमाया ﴿لا كلوا من فوقهم﴾ तो हम उनको वह नेमतें खिलाते हैं जो उनकी रूहानी ग़िज़ा बनती हैं, ﴿ومن تحت ارجلهم﴾ और उनको वे नेमतें खिलाते हैं जो उनकी जिस्मानी ग़िज़ा बनती हैं। तक़्वा ऐसी नेमत है कि अल्लाह तआला रिज़्क़ के दरवाज़े खोल देता है। ﴿لقد كان لسبا فى مسكنهم آية﴾ क़ौमे सबा के मकानों में निशानियाँ हैं क्यों? ﴿جنان فى يمين وشمال﴾ दाएं बाएं दोनों तरफ़ बाग़ात।

﴿كلوا من رزق ربكم واشكروا له﴾

खाओ अपने रब का दिया हुआ रिज़्क़ और उसका शुक्र अदा करो।

﴿بلدة طيبة ورب غفور﴾

पाकीज़ा शहर है और उसका रब उनकी कोताहियों को माफ़ करने वाला है

अल्लाह तआला तो कहते हैं कि खाओ और शुक्र अदा करो। जिसका खाइए उसी के गीत गाइए। तक़्वा अपनाएंगे तो अल्लाह तआला रोटी भी देगा और बोटी भी देगा, कारें भी देगा और बहारें भी देगा। सब नेमतें अल्लाह तआला इस तक़्वे के सबब अता कर देता है लेकिन जब इंसान नाशुक्री करता है तो अल्लाह तआला अपनी नेमतों को रोक लेता है।

﴿لئن شكرتم لا زيدنكم ولئن كفرتم ان عذابى لشديد.﴾

अगर तुम मेरी नेमतों का शुक्र अदा करोगे तो मैं ज़रूर अपनी नेमतें ज़्यादा करूंगा और अगर कुफ़राने नेमत (नाशुक्री) की तो बेशक मेरा अज़ाब शदीद है।

एक क़ौम ने अल्लाह तआला की नेमतों की नाशुक्री की। अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में ज़िक्र फ़रमाया ﴿وضرب الله مثلا قرية﴾ और अल्लाह तआला मिसाल बयान करता है एक ऐसी बस्ती की ﴿كانت امنة مطمئنة.﴾ जिसमें अमन भी था, इत्मिनान भी था। दो लफ़्ज़ क्यों कहे? अमन कहते हैं बाहर के दुश्मन का डर कोई न हो, इत्मिनान कहते हैं कि अंदर का ग़म कोई न हो तो फ़रमाया कि अमन भी था, इत्मिनान भी था।

﴿ياتيها رزقها رغدا من كل مكان.﴾

चारों तरफ़ से उन पर रिज़्क़ की बहुतात थी।

फिर क्या हुआ ﴿فكفرت بانعم الله﴾ उन्होंने अल्लाह तआला की नेमतों की नाशुक्री की।

﴿فاذاقها الله لباس الجوع والخوف بما كانوا يصنعون.﴾

अल्लाह तआला ने उनको भूख, नंग और ख़ौफ़ का लिबास पहना दिया कि अमल ऐसे करते थे।

अगर इंसान नाशुक्री करे तो अल्लाह तआला अपनी नेमतों को छीन लेते हैं और अगर इंसान तक़्वा अपनाए तो अल्लाह तआला रिज़्क़ के दरवाज़े खोल देते हैं।

﴿ومن يتق الله يجعل له مخرجا.﴾

अल्लाह तआला उसके लिए सबील (रास्ता) पैदा कर देते हैं।

﴿يرزقه من حيث لا يحتسب﴾

ऐसी तरह से रिज़्क़ देते हैं जिसका उसको गुमान भी नहीं होता।

हज़रत अक़्दस मौलाना थानवी रहमुतल्लाहि अलैहि ने बरकत का अजीब वाक़िआ लिखा है। एक नौजवान था। उसने अपने वालदैन की बड़ी ख़िदमत की। भाईयों से कहा कि जाएदाद का हिस्सा मैं आपके सुपुर्द कर देता हूँ। वालदैन की ख़िदमत आप मेरे सुपुर्द कर दें। सौदा कर लिया। वालदैन की ख़ूब ख़िदमत की। माँ-बाप फ़ौत हो गए। उसने ख़्वाब में देखा कि कोई उससे कहता है कि फ़लां पत्थर नीचे तुम्हें सौ दीनार मिलेंगे क्योंकि तुमने माँ-बाप की बहुत ख़िदमत की है। पूछा उसमें बरकत होगी? कहा बरकत तो नहीं होगी। नौजवान ने कहा मैं नहीं लूँगा। सुबह उठा, बीवी को बताया। बीवी ने कहा बेशक न लेना लेकिन जाकर देखो तो सही कि पड़े हुए भी हैं या नहीं पड़े हुए हैं। उसने कहा जब लेने नहीं तो मैं जाकर देखता भी नहीं। दूसरी रात फिर ख़्वाब आया कि दस दीनार फ़लां पत्थर के नीचे पड़े हैं अभी मौक़ा है ले लो तुम्हारी ख़िदमत के बदले मिल रहे हैं। पूछा बरकत होगी? कहा बरकत तो नहीं होगी। नौजवान कहने लगा मुझे नहीं चाहिएं। तीसरी रात फिर ख़्वाब आया कि फ़लां पत्थर के नीचे एक दीनार पड़ा है अब जाकर ले लो, अब मौक़ा है। पूछा बरकत होगी? कहा हाँ बरकत होगी। वह सुब्ह उठा। उस पत्थर के नीचे से जाकर दीनार उठा लाया। घर आते हुए दिल में ख़्याल आया क्यों न आज घर में पकाने के लिए अच्छी चीज़ ले जाऊँ। उसने

मछली ख़रीदी। जब घर आया और उसकी बीवी ने मछली को काटा तो उस मछली के पेट से एक ऐसा मोती निकला जिसको बेचा तो उसकी ज़िंदगी का पूरा ख़र्च निकल आया। यह बरकत होती है। अल्लाह तआला ऐसी जगह से रिज़्क़ देता है कि इंसान को वहम व गुमान भी नहीं होता।

अल्लाह वाले कहाँ से खाते हैं

अल्लाह वाले कहाँ से लेते हैं? कहाँ से खाते हैं? जहाँ से अंबिया अलैहिमुस्सलाम खाते हैं। अल्लाह वालों के हाथ अल्लाह की जेब में होते हैं। समझाने के लिए बता रहा हूँ। अल्लाह की जेब नहीं है मगर समझाने के लिए अर्ज़ कर रहा हूँ। अल्लाह वालों के हाथ अल्लाह तआला की जेब में होते हैं। अल्लाह तआला उन के लिए ख़ज़ाने खोल दिया करता है।

﴿ومن يتق الله يجعل له مخرجا ويرزقه من حيث لا يحتسب.﴾

अल्लाह तआला ऐसी तरफ़ से रिज़्क़ देता है जिस तरफ़ से गुमान भी नहीं होता।

बरकत क्या है

रिज़्क़ के अंदर इंसान की इज़्ज़त शामिल, खाना पीना शामिल, बीवी-बच्चे शामिल, माशाअल्लाह दुनिया का सुख सुकून शामिल है। और आज इन्हीं की वजह से हम परेशान फिरते हैं। हम क्यों दर दर के धक्के खाते फिरते हैं। इसलिए कि रिज़्क़ की परेशानी है। दो-दो नौकरियाँ करते हैं, घर के ख़र्चे पूरे नहीं होते, घर के

सब लोग नौकरियाँ करते हैं लेकिन घर के ख़र्चे पूरे नहीं होते। कहते हैं कि जी क्या करें बोतल डाक्टर की तरफ़ चलती ही रहती है। बरकत उठ गई है, बरकत नहीं रही।

अजीब चैलेंज

आज लोग इंजीनियर डाक्टर क्यों बनते है? इसलिए कि अगर आलिम बनेंगे तो फिर कहाँ से खाएंगे। ज़रूरतें होती हैं इसलिए इंजीनियर डाक्टर बनते हैं। अच्छा मैं आप लोगों से सवाल पूछता हूँ क्या आपने किसी आलिम बा-अमल को या किसी हाफ़िज़ बा-अमल को भूख प्यास से ऐड़ियाँ रगड़ते हुए मरते देखा?

कोई मिसाल है? नहीं आलिम बा-अमल या हाफ़िज़ बा-अमल भूख प्यास से ऐड़ियाँ रगड़ते रगड़ते मर गया हो? कोई मिसाल ऐसी आप नहीं दे सकते। मैं मिंबर पर बैठा हूँ, मैं मिसाल दे सकता हूँ कि एक आदमी ने पीएचडी इंजीनियरिंग की हुई है लेकिन मौत इस हाल में आई कि भूख प्यास में ऐड़ियाँ रगड़ते-रगड़ते मर गया। तो फिर रिज़्क़ इल्मे दीन के रास्ते से मिला या इल्मे दुनिया के रास्ते से मिला?

इमाम अबू यूसुफ़ रह० का वाक़िआ

इमाम अबू यूसुफ़ रह० पढ़ने के ज़माने में इमाम अबू हनीफ़ा रह० की ख़िदमत में आए। माँ ने भेजा था कि धोबी के पास जाओ और कपड़े धोना सीखो। रास्ते में कहीं इमाम अबू हनीफ़ा रह० की ख़िदमत में पहुँच गए। हज़रत ने कुछ ऐसा मामला किया कि हज़रत के शार्गिद बन गए यहाँ तक कि इल्म में बहुत बड़ा

मुक़ाम हासिल कर लिया। माँ ने कहा मैंने तुझे धोबी की तरफ़ भेजा था, तेरा बाप मर गया है तू कुछ काम करता हम खाते पकाते। उन्होंने आकर इमामे आज़म रह० को यही बात सुनाई। हज़रत ने फ़रमाया माँ को कहना कि मैं एक काम सीख रहा हूँ जिस पर मुझे बहुत ज़्यादा आमदनी की उम्मीद है। उन्होंने जाकर कह दिया। उनकी माँ को तसल्ली न हुई तो वह ख़ुद इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह० के पास आयीं और कहा मैंने तो बेटे को धोबी के पास भेजा था कि कोई हुनर सीखने आपके पास किताबें पढ़ता है। हज़रत ने फ़रमाया कि मैं इसको ऐसा हुनर सिखा रहा हूँ कि यह पिस्ते का बना हुआ फ़ालूदा खाया करेगा। उनकी माँ ने सोचा कि हज़रत यूँ ही मेरी तसल्ली के लिए बात कर रहे हैं। इमाम अबू यूसुफ़ रह० फ़रमाते हैं कि बात आई गई हो गई। माँ को तसल्ली हो गई। एक वक़्त आया कि इमाम अबू यूसुफ़ रह० चीफ़ जस्टिस बने। फ़रमाते हैं कि वक़्त का बादशाह हारून रशीद मेरे पास बैठा हुआ था। वह कहने लगा हज़रत मैंने एक चीज़ बनवाई है। मैं रोज़ आपके लिए भिजवा दिया करूंगा। मैंने चीज़ खाई तो बड़ी लज़ीज़ थी। मैंने पूछा कि यह क्या थी? कहने लगे हज़रत यह मेरे लिए भी कभी-कभी बनती है लेकिन आपको इल्मी मुक़ाम ऐसा मिला है कि आपके लिए रोज़ाना आया करेगी। कहने लगे मैंने पूछा बताओ कि है क्या? कहने लगे यह पिस्ते का बना हुआ फ़ालूदा है। फ़रमाते हैं कि इमामे आज़म रह० की बात मुझे याद आई कि उन्होंने मेरी माँ को कहा था कि मैं इसको ऐसा हुनर सिखा रहा हूँ कि यह पिस्ते का बना हुआ फ़ालूदा खाया करेगा। देखा अल्लाह तआला यूँ रिज़्क़ देते हैं।

हज़रत सालिम रह० का वाक़िआ

हज़रत सालिम रह० मुहद्दिस गुज़रे हैं। गुलाम थे। तीन सौ दिरहम में बिके थे फिर इल्म हासिल करके ऐसे मुक़ाम पर पहुँचे कि बादशाह इजाज़त लेकर मिलने के लिए आया करता था। एक बार बादशाह मुलाक़ात के लिए आया। आपसे इजाज़त चाही। आपने इल्मी मशग़ूली की वजह से मना कर दिया। बादशाह को बग़ैर मुलाक़ात के जाना पड़ा। हज़रत सालिम रह० बिके थे तीन सौ दिरहम में लेकिन इल्म ने ऐसे मुक़ाम पर पहुँचा दिया कि वक़्त का बादशाह भी उनके दरवाज़े पर दस्तक दे रहा होता था, सुब्हानअल्लाह। वह दुनिया में बिके थे तीन सौ दिरहम में लेकिन यहाँ अल्लाह से सौदा किया था इसलिए क़ीमत बढ़ गई।

जब तक बिके न थे कोई पूछता न था
तुमने ख़रीदकर हमें अनमोल कर दिया

माशाअल्लाह अल्लाह तआला से सौदा किया। अल्लाह तआला ने अनमोल कर दिया।

यह बाज़ी इश्क़ की बाज़ी है जो चाहो लगा दो डर कैसा
गर जीत गए तो क्या कहना गर हार गए तो मात नहीं

अगर जीत गए और इल्म का वह मुक़ाम हासिल हो गया तो क्या ही नसीब हैं अगर वह मुक़ाम हासिल न हुआ तो फिर भी ख़ुशनसीबी है, सुब्हानअल्लाह।

रिज़्क़ किसके ज़िम्मे

मेरे दोस्तो! अल्लाह तआला तक़्वे के ज़रिए रिज़्क़ के दरवाज़ों

खोल देते हैं। रिज़्क़ कहाँ से मिलता है? अल्लाह तआला के ख़ज़ानों से ﴿ومن من شئی الا عندنا خزائنه﴾ और जो कोई चीज़ भी है मगर हमारे पास उसके ख़ज़ाने हैं ﴿وما ننزله الا بقدر معلوم﴾ और हम एक अंदाज़े के मुताबिक़ उसको उतारते रहते हैं।

﴿وما من دابة فی الارض الا علی الله رزقها﴾

जो कोई जानदार ज़मीन में है उसका रिज़्क़ अल्लाह तआला के ज़िम्मे है।

﴿و کاین من دابة لا تحمل رزقها﴾

कितने जानदार हैं अपना रिज़्क़ जमा करके नहीं रखते।

﴿والله یرزقها وایاکم﴾

अल्लाह तआला उनको भी रिज़्क़ देता है और तुम को भी देता है।

एक आदमी बायज़ीद बुस्तामी रह० के पास आया और कहने लगा हज़रत मेरी औलाद ज़्यादा है, रिज़्क़ की बहुत तंगी है, बहुत परेशान हूँ। फ़रमाया कि घर वापस जाओ और जिसका रिज़्क़ अल्लाह के ज़िम्मे है उसे घर में रहने दो और जिसका रिज़्क़ तुम्हारे ज़िम्मे है उसे घर से निकाल दो।

ख़ानदानी मंसूबाबंदी (फैमली प्लानिंग)

सन् 1965 ई० में सुना करते थे कि ख़ानदानी मंसूबाबंदी पर अमल करो वरना सन् 1970 ई० में भूखे मर जाओगे। सन् 1970 ई० भी आ गया। फिर सुनते थे कि सन् 1980 ई० तक ख़ानदानी

मंसूबाबंदी न की तो इंसान इंसानों को खाया करेंगे। सन् 1980 ई० भी आ गया फिर कहा करते थे कि सन् 1990 ई० तक अगर ख़ानदानी मंसूबाबंदी न की तो फिर लोग अपने बच्चों को काटकर खाया करेंगे। सन् 1990 ई० भी आ गया। अल्लाह के बंदो! अल्लाह तआला जो नेमतें आज दे रहे हैं वह सन् 1960 ई० वाले इंसान को नसीब ही न थीं। देखा अल्लाह तआला रिज़्क़ बढ़ा भी देता है। जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम दुनिया में थे तो एक आदमी का रिज़्क़ था और आज अरबों खरबों इंसान हैं अल्लाह तआला ने उतने इंसानों का रिज़्क़ अता फ़रमा दिया है। हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के ज़माने में क्या खानें निकलती थीं? नहीं निकलती थीं। जब इंसान थोड़े थे ज़मीन के ख़ज़ाने भी थोड़े निकलते थे। जब फैल गए तो अल्लाह तआला ने ख़ज़ानों के मुँह भी खोल दिए, सुब्हानल्लाह।

तक़्वा और रिज़्क़ के दरवाज़े

रिज़्क़ किसके ज़िम्मे है? अल्लाह तआला के ज़िम्मे है। हाँ मैं इसको मानता हूँ हमें अपनी ज़िंदगी में एक तर्तीब रखनी चाहिए। इसका यह मतलब नहीं कि ज़िंदगी में कोई तर्तीब ही न हो। तर्तीब होनी चाहिए। मेहनत तो हम करें मगर निगाहें अल्लाह तआला की ज़ात पर लगी हुई हों। जब यह हाल होगा तो कोई बंदा रिश्वत नहीं लेगा। जब उसकी नज़रें अल्लाह की ज़ात पर होंगी तो फिर मिलावट का माल कोई नहीं खाएगा। इसलिए कि फिर वह अल्लाह से मांगेगा। जब अल्लाह को भूलकर असबाब

पर निगाहें लग जाती हैं तो फिर ये सारी मुसीबतें खड़ी हो जाती हैं। लिहाज़ा तक़्वे को अपनाओ तो अल्लाह तआला रिज़्क़ के दरवाज़ों को खोल देंगे।

तक़्वा हर जगह काम आता है

आप फ़रमाएंगे तक़्वा, तक़्वा कुछ आगे बात भी समझाओ, तक़्वा है क्या? यह वह नेमत है जो दुनिया में भी काम आती है, बर्ज़ख़ में भी काम आती है, क़ब्र में भी काम आती है, हश्र में भी काम आती है, जन्नत में भी काम आती है। हर जगह पर काम आती है। यह तक़्वा अजीब तिरयाक़ है। हर हर जगह काम आता है। सुनिए क़ुरआन,

﴿وقال موسى لقومه استعينوا بالله واصبروا.﴾

और कहा मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से अल्लाह तआला से मदद मांगो, अपने अंदर सब्र व ज़ब्त पैदा करो। ﴿ان الارض لله﴾ बेशक ज़मीन अल्लाह की है ﴿يورثها من يشاء من عباده﴾ अपने बंदों में से जिसको चाहता है उसका वारिस बना देता है ﴿والعاقبة للمتقين﴾ और आक़बत तो मुत्तक़ियों के लिए है। देखा दुनिया भी संवरी और रिज़्क़ भी मिला आख़िरत में आक़बत भी संवरी। तो तक़्वा वह नेमत है जो दुनिया को भी संवारता है और आख़िरत को भी।

पुलसिरात और तक़्वा

आख़िरत का दिन कैसा होगा कि दोस्त एक दूसरे के दुश्मन

बन जाएंगे सिवाए मुत्तक़ी लोगों के। यह तक़्वा वहाँ भी काम आएगा। दुनिया में भी इसका फ़ायदा और आख़िरत में भी, रोज़े महशर में भी इसका फ़ायदा। दोस्त दोस्तों के दुश्मन बन जाएंगे सिवाए मुत्तक़ी लोगों के।

﴿الا خلاء يومئذ بعضهم لبعض عدو الا المتقين.﴾

यह तक़्वे का ताल्लुक़ वहाँ भी काम आएगा। पुलसिरात से गुज़रना होगा फिर क्या होगा? ﴿وان منكم الا واردها﴾ और तुम में जो कोई भी है उसे उस पर से गुज़रना होगा ﴿كان على ربك حتما مقضيا﴾ यह तेरे रब के नज़दीक अटल और फ़ैसलाशुदा बात है। ﴿ثم ننجى الذين اتقوا﴾ फिर हम निजात देंगे जो मुत्तक़ी होंगे और जो ज़ालिम गुनाहगार होंगे उनको औंधे मुँह जहन्नम में गिराएंगे। तो पुलसिरात से कौन गुज़रेंगे? जो मुत्तक़ी होंगे। ऐसे लोगों को जन्नत भी पेश की जाएगी ﴿وازلفت الجنة للمتقين﴾ और जन्नत को सजाकर पेश किया जाएगा मुत्तक़ियों के लिए, माशाअल्लाह। जन्नत की तरफ़ किन को लेकर जाया जाएगा?

﴿وسيق الذين اتقوا ربهم الى الجنة زمرا.﴾

मुत्तक़ी लोगों को जन्नत की तरफ़ ले जाया जाएगा।

जन्नत किन के लिए है

जन्नत मुत्तक़ी लोगों के लिए है,

﴿والملئكة يدخلون عليهم من كل باب﴾

हर दरवाज़े से मलाइका उन पर दाख़िल होंगे।

﴿سلام علیکم﴾ सलामती हो, शाबाश हो, तुम जीते रहो ﴿سلام علیکم﴾ यह मतलब बनेगा इसका ﴿بما صبرتم﴾ तुम ने अपने अंदर सब्र व ज़ब्त पैदा किया, सुब्हानअल्लाह। जन्नत किन लोगों को दी जाएगी? एक जगह जन्नत का इतना लम्बा ज़िक्र किया गया कि पूरा एक रुकू जन्नत के फ़ज़ाइल और जन्नत के ज़िक्र का है। आख़िर पर नतीजा निकला,

﴿تلك الجنة التي نورث من عبادنا من كان تقيا.﴾

यह वह जन्नत है उसका हम वारिस अपने बंदों में से उनको बनाएंगे जो मुत्तक़ी होंगे, सुब्हानअल्लाह। जन्नत के जितने मंज़र हैं, जितनी बातें हैं सब मुत्तक़ी लोगों पर के लिए हैं।

ان للمتقين مفازا حدائق واعنابا وكواعب اترابا وكاسا

دهاقا. لا يسمعون فيها لغوا ولا كذابا. جزاء من ربك.

यह बदला है मुत्तक़ी लोगों के लिए।

ان للمتقين في ظلل وعيون وفواكه مما يشتهون. كلوا واشربو

هنيئا بما كنتم تعملون. ان كذلك نجزى المحسنين.

देखा कैसा जन्नत का ज़िक्र है, सुब्हानअल्लाह।

﴿ان المتقين في جنت ونهر في مقعد صدق عند عليك مقتدر.﴾

कितनी आयतें पढ़ूँ मुत्तक़ी लोगों के लिए जन्नत की नेमतों के बारे में?

﴿مثل الجنة التي وعد المتقون فيها انهار من ماء غير اسن.﴾

चार नहरें बताई गयीं जो मुत्तक़ी लोगों की जन्नत में होंगी, सुब्हानअल्लाह।

आख़िरत की मंज़िलें और तक़्वा

मेरे दोस्तो! आख़िरत की मंज़िलें भी तक़्वे के सबब तय होंगी और दुनिया की मंज़िले भी तक़्वे के सबब तय होंगी। अगर दुनिया में इज़्ज़त चाहते हो तो तक़्वा अपनाओ। देखिए अल्लाह तआला दुनिया में भी इज़्ज़त देते हैं। दुनिया में भी इज़्ज़त तक़्वे के ज़रिए से मिलती है। आख़िरत की बातें तो मैंने बहुत सुना दीं।

दुनिया की इज़्ज़त और तक़्वा

आप कहेंगे कोई यहाँ की बात भी करो। चलो मैं दुनिया की बात करता हूँ। दुनिया में भी इज़्ज़त तक़्वे के ज़रिए से मिलती है।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वाक़िआ

सूरहः यूसुफ़ जिसको क़ुरआन ने अहसनुल क़सस कहा है ﴿نحن نقص احسن القصص﴾ ख़ासतौर पर बड़ा सबक़ है। इस सूरहः में इसलिए इसको इतना अहम बताया गया है। इसमें अल्लाह तआला दो जमाअतों का ज़िक्र करते हैं। एक जमाअत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों की और एक जमाअत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की। जी हाँ कई बंदे अकेले होते हैं लेकिन अपनी ज़ात में इदारे होते हैं, एक होते हैं लेकिन जमात से ज़्यादा भारी होते हैं। दलील क़ुरआन से पेश करता हूँ,

﴿ان ابراهيم كان امة﴾

बेशक इब्राहीम अलैहिस्सलाम उम्मत थे।

देखा! जी हाँ ऐसा भी होता है। तो एक जमाअत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की और दूसरी जमाअत उनके भाईयों की। भाईयों पर इम्तिहान आया वह कहने लगे हम यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को क़त्ल कर देते हैं ﴿اقتلوا يوسف اوطرحوه ارضا﴾ हम यह गुनाह कर गुज़रते हैं और इसके बाद हम तौबा करके नेक बन जाएं। चुनाँचे गुनाह कर गुज़रे। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर भी इम्तिहान आया ﴿وراودته التي هو في بيتها عن نفسه﴾ यह अल्लाह तआला की रहमत की ऐसे इम्तिहान से भी बच गए। यहाँ तक कि गवाहियाँ दे दीं। औरत को कहना पड़ा मालिक को ﴿يوسف ايها الصديق﴾ ऐ सच्चे! यूसुफ़! सुब्हानअल्लाह! अल्लाहु अकबर। फिर क्या हुआ? अल्लाह तआला ने उनको फिर जेल से निकालकर तख़्त पर बिठा दिया। फिर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा, मुझे वज़ीर ख़ज़ाना बना दो। नबी थे अल्लाह तआला ने उन्हें सलाहियत भी अता फ़रमाई थी। वह हुकूमत की बागडोर संभाल सकते थे। हुकूमत चलाकर दिखाई। सूखा पड़ जाता है। भाईयों की जमाअत सारी की सारी सूखे का शिकार हो गई। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उस क़हत में तख़्त पर बैठे हुए हैं। अब अल्लाह तआला निचोड़ निकालते हैं। क़ुरआन पाक में मंज़र बयान करते हैं और अजीब है वह मंज़र। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई आ रहे हैं, ग़ल्ला मांगने के लिए, पैसे पूरे नहीं हैं, ग़ल्ला पूरा मांगते हैं। कहते हैं कि पैसे तो पूरे नहीं हैं अब कोई सदक़ा ख़ैरात कर दें। यह भी नबी के बेटे वे भी नबी के बेटे, यह इम्तिहान में कामयाब वे इम्तिहान में नाकाम। यह तख़्त पर वे फ़र्श पर। क़ुरआन पाक नक़्शा बयान करता है। सुब्हानअल्लाह, क़ुर्बान जाएं क्या किताब है। फ़रमाया ﴿قالوا﴾ कहने

लगे, ﴿يايها العزيز﴾ ऐ अज़ीज़ मिस्र!

مسنا واهلنا الضر وجئنا ببضاعة مزجة فاوف لنا
الكيل وتصدق علينا ان الله يجزى المتصدقين

हमें और घरवालों को तंगदस्ती ने बेहाल कर दिया और हम पैसे भी इतने लाएं हैं जो पूरे नहीं। हमें वज़न पूरा दे दो और हमारे ऊपर सदक़ा ख़ैरात कर दीजिए। बेशक अल्लाह तआला सदक़ा देने वालों को जज़ा देता है।

जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने यह देखा कि यह हालत हो गई है तो पूछा ﴿ما فعلت بيوسف﴾ तुमने यूसुफ़ के साथ क्या किया था? कहने लगे, ﴿انك لا انت يوسف﴾ क्या आप यूसुफ़ हैं? ﴿قال انا يوسف وهذا اخى﴾ कहा हाँ मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई बिनयामीन है। तहक़ीक़ हम पर अल्लाह ने एहसान किया ﴿انه من يتق ويصبر﴾ जो मुत्तक़ी होता है और अपने अंदर सब्र व ज़ब्त पैदा करता है ﴿ان الله لا يضيع اجر المحسنين﴾ बेशक अल्लाह तआला नेकोकारों के अज्र को ज़ाए नहीं किया करता। लिहाज़ा हर दौर में और हर ज़माने में जो यूसुफ़ सिफ़्त बनेगा अल्लाह तआला उसको फ़र्श से उठाकर अर्श पर बिठा देगा। देखना दुनिया भी बनेगी और आख़िरत भी बनेगी।

तक़्वा और अल्लाह का क़ुर्ब

पहले उलमा तक़्वे की वजह से अल्लाह का क़ुर्ब पा गए। आज तक़्वा न होने की वजह से हम अपनी इज़्ज़त गंवा बैठे। क्या बात है यही दर्से निज़ामी (मदरसे का कोर्स) हज़रत मौलाना

क़ासिम नानौतवी रह० ने पढ़ा, यही दर्से निज़ामी हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० ने पढ़ा, यही दर्से निज़ामी हज़रत मौलाना महमूदुल हसन रह० ने पढ़ा, यही दर्से निज़ामी हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० ने पढ़ा, यही दर्से निज़ामी हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० ने पढ़ा। फिर आज का हर तालिबे इल्म हज़रत थानवी क्यों नहीं बन जाता, हर बच्चा हज़रत नानौतवी क्यों नहीं बन जाता। यह तक़्वे का फ़र्क़ है। उन्होंने भी यही किताबें पढ़ी थीं लेकिन उन्हें इन किताबों से तक़्वे की वजह से हीरे मोती मिले थे। हम भी वही किताबे पढ़ते हैं मगर पढ़ लेते हैं। सोचते हैं कि अमल बाद में इकठ्ठा करेंगे। आज हम बेहतियाती की ज़िंदगी गुज़ारते हैं। वह उलमा जो हलाल माल से अपना पेट नहीं भरते थे आज उनकी औलादें हराम माल से अपने पेटों को भर रही हैं। वे लोग जो सारी रात जागकर मुसल्ले पर गुज़ार देते थे आज उनकी औलादें नरम बिस्तरों पर रात गुज़ारने की आदी बन चुकी हैं।

इल्म बड़ी नाज़ुक चीज़ है

यह इल्म बड़ी नाज़ुक चीज़ है। अफ़सोस है उस पर जिसकी ज़बान तो आलिम हो लेकिन दिल जाहिल हो। लुक़मान हकीम फ़रमाते थे कि मैंने लोहे और पत्थर को उठाया लेकिन दीन से ज़्यादा वज़नी चीज़ को नहीं देखा। मैंने सुहागरात की लज़्ज़त को पाया मगर अल्लाह के ज़िक्र से बेहतर किसी चीज़ को लज़ीज़ नहीं पाया। आज हमारे लिबास सौफ़ से भी ज़्यादा नरम होते हैं, हमारी ज़बानें शहद से भी ज़्यादा मीठी होती हैं मगर हमारे दिल भेड़िए

के दिल से भी ज़्यादा सख़्त होते हैं।

दिल और गंदख़ाना

हम दिलों पर मेहनत नहीं करते। यह तक़्वा कहाँ होता है?

﴿التقوی ههنا اشار الی الصدر﴾

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सीने की तरफ़ इशारा करके कहा कि तक़्वा तो यहाँ होता है।

लिहाज़ा इस दिल को बदलना पड़ेगा। फिर इसके अंदर तक़्वा पैदा होगा। आज हमने दिल को सनमख़ाना बना लिया है, बुतख़ाना बना लिया है बल्कि सच कहो तो दिल को गंदख़ाना बना लिया है।

﴿ما هذه التماثيل التي انتم لها عاكفون.﴾

दिल में मूर्तियाँ रखी हुई हैं। किसी ने दिल में लड़की की मूर्ती रख ली, किसी ने माल पैसे की मूर्ती रख ली, किसी ने ओहदे की मूर्ती रख ली। जिस घर में तस्वीर हो उस घर में रहमत का फ़रिश्ता नहीं आता तो जिस दिल में ग़ैर की तस्वीर हो उस दिल में अल्लाह तआला की तजल्लियात कैसे आ सकती हैं? इस दिल को संवारना पड़ेगा, इसे बनाना पड़ेगा, इस दिल पर मेहनत करनी पड़ेगी। तब तक़्वा दिल में आए और आप इस नीयत पढ़ें कि अल्लाह तआला हम पढ़ते जाएंगे और अमल करते जाएंगे। अपनी ज़ात को आगे रखें ﴿اوصی نفسی اولا وایاك بعده﴾ अपने आपको पहले रखें। यही तो वजह है कि तक़्वा ज़िंदगियों में नहीं है। बातें करते हैं लोगों पर असर नहीं होता। शिकायत करते हैं कि लोग बात नहीं सुनते। मेरे दोस्तो! इस ज़बान से निकली हुई बात जब अपने

कान नहीं सुनते जो इतना क़रीब हैं तो फिर वे कान कहाँ सुनेंगे जो इतना दूर बैठे हुए हैं। होना तो यह चाहिए कि हम बोलें, हमारे अपने कान भी सुनें, हमारा अपना दिमाग़ भी सोचे, हमारा अपना दिल भी उस पर अमल करे कि हम क्या बोल रहे हैं? हम लोगों के लिए बोलते हैं। हम अपनी भी नीयत भी करें कि हम यह क़ुरआन व हदीस इसलिए पढ़ रहे हैं कि हम पढ़ेंगे और अमल करेंगे।

हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० का अजीब वाक़िआ

मैंने हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० के हालाते ज़िंदगी को पढ़ा है कि मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० के ज़रिए कुछ हिंदू मुसलमान हुए तो किसी ने हिंदुओं से पूछा कि तुम मुसलमान क्यों हुए? तो उन्होंने हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी रह० की तरफ़ इशारा करके कहा कि हमें यह चेहरा किसी झूठे आदमी का नज़र नहीं आता। यह चेहरा किसी झूठे आदमी का नहीं हो सकता, सुब्हानअल्लाह। तक़्वा उनके चेहरों पर यूँ चमकता था। उनकी तन्हाइयों की इबादतें उनके चेहरों पर नूर बनाकर सजा देती थी।

तक़्वा क्या है

अब आख़िरी बात कि यह तक़्वा है क्या चीज़? तक़्वे के बारे में मशहूर बात है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा हज़रत

उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु से कि तक़्वा क्या होता है? फ़रमाया कभी कांटेदार रास्ते से गुज़रे हो? जी हज़रत गुज़रा हूँ। कैसे गुज़रते हैं? अपने कपड़ों को समेटकर बच बचाकर गुज़रता हूँ कि मेरा दामन किसी कांटे में उलझ न जाए। फ़रमाया यह तक़्वा है कि ऐ इंसान तू अपने दामन को यूँ बचा के ज़िंदगी गुज़ार कि तेरा दामन किसी गुनाह में सन न हो जाए। यह तक़्वा है। ﴿وثيابك فطهر﴾ अपने कपड़ों को पाक रख, माशाअल्लाह।

﴿ولباس التقوى ذلك خير﴾

और तक़्वे का लिबास वह सबसे बेहतर है।

﴿وتزودوا فان خير الزاد التقوى﴾

और अपने लिए ज़ादे राह (सफ़र का सामान) भी जमा कर लो और बेहतर ज़ादे राह तक़्वा है।

सुब्हानअल्लाह! इसलिए जहाँ मियाँ-बीवी का ज़िक्र आया वहाँ तक़्वा, तक़्वा, तक़्वा। सूरहः निसा पढ़कर देख लें। हर कुछ आयतों के बाद तक़्वा, तक़्वा, तक़्वा। क्योंकि जब तक़्वा न होगा तो इज़्दिवाजी ज़िंदगी सही नहीं गुज़र सकती। इसीलिए फ़रमाया,

﴿واتقوا الله واعلموا انكم ملقوه﴾

और अल्लाह से डरना और जान लेना कि तुमने अल्लाह तआला से मुलाक़ात करनी है।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारे अंदर तक़्वा पैदा फ़रमाए (आमीन)। हमारे हज़रत पीर ग़ुलाम हबीब रह० फ़रमाया करते थे कि हर उस चीज़ को छोड़ देना जिसको इख़्तियार करने से अल्लाह के साथ

तअल्लुक़ में फ़र्क़ आए। इसे तक़्वा कहते हैं। कुछ लोग समझते हैं कि सूफ़ी बनकर बाज़ार की बनी हुई चीज़ न खाई यही काफ़ी है। मियाँ यह तक़्वे का छोटा सा हिस्सा है। तक़्वा किसी एक चीज़ का नाम नहीं है। यह तो सर के बालों से लेकर पाँव के नाख़ून तक लागू होता है। इसका तअल्लुक पूरी ज़िंदगी के साथ है। क़ुरआन पाक से पूछें, क़ुरआन पाक समझाता है तक़्वा क्या है? आइए क़ुरआन से पूछें कि हमें समझाए कि तक़्वा क्या है? क़ुरआन समझाता है :

ليس البر ان تولوا وجوهكم قبل المشرق والمغرب ولكن البر من آمن بالله واليوم الاخر والملئكة والكتاب والنبين وآتى المال على حبه ذوى القربى واليتامى والمسكين وابن السبيل والسائلين وفى الرقاب. واقام الصلوة وآتى الزكوة والموفون بعهدهم اذا عاهدوا والصبرين فى الباساء والضراء وحين الباس. اولئك الذين صدقوا واولئك هم المتقون.

इन सारी बातों पर अमल करने वाले ﴿اولئك الذين صدقوا﴾ ये हैं सच्चे लोग ﴿واولئك هم المتقون.﴾ और ये मुत्तक़ी लोग। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें ऐसा बनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

हिफ़ाज़त-ए-ज़बान

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم

بسم الله الرحمن الرحيم

ما يلفظ من قول الا لديه رقيب عتيد. سبحان ربك رب العزة

عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

हज़ार ख़ौफ़ हो लेकिन ज़बां हो दिल की रफ़ीक़
यही रहा है अज़ल से क़लंदरों का तरीक़

ज़बान की अहमियत

इंसान बहुत से आज़ा (अंगों) का मजमूआ है। ये आज़ा संवर जाएं तो इंसान संवर जाता है। इंसान के जिस्म में एक छोटा से उज़्व ज़बान है। आज के दौर में जिसका इस्तेमाल बहुत बुरे तरीक़े से किया जाता है। अरबी का मक़ूला है, ﴿اللسان جسمه صغير و جرمه كبير.﴾ इसकी जसामत तो बहुत छोटी है मगर होने वाले गुनाह बहुत मोटे हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं :

﴿يايها الذين امنوا﴾ ऐ ईमान वालो! ﴿لما تقولون ما لا تفعلون﴾ तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं हो।

अल्लाह के नज़दीक यह बहुत गुस्सा दिलाने वाली सूरते हाल है कि तुम वह बात कहो जो तुम करते नहीं हो। कहना कुछ और करना कुछ। यह काम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को बहुत ज़्यादा ना पसंदीदा है। मोमिन की ज़बान से निकले हुए बोलों की अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ बड़ी क़दर व क़ीमत है। क़ुरआन पाक में फ़रमाया गया,

﴿ما يلفظ من قول الا لديه رقيب عتيد.﴾

इंसान कोई बात नहीं कहता मगर उसके पास निगहबान तैयार होता है।

ज़बान से कलिमा पढ़ना

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ इसकी इतनी अहमियत है कि एक काफ़िर आदमी पूरी ज़िंदगी गुनाहों में गुज़ार बैठा, जिस्म के बाल सफ़ेद हो गए अगर वह दिल से कलिमा पढ़ लेता है तो उसकी भी मग़फ़िरत फ़रमा देते हैं।

रिवायत में आता है कि जब कोई बंदा दिल से कलिमा पढ़ता है तो एक फ़रिश्ता इस अमल को लेकर आसमानों की तरफ़ जाता है। अभी रास्ते में होता है कि ऊपर से नीचे आने वाले फ़रिश्ते से उसकी मुलाक़ात हो जाती है। अब ऊपर से नीचे आने वाला फ़रिश्ता पूछता है कि कहाँ जा रहे हो? नीचे से जाने वाला फ़रिश्ता कहता है कि एक आदमी ने कलिमा पढ़ा है, मैं इस अमल को अल्लाह की हुज़ूर में पेश करने जा रहा हूँ। फ़िर यह ऊपर से आने वाले फ़रिश्ते से पूछता है कि आप कहाँ जा रहे हैं?

वह कहता है कि जिस आदमी ने कलिमा पढ़ा है मैं उसके लिए मग़फ़िरत का पैग़ाम लेकर जा रहा हूँ। अब सोचिए ज़बान से चंद बोल निकले, उसकी ज़िंदगी के सब गुनाहों को माफ़ कर दिया। दुनिया की अदालत का मामला देखा। किसी आदमी पर नाजाएज़ मुक़द्दमा हो जाए, अदालत में पता भी चल जाए कि यह मुक़द्दमा झूठा हैं तो उस आदमी को इज़्ज़त के साथ बरी कर दिया जाता है मगर अपने रिकार्ड में उस मुक़द्दमे को दर्ज ज़रूर कर लिया जाता है। दुनिया की अदालत इज़्ज़त से बरी भी कर दे मगर अपने पास मुक़द्दमा दर्ज रखती है मगर अल्लाह तआला का मामला अजीब देखा। जिस बंदे ने वाक़ई गुनाह किए थे, वह गुनाह जो पहाड़ों से भी ज़्यादा वज़नी थे अगर वह आदमी सच्ची तौबा कर लेता है तो यही नहीं कि उन गुनाहों को माफ़ कर दिया जाता है बल्कि अल्लाह तआला उन गुनाहों का रिकार्ड भी आमालनामे से ख़त्म करवा देते हैं। हदीस पाक में आता है कि जिन फ़रिश्तों ने उस आदमी के गुनाहों को लिखा था अल्लाह तआला उन फ़रिश्तों की याद्दाश्त से भी गुनाहों को ख़त्म फ़रमा देते हैं ताकि क़यामत के दिन गवाही न दे सकें। सुब्हानअल्लाह! ज़बान से निकले हुए कुछ बोलों ने क्या कुछ बदलवा दिया।

तनूज़ के नुक़सान

आज तो कुछ लोग एक दूसरे को ख़ुश करने के लिए झूठ बोलते हैं, किसी पर तनूज करते हैं, किसी का दिल जलाते हैं। याद रखें कि तलवार का वार जिस्म पर होता है मगर ज़बान का वार हमेशा दिल पर हुआ करता है। इसलिए फ़रमाया :

﴿يايها الذين آمنوا لا يسخر قوم من قوم عسى ان يكونو خيرا منهم.﴾

ऐ ईमान वालो! तुम में से एक जमाअत दूसरी जमाअत से मज़ाक़ न करे।

तन्ज़ व मज़ाक़ को इसीलिए मना किया गया है कि ज़बान से उल्टी सीधी बातें निकलती हैं। ज़बान बड़े आराम से अल्फ़ाज़ अदा कर देती है लेकिन इन बोलों को अल्लाह तआला के सामने सच साबित करना इंसान के लिए मुश्किल हो जाएगा।

कुफ़्र के कलिमात

उलमा-ए-किराम ने किताबों में ऐसे कलिमात नक़ल किए हैं जो कुफ़्र के कलिमात कहे जाते हैं। हैरत की बात तो यह है कि उनमें से कई कलिमात आज लोगों की ज़बानी सुने जाते हैं। एक दो मिसालें देता हूँ क्योंकि किसी कुफ़्र की बात को नक़ल करना कुफ़्र नहीं है, किसी ने पूछा, अरे मियाँ कहाँ रहते हो? जवाब में कहा कि जी मैं तो फ़लाँ जगह रहता हूँ। पहले ने सुनकर कहा अच्छा! इतनी दूर खुदा के पिछवाड़े। यह कुफ़्रिया कलिमा हम तो हँसी मज़ाक़ में कह गए खुदा के पिछवाड़े। मगर कुफ़्र का कलिमा बोला, दिल से ईमान निकल गया और बीवी को तलाक़ हो गई। दूसरी मिसाल किसी ने कहा फ़लाँ काम तो शरिअत के मुताबिक़ है। दूसरे ने कह दिया परे रख अपनी शरिअत को। यह कलिमाते कुफ़्र में से है।

अब बताएं इस क़िस्म के कितने फ़िक़्रे आप आए दिन सुनते रहते हैं। एक दफ़ा एक फ़ैक्ट्री मैनेजर के पास बैठा था। उसने

किसी आदमी को बुलाया। अच्छा भला समझदार दाना-बीन आदमी बल्कि छोटी-छोटी दाढ़ी भी रखी हुई थी। मैनेजर ने कहा सुनाओ भाई क्या हाल है? कहने लगा कि साहब पहले तो (अल्लाह मियाँ) पाँच मिनट में दुआ सुनता था, अब पता नहीं कहाँ चला गया, सुनता ही नहीं। मैंने भी नमाज़ पढ़नी छोड़ दी हैं। अल्लाह तआला की जलालत की शान को सामने रखें और उस बंदे के बात के अंदाज़ को देखें।

﴿استغفر الله ربي من كل ذنب واتوب اليه.﴾

यक़ीन करें, मैंने यह बात सुनी, मुझे अपने पाँव के नीचे ज़मीन सरकती नज़र आई। वह आदमी बड़े मज़े से कह रहा है और हँस रहा है जैसे सिर्फ़ हँसाने के लिए मामूली सी बात की हो। इस क़िस्म की बातें कलिमाते कुफ़्र में से हैं।

कलाम की अहमियत

ज़बान से निकले हुए बोल की अहमियत इतनी है कि एक औरत जो ग़ैर-महरम थी, जिसकी तरफ़ नज़र उठाने की इजाज़त नहीं थी। उस औरत को शरई गवाहों की मौजूदगी में कह दिया कि मैंने अपने निकाह में क़ुबूल कर लिया तो वह ग़ैर-महरम औरत अब इस आदमी के लिए जीवन साथी बन गई। जिसकी तरफ़ आँख उठाकर देखने की इजाज़त नहीं थी दो बोल ज़बान से बोले और अब वही औरत उसके लिए ज़िंदगी की साथी बन गई। जब कि वही औरत जो ज़िंदगी की साथी थी उसको तीन बार तलाक़ का बोल कह दिया तो वही औरत अजनबी बन गई। अब

सोचें कि निकाह करते वक़्त या तलाक़ देते वक़्त कोई पत्थर तो सर पर नहीं उठाना पड़ता या कोई आग में से तो नहीं गुज़रना पड़ता या कोई पहाड़ के ऊपर से छलांग तो नहीं लगानी पड़ती। चंद बोल बोले अजनबी औरत बीवी बन गई और तलाक़ के चंद बोल बोले तो ज़िंदगी की साथी हमेशा के लिए जुदा हो गई। इंसान की ज़बान से निकले हुए बोलों की अल्लाह के यहाँ बहुत क़दर व क़ीमत है।

एक नौजवान अपनी ज़बान से पहले बुरा-भला बोल रहा था। किसी अल्लाह वाले ने सुना। फ़रमाने लगे बेटे! ज़रा सोचकर बात कर और देख कि तू अल्लाह के नाम कैसा ख़त भेज रहा है।

हमारी ज़बान से निकला हुआ एक-एक बोल हमारे आमाल नामे में लिखा जाता है और यह आमालनामा हर रोज़ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की हुज़ूर पेश किया जाता है। अल्लाह वाले जब बात करते हैं तो इस एहसास के साथ करते हैं कि हमारा आमालनाभा अल्लाह के हुज़ूर पेश किया जाएगा। कुछ बुज़ुर्गों का यह मामूल था जो बाते कहते थे वे कागज़ पर लिख लेते थे और रात को बैठकर अपना हिसाब करते थे कि मैंने जो कुछ कहा ठीक कहा या नहीं। अगर कोई बात ज़बान से ग़लत निकल गई होती तो उसी रात अल्लाह के हुज़ूर तौबा कर लिया करते थे।

अल्लाह से डरने का अजीब वाक़िआ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० फ़रमाते हैं कि मैं हज के बाद वापस आ रहा था कि एक सवारी को अपनी तरफ़ आते हुए

देखा। जब सवारी क़रीब आई तो मुझे पता चला कि इस पर कोई औरत सवार है। मैंने सलाम किया। उसने जवाब में कहा ﴿سلام قول من رب رحيم﴾ उसने आयत पढ़ी तो मैं समझ गया कि उसने मेरे सलाम का जवाब दिया है। मैंने पूछा आप कहाँ से आ रही हैं? कहने लगी ﴿واتموا الحج والعمرة لله﴾ (तुम हज व उमरा अल्लाह के लिए पूरा करो)। मैं समझ गया कि यह हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत के बाद आ रही है। मैंने पूछा यहाँ कहाँ? कहने लगी ﴿من يضلل الله فلا هادى له﴾ (जिसे अल्लाह गुमराह करे उसे हिदायत देने वाला कोई नहीं होता)। मैं समझ गया कि यह रास्ता भूल गई है। मेरे अंदाज़े में वह बूढ़ी औरत थी। मैंने पूछा अम्मा किधर जाना चाहती हो? कहने लगी ﴿ادخلوا المصر ان شاء الله آمنين﴾ मैं समझ गया शहर जाना चाहती है। मैंने उससे कहा कि मुझे भी शहर में जाना है लिहाज़ा मैं आपको रास्ते की रहनुमाई कर देता हूँ। कहने लगी ﴿واحسنوا ان الله يحب المحسنين.﴾ (तुम नेकी करो अल्लाह तआला नेकोकारों से मुहब्बत करते हैं)। मैं सवारी की नकेल पकड़कर चल पड़ा। कुछ दूर चलने के बाद मैंने अरबी के कुछ अश'आर पढ़ने शुरू कर दिए। यह कहने लगी ﴿فاقرءوا ما تيسر من القرآن﴾ (पढ़ो जो कुछ तुम्हारे लिए क़ुरआन में से आसान किया गया)। मैं ख़ामोश तो हो गया मगर सोचता रहा कि यह औरत कौन है? मैंने उसकी कुछ घरेलू तफ़्सील मालूम करना चाही तो उसने कहा ﴿لا تسئلوا عن اشياء ان تبد لكم تسوء.﴾ मैं समझ गया कि घरेलू मामलात पर बात करना नहीं चाहती। मैं चलता रहा। शहर के क़रीब आकर मैंने पूछा, शहर में आपको किससे मिलना है? कहने लगी, ﴿المال والبنون زينة الحيوة الدنيا﴾ मैं समझ गया कि

अल्लाह तआला ने इसको माल और बेटे भी अता किए। लिहाज़ा मैं शहर में दाख़िल हुआ। मुझे क़ाफ़िले मिले जो हज करके वापस आ रहे थे और उन्होंने पड़ाव डाला हुआ था। मैंने पूछा आपके बेटों के नाम क्या हैं? कहने लगी ﴿ابراهيم واسماعيل واسحاق.﴾ मैं समझ गया कि उसके बेटों के ये नाम हैं। मैंने बुलंद आवाज़ से पुकरा तो तीन बच्चे बड़े ख़ूबसूरत, बड़े इल्म व फ़ज़्ल वाले, तर व ताज़ा चेहरे वाले भागते हुए आए। वह परेशान थे कि हमारी अम्मी किधर रह गई। वे अम्मी को क़ाफ़िले में तलाश करते फिरते थे। ख़ैर जब आपस में मिले तो बहुत खुश हुए। मैंने सोचा कि अब मैं अपने घर वापस जाता हूँ। उस वक़्त उस औरत ने फिर क़ुरआन पाक की आयत पढ़ी ﴿ويطعمون الطعام على حبه﴾ बच्चों को इशारा किया कुछ खिलओ। फ़ौरन बच्चे कुछ फल लेकर आए। मैंने खाने से इंकार किया तो उसने आयत पढ़ी ﴿انما نطعمكم لوجه الله﴾ (हम तो अल्लाह की रज़ा के लिए आपको खिलाते हैं)। मैं बड़ा हैरान हुआ कि या अल्लाह! यह क्या मामला है। यह मामला मुझसे हल नहीं हो रहा है। मैंने कुछ फल खाए और बच्चों से पूछा कि क्या मामला है जब से आपकी वालिदा मुझ से बात कर रही है मेरी हर बात के जवाब में यह क़ुरआन पाक की आयत पढ़ रही है? वे कहने लगे हाँ यह हमारी वालिदा माजिदा क़ुरआन पाक की हाफ़िज़ा और हदीस की आलिमा हैं! इसके दिल में ख़ौफ़े ख़ुदा बैठ चुका है कि क़यामत के दिन मुझे अपनी बातों का जवाब देना पड़ेगा। लिहाज़ा बीस साल से क़ुरआन पाक की आयतों के सिवा कोई बोल इसकी ज़बान से नहीं निकला। सुब्हानअल्लाह! अल्लाह के डर का अजीब अंदाज़ देखिए कि

कलामे इलाही के सिवा कोई एक बोल ज़बान से नहीं निकलता।

क़यामत के दिन की हाज़िरी

क़यामत के दिन ऐसे लोग अल्लाह की हुज़ूर में पेश होंगे जिन की ज़बान से बीस-बीस साल से क़ुरआने पाक के सिवा कोई बोल नहीं निकला था। वहाँ अगर हम अपनी बेवक़ूफ़ी और जिहालत की बातचीत के साथ पेश होंगे तो हमें कितनी शर्मिंदगी होगी। अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हम से पूछ लिया कि बताओ तुमने फ़लां को ज़लील क्यों कहा था? फ़लां को कमीना क्यों कहा था? फ़लां को बेईमान क्यों कहा था? वहाँ जवाब देना मुश्किल हो जाएगा। वहाँ तो अंबिया अलैहिमुस्सलाम भी थर्राते होंगे। हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० अपनी मशहूर किताब 'ग़ुन्नियतुत्तालिबीन' में लिखते हैं, 'क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपने जलाल में होंगे। नफ़्सी-नफ़्सी का आलम होगा। अल्लाह तआला ईसाईयों से पूछेंगे कि तुमने मख़्लूक़ को मेरा शरीक क्यों बनाया? वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का नाम लेंगे कि इन्होंने कहा था। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से पूछेंगे ﴿انت قلت﴾ क्या आपने कहा था? जब हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से ख़िताब होगा तो हैबते इलाही के मारे उनके बदन के हर बाल से ख़ून के क़तरे निकलेंगे।'

जब सच्चों के साथ यह मामला होगा तो वहाँ हम जैसे झूठों का क्या हाल होगा? आज ज़बान से उलटी सीधी बातें निकालना आसान मगर क़यामत के दिन जवाब देना मुश्किल काम।

जहन्नम में कौन लोग जाएंगे

रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक बार सवाल किया गया कि ऐ अल्लाह के नबी अक्सर इंसान किस वजह से जहन्नम में जाएंगे? अल्लाह के नबी ने फ़रमाया दो आज़ा की बदपरहेज़ी की वजह से यानी,

﴿ما بين لحييه وما بين رجليه﴾

वह चीज़ जो दो जबड़ों के बीच है यानी ज़बान और वह जो दो रानों के बीच है यानी शर्मगाह।

अक्सर लोग ज़बान और शर्मगाह के ग़लत इस्तेमाल की वजह से जहन्नम में जाएंगे।

जन्नत की ज़मानत

हदीस पाक का खुलासा है कि जो आदमी मुझे अपनी ज़बान और शर्मगाह के सही इस्तेमाल की ज़मानत दे दे मैं उसके लिए जन्नत में घर दिलाने का ज़ामिन हूँ। इससे ज़बान के सही इस्तेमाल करने की अहमियत का अंदाज़ा लगाना आसान है।

पहले तोलो फिर बोलो

इंसान को चाहिए कि अपनी बातचीत खुद अपने कानों से सुनने की आदत डाले। जिसकी ज़बान से निकली हुई बात उसके कान नहीं सुनते जो इतने क़रीब हैं भला उसकी ज़बान से निकले हुए बोल वे कान क्या सुनेंगे जो इतने दूर हैं। इसलिए फ़रमाया, पहले तोलो फिर बोलो।

आज हम पहले बोलते हैं फिर तोलते है और कभी-कभी तो हम तोलते ही नहीं, सिर्फ़ बोलते रहते हैं। किसी शायर ने क्या उम्दा बात कही है—

कहे एक जब सुन ले इंसान दो
ख़ुदा ने ज़बान एक दी कान दो

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने ज़बान तो एक दी है और कान दो दिए। ऐ इंसान! दो बातों के सुनने के बाद तुझे एक बात करनी। और आज हम सुनना तो चाहते ही नहीं। आपने देखा होगा कि महफ़िल में एक आदमी बात कर रहा है और दूसरा आदमी उसे पूरी बात करने का मौक़ा नहीं देता। अधूरी बात सुनते ही जवाब देना शुरू कर देता है। एक वक़्त में दोनों बोल रहे होते हैं। शायद दीवारों को सुना रहे होते हैं या अपने फ़रिश्तों को। मिज़ाज में इतनी बरदाश्त नहीं होती कि ग़ौर से दूसरे की बात सुन लें।

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़ौफ़े-ख़ुदा

हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु के बारे में आता है कि कभी-कभी अपनी ज़बान को पकड़कर खींचते थे और फ़रमाते थे कि यह जिस्म का वह हिस्सा है जिसकी वजह से अक्सर जहन्नम में डाले जाएंगे। अज़ीम है वह इंसान जिसकी ख़ामोशी फ़िक्र के साथ और जिसकी बातचीत ज़िक्र के साथ होगी।

ज़बान की ख़ता

ज़बान की ग़लती पाँव की ग़लती से ज़्यादा ख़तरनाक हुआ

करती है। पाँव फिसल जाए तो दोबारा खड़ा हो जाता है लेकिन अगर ज़बान से ग़लत बात निकल जाए तो फिर इख़्तियार में कुछ नहीं रहता।

हसन बसरी रह० अपनी मजलिसों में अक्सर फ़रमाया करते थे कि मुझे एक छोटी सी बच्ची ने नसीहत कर दी। किसी ने पूछा हज़रत क्या नसीहत की? फ़रमाया कि एक बार बारिश हो रही थी, कीचड़ था। लोग बड़ी एहतियात से चल रहे थे। मैं भी जा रहा था। मैंने एक बच्ची को आते हुए देखा। मैं ने कहा बेटी एहतियात से चलना, कहीं फिसल न जाना। उसने मुझे देखकर कहा मैं फिसल भी गई तो दोबारा खड़ी हो जाऊँगी, ज़रा आप अपना ख़्याल रखना अगर आप फिसल गए तो उम्मत का क्या बनेगा, आप उम्मत के सरदार हैं, कहीं आप न फिसल जाना। फ़रमाया करते थे कि एक छोटी सी बच्ची ने जमने का सबक़ दे दिया। यह्या बिन मुआज़ रह० एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। फ़रमाया दिल की मिसाल हंडिया की सी है। ज़बान की मिसाल चम्मच की सी है। चम्मच में वह कुछ निकलता है जो हंडिया में मौजूद होता है। ज़बान वही कुछ निकलती है जो दिल में मौजूद होता है अगर दिल में ज़ुलमत होगी तो ज़बान से भी बुरी बात निकलेगी अगर दिल में नूर होगा तो ज़बान से पाकीज़ा बात निकलेगी।

ज़बान को सही इस्तेमाल कीजिए

जिस तरह हकीम लोग ज़बान की रंगत को देखकर बीमारी का अंदाज़ा लगा लेते हैं उसी तरह उलमा व सालिहीन ज़बान की बातचीत को सुनकर रूहानी बीमारियों का अंदाज़ा लगा लेते हैं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि जब तक तुम नहीं बोलोगे आलिम समझे जाओगे। कभी फ़रमाते तुम बात करो पहचाने जाओगे। कभी फ़रमाते आदमी अपनी ज़बान के नीचे छुपा हुआ है यानी ज़रा बोला तो उसने अपनी हक़ीक़त को खोला। इसलिए इंसान सोच समझकर बातचीत करे।

जो आदमी कहता है कि मैं बहुत सही बातचीत करता हूँ उस आदमी की बातचीत ज़रा ग़ुस्से की हालत में सुना करें। भाई जब आप आराम और मज़े से बैठे हैं तो आपको कुत्ते ने काटा है कि आप औल-फ़ौल बकें। पता जब चलेगा कि कोई तबियत के ख़िलाफ़ बात पेश आएगी, जब कोई ऐसी बात कर दे जो दिल पर बिजली बनकर गिरे। अब देखना होगा कि आप कैसे जवाब देते हैं। सब्र व इस्तिक़ामत से सुनते हैं, सोच समझकर जवाब देते हैं या उसके जवाब में जाहिलाना बातचीत शुरू कर देते हैं। लिहाज़ा आदमी की बातचीत का अंदाज़ा ग़ुस्से की हालत में किया करें। आमतौर पर देखा गया है कि ग़ुस्से में मर्दों के हाथ बेक़ाबू हो जाते हैं और औरतों की ज़बान बेक़ाबू हो जाती है।

औरत की ज़बान वह तलवार है जो कभी ज़ंग आलूद नहीं हुआ करती। हमेशा चलती रहती है हालाँकि ज़बान की तलवार उन रिश्तों को तोड़ देती है जिनको लोहे की तलवार नहीं तोड़ सकतीं।

ज़रा संभलकर रहना

मेरे दोस्तो महफ़िल में बैठकर अपने बारे में बुरे कलिमात न कहा करें। जब आप चले जाएंगे यह हक़ आपके दोस्त अदा

करेंगे। कुछ लोग महफ़िल में बैठकर अपनी आजिज़ी और मिस्कीनी का इज़्हार करते हैं। हक़ीक़त में वह कह रहे होते हैं कि ﴿عرفونى﴾ मुझे पहचानो। दानाओं का क़ौल है, उलमा की महफ़िल में बैठो तो ज़बान संभालकर बैठो, हाकिम की महफ़िल में बैठो तो निगाहें संभालकर बैठो और अल्लाह वालों की सोहबत में बैठो तो अपने दिलों को संभालकर बैठो। आमतौर पर देखा गया है कि लम्बी ज़बान इंसान की उम्र को छोटी कर देती है क्योंकि जितना ज़्यादा बोलेगा उतना अपने सर पर ज़्यादा मुसीबत लेगा।

अजीब नसीहत

हज़रत ख़्वाजा बाक़ीबिल्लाह रह० बहुत कम बोलते थे। एक आदमी कहने लगा कि हज़रत आप नसीहत करें, हमें फ़ायदा होगा। हज़रत ने जवाब दिया जिसने हमारी ख़ामोशी से कुछ नहीं पाया वह हमारी बातों से भी कुछ नहीं पाएगा। सुब्हानअल्लाह क्या अजीब बात कही। शायर ने कहा—

कह रहा है शोरे दरिया से समंदर का सकूत
जितना जिसमें ज़र्फ़ है उतना ही वह ख़ामोश है

इसलिए अल्लाह वाले ख़ामोश तबियत वाले हुआ करते हैं। हाँ कोई इल्मी बात हो तो बातचीत करेंगे। मस्अला पूछा जाए तो तफ़्सीलें खोलेंगे मगर उन्हें बातों का चस्का नहीं हुआ करता।

ज़बान के ग़लत इस्तेमाल की वजह से इंसान पहाड़ों के बराबर गुनाहों का बोझ अपने सर पर रख लेता है। कहते हैं कि बेवक़ूफ़ के गले में घंटी बांधने की ज़रूरत पेश नहीं आती। उसकी

बातचीत ही बता देती है कि वह बेवक़ूफ़ इंसान है। दानाओं का क़ौल है कि अक़्लमंद सोचकर बोलता है और बेवक़ूफ़ इंसान बोलकर सोचता है गोया इतना ही फ़र्क़ होता है बेवक़ूफ़ और अक़्लमंद में। अक़्लमंद इंसान सोचकर बोलता है जबकि बेवक़ूफ़ बोलकर सोचता है बल्कि ऐसे लोगों से कम बात करें जो ज़ुबान के बुरे हों इसलिए कि अगर उसने कोई बुरा कलिमा कह दिया जिसके जवाब में आपने भी कुछ कहा तो उसके पास कहने के लिए और भी बुरे कलिमात होंगे।

बदज़ुबानी से बचो

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम अपने माँ-बाप को गालियाँ न दिया करो। सहाबा किराम ने पूछा ऐ अल्लाह के नबी! अपने माँ-बाप को कौन गालियाँ देता है। फ़रमाया कि तुम किसी के माँ-बाप को गालियाँ दोगे तो वह जवाब में तुम्हारे माँ-बाप को को गालियाँ देगा। ऐसा ही है जैसे तुमने अपने माँ-बाप को गाली दी।

सच का बोल-बाला

इंडिया का वाक़िआ है कि एक शहर में ज़मीन का टुकड़ा था जिस पर झगड़ा खड़ा हो गया। मुसलमानों को दावा था कि यह ज़मीन हमारी है, हिंदुओं का दावा था कि हमारी ज़मीन है।—हिंदू चाहते थे कि वहाँ मंदिर बनाया जाए, मुसलमान चाहते थे वहाँ मस्जिद बनाई जाए। अंग्रेज़ वक़्त का हाकिम था। क़रीब था कि

आपस में मरने मारने की नौबत पहुँच जाती। मुक़द्दमा बड़ा नाज़ुक था। हाकिम भी परेशान था कि कोई सुलह सफ़ाई की सूरत निकल आती तो बेहतर था। जब मुक़द्दमे की सुनवाई होने लगी तो अंग्रेज़ जज ने सवाल पूछा कि सफ़ाई की कोई सूरत है? हिंदुओं ने कहा कि हम एक हल पेश करते हैं, बग़ैर मुक़द्दमे के बात सुलझ जाएगी। जज ने कहा वह कौन सी। कहने लगे हम एक मुसलमान आलिम का नाम बताते हैं आप उनको अपने पास बुला लीजिए और उनसे पूछ लीजिए यह कि जगह किसकी है। अगर वह कह दें कि हिंदुओं की है तो हमारे हवाले कर दीजिए अगर वह कहें कि मुसलमानों की है तो उनके हवाले कर दीजिए। मगर हम उनका नाम सिर्फ़ आपको बताएंगे, लोगों के सामने ज़ाहिर नहीं करेंगे। जज ने इसी पर फ़ैसला छोड़ दिया और मुक़द्दमे की सुनवाई के लिए अगली तारीख़ दे दी। लोग अदालत के कमरे से बाहर निकले तो हिंदू अवाम अपने नुमाइंदों से नाराज़ होने लगे कि बस तुमने बेड़ा ग़र्क़ कर दिया। जिसका नाम दिया है वह मुसलमान है वह तो मुसलमानों के हक़ में ही बात करेगा। दूसरी तरफ़ मुसलमान ख़ुशी से उछल रहे थे। कह रहे थे कि एक मुसलमान को चुना गया है गवाही देने के लिए जब वह मुसलमान है तो वह आख़िर मस्जिद बनाने की ही बात कहेगा। मुसलमान ख़ुशियाँ मना रहे हैं, हिंदुओं के दिल मुर्झा गए हैं। बहरहाल उस दिन का इंतिज़ार था। जब तारीख़ आई तो बड़ी तादाद में लोग अदालत में पहुँच गए। मजमा लगा हुआ था। वहाँ एक अल्लाह वाले को पेश किया गया जिनकी गवाही हिंदुओं को भी मंज़ूर थी। जज साहब ने पूछा आप बताएं कि यह ज़मीन हिंदुओं की है या

मुसलमानों की। इस आलिम बा-अमल ने कहा हिंदुओं की है। जज ने पूछा कि क्या हिंदू इस ज़मीन पर मंदिर बना सकते हैं। उन्होंने कहा जब हिंदुओं की मिल्कियत है तो मंदिर बनाएं या घर बनाएं उनकी मर्ज़ी, उनको बनाने का इख़्तियार है। चुनाँचे जज ने उसी वक़्त तारीख़ी फ़ैसला तारीख़ी अलफ़ाज़ में लिखा:

"आज के इस मुक़द्दमे में मुसलमान हार गए मगर इस्लाम जीत गया।"

जब जज ने फ़ैसला सुनाया तो हिंदुओं ने कहा कि आपने फ़ैसला हमारे हक़ में दे दिया हम कलिमा पढ़ते हैं मुसलमान होते हैं। अब हम अपने हाथों से इस जगह मस्जिद बनाएंगे, सुब्हानअल्लाह।

अल्लाह तआला ने सच बोलने की बरकत से हिंदुओं को इस्लाम क़ुबूल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी और उस जगह मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ दी।। सच का बोल बाला हुआ। किसी ने सच कहा है—

हज़ार ख़ौफ़ हो लेकिन ज़बान दिल की रफ़ीक़
यही रहा है अज़ल से क़लंदरों का तरीक़

गुनाहों की माफ़ी का तरीक़ा

आज कुछ लोग अक्सर शिकवे करते रहते हैं, कहते हैं कि पता नहीं लताइफ़ ताज़ा नहीं हो रहे, मुक़ामात तय नहीं हो रहे, पता नहीं आगे क़दम नहीं बढ़ रहा। पता है इसकी वजह क्या होती है? वजह यह होती है कि इंसान अपने आज़ा को ग़लत इस्तेमाल कर रहा होता है। मरीज़ गोया दवाई भी इस्तेमाल कर

रहा होता है, बद-परहेज़ी भी करता रहता है। भला उसकी बीमारी से जान कैसे छूटेगी। किसी ने हिंदी ज़बान में अच्छे अश्आर कहे–

राम राम जपदियां मेरी जिभ्या घिस गई
राम न दिल विच वसया ऐ की दहाड़ पई

(हम पंजाबी में में जिभ कह देते हैं तो हिंदी में ज़बान को जिभया कहते हैं।)

राम राम जपदियां मेरी जिभ्या घिस गई
राम न दिल विच वसया ऐ की दहाड़ पई
गल विच माला काठ दी ते मन्के ले पिरो
ते दिल विच घुंडी पाप दी राम जपयां की हो

जब दिल में गुनाह की घुंडी पड़ी हुई हो तो हम हाथ से तस्बीह फेरते भी रहें तो क्या नतीजा निकलेगा। मेरे दोस्तो! हमें अपनी ज़बान का सही इस्तेमाल करना चाहिए। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें इसको सही इस्तेमाल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे और जो गुनाह आज तक हम अपनी ज़बान से कर चुके हैं अल्लाह तआला उन गुनाहों को माफ़ फ़रमा दे।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين﴾

इस्लाह-ए-दिल

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفىٰ اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم الله الرحمٰن الرحيم

يوم ينفع مال ولا بنون الا من اتى الله بقلب سليم. سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

दिल की इस्लाह

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शादे गिरामी है :

बेशक बनी आदम के जिस्म में गोश्त का एक लोथड़ा है। जब वह ख़राब हो जाए तो तमाम जिस्म के अमाल ख़राब हो जाते हैं और जब वह ठीक हो जाए तो तमाम जिस्म के आमाल ठीक हो जाते हैं, जान लो कि वह इंसान का दिल है।

दूसरी जगह रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया :

﴿ان الله لا ينظر الى صوركم واموالكم ولكن ينظر الى قلوبكم واعملكم.﴾

बेशक अल्लाह तआला नहीं देखते तुम्हारी शक्ल व सूरत को,

नहीं देखते तुम्हारे माल पैसे को बल्कि वह देखते हैं तुम्हारे दिलों को और तुम्हारे आमाल को।

मालूम यह हुआ कि इंसान के दिल के बनने से इंसान के आमाल बन जाते हैं और दिल के बिगड़ने से इंसान के आमाल बिगड़ जाते हैं। यह दिल इंसान के लिए सदर मुक़ाम की हैसियत रखता है। इर्शादे बारी तआला है,

﴿ما جعل الله لرجل من قلبين في جوفه. (القرآن)﴾

अल्लाह तआला ने किसी आदमी के सीने में दो दिल नहीं बनाए।

गोया एक दिल रहमान के लिए हो दूसरा दिल शैतान के लिए हो। नहीं नहीं दिल एक है और एक ही के लिए है। इंसान की यह कोशिश हो कि अल्लाह तआला की याद से महकाकर रहे। इस दिल में अल्लाह की तरफ़ झुकाव और रुजु हो।

जन्नत किन लोगों के लिए है

इर्शादे बारी तआला है:

﴿يوم لا ينفع مال ولا بنون الا من اتى الله بقلب سليم.﴾

क़यामत के बारे में ज़िक्र फ़रमाया, उस दिन न माल काम आएगा और न नर औलाद काम आएगी, हाँ जो बना हुआ दिल लाएगा वह उसे काम आएगा।

ऐसा मालूम होता है कि अल्लाह तआला दिलों के व्यपारी हैं। अल्लाह तआला बंदे से दिल का सौदा चाहते हैं कि तू अपना दिल मुझे दे दे इसके बदले में मैंने अपनी जन्नतों को तेरे हवाले कर

दिया। ज़रा सोचें हम अपने एक रुपए के बदले दाग़ी सेब क़ुबूल नहीं करते। अल्लाह तआला अपनी जन्नतों के बदले इस दाग़ी दिल को कैसे क़ुबूल करेंगे। इसीलिए फ़रमाया :

﴿يوم لا ينفع مال ولا بنون الا من اتى الله بقلب سليم﴾

जो सालिम दिल लाया यानी वह दिल जो ग़ैर की मुहब्बत से पाक हो, ग़ैर के असरात से महफ़ूज़ हो उसको क़ल्बे सलीम कहते हैं। ऐसा दिल उसे काम आएगा। इसलिए इर्शाद फ़रमाया:

﴿وحصل ما فى الصدور﴾

महशर के दिन जो सीनों में होगा हम खोलकर बाहर कर देंगे।

अल्लाह तआला इंसान के दिल की कैफ़ियत को देखेंगे। दिल में मुहब्बते इलाही मौजूद है कि नहीं। दिल में माल की मुहब्बत ज़्यादा है या मालिक व ख़ालिक़ की मुहब्बत ज़्यादा है।

दिल सख़्त कैसे होता है

इंसान का दिल ज़मीन की तरह है। इंसान अगर ज़मीन पर बहुत अर्से तक खेती न करे, मेहनत न करे तो वह ज़मीन बंजर हो जाती है। वह ज़मीन पैदावार देना छोड़ देती है। इसलिए कि उस पर मेहनत नहीं हुई। वह ज़मीन सख़्त हो जाती है। इसी तरह फ़रमाया :

> **इंसान जब इस दिल पर मेहनत करना छोड़ देता है तो धीरे धीरे यह दिल सख़्त हो जाया करता है और दिल जब सख़्त होता है तो ऐसा कि यह पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त हो जाता है।**

फ़रमायाः

﴿ثم قست قلوبكم من بعد ذالك﴾

फिर उसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गए।

﴿فهي كالحجارة او اشد قسوة﴾

फिर यह पत्थरों की तरह हो गए बल्कि पत्थरों से भी ज़्यादा सख़्त हो गए।

बेशक पत्थरों से नहरे जारी हो जाया करती हैं और जब पत्थर फटता है तो कभी-कभी उसमें पानी निकल आता है और कुछ पत्थर तो ऐसे होते हैं जो अल्लाह के ख़ौफ़ से काँपते हैं।

लेकिन ऐ इंसान! जब तेरा दिल सख़्त होता है तो अल्लाह के ख़ौफ़ से काँपता नहीं है। पत्थर भी दिल की इस सख़्ती पर शर्माते हैं। इंसान के पास एक यही सरमाया है। इसे बना ले तो अल्लाह के हाँ कामयाब हो गया और अगर इसे बिगाड़ ले तो फिर यह इंसान बिल्कुल नाकाम हो गया।

दिल अंधा कैसे होता है

ग़फ़लत भरी ज़िंदगी गुज़ारने से इंसान का दिल अंधा हो जाता है, बिल्कुल अंधा। ऐसा अंधा कि नेकी और बदी में तमीज़ नहीं कर सकता। जैसे एक आदमी में ज़ाहिर बिनाई न हो, वह आदमी दोस्त व दुश्मन में फ़र्क़ नहीं कर सकता, अंधेरे और उजाले में तमीज़ नहीं कर सकता, पहचान नहीं कर सकता कि कौन सी चीज़ नफ़ा देने वाली है और कौन सी चीज़ नुक़सान देने वाली है। इसी तरह जब दिल अंधा हो जाता है तो वह इंसान बड़े

से बड़ा गुनाह कर लेता है मगर उसके सर पर जूँ भी नहीं रेंगती कि मैंने कोई अल्लाह की नाफ़रमानी की भी है या नहीं। उसको नेक आदमी की सोहबत अच्छी नहीं लगती। बुरे आदमियों की सोहबत उसको अच्छी लगती है। अब उसे दोस्त और दुश्मन की तमीज़ नहीं रही, अब उसे नेकी और बदी की तमीज़ नहीं रही, अब उसे अंधेरे और उजाले का फ़र्क़ मालूम न हुआ क्योंकि दिल अंधा हो चुका है। एक क़ौम ऐसी गुज़री। उस पूरी क़ौम को अल्लाह तआला ने कहा, ﴿انهم قوم عمين.﴾ वह अंधी क़ौम थी। इसका क्या मतलब है, क्या ज़ाहिर में अंधी थे? जी नहीं। रिवायत में किसी क़ौम के बारे में यह नहीं आता कि वे सारे के सारे अंधे हों। हाँ एक क़ौम ऐसी गुज़री है जिसने अपने नबी के फ़रमान को न माना न उस पर ईमान लाए। इसिलए अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿انهم قوم عمين.﴾ वह अंधी क़ौम थी। उसने अपने नबी को न पहचाना, अपने ख़ालिक़ व मालिक न पहचाना और ईमान को न अपनाया। उन्हें अंधी क़ौम कहा गया। क़ुरआन पाक में इर्शादे बारी तआला है :

﴿ومن كان في هذه اعمى فهو في الاخرة اعمى واضل سبيلا.﴾

और जो इस दुनिया में अंधा रहा वह आख़िरत में भी अंधा रहेगा।

क्या मतलब इसका जो इस दुनिया में अंधा है उसको आख़िरत में आँखें नहीं मिलेंगी। ना! ना! इसका मतलब यह है कि जो इस दुनिया में अल्लाह तआला के हुक्म से आँख बचाता है, अल्लाह के हुक्मों को नज़र अंदाज़ करता रहा, उसके हुक्मों से अंधा बना रहा, अल्लाह तआला उसको आख़िरत में उसकी बीनाई को छीन लेंगे।

इसलिए दूसरी जगह इर्शाद फ़रमाया (जब उसको अंधा खड़ा किया जाएगा तो वह यूँ कहेगा) :

﴿قال رب لما حشرتني اعمى وقد كنت بصيرا.﴾

ऐ अल्लाह! मुझे अंधा क्या खड़ा किया और दुनिया में तो मैं आँखों वाला था।

﴿قال كذلك اتتك ايتنا فنسيتها و كذلك اليوم تنسى﴾

कहा जाएगा ऐसा ही है जैसे तेरे पास हमारी आयतें आयीं तो तूने उनको भुला दिया और आज के रोज़ तुम्हें भी भुला दिया जाएगा।

मालूम हुआ कि जो इंसान अपने परवरदिगार के फ़रमान को नज़रअंदाज़ करेगा और उससे आँख बचाएगा, यह इंसान आख़िरत में देखने से महरूम कर दिया जाएगा, अंधा उठाया जाएगा।

उन लोगों के बारे में जो अल्लाह तआला के रास्ते पर न चलें नफ़्स और शैतान का लुक़्मा बन गए, अल्लाह तआला फ़रमाता है :

لهم قلوب يعقلون بها او آذان يسمعون بها فانها لا

تعمى الابصار ولكن تعمى القلوب التى فى الصدور.

ऐ काश! उनके दिल होते जो उन्हें अक़्ल सिखाते, उनके कान होते जिनसे वे हिदायत की बात सुनते और आँखें तो अंधी नहीं हुआ करती, यह तो सीनों के अंदर दिल अंधे हुआ करते हैं।

दिल पर मुहर कैसे लगती है

जनाबे रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद

फ़रमाया :

"इंसान गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक दाग़ लगा दिया जाता है। फिर गुनाह करता है फिर दाग़ लगा दिया जाता है, फिर गुनाह करता है फिर दाग़ लगा दिया जाता है। इसी तरह दाग़ लगते रहते हैं तो एक वक़्त ऐसा आ जाता है कि दिल बिल्कुल स्याह हो जाता है हत्ताकि अल्लाह तआला उस पर मुहर जब्बारियत लगा देते हैं।"

﴿خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ﴾

अल्लाह ने मुहर लगा दी उनके दिलों के ऊपर।

इसको कहते हैं कि दिल पर मुहरे जब्बारियत लग गई। दिल बिल्कुल स्याह हो जाता है। फिर यह इंसान नेकी की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं होता।

दिल साफ़ कैसे होता है

इंसान जब तौबा करता है तो दिल की स्याही दूर हो जाती है, दिल का अधेंरा दूर हो जाता है, दिल की सख़्ती दूर हो जाती है और जब इंसान अल्लाह तआला के सामने सर झुकाकर अपने गुनाहों से सच्ची पक्की तौबा करता है। अल्लाह तआला दिल को धो देते हैं। एक बार हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को 'वही' की गई कि अपने दिल को धो लिया करो। आप कहने लगे, "ऐ अल्लाह! पानी तो वहाँ पहुँचता नहीं मैं इसको कैसे धोऊँ?" तो फ़रमाया, "यह पानी से नहीं, यह दिल तो मेरे सामने रोने से धुला करता है।" यानी अगर तू मेरे हुज़ूर अपने गुनाहों की माफ़ी मांगेगा, आजिज़ी और ज़ारी करेगा तो इन आँसुओं के गिरने से

तेरे दिल को साफ़ कर दिया जाएगा। दिल इससे धुलता है।

दिल की ग़िज़ा क्या है

इंसान के जिस्म के लिए अल्लाह तआला ने ग़िज़ा बनाई है। अगर इंसान वह ग़िज़ा न खाए तो बदन कमज़ोर हो जाता है। बदन आमाल करने के क़ाबिल नहीं रहता। इसी तरह दिल की भी ग़िज़ा है और वह नेकी के काम करना, अल्लाह वालों की मजलिस, अल्लाह का ज़िक्र ये सब दिल की ग़िज़ा है।

दिल की पालिश क्या है

हदीस पाक में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, ﴿لكل شئ صقالة﴾ हर चीज़ के लिए सैक़ल होता है जिसे पालिश कहते हैं, जैसे जूतों की पालिश कर दी जाए तो जूता बिल्कुल चमक जाता है, इसी तरह लोहे के लिए पालिश होती है, रेगमाल लगा दिया जाए तो लोहा चमक उठता है, इसी तरह कपड़े की पालिश साबुन है अगर कपड़ा उससे धो दिया जाए तो कपड़ा उजला और साफ़ हो जाता है। इसी तरह फ़रमाया :

﴿لكل شئ صقالة وصقالة القلوب ذكر الله﴾

हर चीज़ के लिए एक पालिश होती है और दिल की पालिश अल्लाह की याद है।

बस जो इंसान अल्लाह! अल्लाह! करता है, अल्लाह की याद में लगा रहता है उसका स्याह दिल साफ़ हो जाता है। गुनाहों के असरात ख़त्म हो जाते हैं।

अल्लाह वालों की मजलिसों की बरकत

अल्लाह वालों की मजलिसें ऐसी होती हैं कि उन महफ़िलों में हर लम्हे इंसान के गुनाह झड़ते हैं। ऐसे गुनाह झड़ते हैं जैसे पतझड़ के मौसम में पेड़ों के पत्ते झड़ते हैं। अल्लाह के ज़िक्र से दिलों की सख़्ती दूर होती है। मुर्दा दिल ज़िंदा हो जाते हैं।

अजीब वाक़िआ

एक आदमी हसन बसरी रह० के पास आया और कहने लगा हज़रत! पता नहीं हमें क्या हो गया है, हमारे दिल तो शायद सो गए हैं आप नसीहत करते हैं, हम पर असर नहीं होता। फ़रमाया, भाई जो सोया हुआ हो वह तो उसे झंझोड़ने से जाग जाता है अगर तुम फिर भी नहीं जागते तो तुम सोए हुए नहीं हो मरे हुए हो कि इंसान अल्लाह वालों की मजलिस में आकर नसीहत क़ुबूल न करे तो, गुनाहों से सच्ची पक्की तौबा न करे, आइंदा के लिए नेक आमाल की नीयत न करे तो यक़ीनन उसका दिल सोया हुआ नहीं बल्कि मरा हुआ है। और कितने लोग ऐसे हैं कि ज़िंदा होंगे, खाते पीते होंगे, चलते फिरते होंगे मगर उनके अंदर का इंसान मरा हुआ होगा। बिल्कुल अंदर से इंसानों वाली सूरत नहीं होगी। मन में झांकें तो उनकी सूरत हैवान की सी नज़र आएगी। कोई किसी सूरत में कोई किसी सूरत में। अंदर इंसान की शक्ल हो यह किसी क़िस्मत वाले को नसीब होती है।

अपने मन में डूबकर पा जा सुराग़े ज़िंदगी
तू अगर मेरा नहीं बनता न बन अपना तो बन

ऐ इंसान! तू अपने मन में ज़रा झांककर उस खिड़की को खोल, अपनी असल तस्वीर को ज़रा देख। इंसान जब अपने मन में झांकता है तो उसे अपनी असली तस्वीर नज़र आती है। यही फ़रमाया गया है कि तू अपनी असली तस्वीर को देख तुझे क्या होना चाहिए था और तू क्या बना फिरता है।

दिलों की ख़ुराक

दिल अपनी ख़ुराक के लिए ऐसे ही मोहताज होते हैं जैसे जिस्म अपनी ख़ुराक के लिए खाने के मोहताज होते हैं। दिल की ख़ुराक वाअज़ व नसीहत, अल्लाह का ज़िक्र, अल्लाह वालों की मजलिसें हैं। इससे दिल की दुनिया बदल जाती है।

हकीम अन्सारी का वाक़िआ

आँख का नूर और चीज़ है और दिल का नूर और चीज़ है। हकीम अन्सारी देहली के बड़े मशहूर हकीम थे। अल्लाह तआला ने फ़हम व फ़िरासत अता फ़रमाई थी। अंधे थे लेकिन हिकमत का काम किया करते थे। हाथ देखते थे और मरीज़ के मर्ज़ को पहचान लिया करते थे। आँख से देख नहीं सकते थे न चेहरा देख सकते थे न रंग देख सकते थे न ज़बान देख सकत थे मगर अल्लाह तआला ने फ़िरासत अता कर दी थी कि सिर्फ़ हाथ से नब्ज़ देखते और पूरे मर्ज़ को पहचान लिया करते थे। बड़े मशहूर हकीम थे। अगर दूसरे हकीमों से मर्ज़ क़ाबू में नहीं आता तो मरीज़ उनके पास जाया करते थे। हमारे सिलसिले के एक बुज़ुर्ग ख़्वाजा मुहम्मद अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० फ़रमाते थे कि मुझे

शौक़ हुआ कि मैं भी ज़रा हकीम साहब को देखूँ। लिहाज़ा उनकी दुकान पर गया। उनसे कोई बात नहीं की ताकि मेरे आने का उन को पता न चले और वहाँ बैठकर मैंने उनके दिल पर तवज्जेह डालनी शुरू कर दी। कुछ देर गुज़री तो मैंने कहा अच्छा दिल के बजाए रूह पर तवज्जेह डालता हूँ। जब मैंने उस पर तवज्जेह डालनी चाही तो वह फ़ौरन बोल उठे ना! ना! हज़रत आप मेरे दिल पर ही तवज्जेह करते रहें अगर यही बन गया तो सब कुछ बन गया। फ़रमाते हैं मैं हैरान हो गया कि इस आदमी को अंधा कौन कहे। जिसे बताया भी नहीं गया मगर इसका दिल साफ़ है कि वह आने वाले के अनवारात को महसूस कर रहा है, अल्लाहु अकबर।

दिल बीना भी कर ख़ुदा से तलब
आँख का नूर दिल का नूर नहीं है

दिल का मोतिया बिंद और उसका इलाज

मोतिया बिंद एक पर्दा है जो आँखों के सामने आ जाता है। आँखें ठीक होती हैं मगर पर्दे की वजह से इंसान को नज़र आना बंद हो जाता है। इसी तरह दिल पर भी मोतिया बिंद आ जाता है जब गुनाहों की ज़ुलमत छा जाए यानी मोतिया बिंद आ जाए तो फिर इंसान सारा दिन नमाज़ें क़ज़ा करता रहता है। उसको कोई परवाह नहीं होती। ज़बान से झूठ बोलता है कोई परवाह नहीं हालाँकि बाज़ हदीसों में फ़रमाया गया है, "जो इंसान झूठ बोलता है उसके मुँह से इतनी बदबू निकलती है कि फ़रिश्ते दो मील उससे दूर चले जाते हैं।" इतनी बदबू निकलती है मगर इंसान

महसूस नहीं करता। जिस ज़मीन के ऊपर इंसान गुनाह कर रहा होता है, किताबों में लिखा है कि वह ज़मीन चीख़ रही होती है और पुकार रही होती है, ऐ अल्लाह! मुझे इजाज़त दे दे मैं तेरे इस नाफ़रमान को अपने में धंसा लूँ लेकिन इंसान गुनाहों में मसरूफ़ होता है। वह परवाह ही नहीं करता।

जैसे आँख पर मोतिया बिंद आ जाए तो इंसान डाक्टरों के पास जाता है और उनके पास जाकर मोतिया बिंद का ईलाज करवा लिया जाता है। इसी तरह जब दिल सख़्त हो जाए तो इंसान अल्लाह वालों की मजलिसों में जाए, उनके पास जाने से दिल का मोतिया बिंद दूर हो जाता है, दिल की बीनाई लौट आती है। दिल फिर देखना शुरू कर देता है। एक ठोकर लगती है और फिर इंसान की ज़िंदगी में इंक़लाब आ जाता है। हमने कितने लोगों को देखा कि अल्लाह वालों की सोहबत से उनकी ज़िंदगी में इंक़लाब आ गया—

कोई अंदाज़ा कर सकता है उसके ज़ोरे बाज़ू का?
निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती हैं तक़दीरें

कभी-कभी अल्लाह वालों की सोहबत में बिगड़े हुए लोग आते हैं और एक नज़र पड़ती है तो उनके दिल की दुनिया बदल जाती है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नज़र

सहाबा किराम शुरू में कुफ़्र और शिर्क के गुनाहों में लिथड़े हुए थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आए तो हुज़ूर

की नज़र में ऐसी तासीर थी कि उनके दिलों धोकर रख देती थी।

खुद न थे जो राह पर औरों के हादी बन गए
वह क्या नज़र थी जिसने मुर्दों को मसीहा कर दिया

अल्लाह की मुहब्बत का रंग

कुछ लोग रंगफ़रोश होते हैं। कुछ लोग रंगसाज़ होते हैं, कुछ लोग रंगरेज़ होते हैं। एक रंग को बेचने वाला और एक रंग को कपड़े पर चढ़ाने वाला। जो रंग बेचने वाला हो उसको रंगफ़रोश कहते हैं जो रंग ऊपर चढ़ाने वाला हो उसको रंगरेज़ कहते हैं। किताब व सुन्नत एक रंग है, उलमा किराम रंगफ़रोश हैं और मशाइख़ सूफ़िया रंगरेज़ हैं। जो उनको यहाँ जाता है उसके दिल पर किताबुल्लाह का रंग चढ़ा देते हैं, अल्लाहु अकबर।

अल्लाह का रंग और दिल

﴿صبغة الله ومن احسن من الله صبغة.﴾

अल्लाह का रंग और अल्लाह के रंग से किसका रंग बेहतर है।

इंसान ऐसे लोगों की मजलिसों को हासिल करे और अल्लाह के ज़िक्र के लिए अपनी हिम्मत लगाए अगर मरते-मरते भी दिल बन गया तो इसका काम हो गया।

इंसान की ज़िंदगी कितनी है

इंसान गुनाह इस नीयत से करता है कि तौबा कर लूँगा और तौबा इसलिए नहीं करता कि ज़िंदगी अभी बहुत बाक़ी है। हज़रत

इमाम ग़ज़ाली रह० एक किताब में फ़रमाते हैं, "ऐ दोस्त! तुझे क्या मालूम बाज़ार में वह कपड़ा पहुँच चुका है जिससे तेरा कफ़न बनना है।" इंसान गुनाह करता है कि मैं तौबा कर लूँ और तौबा नहीं करता कि अभी ज़िंदगी लम्बी है और यह नहीं जानता कि मेरी ज़िंदगी बहुत थोड़ी है–

आशयाना शाख़ गुल पे कब तेरी मीरास है
बस ग़नीमत जान ले जितना बसेरा हो गया

ग़नीमत जान लो मिल बैठने को
जुदाई की घड़ी सर पर खड़ी है

ग़नीमत समझ ज़िंदगी की बहार
आना न होगा यहाँ बार बार

जनाब रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने एक सहाबी से पूछा कि ज़िंदगी के बारे में क्या सोचते हो? अर्ज़ किया सुबह उठता हूँ यह यक़ीन नहीं होता कि रात आएगी भी या नहीं। दूसरे से पूछा आप क्या सोचते हैं? फ़रमाया हज़रत मैं चार रक्अत की नीयत बाँधता हूँ और मुझे मालूम नहीं होता कि इसको पूरा कर सकूँगा या नहीं। आपने फ़रमाया कि मेरा मामला तो यह है कि नमाज़ पढ़ रहा हूँ और एक तरफ़ सलाम फेर दिया है अब यह यक़ीन नहीं कि मैं दूसरी तरफ़ भी सलाम फेर सकूँगा या नहीं। ज़िंदगी का तो यह मामला है।

मुझे ताज्जुब है उस आदमी पर जो गुनाह इसलिए करता है कि मैं तौबा कर लूँगा और तौबा इसलिए नहीं करता कि अभी ज़िंदगी लम्बी है। यक़ीनन यह इंसान धोके में पड़ा हुआ है।

अल्लाह को क्या पसंद है

हदीस पाक में है:

ان اللہ لا ینظر الی صورکم واموالکم ولکن ینظر الی قلوبکم واعملکم.

बेशक अल्लाह तआला नहीं देखते तुम्हारी शक्ल व सूरत को, नहीं देखते तुम्हारे माल पैसे को बल्कि वह देखते हैं तुम्हारे दिलों को और तुम्हारे आमाल को।

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु का रंग काल, होंट मोटे, दाँत लम्बी मगर अल्लाह के यहाँ इतने मक़बूल थे। रसूलल्लाह अर्श पर जाते हैं तो जन्नत में किसी के क़दमों की आवाज़ सुनते हैं। पूछा जिब्रील! यह किसके क़दमों की चाप सुन रहा हूँ? जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ किया कि आपके गुलाम बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु के क़दमों के चलने की आवाज़ है। क़दम ज़मीन पर पड़ते थे और जन्नत में उसकी आवाज़ जाया करती थी।

इंसान दिल को बना ले क्योंकि अल्लाह तआला दिलों के व्यपारी हैं। अल्लाह तआला चाहते हैं कि इंसान अपने दिल में मुझे बसा ले। अगर ऐसा न हुआ तो इंसान दुनिया में भी नुक़सान उठाएगा और आख़िरत में भी नुक़सान उठाएगा। दिल का बिगड़ना बहुत आसान है मगर दिल का बनना बड़ा मुश्किल काम है। जो बनाता है, बनता है वह पता पाता है, दूसरों को मालूम नहीं होता। इंसान जिस रास्ते पर चलता है उस रास्ते के उसको ज़र्रे भी नज़र आते हैं और जिस रास्ते पर नहीं चलता उस रास्ते के पहाड़ भी नज़र नहीं आया करते। जो बनने वाले रास्ते पर चले

ही नहीं उसको क्या मालूम इस रास्ते पर कितनी मेहनत करनी पड़ती है।

सही मुसलमान कौन है

हमने तो ज़बान से कलिमा पढ़ लिया और हम समझते हैं कि इस्लाम बहुत आसान है—

यह शहादत गहे उलफ़त में क़दम रखना
लोग आसान समझते हैं मुसलमां होना

बात यह है कि हमने कलिमा तो पढ़ लिया लेकिन अपनी मर्ज़ी के मालिक बने फिरते हैं। सोचिए ज़िंदगी के चालीस साल गुज़र चुके हैं। इन चालीस सालों में हमारी आँख मुसलमान बन गई? हमारी ज़बान मुसलमान बन गई? कान मुसलमान बन गए? अल्लाह हमें सही मुसलमान बना दे—

ख़ुर्द ने कह भी दिया ला इलाहा तो क्या हासिल
दिल व निगाह मुसलमान नहीं तो कुछ भी नहीं

दिल की बस्ती

दिल का बिगड़ना आसान काम नहीं है मगर दिल का बनना मुश्किल काम है। किसी शायर ने क्या मज़े की बात कही है—

वीराने भी देखे हैं आबादी भी देखी है
जो उजड़े तो फिर न बसे दिल वह निराली बस्ती है

दिल का उजड़ना सहल सही, बसना खेल नहीं भाई
बस्ती बसना खेल नहीं यह तो बसते बसते बसती है

बस्तियों का बसना आसान काम नहीं होता। शहरों का आबादा होना आसान काम नहीं होता। शहर आबाद होते हैं तो ज़िंदगियाँ गुज़र जाती है। फिर शहर आबाद हुआ करते हैं। शायर ने यही कहा दिलों का आबाद हो जाना कोई आसान काम नहीं होता। जैसे शहर मुश्किल से आबाद होते हैं ऐसे ही दिल भी मुश्किलों से आबाद हुआ करते हैं। अल्लाह तआला हमें अपने दिलों को बनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين﴾

साइंस और इस्लाम

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم

بسم الله الرحمن الرحيم

ومن كل شئ خلقنا زوجين لعلكم تذكرون. سبحان ربك رب العزة

عما يصفون. وسلام على المرسلين. والحمد لله رب العالمين.

और हमने हर चीज़ में जोड़ा-जोड़ा बनाया ताकि तुम नसीहत हासिल कर सको।

साइंस की बुनियाद

यह आयत मुबारक में सारे सांइस की बुनियाद नज़र आती है। एक तो मर्द और औरत का जोड़ा है। इसी तरह हैवानों में परिन्दों में और दरिन्दों में जोड़े-जोड़े हैं मगर इस आयत की तफ़सील इससे बहुत ज़्यादा है।

काएनात की हर चीज़ जोड़ा-जोड़ा है

आप काएनात की हर चीज़ में ग़ौर व फ़िक्र करें। आपको जोड़ा नज़र आएगा। मसलन ज़मीन व आसमान का जोड़ा-जोड़ा

है। आसमान पर ज़मीन पर पानी बरसाता है। ज़मीन मादा की तरह उसको जज़्ब करती है, फिर खेतियाँ ज़मीन की औलाद होती है। बोटिनी का मज़मून पढ़ने वाले आज इस बात को समझते हैं कि पौधों में भी जोड़ा-जोड़ा होता है। एक पौधे से बीज हवा में उड़ता है दूसरे पौधे में बीज पहुँचता है और दूसरे पौधे में पहुँचकर एक नया फूल बरामद होता है। लिहाज़ा पेड़-पौधों में जोड़ा-जोड़ा होता है। और ग़ौर करें तो आसमान-ज़मीन, धूप-छांव, ख़ुश्की-तरी, दिन-रात हर चीज़ में जोड़ा-जोड़ा है बल्कि आज साइंस की दुनिया यह कहती है कि अगर मादा हमें मालूम है तो ऐंटी मैटर भी मौजूद है। मैटर और ऐंटी मैटर यह भी जोड़ा-जोड़ा है। अगर ज़रा और गहराई में चले जाएं तो माद्दे की बनावट एटम से होती है। एटम के अंदर एलैक्ट्रान और प्रोटोन का जोड़ा होता है। फिर ये दोनों मिलकर चार्ज वाले ज़र्रात बनते हैं। अब कोई बग़ैर चार्ज के ज़र्रा होना चाहिए था जो इनका जोड़ा बनता। इलैक्ट्रान और प्रोटान चार्ज पार्टिकल वाले हैं न्युट्रान बग़ैर चार्ज के हैं। यह जोड़ा बन गया। कैमिस्ट्री की दुनिया में जितने रि-एक्शन होते हैं उनकी बुनियाद 'आइन' पर होती है। हर मुरक्कब पहले मुसब्बित और मन्फ़ी (पलस-माइनस) 'आइन' में बटता है तब रद्दे अमल पूरा होता है, यह जोड़ा-जोड़ा हुआ। फिर कुछ चीज़े तेज़ाबी होती हैं और कुछ बेसिक होती हैं। यह भी जोड़ा-जोड़ा हुआ।

मुसलमान तलबा से अपील

﴿ومن كل شئى خلقنا زوجين لعلكم تذكرون.﴾

और हमने हर चीज़ का जोड़ा-जोड़ा बनाया ताकि तुम नसीहत

हासिल कर सको।

मैं मुसलमान पढ़ने वाले बच्चों से अपील करता हूँ कि वे इस आयत को उसूल बनाकर रिसर्च करें। साइंस की नई ईजादें सामने आएंगी।

आज देखिए कंप्युटर ने ज़मीन के फ़ासलों को समेटकर रख दिया। जो तब्दीलियाँ सालों में वजूद में आती थी वे आज दिनों में आ रही हैं। कंप्युटर की बुनियाद बिट्स पर है। एक ज़ीरो और एक वन है। मशीन की लैंगवेज 'ज़ीरो' और 'वन' से मिलकर बनती है। हर कंप्युटर ज़ीरो और वन के ऊपर काम करता है। ज़ीरो और वन भी एक जोड़ा हुआ। बस साबित हुआ कि हर चीज़ में जोड़ा-जोड़ा होता है।

असली इंसान और नक़ली इंसान

सारी बात करने का मक़सद यह है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त फ़रमाते हैं कि हमने हर चीज़ में जोड़ा-जोड़ा पैदा बना दिया है। ﴿لعلكم تذكرون﴾ ताकि तुम नसीहत हासिल करो। इस उसूल को ज़रा सामने रखकर इंसान के बारे में सोचिए। यह इंसान भी दो चीज़ों का मजमूआ है। एक जिस्म जो मकान है दूसरा रूह जो इसमें मकीन है। यह जिस्म नक़ली इंसान है इसके अंदर बसने वाली रूह असली इंसान है। यह भी दो चीज़ों का मजमूआ है, नक़ली इंसान और असली इंसान। नक़ली इंसान की ज़रूरत और हैं असली इंसान की ज़रूरत और हैं। वह कैसे? इंसान मिट्टी से बना और उसके जिस्म की ज़रूरतें ज़मीन से बरामद होती हैं।

मसलन पानी, कपड़ा, फल वग़ैरह हर चीज़ मिट्टी से निकलती है क्योंकि बुनियाद ही मिट्टी है। इंसान की रूह ऊपर से आई है। बस इस रूह की ग़िज़ा ऊपर से आने वाले अनवार व तजल्लियाँ हैं। बस नक़ली इंसान की ज़रूरतें और हैं, असली इंसान की ज़रूरतें कुछ और हैं।

दो चेहरे

इंसान के दो चेहरे हैं एक वह चेहरा जिसको दुनिया वाले देखते हैं एक वह चेहरा जिसको पैदा करने वाला देखता है। ऐसा भी होता है शरीफ़ों की शकल में भेड़ियों का दिल रखने वाले होते हैं। दो चेहरों के साथ ज़िंदगी गुज़ारते हैं। एक चेहरा आँख खोलने से नज़र आता है। एक चेहरा आँख बंद करके देखने से नज़र आता है। एक चेहरा निगाह उठाने से नज़र आता है एक चेहरा निगाह झुकाने से नज़र आता है।

जिस्म और रूह की ज़रूरतें

एक जिस्म और एक इसकी रूह है। दोनों की ज़रूरतें अलग हैं। अगर कुछ दिन रोटी न खाएं तो जिस्मी क़ुव्वत कमज़ोरी में बदल जीती है। इसी तरह कुछ दिन नेक आमाल न करें तो इंसान की रूह कमज़ोर हो जाती है। रूहानी तौर पर इंसान बिल्कुल कमज़ोर हो जाता है। ज़ाहिर के खाने की लज़्ज़त और है बातिन की ग़िज़ा की लज़्ज़त और है। जैसे हम दस्तरख़्वान पर बैठते हैं। हमें हर हर खाने का मज़ा जुदा महसूस होता है। रोस्ट का मज़ा जुदा, सब्ज़ी का मज़ा जुदा, फल का मज़ा जुदा, मेवे का मज़ा

जुदा, पीने की चीज़ों का मज़ा जुदा हर हर चीज़ का मज़ा अलग अलग मज़ा महसूस होता है। इसी तरह हर-हर नेक अमल के साथ एक अलग लज़्ज़त है जिसका बातिन जागता हो वह उन आमाल की लज़्ज़त उठाया करता है।

जुदा-जुदा मज़े

मेरे दोस्तो! जिस तरह हर खाने का मज़ा जुदा है, अल्लाह की क़सम हर नेक अमल की लज़्ज़त जुदा है। ग़ैर-महरम से आँख बंद करने का मज़ा कुछ और है, सच बोलने का मज़ा कुछ और है, दूसरों की ख़ातिर क़ुर्बानी देने का मज़ा कुछ और है, इबादतों का मज़ा कुछ और है बल्कि रात के आख़िरी पहर में अपने गुनाहों को याद करके अल्लाह की बारगाह में रोने का मज़ा कुछ और है। जैसे हम आइस क्रीम खाते हैं हर हर चम्मच खाने में मज़ा आता है। ऐसे ही अल्लाह वाले जब इस क़ुरआन को पढ़ते हैं तो हर-हर आयत के पढ़ने पर उनका मज़ा आता है और उनका ईमान बढ़ जाता है।

﴿واذا تليت عليهم ايٰتة زادتهم ايمانا.﴾

जब उसकी आयत पढ़ी जाती है, उनका ईमान ज़्यादा हो जाता है।

हमें क़ुरआन पाक के पढ़ने का मज़ा क्यों नहीं आता

जब अल्लाह तआला का क़ुरआन पढ़ा जाता है, अल्लाह वालों को मज़ा आता है। हमें मज़ा क्यों नहीं आता? इसलिए कि हम ने

अंदर के इंसान पर मेहनत नहीं की है। आज नमाज़ पढ़ रहे होते हैं और ख़्यालों में बाज़ार में फिर रहे होते हैं, तिलावत कर रहे होते हैं दिल व दिमाग़ किसी और ख़्याल में लगा होता है। ऐसे वक़्त में इबादतों की लज़्ज़त कैसे महसूस हो सकती है।

अजीब इबादतें

आज हमारी इबादतों की हालत अजीब है। ऐसे भी मौक़े आए कि इमाम को नमाज़ की रक्अतों में शक हुआ। बाद में मुक़्तदियों से पूछा कितनी रक्अतें पढ़ीं। भरी मस्जिद में कोई बताने वाला नहीं कि कितनी रक्आत पढ़ीं। सब ग़ैर-हाज़िर, अल्लाहु अकबर। ये नमाज़ियों की हालत है। यह इबदतों की कैफ़ियत है। किसी आरिफ़ ने क्या प्यारी बात कही है, फ़रमाते हैं–

तर्जुमाः जब मैंने ज़मीन पर सज्दा किया तो ज़मीन से आवाज़ आई ओ दिखावे का सज्दा करने वाले तूने मुझे भी ख़राब कर दिया।

मैं जो सर ब सजूद हुआ कभी तो ज़मीन से आने लगी सदा
तेरा दिल तो है सनम आशना तुझे क्या मिलेगा नमाज़ में

जब दिल सनमख़ाना बन चुका हो, बुतख़ाना बन चुका हो तो फिर सज्दे की लज़्ज़त नहीं आया करती।

वह सज्दा रूह ज़मीन जिस से काँप जाती थी
उसी को आज तरसते हैं मिंबर व मेहराब

जिन पे सज्दे मचलते थे वे माथे कहाँ गए जो अल्लाह के डर से काँपते थे वे दिल कहाँ गए? आज ज़िंदगी अलग हो गई।

तेरी महफ़िल भी गई चाहने वाले भी गई
शब की आहें भी गयीं सुबह के नाले भी गए
आए उश्शाक़ गए वादा फ़रदा लेकर
अब उन्हें ढूंढ चिरागे रुख़े ज़ेबां ले कर

मुसलमानों की ज़िल्लत की वजह और उसका ईलाज

न तलक़ीने ग़ज़ाली नज़र आती है न पेच व ताब ज़ारी नज़र आता है। क्या वजह है? मेहनत का रुख़ जुदा हो गया है। असली इंसान पर मेहनत करने के बजाए आज हम ने नक़ली इंसान पर मेहनत करना शुरू कर दी है। असली इंसान को भुला बैठे। जब हम ने असली इंसान को भुला दिया हम दुनिया के अंदर ज़िल्लत की ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं।

जिस दौर पे नाज़ां थी दुनिया हम अब वह ज़माना भूल गए
ग़ैरों की कहानी याद रही हम अपना फ़साना भूल गए
मुँह देख लिया आइने में पर दाग़ न देखे सीने में
जी ऐसा लगाया जीने में मरने को मुसलमां भूल गए
तकबीर तो अब भी होती है मस्जिद की फ़िज़ा में ऐ अनवर
जिस ज़र्ब से दिल हिल जाते हैं वह ज़र्ब लगाना भूल गए

कहाँ गए वह नौजवान जो रात के आख़िरी पहर में उठकर 'ला इलाहा इलल्लाह' की ज़र्बें लगाया करते थे। उनके सीनों में दिल काँपते थे। जिनके मासूम हाथ उठते थे तो दुनिया में ऐसे इंक़लाब आ जाते थे जो ऐटम बमों से भी बरपा नहीं होते। रात

को उठकर रोने की लज़्ज़त आज हम नहीं जानते। तहज्जुद का वक़्त तो दुआ की कुबूलियत का वक़्त होता है।

तहज्जुद या सौ रुपया

शंशाहे आलम की तरफ़ से एक फ़रिश्ता मुनादी करता है कि कोई है सवाल करने वाला, मैं उसका सवाल पूरा करूं। मांगने वाली मीठी नींद सोए हुए होते हैं। हमें अगर कोई कह दे कि रात के तीन बजे जागोगे तो तुम्हें सौ रुपए मिलेगा। हमें सारी रात नींद नहीं आएगी। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि तहज्जुद के वक़्त में उठकर जो मांगता है मैं मांगने वाले को अता कर देता हूँ। उस अल्लाह के तअल्लुक़, अल्लाह की मारिफ़त, आख़िरत की कामयाबी का आज वह मुक़ाम हमारे दिल में नहीं जो सौ रुपए का होता है। इसलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया,

﴿وما قدر الله قدره﴾

उन्होंने अल्लाह की क़दर नहीं की जैसी करनी चाहिए थी।

हम तो माएल बा करम हैं कोई साइल ही नहीं
राह दिखाएं किसे कोई रहवरे मंज़िल ही नहीं

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी की दुआ से समुंद्री बेड़ा डूबने का वाक़िआ

सलाहुद्दीन अय्यूबी का वाक़िआ याद आ गया। ईसाईयों के साथ सलीबी जंगे हो रही हैं। ईसाईयों ने अपनी पूरी फ़ौज मैदान में झोंक दी ताकि एक हल्ले में मुसलमानों को हरा दें। इसके

अलावा जंगी मदद के तौर पर एक समुंद्री बेड़ा भी रवाना कर दिया। सलाहुद्दीन को पता चला तो उसको परेशानी हुई। मुसलमान तादाद में कम, साज़ व सामान में कम हैं, कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला हम कैसे करेंगे। सलाहुद्दीन अय्यूबी बैतुल मुक़द्दस जाता है। सारी रात रुकू और सज्दे में गुज़ार देता है। अल्लाह के सामने मुनाजात करता रहता है। फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर बाहर निकला। एक नेक और बुज़ुर्ग आदमी जाते हुए नज़र आए। सलाहुद्दीन अय्यूबी क़रीब आता है। उस बुज़ुर्ग को सलाम करके कहता है कि हज़रत मालूम हुआ कि काफ़िरों का एक समुंद्री बेड़ा चल पड़ा है जो मुसलमानों पर हमला करेगा। हमारे पास उनसे निबटने के लिए फ़ौज नहीं है। आप दुआ करें कि अल्लाह तआला मुसलमानों को फ़तेह अता फ़रमाए। वह साहिबे नज़र थे। आँख उठाकर सलाहुद्दीन अय्यूबी के चेहरे को देखा उसकी रात की कैफ़ियात को भांप लिया। फ़रमाने लगे सलाहुद्दीन अय्यूबी! तेरे रात के आँसुओं ने दुश्मन के समुंद्री बेड़े को डुबो दिया। वाक़ई अगले दिन ख़बर पहुँची कि दुश्मन का समुंद्री बेड़ा डूब चुका था। एक वक़्त था कि रात के आख़िरी पहर में मुसलमानों के हाथ उठते थे। अल्लाह तआला दुनिया के नक़्शे को बदल दिया करते थे। आज उस वक़्त हमारी आँख नहीं खुलती। इस दाल साग के मज़े ने हमें इबादत के मज़े से महरूम कर दिया।

हज़रत क़ुतबुद्दीन रह० के जनाज़ा पढ़ाने का वाक़िआ

आप कहेंगे मसरूफ़ियतें बहुत हैं सुनिए। मसरूफ़ियात की बात

आ गई तो फ़क़ीर एक बादशाह का वाक़िआ सुना देता है। फ़क़ीर को देहली में क़ुतब मीनार के क़रीब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रह० के मज़ार पर जाने का मौक़ा मिला। एक अजीब वाक़िआ उनकी ज़िंदगी का सुनिए। जब हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रह० की वफ़ात हुई तो कोहराम मच गया। जनाज़ा तैयार हुआ। एक बड़े मैदान में जनाज़ा पढ़ने के लिए लाया गया। मख़्लूक़ बेशुमार जनाज़ा पढ़ने के लिए निकल पड़ी थी। इंसानों का एक समुंद्र था जो दूर-दूर तक नज़र आता था। यूँ मालूम होता था कि एक बिफरे हुए दरिया की मानिन्द यह मजमा है। जब जनाज़ा पढ़ाने का वक़्त आया कि एक आदमी बढ़ा। कहता है कि मैं वसी हूँ मुझे हज़रत ने वसीयत की थी। मैं इस मजमे तक वह वसीयत पहुँचाना चाहता हूँ। मजमा ख़ामोश हो गया। वसीयत क्या थी? हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रह० ने यह वसीयत की कि मेरा जनाज़ा वह आदमी पढ़ाए जिसके अंदर चार ख़ूबियाँ हों :

- पहली ख़ूबी यह कि ज़िंदगी में उसकी तकबीरे ऊला (तकबीरे तहरीमा) कभी क़ज़ा न हुई हो।
- दूसरी शर्त उसकी तहज्जुद की नमाज़ कभी क़ज़ा न हुई हो।
- तीसरी बात यह कि उसने ग़ैर-महरम पर कभी भी बुरी नज़र न डाली हो।
- चौथी बात यह कि इतना इबादत गुज़ार हो यहाँ तक कि उसने असर की सुन्नतें भी कभी न छोड़ी हों।

जिस आदमी में ये चार ख़ूबियाँ हों वह मेरा जनाज़ा पढ़ाए।

जब यह बात कही गई तो मजमे को साँप सूंघ गया, सन्नाटा छा गया, लोगों के सर झुक गए। कौन है जो आगे क़दम बढ़ाए। काफ़ी देर गुज़र गई यहाँ तक कि एक आदमी रोता हुआ आगे बढ़ा। हज़रत ख़्वाजा क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रह० के जनाज़े के क़रीब आया। जनाज़े से चादर हटाई और यह कहा, क़ुतबुद्दीन बख़्तियार काकी रह० आप ख़ुद तो फ़ौत हो गए। मुझे रुसवा कर दिया। उसके बाद भरे मजमे के सामने अल्लाह को हाजिर नाज़िर जानकर क़सम उठाई, मेरे अंदर ये चारों ख़ूबियाँ मौजूद हैं। लोगों ने देखा कि यह वक़्त का बादशाह शम्सुद्दीन इल्तुतमिश था। अगर बादशाही करने वाली दीनी ज़िंदगी गुज़ार सकते हैं क्या हम दुकान करने वाले या दफ़्तर में जाने वाले ऐसी ज़िंदगी नहीं गुज़ार सकते। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें नेकी करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे।

❋ ❋ ❋

सोहबत-ए-औलिया

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم الله الرحمن الرحيم

والذين آمنوا اشد حب لله. سبحان ربك رب العزة عما

يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

यक ज़माना सोहबते ब औलिया
बेहतर अज़ सद साला ताअत बे रिया

ईमान वालों की निशानियाँ

﴿والذين آمنوا اشد حب لله.﴾ ईमान वालों को अल्लाह से शदीद मुहब्बत होती है। ﴿واما من خاف مقام ربه﴾ और जो अपने परवरदिगार के सामने खड़ा होने से डरा ﴿ونهى النفس عن الهوى﴾ और अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात में पड़ने से रोक लिया ﴿فان الجنة هى الماوى﴾ बस बेशक उसके लिए ठिकाना जन्नत है।

गुनाहों से बचने के दो तरीक़े

गुनाहों से बचना दो तरह होता है :

1. मुहब्बते इलाही इतनी हो कि मुहब्बत इलाही के ग़लबे में इंसान अल्लाह तआला की नाफ़रमानी न करे।
2. दूसरे अल्लाह तआला का डर इतना हो कि अल्लाह तआला के सामने खड़े होने का डर हो।

यह दो बातें हैं जिसकी वजह से इंसान ख़्वाहिशाते नफ़सानी से बच जाता है।

जन्नत दो क़दम है

एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि जन्नत दो क़दम है। किसी ने कहा हज़रत जन्नत दो क़दम है, इसका क्या मतलब है? फ़रमाया ऐ दोस्त तू अपना पहला क़दम अपने नफ़्स पर रख ले तेरा दूसरा क़दम जन्नत में पहुँच जाएगा।

नफ़्स मारना

नफ़्स को क़ाबू में करना कामयाबी की कुँजी है। अक्सर किताबों में लिखा होता है नफ़्स मारना। मारना से मुराद किसी जानदार को मारना नहीं होता बल्कि इंसान के अंदर "मैं" होती है वह मारनी होती है। इंसान के अंदर की ख़्वाहिशात ख़त्म हो जाएं यहाँ तक कि इंसान की पसंदीदा चीज़ें वही बन जाएं जिनको शरिअत ने पसंद किया है। यह चीज़ कसरत से ज़िक्र से नसीब होती है। सोहबते औलिया अल्लाह से नसीब होती है।

इंतिहाई खुश नसीब इंसान कौन है

नेक लोगों की सोहबत ऐसा तिरयाक़ है जो दिल की दुनिया

को बदल के रख देता है। अल्लाह वालों की निगाहों में वह तासीर होती है, वह फ़ैज़ान मिलता है जिससे दिल की दुनिया बदल जाती है। इसलिए अल्लाह वालों की सोहबत जिस शख़्स को नसीब हो गई वह बहुत खुश नसीब इंसान है।

अल्लाह कहाँ मिलता है

मेरे पीर व मुर्शिद फ़रमाया करते थे, "सब्ज़ी मिलती है सब्ज़ी वालों के पास, कपड़ा मिलता है कपड़े वालों के पास, लोहा मिलता है लाहे वालों के पास, इसी तरह अल्लाह मिलता है अल्लाह वालों के पास।"

सोहबते औलिया की बरकत

अल्लाह वालों की सोहबत में बैठकर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत नसीब होती है। फिर इंसान का रुख़ बदलता है। कांटा बदलता है। उसका रुख़ दुनिया से हटकर बिल्कुल अल्लाह की तरफ़ हो जाता है। अल्लाह वालों की सोहबत में बरकत है।

सोहबते औलिया की तासीर

सोहबते औलिया में कशिश होती है कि बस इंसान के दिल की दुनिया लम्हों में बदल जाती है।

निगाहे वली में वह तासीर देखी
बदलती हज़ारों की तक़दीर देखी
अगर कोई शुऐब आए मयस्सर
शबानी से कलीमी दो क़दम है

मुहब्बते इलाही का आसान रास्ता

मुहब्बते इलाही का रास्ता तय करना आसान हो जाता है। अगर किसी आरिफ़ कामिल और बा-ख़ुदा की सोहबत मिल जाए। अल्लाह वालों की सोहबत में बैठकर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत मिलती है।

औलिया अल्लाह की पहचान

औलिया अल्लाह की पहचान बताई गई ﴿الذين اذا رء واذكر الله﴾ वे लोग जिन्हें देखो तो अल्लाह याद आए। इसलिए कि उनका जीना, मरना, उनकी ज़िंदगी, उनकी मौत सब का सब अल्लाह के लिए होता है। वह इस आयते करीमा का मिसदाक़ होते हैं :

﴿قل ان صلوتي ونسكي ومحياى ومماتي لله رب العالمين.﴾

उनकी मंज़िल अल्लाह की रज़ा होती है।

मन की आँखें कहाँ खुलती हैं

औलिया अल्लाह की सोहबत में बैठकर मन की आँखें खुलती हैं। किसी ने कहा है—

बाबा मन की आँखे खोल बाबा मन की आँखे खोल
मतलब की है दुनिया सारी मतलब के हैं सब संसारी
जग में तेरा को हितकारी तन मन का सब ज़ोर लगाकर
नाम अल्लाह का बोल
बाबा मन की आँखे खोल बाबा मन की आँखे खोल

दुनिया है यह एक तमाशा चार दिनों की झूठी आशा
पल में तोला पल में माशा ज्ञान तराज़ू हाथ मे लेकर
तोल सिक्के तोल
बाबा मन की आँखे खोल बाबा मन की आँखे खोल

क़ब्र और इबरत

इंसान दुनिया की फ़ना होने वाली चीज़ों की मुहब्बत छोड़ दे। इसलिए कि मिट्टी के ऊपर जो कुछ है सब मिट्टी है। बड़े नाज़नीन, बड़े परी चेहरा लोग क़ब्र में जाते हैं तो कीड़े उनके बदन को खाते हैं। क़ब्र को देखकर इबरत हासिल करो। सोचो कि कैसे कैसे हसीनों की मिट्टी की ख़राब हो रही है।

औलिया की सोहबत के फ़ायदे

औलिया की सोहबत से दुनिया की मुहब्बत दिल से निकल जाती है और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत दिल में बस जाती है। मुहब्बते इलाही का दिल में बस जाना यह कामयाबी की कुँजी है। फिर यह मुहब्बत इंसान से फ़रमांबरदारियाँ करवाती है। मुहब्बते इलाही की वजह से अल्लाह तआला के हुक्मों की ताबेदारी करना आसान हो जाता है।

अक़्ल और इश्क़ का मुक़ाबला

एक है अक़्ली तौर पर इंसान अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के हुक्मों की ताबेदारी करे और एक है दिल में मुहब्बत ऐसी हो उस मुहब्बत की बुनियाद पर ताबेदारी करे। दोनों में बड़ा फ़र्क़ है। अक़्ल के पाँव इस मैदान में लंगड़े हैं। यह रास्ता इश्क़ व मुहब्बत

के परों से तय होता है।

अक़ल अय्यार है सौ भेस बना लेती है
इश्क़ बेचारा न मुल्ला न ज़ाहिद न हकीम
नाला है बुलबुल शोरीदा तेरा ख़ादिम अभी
अपने सीने में ज़रा और उसे थाम अभी
पुख़्ता होती है अगर मसलेहत अंदेश हो अक़ल
इश्क़ हो मसलेहत अंदेश तो है ख़ाम अभी
इश्क़ फ़रमूदा क़ासिद से सुबक गाम अमल
अक़ल समझती ही नहीं माइनी पैग़ाम अभी
बे ख़तर कूद पड़ा आतिशे नमरूद में इश्क़
अक़ल है महू तमाशाए लब बाम अभी

अक़ल की परवाज़ वहाँ तक नहीं पहुँचती जहाँ इश्क़ के परों से इंसान पहुँच जाता है। जिसको मुहब्बते इलाही नसीब हो वह खुश नसीब है।

मुहब्बते इलाही कैसे नसीब होती है

मुहब्बते इलाही अल्लाह वालों की सोहबत में बैठकर नसीब होती है। अगर उनकी सोहबत नसीब न हो तो अल्लाह के ज़िक्र की कसरत से मुहब्बते इलाही नसीब होती है और यह नेमत ऐसी है अगर नसीब हो जाए तो दिल की काया पलट जाती है।

एक सहाबी की मुहब्बत का वाक़िआ

एक सहाबी बकरियाँ चराते थे। जब कभी मदीना तैय्यबा वापस होते तो पूछते कि क़ुरआन पाक की कौन सी नई आयत

उतरी है? नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई ख़ास बात इर्शाद फ़रमाई? उनको बता दिया जाता। एक दफ़ा वापस आकर पूछा तो उन्हें बता दिया गया कि यह आयत उतरी है जिसमें अल्लाह तआला ने क़सम खाकर फ़रमाया मेरे बंदो! मैं ही तुम्हें रिज़्क़ देने वाला हूँ। जब उन्होंने यह बात सुनी तो वह नाराज़ होने लगे और कहने लगे कि वह कौन है जिसको यक़ीन दिलाने के लिए मेरे अल्लाह को क़सम खानी पड़ी? सुब्हानअल्लाह! यह मुहब्बत की बात है।

रात का उठना किस तरह आसान हो जाता है

जब दिल में मुहब्बत हो तो फिर इंसान को फ़रमांबरदारी करते हुए मज़ा महसूस करता है। फिर रात का उठना आसान हो जाता है—

उठ फ़रीदा सुत्या ते झाडू दे मसीत
तूं सुता तेरा रब जगदा तेरी किने निभे प्रीत

तर्जुमाः ऐ सोए हुए फ़रीद उठकर मस्जिद में झाड़ू दे। तू सोया है रब जागता है, तेरी दोस्ती कैसे निभेगी।

मुहब्बते इलाही से रात के आख़िरी पहर का उठना आसान हो जाता है। अपने आप आँख खुलती है। घड़ी के अलार्म नहीं लगाने पड़ते। वह दिल की घड़ी खुद बता देती है। मुहब्बत की वजह से इंसान रातों को जागता है।

﴿تتجافى جنوبهم عن المضاجع يدعون ربهم خوفا وطمعا﴾

उनके पहलू बिस्तरों से जुदा रहते हैं। अल्लाह तआला की याद में मुर्ग़ नीम-बिस्मिल की तरह तड़पते रहते हैं।

ज़िंदा और मुर्दा शहर

सहाबा किराम के ज़माने में अगर कोई आदमी रात के आख़िरी पहर में गलियों में चलता तो पूरा शहर उसको ज़िंदों का शहर नज़र आता। आज हमारे शहरों में उस वक़्त कोई चले तो क़ब्रिस्तान नज़र आएंगे। उस वक़्त के लोग रातों को जागने वाले थे। हर घर से क़ुरआने पाक की तिलावत की आवाज़ आती थी। जैसे शहद की मक्खियों की भिनभिनाहट की आवाज़ें होती हैं। पूरा शहर ज़िंदा होता था। कोई ऊँचा क़ुरआन पढ़ रहा होता था कोई आहिस्ता क़ुरआन पढ़ रहा होता था।

हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु

एक दफ़ा अल्लाह के प्यारे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वल्लम मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ लाए। आपने देखा कि सिद्दीके अकबर क़ुरआन पाक तहज्जुद में आहिस्ता पढ़ रहे हैं और साथ ही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ऊँची आवाज़ से क़ुरआन पाक पढ़ रहे हैं। दोनों की हालत और कैफ़ियत जुदा-जुदा थी। जब दोनों ने तहज्जुद की नफ़्लें पढ़ लीं तो नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत सिद्दीके अकबर से पूछा कि आप क़ुरआन आहिस्ता क्यों पढ़ रहे थे? अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी मैं उस ज़ात का सुना रहा था जो अलीम बिज़ातिस्सुदूर (दिलों की बात जानने वाला) है मैं उसे क़ुरआन सुना रहा था। मुझे ऊँचा

पढ़ने की क्या ज़रूरत थी। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब से पूछा कि आप ऊँचा क्यों पढ़ रहे थे? अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के नबी मैं सोए हुओं को जगा रहा था और शैतान को भगा रहा था। रातों को इस तरह क़ुरआन पढ़ा जाता था।

मुहब्बत से क़ुरआन पढ़ने का वाक़िआ

एक सहाबी अपने घर में तहज्जुद की नमाज़ में क़ुरआन पाक पढ़ रहे थे। तबियत पर कैफ़ियत की वजह से ज़रा ऊँची आवाज़ से क़ुरआन पढ़ने को जी चाहता है। घर का सहन छोटा है, घोड़ा भी बंधा था और एक चारपाई पर बच्चा सोया हुआ है। जब ऊँचा पढ़ते हैं तो घोड़ा बिदकने लगता। दिल में डर होता कि कहीं बच्चे को तकलीफ़ न पहुँचा दे, लात न मार दे। फिर आहिस्ता क़ुरआन पढ़ने लग जाते हैं। थोड़ी देर के बाद फिर तबियत मचलती तो ऊँचा पढ़ते, घोड़ा बिदकता फिर आहिस्ता पढ़ने लग जाते। बस यही कुछ तक़रीबन सारी रात होता रहा। जब उन्होंने सुबह के वक़्त दुआ के लिए हाथ उठाए तो उनकी निगाह आसमान पर पड़ी तो क्या देखते हैं कि कुछ रोशनियाँ बहुत तेज़ी के साथ उनके सर से दूर आसमान की तरफ़ जा रही हैं। हैरान हुए कि यह क्या चीज़ है? सुबह को नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! रात मेरे साथ यह मामला होता रहा। ऊँचा पढ़ूँ तो डर महसूस होता था कि बच्चे को न तकलीफ़ पहुँच जाए और आहिस्ता पढ़ता तो तबियत मचलती थी कि ऊँचा पढ़ूँ। जब मैंने दुआ के लिए हाथ उठाए तो निगाह आसमान की तरफ़

उठी। मैंने कुछ रोशनियाँ दूर जाती हुई देखीं। अल्लाह के महबूब ने इर्शाद फ़रमाया कि यह अल्लाह तआला के फ़रिश्ते थे जो तेरा क़ुरआन सुनने के लिए आसमान से नीचे उतर आए थे। अगर तुम ऊँची आवाज़ से पढ़त रहते तो आज मदीने के लोग उन फ़रिश्तों को आँखो से देख लेते। वह फ़र्श पर क़ुरआन पढ़ते थे तो अर्श पर फ़रिश्ते उतरते थे, अल्लाहु अकबर।

इख़्लास और मुहब्बत से रोने का वाक़िआ

एक सहाबी तहज्जुद की नमाज़ में दुआ मांगते हुए राते हैं। सुबह को नबी अकरम सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो अल्लाह के महबूब ने इर्शाद फ़रमाया, "तेरे रात के रोने ने अल्लाह के फ़रिश्तों को रुला दिया।" अल्लाहु अकबर क्या इख़्लास का रोना था।

ख़ुलूस व मुहब्बत के दो आँसू

ख़ुलूस और मुहब्बत के दो आँसू ही बड़े क़ीमती होते हैं। काश कि हमें भी नसीब हो जाते।

इधर निकले और उधर उनको ख़बर हो
कोई आँसू तो ऐसा तो मौतबर हो

काश कि इन आँखों से दो ऐसे आँसू गिर जाएं।

एक सहाबी का मुहब्बत से क़ुरआन सुनाने का वाक़िआ

एक सहाबी हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुरआन पाक बहुत अच्छा पढ़ते थे। नबी अकरम एक बार मस्जिद में

तश्रीफ़ लाए। उनको बुलाया और फ़रमाया कि मुझे अल्लाह तआला की तरफ़ से यह हुक्म हुआ है कि तू क़ुरआन पढ़ ताकि मैं सुनूं। यह सहाबी हैरान हुए और कहने लगे ऐ अल्लाह के नबी! क्या अल्लाह ने मेरा नाम लेकर कहा है? फ़रमाया कि हाँ तेरा नाम लेकर कहा है कि तू क़ुरआन पढ़ेगा और अल्लाह का महबूब तेरा क़ुरआन पढ़ेगा।

मुहब्बत कैसे नसीब होती है

यह मुहब्बत व ख़ुलूस ऐसी नेमत है कि नसीब हो जाए तो ज़िंदगी का मज़ा आ जाए लेकिन यह नसीब होती है अल्लाह वालों सोहबत से।

मुहब्बते इलाही की तमन्ना

अगर मुहब्बते इलाही नसीब हो जाए तो क्या कहने। दिल में अल्लाह बस जाए, दिल में अल्लाह आ जाए, दिल में अल्लाह समा जाए। काश कि अल्लाह रब्बुइज़्ज़त दिल में छा जाए। यह कैफ़ियत नसीब हो तो ज़िंदगी का मज़ा आ जाए।

हमारी ज़िंदगियाँ कैसी हैं?

हमारी ज़िंदगियाँ किसी क़दर अलग हैं। हमारे दिल में मुहब्बते इलाही भी है और ग़ैरुल्लाह की मुहब्बतें भी हैं। दुनिया की मुहब्बत की वजह से आज हमारा मिज़ाज ख़राब हो गया है। अगर एक आदमी को नज़ला हो जाए तो आप उसके सामने

गुलाब का इतर लाएं, अंबर का इतर लाएं, कस्तूरी का इतर लाएं। वह बेचारा पहचानने से महरूम हो चुका है। नज़ला जो लगा हुआ है। इस तरह हमें दूसरी चीज़ों से मुहब्बत ऐसी हो चुकी है, ऐसी दिल में समा चुकी है कि आज मुहब्बते इलाही की चाश्नी हमें दिल में महसूस नहीं होती।

कई हज़ार दफ़ा क़ुरआन पाक ख़त्म किया

हम नमाज़ पढ़ते हैं मगर हुज़ूरी नहीं होती। सिर्फ़ हाज़िरी होती है। तिलावत भी कर रहे होते हैं ऊँघ भी रहे होते हैं। एक पारा तिलावत करना भी मुश्किल हो जाता है। जिनको मुहब्बत नसीब होती है उनका क्या कहना। मैंने अपनी ज़िंदगी में एक ऐसे आदमी को देखा कि जिसने तक़रीबन दो हज़ार बार क़ुरआन पाक पूरे किए।

एक बुज़ुर्ग की मुहब्बते क़ुरआन का वाक़िआ

मंगूरा में एक बुज़ुर्ग से मेरी मुलाक़ात हुई। दारुल उलूम देवबंद से फ़ारिग़ हैं। फ़रमाने लगे जब अपने पीर व मुर्शिद से बैअत हुआ था। आज उसको 45 साल गुज़र चुके। उन्होंने हुक्म दिया था कि क़ुरआन पाक का एक पारा रोज़ाना पढ़ना। 45 साल में एक दिन भी वह पारा क़ज़ा नहीं हुआ। यह लोग अभी ज़िंदा है। यह इस्तिक़ामत मुहब्बते इलाही से नसीब होती है।

नेकियाँ किस तरह आसान होती हैं

मुहब्बत के परों से जब इंसान वसूल इलल्लाह के रास्ते पर

चलता है फिर तिलावत करना भी आसान, अल्लाह के ज़िक्र में बैठना भी आसान, फिर तहज्जुद में उठना भी आसान, फिर सच बोलना भी आसान हो जाता है। यह नेमत अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें नसीब फ़रमा दे। यह सोहबत औलिया अल्लाह से और अल्लाह के ज़िक्र से दिल में मुहब्बते इलाही आ जाती है।

इश्क़े इलाही की दुआ

इंसान के दिल में इश्क़े इलाही पैदा हो जाए। इंसान दिल में यही दुआ मांगे कि ऐ अल्लाह मैं तुझसे तेरी मुहब्बत चाहता हूँ।

तेरे इश्क़ की इंतिहा चाहता हूँ
मेरी सादगी तो देख क्या चाहता हूँ
ज़रा सा तो दिल हूँ मगर शोख़ इतना
वहीए लन तरानी सुनना चाहता हूँ

मुहब्बते इलाही के फ़ायदे

दिल में मुहब्बते इलाही आती है तो इंसान का रुख़ बदल जाता है। आँख का देखना बदल जाता है, पाँव का चलना बदल जाता है, दिल व दिमाग़ की सोच बदल जाती है। वह देखने में आम इंसानों की तरह होता है लेकिन हक़ीक़त में आम इंसानों से बहुत अलग होता है।

हज़रत शिबली रह० की मुहब्बते इलाही का वाक़िआ

हज़रत शिबली रह० एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। उनके बड़े अजीब व

ग़रीब हालात थे। नहाविंद के इलाक़े के गवर्नर थे। एक बार बादशाह ने अपने गवर्नरों को दरबार में बुलाया और सब को ख़ुशी की वजह लिबास पेश किया। फिर कहा कि कल सब लोग ये लिबास पहनकर आएं ताकि मेरी महफ़िल में बैठकर बातचीत कर सकें। सब लोग लिबास पहनकर पहुँचे। अल्लाह की शान कि ऐन उस वक़्त जब बातचीत की महफ़िल उरूज पर थी, महफ़िल गर्म थी, एक गवर्नर ऐसा था कि जिसे छींक आ रही थी। वह जितना उसे रोकता, छींक उतना ज़ोर से आती। वह जितना उसको रोकता छींक और आती। आख़िरकार उसे तीन चार बार इकठ्ठी छींक आई। लोग भी उसकी तरफ़ मुतवज्जेह हुए। हालाँकि यह चीज़ इंसान के बस से बाहर है लेकिन फिर भी महफ़िल में ज़रा बुरी सी महसूस होती है। लोगों ने उसकी तरफ़ देखा फिर फ़ौरन बादशाह की तरफ़ मुतवज्जेह हुए। जब बादशाह की नज़रें उस पर पड़ीं तो उस गवर्नर की नाक से कुछ पानी निकल आया था और उसको साफ़ करने के लिए कपड़ा नहीं था। उस गवर्नर ने पोशाक के कोने से उसको साफ़ कर लिया। बादशाह ने देखा तो उसकी आँखों में ख़ून उतर आया। गरजा कि मेरी दी हुई पौशाक से नाक साफ़ करता है। इसने पौशाक की क़दर नहीं की। इसकी पौशाक उतार ली जाए और इसे दरबार से धक्का दिया जाए। इसलिए ऐसा ही किया गया। अब महफ़िल का रुख़ बदल गया। सब लोग परेशान हो गए कि एक गवर्नर के साथ यह मामला पेश आ गया, मामूली बात नहीं थी। बादशाह ने सोचा महफ़िल बरख़्वास्त कर दूँ। सब लोग चले गए। थोड़ी देर गुज़री तो दरबान आया और उसने कहा कि नहाविंद के इलाक़े

का गवर्नर अंदर आने की इजाज़त चाहता है। कहा उसे पेश करो। गवर्नर ने आते ही पूछा बादशाह सलामत मैं यह मालूम करना चाहता हूँ कि गवर्नर को छींक आई थी तो यह अपने इख़्तियार से आई थी या अपने आप आई थी। बादशाह ने कहा तेरे सवाल से मुझे मुहासबे की बू महसूस होती है। ख़बरदार! आइंदा ऐसा सवाल न करना। कहा कि बादशाह सलामत अगर उससे ग़लती हुई थी तो क्या यह सज़ा ज़रूरी थी या कोई और कम दर्जे की सज़ा भी हो सकती थी? बादशाह ने कहा ख़ामोश रहा वरना तुम्हें भी सज़ा मिलेगी। गवर्नर ने कहा बादशाह सलामत मुझे एक बात समझ में आई कि आप ने एक आदमी को पौशाक पेश की और वह उसकी क़दर न कर सका तो आपने उसे भरे दरबार में धक्का दे दिया, उसकी ज़लील रुसवा कर दिया। मुझे यह बात समझ में आई कि या अल्लाह तूने मुझे इंसानियत की पौशाक पहना कर दुनिया में भेजा है अगर मैं इस पौशाक की क़दर न कर सका तो महशर के रोज़ तू भी मुझे अपने दरबार से धक्का देगा। गवर्नर ने यह कहा और पोशाक उतारकर बादशाह के मुँह पर मारी और बाहर निकल गया। हज़रत जुनैद बग़दादी की ख़िदमत में बग़दाद पहुँचा और यह आदमी क्या बना? वक़्त का बहुत बड़ा बुज़ुर्ग बना जिसका नाम शिबली रह० था। क्योंकि उनकी क़ुर्बानी बहुत बड़ी थी, गवर्नरी को लात मारकर मुहब्बते इलाही के रास्ते को अपनाया था। इसलिए उनके कैफ़ियतें भी अजीब थीं। उन पर अल्लाह की मुहब्बत की ऐसी कैफ़ियत होती थी जो आम लोगों को नसीब नहीं होती।

हज़रत शिबली रह० की मुहब्बते इलाही

हज़रत शिबली रह० के सामने अगर कोई अल्लाह का नाम लेता तो अपनी जेब में हाथ डालते थे। उनके हाथ में शीरनी आती और यह शीरनी उसके मुँह में डाल देते थे। बहुत अजीब कैफ़ियत थी। जो आदमी भी उनके सामने अल्लाह का नाम लेता यह जेब से शीरनी निकालते और उसके मुँह में डाल देते। किसी ने कहा हज़रत यह क्या मामला है? फ़रमाने लगे जिस मुँह से मेरे महबूब का नाम निकले तो मैं उसको शीरनी से न भर दूँ तो और क्या करूं, अल्लाहु अकबर।

अल्लाह की रहमत का वाक़िआ

अल्लाह के क़रीबी लोगों के साथ अल्लाह का ख़ास मामला होता है। हज़रत शिबली रह० को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इल्हाम फ़रमाया, ऐ शिबली! क्या तू यह चाहता है कि मैं तेरे ऐब लोगों पर ज़ाहिर कर दूँ ताकि तुझे दुनिया में कोई मुँह लगाने वाला न रहे। उन्होंने जब यह इल्हाम सुना तो जवाब में कहा या अल्लाह! क्या तू यह चाहता है कि मैं तेरी रहमत खोलकर लोगों पर ज़ाहिर कर दूँ ताकि तुझे दुनिया में कोई सज्दा करने वाला न रहे। फिर इल्हाम हुआ, ऐ शिबली! न तू मेरी बात कहना और न मैं तेरी बात कहूँगा।

अल्लाह के मज़दूर—ऐतिकाफ़ में बैठने वाले

मोहतरम जमाअत आप लोग ऐतिकाफ़ में बेठें हैं। दस दिन

आपने अल्लाह अल्लाह करने में गुज़ारे। एक मिसाल पर ग़ौर करें कि अगर किसी मज़दूर को लेकर मैं अपने घर ले आऊँ मज़दूरी के लिए और वह बेचारा सारा दिन मज़दूरी करे तो शाम को रुख़्सत करते हुए मेरी अंदर तबियत की शराफ़त इस बात को गवारा नहीं करती कि उसे उजरत दिए बग़ैर घर से भेज दूँ। मेरा जी चाहेगा कि उसने सारा दिन काम किया है, जतन काटे, कोशिश की, अब उसको मज़दूरी दिए बग़ैर कैसे रुख़्सत करूं हालाँकि मेरे अंदर सारे ऐब मौजूद हैं। मगर इन ऐबों के बावजूद मेरे अंदर जो थोड़ी सी शराफ़त नफ़्स है वह इस बात को गवारा नहीं करती कि कोई मेहनत करे और मैं उसको मेहनत की मज़दूरी दिए बग़ैर रवाना करूं। मेरे दोस्तो! क्या पूछतो हो उस ज़ात के बारे में जो ﴿له مقاليد السموات والارض﴾ जिसके हाथ में ज़मीन व आसमान के ख़ज़ानों की चाबियाँ हैं। एक बंदा दस उसकी ख़ातिर उसकी चौखट पकड़कर बैठा रहे तो उठते हुए क्या उनकी बदला दिए बग़ैर वापस भेज देगा? ऐसा कभी नहीं हो सकता। मेरे दोस्तो! आज का दिन आप लोगों की वसूली का दिन है। जो अब तक इबादत की है, उसकी फ़सल काटने का दिन है। यह फल लेने का दिन है।

दो बातें

मैं इस महफ़िल में दो बातें अर्ज़ करना चाहता हूँ। एक तो हम अल्लाह का ज़िक्र कसरत से करें। जहाँ रहते हैं वहाँ अगर हमें नेक लोगों की सोहबत नसीब हो जाए तो उसको ग़नीमत समझें

ताकि हमारे दिलों में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत पैदा हो जाए। दूसरी बात यह आज की इस महफ़िल में जो पहले गुनाह हो चुके हैं, जो ख़ताएं जो चुकी हैं, उन सबसे सच्चे दिल के साथ माफ़ी मांगें ताकि पहला हिसाब साफ़ हो जाए और आइंदा नई ज़िंदगी की शुरूआत हो।

दुनिया और आख़िरत में आमाल का अज्र मिलता है

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इंसान के आमाल पर दुनिया में भी अज्र देता है और आख़िरत में भी अज्र देता है। यह बात ध्यान में रखिएगा कि हमारा परवरदिगार इससे बरतर और बाला है कि बंदा तो ताअत के ज़रिए नक़द का मामला करे और वह इसका अज्र और बदला आख़िरत के उधार पर छोड़ दे। नहीं, नहीं ऐसा नहीं, वह दुनिया में भी बदला देता है, क़यामत के दिन भी बदला अता फ़रमाएगा।

आख़िरत के अज्र की एक वजह

क़यामत के दिन बदला देने की भी कुछ वुजूहात हैं। एक वजह तो यह है कि अल्लाह तआला जितना अज्र और बदला देना चाहते हैं वह अज्र व बदला दुनिया में समा ही नहीं सकता। आख़िरत में सबसे आख़िरी जन्नती को जो जन्नत मिलेगी वह इस दुनिया से दस गुना बड़ी होगी। बस आख़िरत का अज्र दुनिया में समा ही नहीं सकता तो दें कैसे?

आख़िरत के अज्र की दूसरी वजह

दूसरी वजह यह है कि अगर दुनिया में आख़िरत का अज्र मिलता तो जिस तरह दुनिया फ़ना होने वाली है वह अज्र भी फ़ना होता। मगर अल्लाह रहीम है वह इंसान के थोड़े से आमाल पर ऐसा अज्र देना चाहता है जो हमेशा बाक़ी रहने वाला हो और यह आख़िरत में के घर में ही मुमकिन है। इसलिए फ़रमाया कि कुछ बदला दुनिया में दे दूँगा नक़द के मामले के साथ और कुछ आख़िरत में दे दूँगा कि दुनिया में वह बदला समा नहीं सकता।

मिक़्दार और मैयार

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें इस दुनिया में भी बदला देंगे और आख़िरत में भी अता फ़रमाएंगे और दुनिया उसके अज्र को बरदाश्त नहीं कर सकती मिक़्दार के ऐतिबार से भी और मैयार के ऐतिबार से यानी मैयार और मिक़्दार के हिसाब से वह अज्र दुनिया में नहीं समा सकता।

हूरें कैसी हैं

जन्नती हूर अपना एक थूक किसी खारे पानी में डाले तो खारा पानी मीठा हो जाए, अगर वह अपने दुपट्टे का पल्लू आसमानों से नीचे कर दे तो सूरज की रौशनी मांद पड़ जाए, अगर वह किसी मुर्दे से बात कर ले तो मुर्दा ज़िंदा हो जाए। दुनिया इसके अज्र व सवाब का तहम्मुल नहीं कर सकती। इसलिए आख़िरत का वादा किया गया है वरना अल्लाह तआला दुनिया में वह अज्र

दे देता। बंदा नक़द मामला करता है तो वह भी नक़द देता। यह नहीं कि कोई करेन्सी की कमी है कि वह उधार करता। अल्लाह न करे ऐसा हर्गिज़ नहीं है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें दुनिया में भी नेकी का अज्र अता फ़रमाएगा और आख़िरत में भी अज्र अता फ़रमाएगा।

अल्लाह से अल्लाह ही को मांगे

दुनिया में हम क्या मांग? अल्लाह तआला से अल्लाह तआला की मुहब्बत मांगें। अल्लाह तआला से कारोबार मांगने वाले बहुत हैं, घर-बार मांगने वाले बहुत हैं, ओहदे मांगने वाले बहुत हैं लेकिन अल्लाह से अल्लाह को मांगने वाले बहुत थोड़े हैं जो मांगे कि तेरी मुहब्बत चाहता हों तेरा ताल्लुक़ चाहता हूँ, ऐ अल्लाह मैं आपसे आपकी मुहब्बत चाहता हूँ। ऐसे लोग बहुत थोड़े हैं।

अजीब नेमत

इस वक़्त दुआओं में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत मांगे और आख़िरत की कामयाबी मांगे। दुनिया में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मुहब्बत नसीब हो जाए तो क़िस्मत जाग जाती है, बख़्त जाग उठें, भाग जाग उठें। मुहब्बते इलाही अजीब नेमत है।

मुझको सरापा ज़िक्र बना दे ज़िक्र तेरा ऐ मेरे ख़ुदा
निकले मेरे हर बन मो से ज़िक्र तेरा ऐ मेरे ख़ुदा
अब तो कभी छोड़े न छूटे ज़िक्र तेरा ऐ मेरे ख़ुदा
हलक़ से साँस के बदले ज़िक्र तेरा ऐ मेरे ख़ुदा

अब तो रहे बस ता दम आख़िर विर्द ज़बाने ऐ मेरे मौला
ला इलाहा इलल्लाह ला इलाहा इलल्लाह

काश कि हमें यह कैफ़ियत नसीब हो जाए

याद में तेरी सब को भुला दूँ कोई न मुझ को याद रहे
सब ख़ुशियों को आग लगा दूँ ग़म से तेरे दिल शाद रहे
सबको अपनी नज़र से गिरा दूँ तुझ से फ़क़त फ़रियाद रहे
अब तो रहे बस ता दम आख़िर विर्द ज़बान ऐ मेरे मौला
ला इलाहा इलल्लाह ला इलाहा इलल्लाह

काश कि यह कैफ़ियत नसीब हो जाए कि दिल से ग़ैर की मुहब्बत निकल जाए।

लाख रुपए का शे'र

हज़रत थानवी रह० के बड़े ख़लीफ़ा हज़रत मज्ज़ूब रह० ने एक बार एक शे'र कहा और अपने पीर व मुर्शिद हज़रत हकीमुल उम्मत रह० सुनाया। हज़रत ने जब सुना तो खुश होकर फ़रमाया अगर मैं मालदार होता तो इस शे'र पर एक लाख रुपए तुम्हें ईनाम देता। जब एक रुपया की इतनी क़ीमत थी तो उस वक़्त एक लाख रुपया बहुत क़ीमत वाला होता था। हज़रत थानवी रह० ने फ़रमाया कि अगर मैं मालदार होता तो इस शे'र एक लाख रुपया ईनाम देता। वह शे'र क्या है, छोटा सा है। फ़रमाया–

हर तमन्ना दिल से रुख़सत हो गई
अब तो आजा अब तो ख़लवत हो गई

एक उन से क्या मुहब्बत हो गई
सारी दुनिया ही से वहशत हो गई
लाख झिड़को अब कहाँ फिरता है दिल
हो गई अब तो मुहब्बत हो गई

यह मुहब्बत वालों की बातें हैं। एसी मुहब्बत नसीब हो जाए तो ज़िंदगी का मज़ा आ जाए।

मुहब्बते इलाही में मस्त बुज़ुर्ग का वाक़िआ

मौलाना मुहम्मद अली जौहर क़रीब ज़माने में एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। हमारे नक़्शबंदी बुज़ुर्गों के साए रहे, उनसे तर्बियत पाई। अल्लाह तआला ने उनके दिल में अपनी मुहब्बत भर दी। दिल में अहद कर लिया कि मुसलमानों को जब तक आज़ादी नहीं मिलेगी मैं उस वक़्त तक क़लम के ज़रिए से जिहाद करता रहूँगा। लिहाज़ा इंगलैंड तशरीफ़ ले गए। वहाँ अख़बारों में अपने मज़मून लिखते थे कि अंग्रेज़ों को चाहिए कि वे मुसलमानों को आज़ादी दे दें। क़लमी जिहाद करते रहे और यह नीयत कर ली कि जब तक आज़ादी नहीं मिल जाती वापस घर नहीं जाऊँगा। इसी हालत में कई बार उनको तकलीफ़ें भी आयीं। जेल में भी डाले गए। उन्होंने जेल में कुछ अश'आर लिखे, फ़रमाते हैं—

तुम यूँ ही समझना कि फ़ना मेरे लिए है
पर ग़ैब में सामान बक़ा मेरे लिए है
यूँ अब्रे स्याह पर तो फ़िदा हैं सभी मयकश
मगर आज की घंघोर घटा मेरे लिए

तौहीद तो यह है कि ख़ुदा हश्र में कह दे
यह बंदा दो आलम से ख़फ़ा मेरे लिए है

औलाद से ज़्यादा अल्लाह तआला की रज़ा को तरजीह देने का वाक़िआ

हज़रत मौलाना मुहम्मद अली जौहर रह० की बेटी बीमार हुई। डाक्टरों ने जवाब दे दिया। जवान उम्र लड़की थी। माँ ने पूछा कि कोई आख़िरी तमन्ना कोई आख़िरी ख़्वाहिश? कहा अब्बा जी की ज़ियारत को जी चाहता है। माँ ने ख़त लिखवा दिया। जवान उम्र बेटी का ख़त परदेस में मिला कि मैं अपनी उम्र की आख़िरी घड़ियाँ गिर रही हूँ, दिल की आख़िरी तमन्ना है कि अब्बा हुज़ूर तशरीफ़ लाएं तो मैं आपका दीदार कर लूँ। कितनी बड़ी बात थी। हज़रत को वह ख़त मिला। हज़रत मौलाना मुहम्मद जौहर ने उस ख़त की पीठ पर दो शे'र लिखकर वह ख़त वापस भेज दिया। बेटी को इस हाल में क्या जवाब लिखा? वह फ़रमाते हैं—

मैं तो मजबूर सही अल्लाह तो मजबूर नहीं
तुझ से मैं दूर सही वह तो मगर दूर नहीं
तेरी सेहत हमें मंज़ूर है लेकिन उसको
नहीं मंज़ूर तो फिर हम को भी मंज़ूर नहीं

यह कैफ़ियत नसीब हो जाए तो ज़िंदगी का मज़ा आ जाए। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारे लिए अपनी यह नेमत आसान फ़रमा दे।

❋ ❋ ❋

قال عليه الصلوة والسلام

اولها رحمة واوسطها مغفرة

وآخرها عتق من النار۔

हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

''रमज़ानुल मुबारक के पहले दस दिन रहमत के हैं, दर्मियान के दस दिन मग़फ़िरत के हैं और आख़िर के दस दिन आग से आज़ादी के हैं।''

रमज़ानुल मुबारक की बरकतें

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم الله الرحمٰن الرحيم

شهر رمضان الذى انزل فيه القرآن. سبحان ربك رب العزة

عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

कामयाब इंसान

अल्लाह जल्लेशानुहू ने इंसान को इस दुनिया में अपनी बंदगी के लिए भेजा है। यह इंसान यहाँ कुछ रोज़ का मेहमान है। अपनी मोहलत और मुद्दत पूरी होने के बाद अगले सफ़र पर रवाना होगा। खुश नसीब है वह इंसान जो यादे इलाही में अपना वक़्त गुज़ारे। जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रज़ा जोई के लिए हर लम्हे बेक़रार रहे, जिसका हर अमल सुन्नते नबवी के मुताबिक़ हो, जिसका हर काम पाकीज़ा शरिअत के मुताबिक़ हो। ऐसा इंसान दुनिया में भी कामयाब और आख़िरत में भी कामयाब ﴿فقد فاز﴾

﴿فوزا عظیما﴾ उस पर सादिक़ आता है।

शाबान की फ़ज़ीलत

शाबान का महीना बड़ा बरकता का महीना है। इसलिए कि यह रमज़ान का मुक़द्दमा है। इसकी पंद्रह तारीख़ की रात को शबेबर'त कहते हैं। वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ फ़ज़ीलत रखने वाली रात है जिसमें इंसानों के आमाल अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने पेश होते हैं। आइंदा साल जितने लोगों ने मरना होता है उनकी फ़हरिस्तें मौत के फ़रिश्ते के हवाले की जाती हैं। जिन लोगों ने ज़िंदा रहना होता है उनके लिए रिज़्क़ के फ़ैसले किए जाते हैं। यह रात हदीसों के मुताबिक़ बहुत मुबारक रात है।

इमामे रब्बानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० अपने ख़तों में फ़रमाते हैं कि जैसे सूरज उगने से पहले सुबह की सफ़ेदी ज़ाहिर होती है और आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ती है यहाँ तक कि पूरा सूरज निकलने से थोड़ी देर पहले रोशनी ऐसी होती है जैसे सूरज निकल आया हो। इसी तरह रमज़ानुल मुबारक की बरकात पंद्रह शाबान की रात से शुरू हो जाती हैं। उनमें रोज़ाना इज़ाफ़ा होता रहता है यहाँ तक कि रमज़ान से दो चार दिन पहले ये अनवारात ऐसे ही होते हैं जैसे रमज़ानुल मुबारक ही के अनवारात हों। फिर जब रमज़ानुल मुबारक की पहली तारीख़ आती है तो अनवारात का वह सूरज अपने चमके चेहरे के साथ निकलता है और ईमान वालों के दिलों को मुनव्वर करता है। इसीलिए शाबान में रसुलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत कसरत से रोज़े रखा करते थे यानी कई-कई दिन रोज़े रखते जिन्हें फ़ुक़्हा किराम ने

'सोमे विसाल' का नाम दिया है।

रमज़ानुल मुबारक में नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम के मामूलात

सहाबा किराम फ़रमाते हैं कि जब भी रमज़ानुल मुबारक का महीना आता तो हम रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मामूलात में इज़ाफ़ा महसूस करते थे।

पहली बात आप इबादत में बहुत ज़्यादा कोशिश और जुस्तुजू फ़रमाया करते थे हालाँकि आपके आम दिनों की इबादत भी ऐसी थी कि ﴿حتى تورمت قدماه﴾ यानी आपके क़दम मुबारक पर सूजन आ जाती थी। फिर भी रमज़ानुल मुबारक में आपकी यह इबादत पहले से भी ज़्यादा हो जाया करती थी।

दूसरी बात आप अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के रास्ते में ख़ूब ख़र्च फ़रमाते थे। अपने हाथों को बहुत खोल दिया करते थे यानी बहुत खुले दिल के साथ सदक़ा व ख़ैरात फ़रमाया करते थे।

तीसरी बात आप मुनाजात में बहुत ही ज़्यादा रोते-धोते थे। इन तीन बातों में रमज़ानुल मुबारक के अंदर तब्दीली मालूम हुआ करती थी। इबादत के अदंर कोशिश ज़्यादा करना, अल्लाह के रास्ते में ज़्यादा ख़र्च करना और दुआओं के अंदर गिरया व ज़ारी करना। हम रमज़ानुल मुबारक में इन आमाल का ख़ास एहतिमाम करें। इबादत के ज़रिए अपने जिस्म को थकाएं। हमारे जिस्म दुनिया के काम-काज के लिए रोज़ाना थकते हैं। ज़िंदगी में कोई ऐसा वक़्त भी आए कि अल्लाह की इबादत के लिए थक जाया

करें, कोई ऐसा वक़्त आए कि हमारी आँखें नींद को तरस जाएं और हम अपने आपको समझाएं कि अगर तुम अल्लाह की रज़ा के लिए जागोगे तो क़यामत के दिन अल्लाह तआला का दीदार नसीब होगा। ये आँखें आज जागेगीं तो कल क़ब्र के अंदर मीठी नींद सोएंगी—

मौत के बाद है बेदार दिलों को आराम
नींद भरकर वही सोया जो कि जागा होगा

यह जागने का महीना आ रहा है। हम अपने आराम में कमी पैदा कर लें। यूँ समझें कि यह मुशक़्क़त उठाने का महीना है।

नेकियों का सीज़न

देखा गया है कि जो लोग तिजारत करते हैं उनके कारोबारी सीज़न आया करते हैं। जिस आदमी का सीज़न आए वह अपनी मेहनत बहुत ज़्यादा कर देता है। वह अनी मसरूफ़ियातें छोड़ देता है, वह दूसरों से माज़रत कर लेता है कि मेरा सीज़न है। इसलिए मैं ज़्यादा वक़्त फ़ारिग़ नहीं कर सकता बल्कि वह आदमी अपने खाने पीने की परवाह नहीं करता। रात को उसको सोने की फ़िक्र नहीं होती। उसको हर वक़्त यह ग़म होता है कि मैं किस तरह इस सीज़न को कमा लूँ। सीज़न से जितना नफ़ा उठा सकता हूँ उठा लूँ ताकि मुझे ज़्यादा फ़ायदा हो। वहं सोचता है कि यह थोड़े दिन की कोशिश है, यह थोड़े दिन की मुशक़्क़त है उसके बाद फिर आराम कर लेंगे। इसी तरह रमज़ानुल मुबारक नेकियाँ कमाने का सीज़न है। जो लोग अपने गुनाहों का माफ़ करवाना चाहते हैं, अल्लाह तआला का क़ुर्ब हासिल करना चाहता है, अल्लाह तआला

के साथ के लिए बेचैन रहने वाले हैं उनके लिए यह एक महीना सीज़न की तरह है। उन्हें चाहिए कि जब वे रोज़े रखें तो उनका रोज़ा सिर्फ़ खाने पीने से रुकने तक न रहे बल्कि रोज़ेदार की आँख भी रोज़ेदार हो, ज़बान भी रोज़ेदार हो, कान भी रोज़ेदार हों शर्मगाह भी रोज़ेदार हो, दिल व दिमाग़ भी रोज़ेदार हों। जब इस तरह हम सर के बालों से लेकर पाँव के नाख़ुनों तक रोज़ेदार बन जाएंगे तो इफ़्तार के वक़्त जब दामन फैलाएंगे तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमारी दुआएं क़ुबूल फ़रमाएंगे।

जन्नत की सजावट

रमज़ानुल मुबारक का महीना अजीब बरकतों के नाज़िल होने का महीना है। यूँ लगता है कि बरकतों के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं। हदीस पाक में आता है कि रमज़ानुल मुबारक के आने से पहले जन्नत को ख़ुशबूओं की धूनी दी जाती है। जन्नत को ईमान वालों के लिए सजाया जाता है और जब पहली रमज़ान का दिन होता है तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जन्नत के दरवाज़े खोल देते हैं। फ़रिश्तों को फ़रमाते हैं कि आज के दिन जन्नत के दरवाज़े ईमान वालों के लिए खोल दिए जाएं। गोया ईमान वालों के लिए जन्नत इस तरह सजाई जाती है कि दुल्हा की ख़ातिर दुल्हन को सजाया जाता है।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इंतिज़ारे रमज़ान

हदीस मुबारक में आता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम दुआएं मांगा करते थे कि ऐ अल्लाह! शाबान में हमारे लिए बरकत अता फ़रमा, और हमें रमज़ान तक पहुँचा दे यानी रमज़ान तक पहुँचे के लिए दुआ किया करते थे। यह कितना बरकत वाला महीना है कि जिस महीने तक पहुँचने के लिए अल्लाह जल्लेशानुहू के प्यारे नबी दुआएं मांगा करते थे, अल्लाहु अकबर।

रोज़ेदार की फ़ज़ीलत

इस महीने की बरकतें इतनी हैं कि जब कोई आदमी रोज़ा रखता है तो उस रोज़ेदार की बख़्शिश के लिए हवाओं में परिन्दे, बिलों में च्योंटियाँ और पानी में मछलियाँ दुआएं करती हैं और जब वह रोज़ेदार आदमी दुआएं करता है तो अल्लाह के फ़रिश्ते उसकी दुआओं पर लब्बैक और आमीन कहा करते हैं। इतना बरकत वाला महीना है कि इसके एक-एक लम्हे की बरकत पाने वाले वली बनते हैं और अब्दाल बना करते हैं। अगर हम इन बरकतों से फ़ायदा उठा सकें तो हमें भी अल्लाह की माअरिफ़त नसीब हो जाए।

सुनहरी मौक़ा

रमज़ानुल मुबारक ईमान वालों के लिए बहार का महीना होता है। जिस तरह बहार के महीने में हर तरफ़ खुशबू हुआ करती है, पेड़ भरे होते हैं, फूल खिले हुए होते हैं, बाग़ों में जाएं तो फ़िज़ा महकी हुई होती है, क्यों? हर बंदा कहेगा कि बहार का महीना है। हर तरफ़ हरियाली दिखाई देगी, हर तरफ़ खुशबुएं होंगी, फ़िज़ा खुशबुओं से भरी हुई और लदी हुई होगी। इसलिए कि वह बहार का महीना होता है। इसी तरह रमज़ानुल मुबारक अल्लाह

जल्लेशानुहू की रहमत का महीना है। इसकी सुबह में रहमत, इसकी शाम में रहमत, इसकी तहज्जुद के वक़्त में रहमत। जो आदमी अपने गुनाहों को बख़्शवाना चाहते हैं और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को राज़ी करना चाहते हैं तो उसके लिए यह सुनहरी मौक़ा है। शायद गोल्डन चान्स या सुनहरी मौक़े का लफ़्ज़ इसी मक़सद के लिए बनाया गया हो क्योंकि यह लफ़्ज इस मौक़े पर बिल्कुल फ़िट आता है।

पिछले बुज़ुर्गों के वाक़िआत

पिछले बुज़ुर्ग इस महीने की बरकत से कैसे फ़ायदा उठाते थे इसकी कुछ मिसालें अर्ज़ कर दी जाती हैं ताकि हमें भी अंदाज़ा हो जाए कि हमारे पिछले बुज़ुर्ग यह महीना कैसे गुज़ारते थे।

इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रह० का मामूल

इमाम आज़म अूब हनीफ़ा रह० के हालात ज़िंदगी के बारे में लिखा है कि आप रमज़ानुल मुबारक में 63 क़ुरआन पाक की तिलावत किया करते थे। एक क़ुरआन पाक दिन में पढ़ते थे, एक क़ुरआन पाक रात को पढ़ते थे और तीन कलाम पाक तरावीह में सुना करते थे। रमज़ानुल मुबारक में 63 क़ुरआने पाक। साठ क़ुरआन पाक दिन और रात में और तीन क़ुरआन पाक तरावीह की नमाज़ में, अल्लाहु अक्बर।

हज़रत रायपुरी रह० का मामूल

हज़रत रायपुरी रह० के मामूलात में लिखा है कि जब 29

शाबान का दिन होता तो अपने मुरीदों और ताल्लुक़ वालों को जमा फ़रमा लेते और सबसे मिल लेते और फ़रमाते भाई अगर ज़िंदगी रही तो अब रमज़ानुल मुबारक के बाद मुलाक़ात होगी और अपने एक ख़ादिम को बुलाते और उसे एक बोरी दे देते और फ़रमाते रमज़ानुल मुबारक में जितने ख़त आएं वह इस बोरी में डाल देना। ज़िंदगी रही तो रमज़ानुल मुबारक के बाद इनको खोलकर पढ़ेंगे। रमज़ानुल मुबारक में डाक नहीं देखा करते थे। फ़रमाते थे कि यह महीना बस मैंने अपने लिए ख़ास कर लिया है। अगर ज़िंदगी रही तो इसके बाद दोस्तों से मुलाक़ात होगी। आपके यहाँ पूरा रमज़ानुल मुबारक ऐतिकाफ़ की हालत में गुज़ारने का मामूल था। 29 शाबान के दिन जो आदमी आपकी मस्जिद में बिस्तर लेकर जाता उसको मस्जिद में बिस्तर लगाने की जगह नहीं मिला करती थी। दूर-दराज़ से लोग रमज़ानुल मुबारक का महीना वहाँ गुज़ारने के लिए आते थे और पूरा रमज़ानुल मुबारक इबादते इलाही और यादे इलाही में गुज़ार दिया करते थे।

रमज़ानुल मुबारक के बारे में हज़रत मुजद्दिद अलफ़े सानी रह० का फ़रमान

इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़े सानी रह० जो हमारे सिलसिला नक़्शबंदिया के इमाम हैं वह अपने ख़तों में रमज़ानुल मुबारक की बड़ी फ़ज़ीलत बयान फ़रमाते हैं कि रमज़ानुल मुबारक के महीने में इतनी बरकतें नाज़िल होती हैं कि बाक़ी पूरे साल की बरकतों को रमज़ानुल मुबारक की बरकतों के साथ वह निस्बत भी नहीं जो क़तरे को समुंद्र के साथ होती है। फ़रमाते हैं कि इसीलिए अल्लाह

जल्लेशानुहू ने अपना क़ुरआन इसी महीने में नाज़िल फ़रमाया बल्कि जितनी आसमानी किताबें नाज़िल हुई हैं सब की सब रमज़ानुल मुबारक में नाज़िल की गयीं। कोई चार रमज़ानुल मुबारक को, कोई सत्ताइस रमज़ानुल मुबारक को, अल्लाहु अक्बर। इस महीने को अल्लाह के कलाम से बहुत ताल्लुक़ है। लिहाज़ा इस महीने में क़ुरआन पाक की तिलावत ख़ूब कसरत से करनी चाहिए।

अज्र व सवाब में इज़ाफ़ा

रमज़ानुल मुबारक में रोज़दार की इबादत के अज्र को बढ़ा दिया जाता है। अगर नफ़्ल काम करेगा तो फ़र्ज़ के बराबर अज्र दिया जाएगा और अगर एक फ़र्ज़ पूरा करेगा तो सत्तर फ़र्ज़ों के बराबर अज्र दिया जाएगा।

तीन अश्रों की फ़ज़ीलत

यह बरकत का महीना, अल्लाह तआला की रहमत, मग़फ़िरत का महीना है। हदीस पाक में फ़रमाया ﴿اولها رحمة﴾ उसके पहले दस दिन रहमत के लिए ﴿واوسطها مغفرة﴾ दर्मियान के दस दिन मग़फ़िरत के हैं ﴿واخرها عتق من النار﴾ और आख़िर के दस दिन आग से आज़ादी के हैं।

अल्लाह की रहमत बहाने ढूंढती है

मदीना तैय्यबा के क़रीब एक क़बीला बनी कलब नामी रहता था जो भेड़ बकरियों के पालने में मशहूर था। उस क़बीले के एक-एक घर वालों के पास कई-कई सौ और कई-कई हज़ार

बकरियाँ होती थीं। हदीस पाक का मफ़हूम है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस क़बीले का नाम लेकर कहा रमज़ानुल मुबारक की एक रात में अल्लाह जल्लेशानुहू उस क़बीले के भेड़-बकरियों के बालों के बराबर जहन्नमी जहन्नम से बरी फ़रमा देते हैं, अल्लाहु अकबर। ऐसा मालूम होता है कि अल्लाह तआला की रहमत अपने बंदों के गुनाहों के बख़्शने के लिए उस वक़्त बहाने ढूंढती रही होती है।

﴿رحمت حق بہانہ می جوید﴾

'बहा' फ़ारसी ज़बान का लफ़्ज़ है। इसका मतलब है 'क़ीमत' पंजाबी में हम इसको 'भा' कह देते हैं और उर्दू में 'भाव' कहते हैं कि फ़लां चीज़ का भाव बढ़ गया है। फ़ारसी में यह लफ़्ज़ 'बहा' है बेश-बहा यानी बेश क़ीमत। फ़रमाया :

﴿رحمت حق "بہا" نہ می جوید﴾

यानी अल्लाह की रहमत क़ीमत नहीं मांगती,

﴿رحمت حق "بہانہ" می جوید﴾

बल्कि अल्लाह की रहमत तो बहाना मांगती है।

इबादत में रुकावट

ज़मीन और आसमान ख़ालिक़ रमज़ानुल मुबारक में अपने बंदों के लिए मग़फ़िरत के दरवाज़े खोल देते हैं। बड़े-बड़े शैतानों को क़ैद कर दिया जाता है। फिर भी इंसान इबादत न करे तो रुकावट कौन सी चीज़ बनी? इंसान का अपना नफ़्स बना अपने नफ़्स को समझाएं कि बहुत अर्सा ग़फ़लत में गुज़ार बैठे, इस महीने को तो कमाने की ज़रूरत है।

बुज़ुर्गी का पैमाना

पहले के बुज़ुर्गों के हालाते ज़िंदगी के बारे में लिखा है कि जब वे किसी की बुज़ुर्गी का ज़िक्र करते तो यूँ कहते कि फ़लाँ तो बहुत बुज़ुर्ग आदमी है और दलील यह देते थे कि उसने तो अपनी ज़िंदगी के इतने रमज़ान गुज़ारे हैं। उनके नज़दीक बुज़ुर्गी का यह पैमाना था। बुज़ुर्गी और दर्जात की तरक्क़ी अंदाज़ा लगाने का पैमाना था कि फ़लाँ इंसान ज़िंदगी के इतने रमज़ान गुज़ार चुका है। अब इसके दर्जे को तो हम नहीं पहुँच सकते, अल्लाहु अकबर।

जन्नत की सेल

बाज़ारो में कुछ चीज़ों की सेल लगती है। पाकिस्तान में भी सेल लगने का रिवाज बढ़ रहा है कि उस जगह जूतों की सेल लग गई है। जब सेल लग जाती है तो कीमती जूते सस्ते दामों में मिल जाया करते हैं, क्यों? जी सेल लग गई है। एक आम दस्तूर है कि जब किसी चीज़ की सेल लग जाए तो कीमती चीज़ कम दामों पर मिल जाया करती है। क़ुरआन व हदीस को पढ़ा जाए तो यूँ मालूम होता है कि अल्लाह तआला रमज़ानुल मुबारक में जन्नत की सेल लगा देते हैं। तो फिर इंसान क्यों न हासिल करे हालाँकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त खुद फ़रमाते हैं ﴿والله يدعو الى دار السلام﴾ अल्लाह तआला तुम्हें सलामती वाले घर की तरफ़ बुलाता है। तो हम क्यों न उससे उसकी रहमतों को मांगे।

﴿اللهم انى اسئلك الجنة ونعوذبك من النار﴾

ऐ अल्लाह! हम आपसे जन्नत मांगते हैं और जहन्नम से पनाह मांगते हैं।

हज़रत मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह० का मामूल

शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह० अपने बारे में फ़रमाते थे, "मैं बड़ों ही के नक़्शे क़दम पर रमज़ानुल मुबारक यकसूई के साथ गुज़ारा करता था। मेरा मामूल था कि मैं सारा दिन क़ुरआन की तिलावत में लगा रहता, कुछ वक़्त नफ़्लों में गुज़ारता। मेरा एक दोस्त जो किसी दूसरे मौहल्ले में रहता था वह रमज़ानुल मुबारक में मिलने आया। उसे मेरे मामूलात का अंदाज़ा नहीं था। उसने सलाम किया। मैंने सलाम का जवाब दे दिया। फिर अपने कमरे में आकर तिलावत शुरू कर दी। वह भी मेरे पीछे-पीछे कमरे में आ गया। वह इंतिज़ार में बैठा रहा, मैं तिलावत करता रहा। यहाँ तक कि अस्र का वक़्त हो गया। अस्र की अज़ान हुई तो मैं फिर नमाज़ के लिए खड़ा हुआ। हम दोनों ने आकर नमाज़ पढ़ी। नमाज़ से फ़ारिग़ होते ही मैं अपनी सीधा अपनी जगह पर आकर बैठ गया और तिलावत शुरू कर दी। वह फिर कमरे में आया (वह दोस्त था बचपन का बड़ा बेतकल्लुफ़ था) उसने कमरे में आकर देखा तो मैं फिर तिलावत शुरू कर बैठा था। वह थोड़ी देर इंतिज़ार करता रहा फिर कहने लगा, भई! रमज़ानुल मुबारक तो हमारे पास भी आवे मगर यूँ बुख़ार की तरह नहीं आवे।"

यानी उसका अदांज़ा था कि इन पर तो रमज़ानुल मुबारक यूँ आता है जैसे किसी को बुख़ार चढ़ जाता है और फ़रमाते थे कि वाक़ई मुझे पूरा महीना यही जज़्बा रहता था, अल्लाहु अकबर।

हज़रत शैखुल हिंद रह० का मामूल

हज़रत शैखुल हिंद मौलाना महमूद हसन रह० की नमाज़े

तरावीह उस वक़्त ख़त्म होती थी कि जब सहरी का वक़्त हो जाता था। इसलिए तरावीह ख़त्म करते ही सहरी खाते और साथ ही फ़ज्र की नमाज़ के लिए तैयार हो जाते थे। सारी रात इबादत में गुज़ार देते थे। एक बार कई दिन लगातार मुजाहिदे में गुज़र गए तो घर की औरतों ने महसूस किया कि हज़रत की तबियत में कमज़ोरी है। ऐसा न हो कि तबियत ज़्यादा ख़राब हो जाए तो उन्होंने मिन्नत समाजत की कि हज़रत! आप बीच में एक रात वक़्फ़ा कर लें, तबियत को कुछ आराम मिल जाएगा फिर दस पंद्रह दिन गुज़र जाएंगे। लेकिन हज़रत फ़रमाने लगे मालूम नहीं आइंदा रमज़ान कौन देखेगा और कौन नहीं देखेगा। घर की औरतों ने किसी बच्चों के ज़रिए क़ारी को पैग़ाम भिजवाया कि क़ारी साहब! आप किसी रात बहाना कर दें कि मैं थका हुआ हूँ, आराम करने को जी चाहता है। (हज़रत का आदत थी कि दूसरों के उज़्र बहुत जल्दी क़ुबूल कर लिया करते थे।) क़ारी साहब ने कहा बहुत अच्छा कि वह मेरे शैख़ व मुर्शिद हैं उन पर इस वक़्त कमज़ोरी ग़ालिब है तो चलो आज की रात ज़रा आराम से गुज़रेगी। क़ारी साहब तरावीह पढ़ाने के लिए आए तो कहने लगे हज़रत! आज मेरी तबियत बहुत थकी हुई है इसलिए आज मैं ज़्यादा तिलावत नहीं कर सकूँगा। हज़रत ने फ़रमाया बहुत अच्छा। आप बिल्कुल थोड़ी सी तिलावत करें। क़ारी साहब ने एक दो पारे सुनाकर अपनी तरावीह पूरी कर दी तो हज़रत ने फ़रमाया क़ारी साहब! आप थके हुए हैं अब आप घर न जाइए बल्कि यहीं मेरे बिस्तर पर सो जाएं। क़ारी साहब को मजबूरन बात माननी पड़ी। हज़रत के बिस्तर पर लेट गए। हज़रत ने फ़रमाया क़ारी साहब!

आप बिल्कुल आराम करें और सो जाएं। फिर लाइट बुझा दी और किवाड़ बंद कर दिए। क़ारी साहब फ़रमाते हैं कि जब थोड़ी देर के बाद मेरी आँख खुली तो मैंने देखा कि कोई मेरे पाँव दबा रहा है, मुठ्ठी चापी कर रहा है। मैं हैरान होकर उठ बैठा। जब क़रीब होकर देखा तो मेरी हैरत की हद न रही कि मेरे पीर व मुर्शिद हज़रत शैख़ुल हिन्द रह० अंधेरे में बैठे मेरे पाँव दबा रहे हैं। मैंने कहा हज़रत! यह आपने क्या किया? फ़रमाने लगे क़ारी साहब! आपने ख़ुद ही कहा था कि मैं थका हुआ हूँ तो मैंने सोचा चलो मैं आपके पाँव दबा देता हूँ। आपको कुछ आराम मिल जाएगा। क़ारी साहब कहने लगे हज़रत! अगर आपने रात जाग कर ही गुज़रनी है तो चलें मैं क़ुरआन सुनाता हूँ। आप क़ुरआन ही सुनते रहें रात यूँ बसर हो जाएगी। क़ारी साहब मुसल्ले पर आ गए और उन्होंने क़ुरआन पढ़ना शुरू कर दिया, हज़रत ने क़ुरआन सुनना शुरू कर दिया, अल्लाहु अकबर।

अल्लाह को राज़ी करने का तरीक़ा

पहले के बुज़ुर्ग अल्लाह को राज़ी करने के लिए यूँ इबादत किया करते थे कि जैसे कोई किसी रूठे हुए को मनाता है। सुब्हानअल्लाह रूठे रब को मनाते थे। अगर कोई ग़ुलाम भाग जाए और फिर पकड़ा जाए तो वह अपने मालिक के सामने आता है तो क्या करता है? वह अपने मालिक के सामने आकर हाथ जोड़ देता है, अपने मालिक के पाँव पकड़ लेता हैं और कहता है कि मेरे मालिक आप माफ़ करें। आइंदा मैं एहतियात करूंगा। मेरे दोस्तो! रमज़ानुल मुबारक में हम अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने

इसी तरह अपने हाथ जोड़ दें, सज्दे में चले जाएं और अर्ज़ करें कि ऐ अल्लाह! हम नादिम हैं, शर्मिंदा हैं, जो कोताहियाँ अब तक कर बैठें हैं उनको माफ़ कर दे। आइंदा ज़िंदगी हम तक्वे और परहेज़गारी के साथ गुज़ारने की कोशिश करेंगे।

आराम व सुकून

अहले दिल हज़रात इस महीने में आराम को विदा कह दिया करते हैं। हम भी रमज़ानुल मुबारक में आराम को छोड़ दें। हम सोचें कि साल के ग्यारह महीने हम अपनी मर्ज़ी से सोते जागते हैं तो एक महीना ऐसा भी हो कि जिसमें हम बहुत कम सोएं। अच्छी बात है अगर आँखें नींद को तरसती रहें, अच्छी बात है अगर जिस्म को थका दें। कल क़ियामत के दिन अल्लाह तआला के हुज़ूर यह अर्ज़ कर सकें कि या अल्लाह! ज़िंदगी का एक महीना तो ऐसा गुज़ारा था कि आँखें नींद को तरसती थीं और जिस्म आराम को तरसता था।

हमारी आराम तलबी

हमारे लिए कए क़ुरआन पाक तरावीह में पढ़ना मुश्किल होता है। कुछ लोग कहते हैं कि जी फ़लाँ मस्जिद में जाना है, क्यों? जी वहाँ 30 मिनट में तरावीह हो जाती है, उस जगह 25 मिनट में हो जाती है। हम मस्जिदें ढूंढते फिरते हैं कि कहाँ हम 5 मिनट पहले फ़ारिग़ हो सकते हैं। हमारी काहिली का यह हाल है।

औरतों का क़ुरआन से लगाव

हज़रत शैखुल हिंद रह० के यहाँ की औरतें भी तरावीह में

क़ुरआन पाक सुना करती थीं। आपके बेटे क़ुरआन पाक सुनाते थे और पर्दे के पीछे घर की औरतें और कुछ दूसरी औरतें जमाअत में शरीक हो जाया करती थीं। एक दिन हज़रत के बेटे बीमार हो गए तो हज़रत ने किसी और क़ारी साहब को भेज दिया। क़ारी साहब ने तरावीह में चार पारे पढ़े। जब सहरी के वक़्त हज़रत घर तशरीफ़ ले गए तो घर की औरतें बड़ी नाराज़ हुईं। कहने लगीं हज़रत! आज आपने किस क़ारी साहब को भेज दिया। उसने तो बस हमारी तरावीह ख़राब कर दी। पूछा क्या हुआ? कहने लगीं पता नहीं उसको क्या जल्दी थी उसने चार पारे पढ़े और भाग गए। फिर पता चला कि ये औरतें रमज़ानुल मुबारक में तरावीह की नमाज़ में सात क़ुरआन पाक सुना करती थीं। जी हाँ कई ख़ानक़ाहों में तीन क़ुरआन पाक पढ़ने का मामूल रहा है, कई ख़ानक़ाहों में पूरा रमज़ानुल मुबारक ऐतिकाफ़ करने का मामूल रहा है। हमारे बुज़ुर्ग यूँ मुजाहिदा किया करते थे। रमज़ानुल मुबारक का महीना कमाने का महीना है अपने जिस्म को थकाने का महीना है।

मेहनत करने का महीना

मेरे दोस्तो! बकिया साल तहज्जुद में हम जैसे कमज़ोर लोगों के लिए तो मुश्किल होता है चलो रमज़ानुल मुबारक में रोज़ा रखने के लिए जाग ही जाते हैं तो फिर उस में कुछ रक्अतें नफ़्ल भी पढ़ लिया करें। दिन के वक़्त में हम क़ुरआन पाक की तिलावत में वक़्त गुज़ार दिया करें। एक महीना ग़ीबत छोड़ दें, बेकार बात छोड़ दें, दोस्तों के साथ एक दो घंटे की मुलाक़ातें छोड़ दें। हम सबसे अजनबी बन जाएं, हम कहें कि यह महीना तो

अपनी ज़ात के लिए मेनहत करने का महीना है, कमाने का महीना है। इसको कमा लें जितना कमा सकते हों।

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम की बद्दुआ

हदीस पाक में आता है कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आकर हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने बद्दुआ की कि ऐ अल्लाह के नबी! हलाक हो जाए वह आदमी जिसने रमज़ानुल मुबारक का महीना पाया और अपनी मग़फ़िरत न करवाई। मेरे आक़ा ने इस पर आमीन की मुहर लगा दी। अव्वल तो वह मुक़र्रब फ़रिश्ते की बद्दुआ ही काफ़ी थी लेकिन मेरे आक़ा ने मुहर लगाकर उसकी ताकीद में इज़ाफ़ा कर दिया कि जो आदमी रमज़ान का महीना पाए और मग़फ़िरत न करवाए तो उसके हलाक होने में कोई शक नहीं कर सकता।

हमारी सुस्ती का हाल

पहले के बुज़ुर्ग जब क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुइज़्ज़त के सामने बड़े-बड़े आमाल पेश करेंगे। कोई चालीस साल ईशा के वुज़ू से फ़ज्र की नमाज़ें पेश करेगा, कोई ज़िंदगी की इतनी इबादत पेश करेगा उस वक़्त हमें नदामत होगी। काश! हमारे आमाल इस क़ाबिल होते कि हम उस वक़्त अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने रमज़ानुल मुबारक के रोज़े, उसकी तिलावत और उसकी इबादत पेश कर सकें और कहें कि या अल्लाह! हम कमज़ोर थे, ग्यारह महीने सुस्ती का शिकार रहे, कुछ न कर सके। एक महीना ऐसा था कि जिसमें हमने तेरी रज़ा के लिए कोशिश की। तू इसे क़ुबूल कर ले।

मेरी किस्मत से इलाही पाएं ये रंग क़ुबूल
फूल कुछ मैंने चुने हैं उनके दामन के लिए

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से बूढ़ी औरत की मुहब्बत का वाक़िआ

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ख़रीदारी के लिए एक बूढ़ी औरत "धागे की आटी" लेकर चल पड़ी थी। किसी ने पूछा कि अम्मा तुम कहाँ जा रही हो? कहने लगी, यूसुफ़ को ख़रीदने जा रही हूँ। उसने कहा अम्मा! उनके ख़रीदने के लिए बड़े-बड़े अमीर आए हुए हैं, वक़्त के बड़े-बड़े नवाब आए हुए हैं, उमरा आए हुए हैं, तू यूसुफ़ को कैसे ख़रीद सकेगी। कहने लगी मेरा दिल भी जानता है कि यूसुफ़ को मैं ख़रीद नहीं सकूँगी लेकिन मेरे दिल में एक बात है। वह कहने लगा कौन सी बात है? कहने लगी कल क़यामत के दिन जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त कहेंगे कि मेरे यूसफ़ को ख़रीदने वाले कहाँ हैं तो मैं भी यूसुफ़ के ख़रीदारों में शामिल हो सकूँगी। इसी तरह मेरे दोस्तो! जब अल्लाह तआला के सामने हमारे पहले बुज़ुर्ग अपनी ज़िन्दगी की इतनी इतनी इबादतें पेश करेंगे तो हम भी ज़िन्दगी का एक महीना ही पेश कर दें कि या अल्लाह! और कुछ न कर सके एक महीना कोशिश की थी। तू इसी को क़ुबूल फ़रमा ले।

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम से परिन्दे की मुहब्बत

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को आग में डाला गया तो उस आग के शोले इतने ऊँचे थे कि वह आग चालीस दिन तक जलती

रही। कोई आदमी क़रीब नहीं जा सकता था। उस वक़्त एक छोटा सा परिन्दा चोंच में पानी ले जाकर उस आग पर डालता था। किसी दूसरे परिन्दे ने उससे कहा कि भाई! तेरे इस पानी डालने से आग तो नहीं बुझ सकेगी। कहने लगा यह तो मैं भी जानता हूँ कि आग नहीं बुझ सकेगी लेकिन मैंने हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दोस्ती का हक़ अदा करना है।

निजात की सूरत

मेरे दोस्तो! जानते तो हम सब हैं कि हमारे गुनाह ज़्यादा हैं, कोशिशें थोड़ी हैं लेकिन दामन फैलाने वाली बात है। रमज़ानुल मुबारक को अल्लाह तआला की रहमतें मांगते हुए गुज़ार दें। किसी दुनियादार का दरवाज़ा कोई एक महीने तक खटखटाता रहे तो वह दुनियादार भी दरवाज़ा खोल देता है। हम तो रब्बुल आलमीन का दरवाज़ा खटखटाएंगे। जब हम पूरे ख़ुलूस के साथ अपने गुनाहों की माफ़ी मांगेगे तो यक़ीनन उसकी रहमत जोश में आएगी और हमारे लिए मग़फ़िरत का पैग़ाम लाएगी। हमारी निजात का दारोमदार तो महबूबे हक़ीक़ी की एक निगाह, आधी निगाह पर मौक़ूफ़ है। ﴿وما ذالك على الله بعزيز.﴾ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें अपनी रहमत से ख़ास हिस्सा नसीब फ़रमाए।

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

❋ ❋ ❋

﴿الصوم لی وانا اجزی بہ﴾

अल्लाह तआला फ़रमाते है,

''रोज़ा मेरे लिए है और उसकी जज़ा मैं ख़ुद हूँ।''

रोज़े क्यों फ़र्ज़ किए गए

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم

يا ايها الذين امنوا كتب عليكم الصيام كما كتب على

الذين من قبلكم لعلكم تتقون. سبحان ربك رب العزة عما

يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

रोज़े क्यों फ़र्ज़ किए गए

इस आयते करीमा में रोज़ों का फ़लसफ़ा और हिकमत बयान की गई है कि रोज़ों को क्यों फ़र्ज़ किया है। सोचने की बात है कि अल्लाह तआला ईमान वालों को सज़ा तो नहीं देना चाहते या अल्लाह तआला इस बात पर खुश तो नहीं होते कि मेरे बंदे भूखे प्यासे रहें। बंदों को भूखा रखकर उसको फ़ायदा तो होता नहीं। क्यों इर्शाद फ़रमाया गया है कि तुम रोज़े रखो। मालूम यह होता है कि इसमें हमारा अपना फ़ायदा है। बतलाया गया है कि इसलिए फ़र्ज़ किए गए हैं कि तुम परहेज़गार बन जाओ।

रोज़े का फ़लसफ़ा और हिकमत

रोज़े का फ़लसफ़ा और हिकमत क्या है? वह यह है कि इंसान

के अंदर तक़्वा और परहेज़गारी पैदा हो जाए। एक सहाबी हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु से किसी सहाबी ने पूछा तक़्वा क्या है? फ़रमाया कभी कांटेदार रास्ते से गुज़रे हो? कहा कई दफ़ा गुज़रा हूँ। कैसे गुज़रते हो? कहा हज़रत बड़ा बच बचाकर सिमट सिमटा कर कि कहीं मेरा दामन उलझ न जाए। फ़रमाया इसी का नाम तक़्वा है कि इंसान तू ऐसे संभलकर ज़िंदगी गुज़ार कि तेरा दामन किसी गुनाह में न सन जाए। इसी को तक़्वा और परहेज़ागरी कहते हैं। रोज़ा सिर्फ़ भूखा प्यासा रहने का नाम नहीं हैं यानी सिर्फ़ खाने पीने का ही रोज़ा नहीं होता। आँख का भी रोज़ा होता है, ज़बान का भी रोज़ा होता है, कान का भी रोज़ा होता है, दिल व दिमाग़ का भी रोज़ा होता है। रोज़ेदार इंसान तो सर लेकर पाँव तक रोज़ेदार होता है।

रोज़े का कमाल

रोज़े का कमाल नसीब ही तब होता है जब इंसान सारे का सारा रोज़ेदार हो। इसी लिए हदीस पाक में आता है कि कुछ रोज़ेदार ऐसे हैं जिन्हें भूखा प्यासा रहने के सिवा कुछ हासिल नहीं होता, क्यों? रोज़ा तो रखा था लेकिन दूसरे की ग़ीबत की, रोज़ा तो रखा लेकिन झूठ बोला, रोज़ा तो रखा लेकिन दूसरे को धोका दिया, रोज़ा तो रखा लेकिन दूसरे के हक़ को पामाल किया। जब रोज़ा रखकर ऐसा किया गया तो गोया रोज़े का सवाब जाता रहा। इसीलिए हदीस पाक में आता है कि कितने बंदे ऐसे हैं जिन्हें रोज़े से भूखा प्यासा रहने के सिवा कुछ हासिल नहीं होता।

रोज़े के आदाब

रोज़े के कुछ आदाब हैं। एक हम जैसे आम लोगों का रोज़ा है। वह तो यह कि खाने पीने से परहेज़ करें। एक है ख़ास लोगों का रोज़ा और वह यह कि है कि जिस तरह खाने पीने से परहेज़ करे उसी तरह दूसरे तमाम गुनाहों से पूरी तरह परहेज़ करें। मसलन आँख के गुनाह से परहेज़, कान के गुनाह से परहेज़, ज़ुबान के गुनाह से परहेज़। गोया रोज़े की हालत में गुनाहों से बचे।

ज़्यादा रोज़ा लगने की वजहें

आमतौर पर देखा गया है कि जो आदमी परहेज़गारी के साथ रोज़ा रखता है। उसे भूक प्यास बहुत कम महसूस होती है और ज़्यादा भूक प्यास उसी को लगती है जो बदपरहेज़ियाँ करता है।

ग़ीबत से परहेज़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौर की बात है। ये वाक़िआत इसलिए पेश आए कि हम जैसों के लिए आइंदा के लिए मिसाल बन सकें। दो औरतों ने रोज़ा रखा और रोज़ा उनको इतना लगा कि वह मरने के क़रीब हो गयीं। यह बात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ की गई। आपने फ़रमाया कि उन्हें कहो कि कुल्ली करें। दोनों को कहा गया कि कुल्ली करें। कुल्ली करने पर उनके मुँह से गोश्त के छोटे-छोटे टुकड़े निकले। वह हैरान कि हमने तो कुछ नहीं खाया पिया। यह क्या हुआ? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बतलाया कि यह

दरअसल रोज़ा रखकर दूसरों की ग़ीबत करती रही और ग़ीबत करना ऐसा ही है जैसे किसी मुर्दार का गोश्त खाना। अल्लाह तआला ने इब्रत बना दिया ताकि लोग नसीहत हासिल करें।

ईमान के लिए ढाल

फ़ुक़्हा ने लिखा है कि अगर रोज़ेदार से कोई बंदा झगड़ा या ज़्यादती भी करे तो यह कह दे कि मैं रोज़ेदार हूँ। यूँ परहेज़गारी के साथ रोज़ा रखेगा तो ईमान के लिए ढाल बन जाएगा। यह रोज़ा अल्लाह के सामने कामयाब होने का ज़रिया बन जाएगा।

रोज़ों के मक़सद

हमारे अंदर परहेज़गारी पैदा करने के लिए रोज़े फ़र्ज़ किए गए। जैसे माँ कभी-कभी अपने बच्चे को कोई चीज़ खाने नहीं देती। इसलिए कि उसमें बच्चे का फ़ायदा होता है। बच्चे का जी चाहा कि बर्फ़ का गोला खाऊँ। माँ नहीं देती। उस माँ को बच्चे के साथ दुश्मनी तो नहीं होती। माँ बच्चे को महरूम नहीं रखना चाहती। माँ बच्चे को रुलाना पसंद नहीं करती। उसमें बच्चे का फ़ायदा होता है बिल्कुल इसी तरह अल्लाह तआला ने हमें हुक्म दिया है कि रोज़े रखो। इसमें हमारे लिए खुद फ़ायदा है। अपनी ज़ात के लिए फ़ायदा है।

रोज़ा और डाक्टरों की तहक़ीक़

डाक्टरों ने ये तहक़ीक़ की है कि एक महीने के रोज़े रखने से

बहुत सी बीमारियाँ इंसान के जिस्म से अपने आप दूर हो जाती हैं। रोज़ों का जिस्मानी तौर पर भी फ़ायदा है और रूहानी तौर पर भी। कई बंदे वह भी होते हैं जिनके घर का गुसलख़ाना ग़रीब आदमी के घर से भी ज़्यादा मंहगा होता है। पूरा साल वे अपनी मर्ज़ी से खाते पीते हैं अगर रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों न होते तो हो सकता है कि उन्हें यह पता ही न चलता कि जो ग़रीब आदमी अपने घर में बच्चों के साथ भूका है उसके के साथ क्या गुज़रती है। अल्लाह तआला ने रोज़े फ़र्ज़ करके हमारे ऊपर एहसान किया। इंसान जब सारा दिन खाए न पिए तब ख़्याल आता है कि जो भूका रहता होगा उसका क्या हाल होता होगा।

बीमार पुर्सी और पड़ौसियों का ख़्याल

हदीस पाक में आता है कि क़यामत के दिन एक आदमी को खड़ा किया जाएगा। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ऐ मेरे बंदे मैं भूका था तूने मुझे खाना नहीं खिलाया। वह हैरान हो जाएगा कि या अल्लाह! तेरी शान बड़ी है, आप भूक प्यास से बरी और पाक हैं। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे ऐ मेरे बंदे मैं बीमार था तूने मेरी बीमार पुर्सी नहीं की। वह बंदा हैरान रह जाएगा। हैरान होकर अर्ज़ करेगा या अल्लाह यह कैसी बात है कि आप भूके प्यासे थे मैंने खाना नहीं खिलाया, आप बीमार थे मैंने बीमार पुर्सी नहीं की। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे कि दुनिया में फ़लाँ मौक़े पर तेरा पड़ौसी भूका प्यासा था, तू उसे खाना खिलाता तो ऐसों ही होता जैसे तूने मुझे खाना खिला दिया अगर बीमार की अयादत करता ऐसा ही था जैसे तूने मेरी बीमार पुर्सी की। इंसान को उस वक़्त

एहसास होगा कि दूसरे इंसानों की ग़मगुसारी पर क्या सवाब होता है। आज का अच्छा पड़ोसी बन जाना भी क़िस्मत वाले को नसीब होता है। आज तो लड़ाई ही पड़ोसियों से होती है हालाँकि पड़ौसी के हक़ों के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास (पड़ौसी के बारे) इतनी बार आए, इतनी बार आए कि मुझे शक हुआ कि मरने के बाद पड़ौसी को विरासत में शामिल कर लिया जाएगा लेकिन हमारा झगड़ा चलता ही पड़ोसियों के साथ है, बच्चों की छोटी-छोटी बातों पर आपस में उलझ पड़ते हैं। थोड़ी देर में रिश्ते नाते ख़त्म करके रख देते हैं हालाँकि बात को अगर सुलझाना चाहें तो सुलझ भी जाती है।

अजीब वाक़िआ

दो भाई थे जिनमें मुहब्बत का तअल्लुक़ था लेकिन बीवियों की आपस में न बनती थी। उनमें से एक भाई ने दूसरे को दावत खाने के लिए घर बुलाया और उसके सामने खाना लाकर रखा। उसकी बीवी को पता चला तो उसने सामने से उठा लिया कि हम इस आदमी को खाना नहीं देते। यह भाई दिल में बहुत रंजीदा हुआ। उसके भाई ने जब चेहरे पर ग़ुस्से के असरात देखे तो कहने लगा एक बार मैं आपके घर आया था। याद रहे कि आपने भी मेरे सामने खाना रखा था। आपकी एक मुर्ग़ी भागती हुई आई और सालन में उसका पाँव पड़ा तो सालन गिर गया। मैंने न रोटी खाई क्योंकि सालन और नहीं था। तुम्हारे घर की एक मुर्ग़ी ने खाना ख़राब कर दिया और मैंने महसूस न किया अगर मेरी बीवी ने ग़ुस्से में खाना उठा लिया तो आप ग़ुस्से क्यों

होते हैं? दूसरे भाई ने कहा बात तो सच्ची है। क्या मैं इतना भी इसका लिहाज़ नहीं कर सकता जितना इसने मेरी मुर्गी का क्या था। चुनाँचे बात जल्दी ही समझ में आ गई। मामला उलझते उलझते बिल्कुल सुलझ गया। अगर समझने की नीयत हो तो बात जल्दी समझ में आ जाती है और अगर लड़ने की नीयत हो तो बात बिल्कुल समझ में नहीं आती। अच्छा पड़ौसी बनकर रहना यह अच्छे अख़्लाक़ में से है।

अच्छे अख़्लाक़

हदीस में है, "मैं अच्छे अख़्लाक़ की तकमील के लिए भेजा गया हूँ।" मकारिम अख़्लाक़ में से यह है कि पड़ौसी के साथ अच्छा सुलूक किया जाए। आज इस बात की तरफ़ तवज्जेह देना बड़ा मुश्किल मामला है। पड़ौसी की बात और है भाईयों का एक दूसरे के साथ रहना बड़ा मुश्किल है। हमारे अंदर की बुराईयों के असरात साथ वालों पर पड़ते हैं।

रोज़ा रखने का असल मक़सद

रोज़ा रखने का असल मक़सद यही है कि भूका प्यासा रहने से इंसान को रिज़्क़ की क़दर मालूम हो और उसके अंदर परहेज़गारी पैदा हो।

नेमतों की क़दर

देखिए रोटी का लुक़्मा कितने मरहलों से गुज़कर हमारे मुँह में

आता है। ज़मीन पानी, हवा सूरज की धूप ये सब चीज़ें इस्तेमाल हुई तब गेहूँ का पौधा बड़ा होता है। फिर इंसान ने उसको काटा, साफ़ किया, आग पर पकाया तब जाकर रोटी हमारे सामने आई। जब इतने मरहले से गुज़रकर यह नेमत हमारे सामने आती है। हम उसे खाते हुए बिस्मिल्लाह भी नहीं पढ़ते। कितनी अजीब् बात है।

अजीब वाक़िआ

हमारे दादा पीर हज़रत फ़ज़ल अली क़ुरैशी की ज़मीन थी। उसमें खुद हल चलाते थे, खुद पानी देते थे, खुद काटते, खुद बीज निकालते, फिर वह गेहूँ घर आती थी। फिर रात को मियाँ-बीवी उसको पीसा करते थे और उस आटे से बनी हुई रोटी ख़ानक़ाह में मुरीदों को खिलाई जाती थी। आप अंदाज़ा कीजिए हज़रत यह सब कुछ खुद करते थे। हज़रत की आदत कि थी हमेशा बावुज़ू रहते थे। घर वालों की भी यही आदत थी। एक दिन हज़रत ने खाना पकवाया और ख़ानक़ाह में ले आए। अल्लाह अल्लाह सीखने सालिकीन आए हुए थे। वह खाना हज़रत ने उनके सामने रखा। जब वे खाना लगे तो आपने उन्हें कहा कि फ़क़ीरों (हज़रत क़ुरैशी मुरीदों को फ़क़ीर कहते थे) तुम्हारे सामने जो रोटी पड़ी है इसके लिए हल चलाया गया तो वुज़ू के साथ, फिर बीज डाला गया तो वुज़ू के साथ, फिर इसको पानी दिया तो वुज़ू के साथ, फिर इसको काटा गया तो वुज़ू के साथ, फिर गेहूँ भूंसे से अलग की गई तो वुज़ू के साथ, फिर गेहूँ को पीसा गया तो वुज़ू के साथ, फिर आटा गूंधा गया तो वुज़ू के साथ, फिर रोटी पकाई गई

वुज़ू के साथ, फिर आपके सामने खाना लाकर रखा गया तो वुज़ू के साथ,

"काश कि वुज़ू के साथ तुम इसे खा लेते।"

खाने के आदाब

अब सोचें कि जो लुक़्मा हमारे सामने आता है वह कितने मरहलों से गुज़रकर आता है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को वह बंदा बड़ा पसंद है जो उसकी नेमत की क़दर करे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदते शरीफ़ा थी कि जब खाना खाते थे, बहुत आजिज़ी के साथ खाते थे, घमंडी लोगों की तरह टेक लगाकर, चल फिर कर नहीं खाते थे। बैठकर खाते थे जैसे किसी आक़ा के सामने उसका ग़ुलाम अदब से बैठकर खाया करता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला की याद के साथ बैठकर खाया करते थे। बंदा खाना खाए दिल में नेमत का एहसास हो कि या अल्लाह! यह तेरी नेमत है।

इबरत अंगेज़ वाक़िआ

अख़बार में एक दफ़ा पढ़ा कि फ़लाँ फ़लाँ मुल्क का आदमी है जो करोड़पति है। उसने अख़बार में इश्तिहार दिया था कि अगर कोई डाक्टर मेरा ईलाज कर दे हत्ताकि कि मैं एक चपाती खाने के लायक़ हो जाऊँ तो मैं उसको इतने इतने करोड़ रुपया दूँगा। करोड़ों रुपया ख़र्च करने को तैयार है लेकिन सेहत साथ नहीं देती कि एक दिन में एक रोटी खाने के क़ाबिल हो। अल्लाह तआला

ने हमें सेहत दी है कि हम अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ खाते पीते हैं। यह अल्लाह तआला की कितनी बड़ी नेमत है। हम सोचें कि क्या हमने उसकी बंदगी का हक़ अदा कर दिया या नहीं।

हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम का मशहूर वाक़िआ

मशहूर वाक़िआ है कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम को अल्लाह ताअला ने हुकूमत अता फ़रमाई इंसानों पर भी, हैवानों पर भी, परिन्दों पर भी, हवा पर भी, पानी पर भी सब पर हुकूमत अता फ़रमाई। एक दिन हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने दुआ कि या अल्लाह मैं तेरी मख़्लूक़ की दावत करना चाहता हूँ। फ़रमाया कि बहुत अच्छा करो। या अल्लाह मैं जो खाना तैयार करूं ज़ाए न हो। फ़रमाया अच्छा ज़ाए नहीं होगा। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने जिन्नों को हुक्म दे दिया कि खाना तैयार करो। जिन्नों ने बड़ी बड़ी देगें बनायीं और उनमें खाना तैयार करना शुरू कर दिया। पकाते रहे और कई साल तक वे जमा करते रहे। यहाँ तक कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के दिल में बात आयी कि यह खाना सारी मख़्लूक़ के लिए काफ़ी होगा। दिल में तसल्ली हो गई। अर्ज़ किया या अल्लाह अब मैं तेरी मख़्लूक़ को खाना खिलाना चाहता हूँ। फ़रमाया खिलाओ। या अल्लाह ख़ुश्की की मख़्लूक़ को खिलाऊँ या तरी की मख़्लूक़ को? फ़रमाया कि समुंद्र क़रीब है लिहाज़ा पानी की मख़्लूक़ को पहले खिला दो। समुंद्र से एक मछली तैरती हुई आयी और उसने मुँह खोल दिया। अब जिन्नों ने उसके मुँह में देगें डालनी शुरू कर दी। उलटते गए जितनी देगें पकाई थीं वे सारी

की सारी देगें ख़त्म हो गयीं। इतनी बड़ी मछली। जी हाँ इतनी बड़ी-बड़ी मछलियाँ होती हैं। कुछ मछलियाँ तो इतनी बड़ी होती हैं कि जहाज़ उनको ज़मीन समझकर लंगर डाल लेते हैं।

ज़ाती वाक़िआ

आप देखिए बाहर मुल्कों में जाना वाला हवाई जहाज़ इतना बड़ा होता है कि उसके अंदर पाँच छः सौ मुसाफ़िर आ जाते हैं। फिर वह इतना ऊँचा उड़ रहा होता है कि जब हम उसे देखते हैं तो एक परिन्दे की तरह नज़र आता है। मैंने एक दफ़ा पैरिस से उड़ान भरी दूसरे किसी मुल्क में जाना था। रास्ते में समुंद्र पड़ता था तो जहाज़ में बैठे हुए मैंने समुंद्र में देखा तो मुझे मछलियाँ टोएटा करोला के बराबर नज़र आयीं। यानी मैं हवाई जहाज़ में बैठा हूँ और मुझे समुंद्र में तैरती हुई मछलियाँ टोयटा करोला कार के बराबर नज़र आती हैं तो मैं हैरान हुआ कि ज़मीन से अगर हवाई जहाज़ को देखता हूँ तो परिन्दे के बराबर नज़र आता है तो कितनी बड़ी मछलियाँ होंगी जो जहाज़ में बैठकर कार के बराबर नज़र आ रही हैं। वाक़ई व्हेल और शार्क मछली बहुत बड़ी होती है। अब सोचिए हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के जिन्नों ने उस मछली को सारी ख़ुराक डाल दी तो भी मछली का मुँह खुला रहा। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम हैरान हुए या अल्लाह वह सारा खाना ख़त्म हो गया। मछली से पूछा कि तूने इतना खाया। वह कहने लगी मैं उस पाक परवरदिगार की तारीफ़ करती हूँ ऐ अल्लाह के प्यारे नबी! जितना लुक़्मा आपने मुझे खिलाया अल्लाह

तआला इससे तीन गुना बड़ा लुक़्मा रोज़ान मुझे खिलाया करते हैं, अल्लाहु अकबर।

रिज़्क़ की तक़्सीम

अल्लाह तआला की इतनी बड़ी मख़्लूक़ है फिर भी वह हमें रिज़्क़ देना नहीं भूलता। इसलिए अगर खाने में कोई सड़ी हुई सब्ज़ी भी आ जाए तो यह ने देखें कि खाने को सब्ज़ी मिली बल्कि यह देखें कि अल्लाह तआला ने जब रिज़्क़ को तक़्सीम किया तो हमें याद रखा। यह उस मालिक की मेहरबानी है। तो रोज़े का असल मक़सद हमारे अंदर अल्लाह की नेमत का एहसास पैदा करना है ताकि परहेज़गारी पैदा हो।

﴿وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

❋ ❋ ❋

नमाज़ की अहमियत

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم الله الرحمن الرحيم

ان الصلوة تنهى عن الفحشاء والمنكر. سبحان ربك رب العزة

عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

बेशक नमाज़ बुराई से और फ़हश कामों से रोकती है।

क़ुरआन के दर्स के आदाब

हर महफ़िल और मजलिस के आदाब होते हैं। यह क़ुरआन के दर्स की महफ़िल है, इसके भी कुछ आदाब हैं। औरतें जितना ध्यान से बैठेंगी, जितना इत्मिनान और सुकून से बात को समझेंगी उतना ही फ़ायदा होगा। बारिश चाहे कितनी मूसलाधार क्यों न हो अगर कोई बर्तन उल्टा पड़ा हो तो उसके अंदर पानी की एक बूँद भी नहीं आती। यह बारिश की ग़लती नहीं है यह बर्तन की ग़लती होती है कि उसका रुख़ ठीक नहीं था। क़ुरआन पाक के दर्स की महफ़िल पर अल्लाह तआला की कितनी ही रहमतें बरसती हों जो औरत मुतवज्जेह नहीं होगी उसके दिल का बर्तन

उल्टा होगा वह रहमत से महरूम होगी। इस बात की ज़रूरत है कि हम अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जेह होकर बैठें। ज़िंदगी में ऐसे मौक़े बहुत कम आते हैं कि जब इंसान अल्लाह तआला की और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात को ध्यान और सच्ची तलब के साथ सुनता है ﴿من طلب فقد وجد.﴾ जिसको तलब होगी अल्लाह तआला उसकी उम्मीदें पूरी फ़रमा देंगे।

महफ़िल के आदाब

अगर छोटे बच्चे (रोने वाले) हों तो औरतें उन्हें पहले ही ज़रा पीछे लेकर बैठें ताकि दूसरी औरतों को ख़लल न हो। दो तीन औरतों की एक जमाअत ऐसी बन जाए जो आने वाली औरतों को बिठाए। बीच में शोर-गुल का होना, बातचीत का होना, महफ़िल के असरात को कम करता है। लिहाज़ा आप सब की सब औरतें सहूलत और तसल्ली के साथ बैठ जाएं बल्कि यूँ समझें कि यह एक घंटा ध्यान के साथ अल्लाह तआला की बात सुननी है। इंशाअल्लाह दिल में यह नीयत लेकर बैठेंगी तो जैसी नीयत होती है वैसी ही मुराद वाला मामला होगा।

मर्ज़ी की ज़िंदगी

इंसान इस दुनिया में न अपनी मर्ज़ी से आया है न इस दुनिया से वापस अपनी मर्ज़ी से दुनिया से जाता है। उसे कोई हक़ नहीं पहुँचता कि बीच के वक़्त में अपनी मर्ज़ी की ज़िंदगी गुज़ारे बल्कि जिस ख़ालिक़ व मालिक ने उसे भेजा है और जिसके हुक्म से यह

वापस जाएगा अगर उसके हुक्मों के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेगा तो फ़लाह पाएगा। ज़िंदगी का मक़सद अल्लाह तआला की बंदगी और ज़िंदगी का मक़सद अल्लाह तआला की याद है।

अल्लाह का क़ुर्ब कैसे हासिल होगा

अल्लाह तआला ने जिस तरह मर्दों के लिए अपने क़ुर्ब और माअरिफ़त के दरवाज़े खोल दिए हैं इसी तरह औरतों के लिए भी अपने क़ुर्ब के दरवाज़े खोल दिए हैं। जो औरत चाहे कि मुझे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की माअरिफ़त नसीब हो जाए तो वह शरिअत व सुन्नत के तरीक़ों पर अमल करने लग जाए। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसको माअरिफ़त का नूर अता कर देंगे।

ज़रूरी रास्ता

अल्लाह तआला की ऐसी नेक बंदियाँ इस दुनिया में गुज़रीं हैं कि जिन्होंने नेकी, इबादत और परहेज़गारी को अपनाया तो अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया में ऊँचा मुक़ाम अता फ़रमाया। अल्लाह के क़रीब होने का रास्ता सिर्फ़ मर्दों के लिए तय करना ज़रूरी नहीं है बल्कि औरतों के लिए भी तय करना ज़रूरी है।

दुनिया व आख़िरत की ज़िंदगी

अल्लाह तआला ने मर्दों के लिए भी अहकाम बतला दिए, औरतों के लिए भी अहकाम बतला दिए। हम सब के लिए ज़रूरी है कि अल्लाह तआला की इबादत करते हुए ज़िंदगी गुज़ारें। यह

दुनिया बहरहाल ख़त्म होने वाली है। एक बुज़ुर्ग ने कितनी अच्छी बात कही कि ऐ दोस्त जितना तूने दुनिया में रहना है उतना दुनिया के लिए कोशिश कर ले और जितना आख़िरत में रहना है तो उतना आख़िरत के लिए कोशिश कर ले। यह सच्ची बात है कि दुनिया में इंसान ने सौ या पचास साल ज़िंदा रहना होगा मगर आख़िरत में हज़ारों, लाखों, करोड़ों, अरबों और खरबों बल्कि बेशुमार साल रहना होगा।

आख़िरत की ज़िंदगी कितनी है

उलमा ने किताबों में लिखा है कि अगर आसमान व ज़मीन के बीच जितनी भी ख़ाली जगह है उसको राई के दानों से भर दिया जाए और एक परिन्दा हज़ार साल के बाद एक दाना खाए, फिर एक हज़ार साल बाद दूसरा दाना खाए, फिर हज़ार साल बाद तीसरा दाना खाए तो एक वक़्त आएगा कि ज़मीन और आसमान के बीच जितने भी राई के दाने हैं ये सब ख़त्म हो जाएंगे मगर आख़िरत की ज़िंदगी कभी ख़त्म नहीं होगी।

दुनिया आख़िरत के सामने डेढ़ दो मिनट है

मुफ़स्सिरीन ने लिखा कि आख़िरत का एक दिन पचास हज़ार साल के बराबर होगा। दुनिया के सौ साल का हिसाब लगाएं तो आख़िरत के डेढ़, दो मिनट के बराबर बनते हैं। कितनी अजीब बात है कि इंसान डेढ़ दो मिनट के मज़ों के लिए आख़िरत का अज़ाब अपने ज़िम्मे ले लेता है।

मुत्तक़ी का ठिकाना जन्नत है

फ़रमाया ﴿واما من خاف مقام ربه﴾ और जो अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा ﴿ونهى النفس عن الهوى﴾ और उसने अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात में पड़ने से बचा लिया ﴿فان الجنة هى الماوى﴾ बस बेशक उसका ठिकाना जन्नत होगा।

इंसान चंद दिन का मेहमान है

इंसान दुनिया में कुछ दिन का मेहमान है। यह दुनिया एक सराए की तरह है। एक बच्चा पैदा होता है कुछ अर्से के बाद लड़कपन के दौर में गुज़रता है फिर जवानी के दौर से गुज़रता है फिर बुढ़ापे के दौर में से गुज़रता है यहाँ तक कि मौत आ जाती है।

अल्लाह का इंकार करने वाले हैं मगर मौत का इंकार करने वाला कोई नहीं।

इस दुनिया में इस्लाम का इंकार करने वाले तो मिल जाएंगे, अल्लाह के मुन्किर तो मिल जाएंगे लेकिन इस दुनिया में मौत का इंकार करने वाला कोई नहीं मिल सकता। मौत एक ऐसी अटल हक़ीक़त है जिसने आख़िर एक दिन आना ही है। इंसान दुनिया में चाहे जितना ज़िंदा रहे आख़िरकार उसने मरना है।

अजीब वाक़िआ

एक बादशाह ने बड़ी चाहत से एक महल बनवाया। तामीरी

काम के लिए अपने ख़ज़ाने के दरवाज़े खोल दिए। जो चीज़ उसे महसूस हुई कि अच्छी नहीं बनी तो उसे दोबारा अच्छा बनवाया। हत्ताकि बादशाह की नज़र में वह महल इतना ख़ूबसूरत था कि उसमें कोई भी कमी न बची थी। बादशाह ने अपनी रिआया में ऐलान आम करवा दिया कि जो कोई इस महल में कमी निकालेगा मैं उसका ईनाम दूँगा। लोग आते, महल को देखते, उन्हें महल में कोई नज़र नहीं आता। लिहाज़ा कई दिन इस तरह गुज़र गए। लोग आकर देखते रहे और वापस जाते रहे। किसी की हिम्मत न थी कि बादशाह के बनाए हुए महल में कोई नुक़्स निकालता। एक अल्लाह वाले का इधर से गुज़र हुआ। उन्होंने बादशाह की यह बात सुनी। वह भी महल देखने के लिए आए। महल देखने के बाद बादशाह के सामने पेश हुए और कहने लगे बादशाह सलामत इसमें महल में दो ऐब हैं। बादशाह हैरान हुआ कि सारी दुनिया को मेरे महल ऐब नज़र न आया। इस बूढ़े को मेरे महल में कौन से ऐब नज़र आ गए। इसलिए उसने पूछा बताओ इसमें कौन-कौन से ऐब हैं? वह अल्लाह वाले कहने लगे बादशाह सलामत इसमें दो ऐब हैं, एक यह कि यह महल हमेशा नहीं रहेगा, एक न एक दिन ख़त्म हो जाएगा दूसरा ऐब यह है कि तू भी इसमें हमेशा नहीं रहेगा। एक न एक दिन तुझे भी महल तुझे भी महल छोड़ना पड़ेगा।

दुनिया परदेस है

दुनिया में इंसान जितनी लम्बी उम्मीदें बाँध ले, अच्छे कारोबार कर ले, जितने ख़ूबसूरत मकान बना ले आख़िर उसे दुनिया को

छोड़ कर जाना होगा। इसलिए हदीस पाक में फ़रमाया गया है ﴿كن في الدنيا كانك غريب﴾ तू दुनिया में इस तरह रह जैसे कोई परदेसी होता है या रास्ता चलने वाला मुसाफ़िर होता है।

तीन पेट

हम आलमे अरवाह से चले कुछ अर्से के लिए माँ के पेट में ठहरे फिर वहाँ से ज़मीन व आसमान के पेट में आए। कुछ अर्सा यहाँ ज़िंदगी गुज़ारेंग आख़िरकार हमें ज़मीन के पेट में जाना पड़ेगा। जब वहाँ से खड़े होंगे तो रोज़े महशर होगा। अल्लाह तआला इंसान के आमाल के बारे में सवाल फ़रमाएंगे। फिर अगर यह इंसान नेक होगा तो जन्नत में जाएगा और अगर बुरा होगा तो जहन्नम में जाएगा।

क़ब्र का पेपर

दुनिया की ज़िंदगी एक इम्तिहान की तैयारी की तरह है। इस इम्तिहान के दो पर्चे होंगे और उन पर्चों के बारे में जनाब रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमें बतला भी दिया कि पहला पर्चा क़ब्र में होगा जिसमें हम से तीन सवाल पूछे जाएंगे और तीनों का जवाब देना ज़रूरी होगा। पहला सवाल पूछा जाएगा ﴿من ربك﴾ तेरा रब कौन है? फिर दूसरा सवाल पूछा जाएगा ﴿من نبيك﴾ तेरा नबी कौन है? और तीसरा सवाल पूछा जाएगा ﴿ما دينك﴾ तेरा दीन क्या है? ये तीन सवाल पूछे जाएंगे और तीनों का जवाब देना भी ज़रूरी होगा अगर पूरे-पूरे नंबर न हुए तो यह इंसान फ़ेल हो जाएगा। तीनों का जवाब देना ज़रूरी होगा।

अल्लाह का शुक्र है यह 'ए' पेपर आउट हो चुका है। आज हमें इस पेपर के बारे में मालूम है कि क़ब्र के अंदर हम से तीन सवाल कौन से पूछे जाएंगे। नबी अकरम सल्लाल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हम पर एहसान फ़रमाया कि वक़्त से पहले सवालात बता दिए ताकि हम तैयार कर सकें।

क़ब्र के पेपर का जवाब कौन दे सकेगा

क़ब्र में सवालों का जवाब वह आदमी दे सकेगा जो अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलने वाला होगा, जो आदमी हराम माल खाने वाला, रिश्वत लेने वाला और अल्लाह के हुक्मों को छोड़कर धन दौलत कमाने वाला होगा। उन इंसानों की ज़बानों से यह नहीं निकलेगा कि मेरा रब अल्लाह है। इसी तरह जो इंसान रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत पर अमल करने वाला होगा कि मेरे पैग़म्बर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं अगर सुन्नत के ख़िलाफ़ करता होगा, रस्म व रिवाज की पाबंदी करता होगा तो यह इंसान भी सही जवाब नहीं दे सकेगा। इसी तरह जो इंसान इस्लामी तालीमात के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेगा वह तो जवाब दे सकेगा कि मेरा दीन इस्लाम है वरना इस आदमी की ज़बान बंद रहेगी। इसलिए क़ब्र में आदमी का पहला पेपर होगा। अगर उसमें कामयाब हो गया तो क़ब्र जन्नत को बाग़ बना दिया जाएगा और अगर इसमें नाकाम हो गया तो क़ब्र को जहन्नम का गढ़ा बना दिया जाएगा।

इंसान का 'बी' पेपर

फिर यह इंसान क़यामत के दिन अल्लाह तआला के हुज़ूर

खड़ा किया जाएगा वहाँ इसका 'बी' पेपर लिया जाएगा। इस पेपर में चार सवाल पूछे जाएंगे। सबसे पहले पूछा जाएगा, ऐ मेरे बंदे तूने अपनी ज़िंदगी कैसे गुज़ारी? फिर दूसरी बात पूछी जाएगी तूने अपनी जवानी कैसे गुज़ारी? तीसरी बात पूछी जाएगी तूने अपना माल कहाँ से कमाया और कहाँ ख़र्च किया? और चौथी बात पूछी जाएगी कि तूने अपने इल्म पर कितना अमल किया? बनी आदम के पाँव अपनी जगह से हिल नहीं सकते जब तक इन सवालों का जवाब नहीं देगा। अल्लाह के प्यारे महबूब ने दोनों पर्चों के सवालात बता दिए। अब इनकी तैयारी करने की ज़रूरत है कि हम इन सवालों का जवाब अपने दिल में बिठा लें ताकि हम दुनिया और आख़िरत में कामयाब हो जाएं।

मौत का वक़्त कब आएगा

ये बातें अच्छी तरह हमें समझ आ सकती हैं मगर मन की आँख खोलने की ज़रूरत है अगर कोई इंसान आँखों पर पट्टी बाँध ले और ख़्वाहिशें उसको अँधा बना दें तो वह जो मर्ज़ी दुनिया में करता रहे। हम आजकल करते रहते हैं। नेकी का वक़्त आए तो आमतौर पर लड़कियाँ कहती हैं कि अच्छा मैं नमाज़े पढ़ लूँगी, कौन सी मैं दादी अम्मा बन गयी हूँ। लड़की यह बात इसलिए करती है कि अभी मुझे दुनिया में बहुत रहना है। अभी तो मेरी उम्र पंद्रह सोलह साल है। अभी तो मेरी शादी होगी, बच्चे होंगे फिर मेरे बाल सफ़ेद होंगे, मैं बूढ़ी हूँगी फिर कहीं जाकर मेरी मौत का वक़्त आएगा। यह सब का सब धोका है।

हक़ीक़त तो यह कि बूढ़ों को भी मौत आती है जवानों को भी

मौत आती है, बड़ों को भी मौत आती है बाज़ दफ़ा मासूम बच्चे अपनी माँओं से जुदा हो जाते हैं। मौत का वक़्त तय है। कौन जानता है कि मौत का वक़्त कब आएगा? इसलिए हर वक़्त मौत के लिए तैयार रहना चाहिए।

सबसे ज़्यादा अक़्लमंद कौन है

कुछ नौजवान सहाबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के नबी इंसानों में सबसे ज़्यादा अक़्लमंद और समझदार कौन है? आपने इर्शाद फ़रमाया जो मौत को कसरत से याद करने वाला हो और जो मौत के लिए कसरत से तैयारी करने वाला हो। ये हैं अक़्लमंद लोग। यही दुनिया की शराफ़त और आख़िरत की बुज़ुर्गी ले गए। इंसान कल की उम्मीद में न रहे बल्कि आज ही जो कुछ करना है कर ले। अपने मौला को राज़ी कर ले ताकि आमालनामे से गुनाह धुल जाएं और अल्लाह तआला के पसंदीदा बंदों में वह शामिल हो जाए।

ज़िंदगी की मोहलत का अजीब वाक़िआ

ज़िंदगी की मोहलत समझने के लिए एक वाक़िआ किताबों में लिखा है कि एक बादशाह का बाग़ था। उस बाग़ के कई हिस्से थे। हर हर हिस्से में फल लगे हुए थे। बादशाह ने एक आदमी को भेजा कि उस बाग़ से फल तोड़कर लाओ, कोशिश करना तुम अच्छे फल तोड़कर लाना। मैं तुम से ख़ुश -हूँगा और तुम्हें ईनाम दूँगा लेकिन मेरी एक शर्त है कि जिस हिस्से से एक दफ़ा गुज़र

जाओगे उसमें तुम्हें दोबारा आने की इजाज़त नहीं होगी। लिहाज़ा उसने टोकरी हाथ में ली और बाग़ में दाख़िल हुआ। उसने देखा कि पहले हिस्से में बहुत अच्छे फल लगे हुए थे। दिल में ख़्याल आया कि यहाँ से फल तोड़ लूँ। फिर सोचा कि अगले हिस्से में से जाकर जाकर देख लेता हूँ। जब अगले हिस्से में दाख़िल हुआ तो वहाँ बहुत अच्छे फल लगे हुए हैं। दिल में ख़्याल आया कि यहाँ से फ़ल तोड़ लूँ। फिर सोचा अगले हिस्से से तोड़ लूँगा हो सकता है कि वहाँ और बेहतर हों। जब वहाँ जाकर देखा तो वहाँ और अच्छे फल लगे हुए थे। दिल में ख़्याल आया कि यहाँ से फल तोड़ लूँ। फिर सोचने लगा नहीं मैं अपनी टोकरी में सबसे बेहतरीन फल लेकर जाऊँगा। इसलिए अगले हिस्से में देखता हूँ। जब अगले हिस्से में गया देखता है कि वहाँ पर बहुत ही बेहतरीन फल लगे हुए हैं। दिल में ख़्याल आया कि यहाँ से फल तोड़ लूँ। फिर सोचा अगले हिस्से से तोड़ लूँगा। जब आख़िरी हिस्से में दाख़िल हुआ तो देखा कि उस हिस्से के पेड़ों पर फल नहीं लगे हुए थे। वहाँ रोने खड़ा हो गया कि काश मुझे पता होता तो मैं पहले हिस्सों में से फल तोड़ लेता। आज मेरी टोकरी ख़ाली तो न होती। ऐ इंसान तेरी ज़िंदगी की मिसाल ऐसी ही है। तेरा हर दिन तेरे लिए बाग़ का हिस्सा है तो इसमें से फलों को तोड़ सकता है यानी नेकी कमा सकता है लेकिन इंसान यही सोचता है कि मैं आज नहीं कल नेकी कर लूँगा और यही आजकल करते-करते आख़िरकार मौत आ जाती है। फिर उसे इतनी मोहलत नहीं मिलती कि अपने घर वालों को वसीयत करे,

﴿فاذا جاء اجلهم فلا يستاخرون ساعة ولا يستقدمون﴾

मौत जब आ जाती है तो न एक लम्हा आगे होती है न एक लम्हा पीछे होती है। बस इंसान को अपने वक़्त पर जाना होता हैं अगर पानी का प्याला हाथ में है तो इतना भी मौक़ा नहीं मिलता कि पानी का प्याला पी ले यहाँ तक कि आधा साँस अंदर होता है और आधा बाहर और वहीं उसकी रूह को क़ब्ज़ कर लिया जाता है।

ज़िंदगी किस लिए मिली हुई है

मौत के लिए हर वक़्त तैयारी की ज़रूरत है। ज़िंदगी हमें अच्छे मकान बनाने के लिए नहीं मिली हुई है, दुनिया की ज़िंदगी हमें माल व पैसे में एक दूसरे से मुक़ाबला करने के लिए नहीं मिली बल्कि अल्लाह तआला की बंदगी करने के लिए मिली है।

ज़कात अदा न करने की सज़ा

हाँ अगर अल्लाह तआला किसी को माल व दौलत भी अता फ़रमा दे तो वह उसको अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करे, नेकी कमाने में ख़र्च करे। आमतौर पर देखा गया है कि औरतों को जितना शौक़ ज़ेवर बनाने का होता है उतना ज़कात देने का शौक़ नहीं होता। ग़फ़लत कर लेती है। क़यामत के दिन इन ज़ेवरों को उसके लिए जहन्नम की आग के अंदर गर्म किया जाएगा। सलाख़ें बना दी जाएंगी,

﴿فتكوى بها جباههم وجنوبهم وظهورهم﴾

उनके माथों को दाग़ा जाएगा, फिर उनके पहलुओं को दाग़ा जाएगा फिर उनकी पीठ को दाग़ा जाएगा और कहा जाएगा ﴿هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ﴾ यह वह है जो तुमने अपने लिए जमा किया, ﴿فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ.﴾ बस तुम इस जमा करने का मज़ा चखो।

ज़ेवरात साँप या बिच्छू

ऐ मेरी बहन यह तेरे ज़ेवरात कल तेरे लिए साँप और बिच्छू बन जाएंगे अगर ज़कात अदा न की तो यह हार तेरे लिए गले का साँप बन जाएगा। यह अंगूठी तेरे लिए बिच्छू बन जाएगी। ये सारे के सारे ज़ेवरात साँप बिच्छू हैं अगर तू ज़कात अदा नहीं करती तो फिर सोच ले कि यह साँप और बिच्छू तुझ से क़ियामत के दिन लिपट जाएंगे। फिर क्या मामला होगा?

ज़कात अदा करने का आसान तरीक़ा

अगर औरत अपने रोज़ाना के ख़र्चों में से थोड़ी बचत करती रहे तो साल के बाद ज़कात देनी आसान होती है। नेक औरतों का यही मामूल होता है।

औरत के नमाज़ न पढ़ने के बहाने

औरतें मामूली वजूहात की बिना पर फ़र्ज़ नमाज़ें छोड़ देती हैं। कभी यह बहाना कि मेहमान आए हुए थे, मैं तो चाय में लगी हुई थी, मैं कैसे नमाज़ पढ़ती। कभी यह बहाना होता है कि बच्चे ने पेशाब कर दिया, मैं कैसे नमाज़ पढ़ती? कभी यह बहाना होता है

कि मेरी तबियत ठीक नहीं, मैं कैसे नमाज़ पढ़ती? कभी यह बहाना कि मेरे सर में दर्द है बाद में नमाज़ पढ़ लूँगी। लिहाज़ा देखा गया है कि इन बहानों की वजह से नमाज़ पढ़ने में सुस्ती करती हैं।

नमाज़ छोड़ने की सज़ा

हदीस पाक का ख़ुलासा है कि जिसने जानबूझ कर नमाज़ को क़ज़ा कर दिया अल्लाह तआला एक फ़रिश्ते को हुक्म देते हैं जो इसका नाम जहन्नम की आग से बने हुए दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर लिख देता है। अब इस इंसान को आग के बने हुए इस दरवाज़े में से गुज़रना पड़ेगा। इस क़ुसूर की वजह से कि उसने जानबूझ कर नमाज़ क़ज़ा की। इसलिए हदीस पाक में आता है कि जिसकी एक नमाज़ क़ज़ा हो गई तो ऐसे ही है कि उसके घर को आग लग गई, उसके बीवी-बच्चे सब उसमें जलकर मर गए। जितना नुक़सान इस आदमी का होता है इससे ज़्यादा नुक़सान उस आदमी का होता है जो जानबूझ कर नमाज़ छोड़ देता है।

नमाज़ और कुफ़्र

हदीस पाक में फ़रमाया गया ﴿من ترك الصلوة متعمدا فقد كفر.﴾ जिसने जानबूझ कर नमाज़ को छोड़ा गोया वह तो काफ़िर ही होगा। नमाज़ छोड़ने वाला अमल गोया काफ़िरों वाला अमल है हालाँकि वह आदमी मुसलमान ही रहता है लेकिन सोचने की बात यह है कि नमाज़ का छोड़ना अल्लाह तआला को किस क़दर नापसंद है।

अजीब बात

शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह० अपनी किताब में लिखते हैं कि एक बे-नमाज़ी कि नहूसत चालीस घरों तक जाती है। अब सोचिए जिस घर में बे-नमाज़ी रहता होगा उस घर में नहूसत का क्या आलम होगा और अगर किसी घर की सारी की सारी औरतें बेनमाज़ी होंगी तो फिर उसकी घर की नहूसत का क्या आलम होगा? इसीलिए आज औरतें रोती फिरती हैं कि घर में बरकत नहीं है। पता नहीं क्या बात है हर बच्चा अफ़लातून बना हुआ है, कोई बच्चा बात सुनने को राज़ी नहीं, कभी यह कहती हैं औलाद नाफ़रमान बन गई है, कभी कहती हैं मियाँ-बीवी के बीच बनती नहीं है। ये सब नमाज़ न पढ़ने की नहूसत है। इर्शादे बारी तआला है,

﴿ان الصلوة تنهى عن الفحشاء والمنكر.﴾

नमाज़ बुराई से और फ़हश कामों से रोकती है

इंसान को चाहिए कि अल्लाह तआला के इस क़िले में आ जाए।

हर सूरत में नमाज़ पढ़नी चाहिए

हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० लिखते हैं कि बे-नमाज़ी आदमी को मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में भी दफ़न नहीं करना चाहिए। अब सोचिए कि ये बुज़ुर्ग तो बे-नमाज़ियों के बारे में यह कहें और हमारे कान पर जूँ भी न रेंगे। मेरी बहन हर नमाज़ फ़र्ज़ है। हाँ औरतों को अल्लाह तआला ने जिन दिनों में नमाज़ें माफ़ कर दीं तो वह तो माफ़ हो गयीं। इसके अलावा तो

नमाज़े पढ़नी हैं। बच्चों वाली है तो भी पढ़नी है बग़ैर बच्चों के हैं तो फिर भी पढ़नी है, चाहे तालीम वाली हैं फिर भी पढ़नी है।

अगर घर में ज़्यादा लोग रहते हैं और उनके खाने का बंदोबस्त करना है, फिर भी नमाज़ पढ़नी चाहिए। अगर घर में मेहमान आ गए, फिर भी पढ़नी चाहिए। अल्लाह का शुक्र है कि जो नमाज़ पढ़ने वाली औरतें हैं वे इन सारी मशग़ूलियतों के बावजूद नमाज़ के लिए वक़्त निकाल लेती हैं। वे बच्चों को पालती हैं, घर के काम करती हैं, वे सफ़ाई भी करती हैं, घर को भी संवारती हैं लेकिन नमाज़ के वक़्त पर नमाज़ पढ़ती हैं। वे समझती हैं कि यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का फ़ैसला है जो अदा करना है अगर इसकी अहमियत दिल में बैठ जाए तो यह नहीं हो सकता कि नमाज़ क़ज़ा हो जाए। भला हम खाना क़ज़ा नहीं करते तो नमाज़ क़ज़ा क्यों करते हैं? यह तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का हुक्म है जो उसने हम पर लाज़िम फ़रमा दिया। इसलिए हर इंसान को नमाज़ पढ़नी ज़रूरी है।

नमाज़ किस पर फ़र्ज़ है

जिसको अल्लाह तआला ने अक़्ल वाला बना दिया, बालिग़ बना दिया, जिसने कलिमा पढ़ लिया, नमाज़ उसके ऊपर फ़र्ज़ हो गई। कोई उससे बरी नहीं कि कोई यह कहे कि मैं अब नमाज़ नहीं पढूँगा।

क़ज़ा नमाज़ कैसे पढ़ें

अपनी पहली ज़िंदगी की जितनी नमाज़ें क़ज़ा हो गयीं उन

नमाज़ों को आज पढ़ लेना ज़रूरी है। कितनी औरतों को देखा गया है कि जब उनको बात की समझ आती है तो वे क़ज़ा नमाज़ें पढ़ने लग जाती हैं बल्कि हर नमाज़ के साथ एक क़ज़ा नमाज़ पढ़ लेती हैं। फ़ज्र से पहले फ़ज्र की पढ़ ली, ज़ोहर से पहले ज़ोहर की पढ़ ली यानी एक तो ज़ोहर की नमाज़ अदा की और उससे पहले जो ज़ोहर क़ज़ा हुई थी वह क़ज़ा कर ली। लिहाज़ा ऐसा सुनने में आया है कि कुछ औरतों ने अपनी ज़िंदगी की बारह-बारह साल की नमाज़ें क़ज़ा पढ़ीं। अल्लाह का शुक्र है उनके सर का बोझ दूर हो गया।

ज़्यादा क़ज़ा नमाज़ें कैसे पढ़ें

ऐ बहन तू अपनी ज़िंदगी की नमाज़ों का हिसाब कर ले। अगर तू अपने बालिग़ होने से नमाज़ अदा नहीं करती थी, सुस्ती कर जाती थी तो बैठकर अंदाज़ा लगा कि तेरी कितनी नमाज़ें छूट गयी होंगी जो तुझे पढ़नी ज़रूरी थीं और तूने उन नमाज़ों में सुस्ती कर ली। तू उन्हें क़ज़ा कर ले यह दो महीने की बनें या दो साल की बनें जितनी मर्ज़ी बनें। आज वक़्त है आसानी से अदा कर लेगी।

बेनमाज़ी की सज़ा

हदीस पाक में आता है कि अगर कोई बे-नमाज़ी औरत क़ब्र में जाएगी तो अल्लाह तआला उस पर एक साँप को मुसल्लत फ़रमा देंगे। वह गंजा होगा और बहुत डरावना होगा। वह साँप फूँक मारेगा तो उस बे-नमाज़ी औरत की हड्डियाँ टूटेंगी। ज़हर की वजह से उसको तकलीफ़ होगी जैसे हमें कोई भिड़ काटे तो कितनी

तकलीफ़ होती है। वह साँप काटेगा तो कितनी तकलीफ़ होगी।

अब घबरा के यह कहते हैं कि मर जाएंगे
मर के भी जान न पाया तो किधर जाएंगे

सोचने की बात

सोचने की बात है कि क़ब्र में औरत अकेली होगी, कोई रिश्तेदार नहीं होगा, कोई उसकी फ़रियाद सुनने वाला नहीं होगा। यह पुकारेगी मगर इसकी फ़रियाद को पहुँचने वाला कोई नहीं होगा। वहाँ अकेली होगी। यह बेचारी किसी छिपकली को देख ले तो ख़ौफ़ तारी हो जाता है। जब इसकी क़ब्र में साँप होगा, जिसके बारे में फ़रमाया कि वह डरावना भी होगा तो वहाँ इसका क्या हाल बनेगा?

क़ब्र का ख़ौफ़नाक फ़रिश्ता

हदीसों में फ़रमाया गया कि एक फ़रिश्ते को अल्लाह तआला बे-नमाज़ी पर मुसल्लत फ़रमा देंगे जिसके लम्बे-लम्बे नाखुन होंगे, लम्बे-लम्बे दाँत होंगे, उसकी आँखों से इतनी वहशत टपकती होगी कि हैबत तारी हो जाएगी। उसके नाक से धुआँ निकलता होगा और उसका जिस्म स्याह होगा और डरावनी शक्ल होगी, लम्ब-लम्बे बाल होंगे। वह फ़रिश्ता अपने हाथ उसकी तरफ़ बढ़ाएगा और वह चीख़ें मारेगी। दुनिया में यह औरत ख़ामोशी से डरने वाली थी, यह तो ज़रा तेज़ हवा चलने से डर जाती थी, यह तो दरवाज़े के हिलने से डर जाती थी, यह तो इतनी डरपोक थी। वहाँ क़ब्र के अंदर इतना डरावना फ़रिश्ता होगा कि पित्ते पानी हो जाएंगे। सोचें

तो सही वहाँ इसका क्या आलम होगा? डर रही होगी, ख़ौफ़ आ रहा होगा। रोने के बावजूद वहाँ फ़रियाद सुनने वाला कोई न होगा। वह फ़रिश्ता ऐसा होगा कि उसके दिल में रहम नाम की कोई चीज़ नहीं होगी। उसके हाथ में गुर्ज़ (बड़ा हथौड़ा) होगा। वह इसे आँखें दिखाएगा, वह अपने दाँत निकालेगा और अपने नाख़ून उसकी तरफ़ बढ़ाएगा यहाँ तक कि उसको गुर्ज़ मारेगा। हदीस पाक का मफ़हूम है यह औरत सत्तर हाथ ज़मीन के अदंर धंस जाएगी फिर निकलेगी, वह फिर गुर्ज़ मारेगा। यही मामला होता रहेगा।

अगर फ़ज्र की नमाज़ क़ज़ा कर दी तो फ़रिश्ता फ़ज्र से लेकर ज़ोहर तक उसको मारेगा, फिर ज़ोहर की क़ज़ा की तो ज़ोहर से ले कर अस्र तक उसको मारता रहेगा। यह मेरे प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमाना है। जो औरत यह समझे कि मालूम नहीं आगे क्या होगा? होगा या नहीं होगा, वह अपनी आँखों से देख लेगी कि उसकी बात झूठी है और मेरे आक़ा का फ़रमान सच्चा है। क़ब्र में ऐसे ही होगा। हाँ आज अगर किसी के दिल में शक है जो नहीं मानता वह अपनी मौत के बाद अपनी आँखों से देख लेगा। अल्लाह तआला ने अपने प्यारे पैग़म्बर की ज़बान मुबारक से यह बातें बतला दीं हैं। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें इसका यक़ीन नसीब फ़रमा दे।

नमाज़ के फ़ायदे

नमाज़ में ख़ूबियाँ कितनी हैं। एक तो इंसान दिन में पाँच बार

मुँह हाथ धो लेता है, जिससे चेहरे पर ताज़गी आती है, चेहरे पर रौनक़ आती है, इंसान का चेहरा पुर नूर लगता है। और दूसरे जब इंसान नमाज़ पढ़ता है तो रूहानी सुकून मिलता है। दिल में तसल्ली होती है। कितने ग़म कितनी परेशानियाँ इंसान भूल जाता है। नमाज़ में कितने ही फ़ायदे हैं, अलहम्दुलिल्लाह।

नमाज़ का अज्र व सवाब

बाज़ हदीसों में आता है कि जिसने निहायत सुकून के साथ नमाज़ पढ़ी, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त जन्नत में एक फ़रिश्ते को हुक्म फ़रमाते हैं। वह फ़रिश्ता जन्नत के दरिया अंदर ग़ोता लगाकर बाहर निकलता है। उसके परों से जितने क़तरे पानी के टपकते हैं उतनी नेकियाँ उसके आमाल नामे में लिखी जाती हैं।

ख़ुशी की बात

कितनी ख़ुशी की बात है पाबंदी के साथ नमाज़ पढ़ने वालियाँ हैं अल्लाह तआला उनके कामों में बरकत दे और जो कोई इसमें सुस्ती करने वाली हैं उनको चाहिए कि वह दिल में पक्का और ठोस इरादा कर लें कि इंशाअल्लाह आंइदा हम अल्लाह के दर पर झुकना शुरू कर देंगी।

वह एक सज्दा जिसे तो गिरां समझता है
हज़ार सज्दों से देता है आदमी को निजात

जिसने अल्लाह तआला के दर पर झुकना सीख लिया उसे दर दर के धक्के खाने नहीं पड़ते। मेरी बहन अल्लाह से डर जा और

अपने माल पर खुश न हो, अपनी हैसियत पर नाज़ न करे। दुनिया में कितनी बार देखा गया है कि घर बैठे बिठाए औरतें ज़लील हो जाती हैं। सरों से दुपट्टे उतर जाते हैं। जब अल्लाह तआला नाराज़ होते हैं तो दुनिया में दिन बदलते देर नहीं लगा करती। जो तख़्त पर बैठे होते हैं ये तख़्ते पर खड़े होते हैं। अल्लाह तआला किसी से नाराज़ न हो। इसलिए फ़रमाया गया :

﴿ومن يهن الله فما له من مكرم﴾

जिसे अल्लाह तआला ज़लील करने पर आता है उसे इज़्ज़त देने वाला कोई नहीं होता।

दिन बदलते देर नहीं लगती

मेरी बहन! तू नमाज़ पढ़कर अपने अल्लाह को राज़ी कर ले वरना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अगर नाराज़ हो गए तो तेरे दिन बदलते हुए तुझे पता ही नहीं चलना। तेरे दिल का सुकून छिन जाएगा, तेरी ज़िंदगी की ख़ुशियाँ छिन जाएंगी तू फिर रोती फिरेगी। तेरे बाल बिखरे होंगे, चेहरे पर उदासी छाई होगी। आज अल्लाह तआला ने तुझे ख़ुशियाँ दीं हैं, तुझे सेहत दी है, आज अल्लाह तआला ने तुझे इज़्ज़त दी है तू आज अल्लाह तआला की फ़रमांबरदारी कर ले। अपने अल्लाह को राज़ी कर ले। इसीलिए किसी ने कहा है :

यह ख़िज़ां की फ़सल क्या है फ़कत उनकी चश्म पोशी
वह अगर निगाह कर दें तो अभी बहार आए

जब अल्लाह तआला की रहमत की नज़र होती है, ज़िंदगियों

में बहार आ जाती है और जब वह रहमत की नज़र हटा लेता है ज़िंदगी में ख़िज़ां आ जाती है।

सच्ची तौबा और क़ीमती वक़्त

यह मजलिसें इसलिए की जाती हैं कि हम इन मजलिसों में अल्लाह और उसके रसूल की बातों को सुनकर अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कर लें। अब नई इस्लामी, ईमानी और क़ुरआनी ज़िंदगी गुज़ारने का दिल में इरादा कर लें और हम इसे सोचें की हम आज नेकी करेंगे कल अल्लाह तआला के यहाँ इज़्ज़त होगी। जो वक़्त गुज़र चुका है तो गुज़र चुका है। जो बाक़ी है उसको क़ीमती बनाने की ज़रूरत है। ऐसा न हो कि बाक़ी वक़्त भी हमारी ग़फ़लत में गुज़र जाए। ऐसा न हो कि बाक़ी वक़्त भी हमारा बुरे अमलों में गुज़र जाए क्योंकि शैतान और नफ़्स हर वक़्त इंसान को तबाह करने की कोशिश में रहते है और इंसान धोके में आ कर लम्बी-लम्बी उम्मीदें बाँधता है।

नमाज़ और ख़तरनाक बातें

आज अगर मियाँ अपनी बीवी से यह कहे कि उठ नमाज़ पढ़ ले तो वह आगे से कहती है तेरे लिए पढ़नी है? जा तू पढ़ ले, मैं पढ़ लूँगी। कभी यह जवाब देगी तूने मेरी क़ब्र में जाना है? कभी यह कहेगी, जहन्नम में जलना है तो मैंने जलना है तुझे क्या। मेरी बहन ऐसी ख़तरनाक बातें इस वक़्त ज़ुबान से निकालती हैं। जब अल्लाह तआला ने अपना दरवाज़ा तेरे लिए बंद किया हुआ होता है, वह नहीं चाहता, वह तुम्हें तौफ़ीक़ नहीं देता कि उसके दर पर

जाकर झुक सके क्योंकि उसका दरवाज़ा बंद हो चुका होता है। तू समझ ले कि उस शहंशाह अहकमुल हाकिमीन का दरवाज़ा तेरे लिए बंद हो गया तो फिर तेरा क्या बनेगा? तेरी झोली ख़ाली होगी तो कब्र में ख़ाली पहुँचेगी।

वक़्त की अहमियत

फिर तू क़ब्र में अफ़सोस करेगी, काश दुनिया में मुझे कुछ फ़ुर्सत मिल जाती मगर अब पछताए क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत। अब पछताने से क्या फ़ायदा ज़िंदगी का वक़्त तो गुज़र चुका है। इसलिए वक़्त की अहमियत और उसकी क़दर व क़ीमत का एहसास करना ज़रूरी है। जो दिन गुज़र रहा है वह हमारी ज़िंदगी में लौटकर वापस नहीं आएगा। इसलिए नेक औरतें हर दिन अल्लाह तआला की बंदगी करती हैं। हर रात में अल्लाह तआला के सामने सर सज्दे में रखती हैं और अल्लाह को मनाती हैं। अल्लाह तआला इसके बदले उनके दिलों को मुनव्वर फ़रमाते हैं।

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की इबादत का वाक़िआ

सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में आता है सर्दियों के लम्बी रात है। इशा की नमाज़ पढ़कर दो रकअत नफ़्ल की नीयत बाँध ली। क़ुरआन पाक में ऐसा मज़ा आया, दिल में ऐसी चाश्नी थी, क़ुरआन पाक पढ़ने में मज़ा आ रहा था। पढ़ती रहीं, पढ़ती रहीं, रुकू सज्दे में मज़ा आ रहा था, जी चाहता ही नहीं था

कि सज्दे से सर उठाएं। लिहाज़ा जब दो रक्अतें पूरी हो गयीं और दुआ के लिए हाथ उठाए तो देखा सहरी का वक़्त होने वाला है। रोने बैठ गयीं। कहने लगीं या अल्लाह! तेरी रातें कितनी छोटी हो गयीं, मैंने दो रक्अत पढ़ी और तेरी रात पूरी हो गई तो उन औरतों को रातों के छोटा होने का शिकवा हुआ करता था।

हमारी हालत क्या है

आज हमारी क्या हालत है कि सारी सारी रात सोकर गुज़ार देते हैं। रात के बारह बजे, एक बजे तक टीवी वीसीआर जो कि हक़ीक़त में टीबी है, प्रोग्राम हमें जगाते हैं। नींद का वक़्त ऐसा कि उसमें फ़ज्र की नमाज़ भी चली गई। ऐ बहन! काश तेरी फज्र की नमाज़ अदा होती। तेरी बाक़ी नमाज़ें पूरी होतीं ताकि तू अल्लाह के पसंदीदा बंदों में लिखी जाती।

ज़िंदगी का मुहासबा कर लें

आज वक़्त है कि हम अपनी ज़िंदगी का मुहासबा (हिसाब) कर लें ताकि हमारे दिलों में भी नेकी का शौक़ पैदा हो जाए। बुज़ुर्गों की औरतों में नेकी का ऐसा शौक़ होता था कि एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करती थीं।

राबिया बसरिया रह० की दुआएं

राबिया बसरिया अल्लाह तआला की नेक बंदी के बारे में आता है कि एक रात तहज्जुद के लिए उठती हैं। जब तहज्जुद

पढ़ ली तो दुआ के लिए हाथ उठाए और दुआ मांगने लगीं ऐ अल्लाह दिन छुप चुका, रात आ चुकी, आसमान पर सितारे चमक रहे हैं, ऐ अल्लाह दुनिया के बादशाहों ने सब दरवाज़े बंद कर लिए हैं तेरा दरवाज़ा अब भी खुला है। ऐ अल्लाह मैं तुझसे तेरी रहमत का सवाल करती हूँ। वह कितनी नेक हस्तियाँ थीं जो रात के आख़िरी पहर में उठकर रब्बे तआला से रहम का तलब करती थीं।

माँ की दुआएं लगती हैं

जब माँ की दुआएं बच्चों को लगती थीं तो फिर कोई बच्चा मुहम्मद बिन क़ासिम रह० बनता था, कोई बच्चा सुलतान महमूद ग़ज़नवी बनता था, कोई बच्चा बायज़ीद बुस्तामी रह० बनता था, कोई बच्चा जुनैद बग़दादी रह० बनता था, कोई बहाउद्दीन नक़्शबंदी बुख़ारी रह० बनता था। यह माँ की दुआएं होती थीं जो बच्चों को नसीब लगाती थीं।

माँ की दुआएं

आज माँ अपने मुक़ाम से वाक़िफ़ नहीं है। लड़की माँ तो बन जाती है लेकिन उसे माँ के मुक़ाम का पता नहीं होता। इसीलिए मासूम बच्चा जो अभी दूध पीने वाला है और बिल्कुल ना समझ है, मासूम है, वह उसके पीछे रोता है। यह किसी काम में मसरूफ़ हो तो यह उसे कोसना शुरू कर देती है। कभी किसी छोटे बच्चे ने कोई ग़लती कर दी तो बदज़बानी पर उतर आती है। छोटे बच्चे को कोसती है तू मर जाता तो अच्छा था। ऐ बहन! तू माँ है तेरी ज़बान से जो बोल निकल रहे हैं वे सीधे आसमानों तक

जाते हैं और अर्श के दरवाज़े खुल जाते हैं। माँ की दुआएं और बद्दुआएं अल्लाह तआला की हुज़ूर में पेश होती हैं। तेरी बद्दुआ क़ुबूल हो गई तो फिर तेरा क्या बनेगा।

माँ की बद्दुआ का वाक़िआ

बुज़ुर्गों ने लिखा है कि एक मासूम बच्चा रो रहा था। माँ ने इसी तरह गुस्से में कह दिया कि तू मर जाए। अल्लाह तआला को जलाल आ गया। अल्लाह तआला ने उसकी बद्दुआ को क़ुबूल कर लिया मगर बच्चे को उस वक़्त मौत न दी। जब वह बच्चा बड़ा हुआ तो ठीक जवानी के आलम में वह माँ-बाप की आँख की ठंडक बना, माँ-बाप के दिल का सुकून बना, जो भी उस बच्चे की जवानी को देखता वही हैरान रह जाता। ठीक शबाब में जब वह फल पक चुका तो अल्लाह तआला ने उसको तोड़ लिया।

मीठा रसीला साफ़ सुनहरी जवान सा
इक सेब धम से फ़र्श पर टपक पड़ा

उसको मौत दे दी। अब वही माँ रो रही है कि मेरा जवान बेटा बिछड़ गया। मगर उसे बताया गया कि तेरी यह वही दुआ है जो तूने बच्चे के लिए मांगी थी मगर हम ने फल को उस वक़्त न काटा, उसे पकने दिया। जब यह फल पक चुका तो अब उसे काटा है कि तेरे दिल को अच्छी तरह दुख हो। अब क्यों रोती है यह तेरे हाथों की कमाई है। कितनी बार ऐसा होता है कि माँ बद्दुआएं कर देती हैं। जब अपने सामने देखती हैं कि बद्दुआएं क़ुबूल हुईं तो फिर रोती फिरती हैं कि मेरे बेटे का एक्सीडेंट हो गया, मेरे बेटे की ज़िंदगी ख़राब हो गई। ऐ बहन! यह सब कुछ

इसलिए होता है कि तू अपने मुकाम को नहीं जानती। तुझे मालूम होना चाहिए कि अगर तू नमाज़ पढ़ती और अपने बच्चे के लिए दुआ करती तो अल्लाह तआला तेरे बच्चे को बख़्त लगा देता।

माँ की दुआओं का वाकिआ

एक बुज़ुर्ग के बारे में आता है कि उनकी वालिदा फ़ौत हो गईं। चुनाँचे अल्लाह तआला ने उन बुज़ुर्ग को इल्हाम फ़रमाया, ऐ मेरे प्यारे अब ज़रा संभलकर रहना। जिसकी दुआएं तेरी हिफ़ाज़त करती थीं वह हस्ती दुनिया से उठ गई है। अल्लाहु अकबर वाक़ई बात ऐसी ही है कि माँ-बाप की दुआएं बच्चों के गिर्द पहरा देती हैं।

रूहानी कुव्वत

पहले वक़्तों की माँएं अपने बच्चों को बा-वुज़ू दूध पिलाया करती थीं। आज की माँए वीसीआर पर थिरकते जिस्मों को देख रही होती हैं, गाने सुन रही होती हैं और बच्चों को दूध पिला रही होती हैं। ऐ मेरी बहन! तेरा यह बेटा बड़े होकर जुनैद बग़दादी कैसे बनेगा, बायज़ीद बुस्तामी कैसे बनेगा। तूने तो बचपन में ही इसकी रूहानीयत का गला घोंट दिया।

क़ाबिले रश्क वाकिआ

मैंने अख़बार सरगोधा की एक औरत का इंटरव्यू पढ़ा। उसके दो बेटे थे। दोनों अपने अपने वक़्त में फ़ौज के जरनैल बने। उनसे किसी ने इंटरव्यू लिया कि तू खुशनसीब माँ है कि जिसके दो बेटे और दोनों ऐसे शेर के अपने वक़्त के जरनैल बने, तेरी

कौन सी ख़ास बात है? तूने उनकी तर्बियत कैसे की? उसने कहा था कि मैं आम सादा सी मुसलमान औरत हूँ मगर किसी बुज़ुर्ग से मैंने सुना था कि जो औरत वुज़ू से अपने बच्चों को दूध पिलाएगी अल्लाह बच्चे को नसीब लगाएंगे। मैंने दोनों बच्चों को अल्लाह का शुक्र है वुज़ू के साथ दूध पिलाया है। हो सकता है कि अल्लाह तआला ने मेरे इस अमल के सदक़े दुनिया में इज़्ज़त व वक़ार आत फ़रमा दिया। इसलिए जो औरतें ऐसी नेकी को अपना लेती हैं अल्लाह तआला उनके बच्चों को नेकबख़्त बना देता है। अपनी ज़िंदगी में ख़ुशियाँ देखने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमा देता है। जो अल्लाह तआला की नाफ़रमानी करती है तो अल्लाह तआला उन्हें आँखों से दिखाता है कि देख मैंने तुम्हें औलाद मर्ज़ी की न दी और अगर दे भी दी तो उसे नाफ़रमान बना दिया।

बेनमाज़ी और औलाद नाफ़रमान

अल्लाह तआला ने तेरे बच्चों को तेरा नाफ़रमान बना दिया। अब तू क्यों रोती फिरती है कि बच्ची मेरी बात नहीं मानती, बच्चा मेरी बात नहीं सुनता। रोने की कोई ज़रूरत नहीं है। यह तेरे हाथ की कमाई है। यह वह खेती है कि जिसको तूने अपने हाथों से बोया है। अब तुझे इसका फल काटना होगा। जो आदमी कीकर बोएगा तो उस पर कभी सेब का फल नहीं लग सकता। जो कीकर बोएगा उसको काँटें मिलेंगे जो सेब लगाएगा उसे सेब मिलेंगे।

लम्बी उम्मीदें

आज हम लम्बी उम्मीदें बाँधते फिरते हैं। यही सोचते रहते हैं

कि अच्छा नेकी कर लेंगे अभी कौन सी मेरी उम्र है। ऐ बहन! क्या तू नहीं देखती कि जवान उम्र की बच्चियाँ दुनिया से रुख़्सत होती हैं। उनको कंधों पर उठाकर क़ब्रिस्तान में छोड़कर आते हैं। कितनी दफ़ा ऐसा होता है कि शादी हुई पहले बच्चे की पैदाइश के वक़्त शहीद होकर आख़िरत में पहुँच जाती हैं तो मौत का क्या पता कब आ जाए।

अजीब बात

इमाम ग़ज़ाली रह० ने एक अजीब बात लिखी। फ़रमाते हैं कि ऐ दोस्त! तुझे क्या मालूम बाज़ार में वह कपड़ा पहुँच चुका है जो तेरा कफ़न बनना है। तो हम मौत को भूल चुके है लेकिन मौत हमें नहीं भूली।

इंसान को हर रोज़ क़ब्र सत्तर दफ़ा पुकारती है

हदीस पाक में आता है कि हर इंसान की क़ब्र दिन में सत्तर बार याद करती है और कहती है ऐ इंसान! ﴿انـــا بيت الوحدة﴾ मैं तन्हाई का घर हूँ, ﴿انا بيت الظلمات﴾ मैं अंधेरों का घर हूँ, ﴿ان بيت الحي والعقارب﴾ ऐ इंसान! मैं कीड़े मकौड़ों का घर हूँ। ऐ इंसान! मेरे अंदर तैयारी करके आना लेकिन यह इंसान दुनिया ज़िंदगी में मस्त होता है। दुनिया के माल का नशा उसकी आँखों पर पट्टी बाँध चुका होता है। आज कितनी औरतों को देखा कि उनको रोज़ाना के मसाइल का भी पता नहीं होता। इन मसाइल को न वह ख़ुद पढ़ती हैं और न उनको किसी से पूछने के मौक़े मिलते हैं। सुनिए औरत कैसे-कैसे नेकी कमा सकती है।

औरत मर्द के बराबर कैसे सवाब हासिल कर सकती है

एक बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में एक सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा आयीं और अर्ज़ करने लगीं कि मैं औरतों की तरफ़ से नुमाइंदा बनकर आयी हूँ और आपसे सवाल पूछना चाहती हूँ। अल्लाह के नबी ने फ़रमाया कि सवाल पूछो। वह कहने लगी सवाल यह पूछना चाहती हूँ कि मर्द लोग नेकी में हम से बहुत ज़्यादा आगे निकल गए। फ़रमाया वह कैसे?

कहने लगी मर्द लोग मस्जिद में जाकर जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ते हैं। उन्हें अज्र व सवाब ज़्यादा मिलता है, जिहाद में आपके साथ जाते हैं, ये क़ब्रिस्तान में जाकर जनाज़े की नमाज़ पढ़ते हैं, मुर्दे के कफ़न-दफ़न में शरीक होते हैं। हम घरों मे बैठी रहती हैं तो हमें यह नेकियाँ नहीं मिलतीं। मर्द हम से आगे निकल गए। अल्लाह के नबी ने फ़रमाया, पूछने वाली ने बहुत अच्छा सवाल पूछा फिर आपने फ़रमाया जो औरत घर के अंदर नमाज़ पढ़ लेती है उसको उसके मर्द के सवाब के बराबर हिस्सा मिलता है जो वह मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ लेता है। अल्लाह तआला फ़र्ज़ नमाज़ मस्जिद में जाकर अदा करने वाले के बराबर सवाब अता कर देते हैं। और फिर यह भी फ़रमाया कि जो औरत बच्चे की ख़ातिर रात को जागती है (बच्चा दूध के लिए जागा या बच्चा बच्चो अपनी हाजत के लिए जागा और माँ को जागना पड़ा) फ़रमाया कि जो औरत अपने बच्चे की वजह से रात को जागती है तो अल्लाह तआला उसको उस मुजाहिद के बराबर अज्र अता फ़रमाते हैं जो सरहद पर खड़ा होकर सारी रात पहरा देता है।

सोचने की बात

सोचने की बात है कि अल्लाह तआला ने औरतों के लिए इस अज्र व सवाब को कितना आसान कर दिया। वह घर में नमाज़ पढ़ लेंगी तो मस्जिद में जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने का सवाब मिलेगा। उसे घर में बच्चों की अच्छी तर्बियत करने और जागने की वजह से सरहद पर पहरा देने वाले मुजहिद के बराबर उसको अज्र मिलेगा। अल्लाह तआला ने औरतें के लिए कितनी आसानी फ़रमा दी।

आसान नेकियाँ

बाज़ रिवायतों में आता है कि किसी औरत ने अपने माँ-बाप के घर में या अपने ख़ाविंद के घर में कोई एक चीज़ जो बे-तर्तीब पड़ी हुई हो उसको उठाकर तर्तीब से रख दिया तो अल्लाह तआला एक नेकी अता फ़रमा देते हैं। अब सोचिए किसी को इस मस्अले का इल्म हो तो औरत दिन में कितनी नेकियाँ कमा सकती है। रसोई की कितनी चीज़ें तर्तीब से रख सकती है। घर के कितने कपड़े तर्तीब से रख सकती है। घर की कितनी चीज़ें तर्तीब से रख सकती है। मगर बेचारियों को इस मस्अले का इल्म नहीं होता। अल्लाह तआला हमें नेकी का शौक़ अता फ़रमाए, आमीन।

﴿وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين﴾

❋ ❋ ❋

मक़सद–ए–हयात

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم

وما خلقت الجن والانس الا ليعبدون. سبحان ربك رب العزة

عما يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

अनमोल हक़ीक़त

इंसान जिस रास्ते पर चलता है उसे उस रास्ते के ज़र्रात भी नज़र आते हैं और जिस रास्ते पर नहीं चलता उस रास्ते पहाड़ भी नज़र नहीं आते।

दुनिया इम्तिहान की जगह

यह दुनिया इम्तिहान की जगह है तमाशा की जगह नहीं, सैर की जगह नहीं, आराम की जगह नहीं बल्कि इम्तिहान की जगह है। अफ़सोस कि हमने इसको चारागाह बना लिया है।

मक़सदे ज़िंदगी

ज़िंदगी का मक़सद अल्लाह की बंदगी और मक़सदे हयात

अल्लाह की याद है। बंदा वह होता है जिसमें बंदगी हो वरना तो सरासर गंदा होता है, झूठ, फ़रेब का पुलिंदा होता है।

क़ुरआन आबे हयात है

यह क़ुरान सच्चाइयों का मजमूआ, हक़ीक़तों की ख़ज़ाना, यह इंसानियत के लिए ज़िंदगी जीने का दस्तूर है बल्कि इंसानियत के लिए आबे-हयात है।

क़ुरआन पाक के नाज़िल होने का मक़सद

क़ुरआन अल्लाह तआला ने इसलिए उतारा है कि हम उसको पढ़ें और उसके मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी बसर करें। जो पढ़ता जाएगा और उसके मुताबिक़ अमल करता जाएगा, दुनिया और आख़िरत में दर्जा पाता जाएगा। यह क़ुरआन तुझे इज़्ज़त व वक़ार देगा, तेरे ज़ाहिर और बातिन को निखार देगा। यह किताब इंसान की हस्ती को चमकाने के लिए आई है, आईने की तरह बनाने के लिए आई है। यह इंसान के दिल के मैल को धोने के लिए आई है। इंसान इसके मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी बसर करे तो अल्लाह तआला की मदद शामिले हाल होती है और जब अल्लाह तआला की मदद उतरती है तो इंसान की कश्ती किनारे लग जाया करती है।

﴿كم من فئة قليلة غلبت فئة كثيرة باذن الله. والله مع الصابرين﴾

कितनी बार ऐसा हुआ कि एक थोड़ी जमाअत बड़ी जमाअत पर ग़ालिब आ गई यानी कितनी बार ऐसा हुआ कि अल्लाह तआला ने चिड़ियों से बाज़ मरवा दिए। ﴿والله مع الصابرين﴾

अल्लाह तो सब्र व ज़ब्त वालों के साथ है।

बे उसूली की ज़िंदगी

इंसान को अपनी ज़िंदगी कुछ उसूलों और क़ायदों के मुताबिक़ गुज़ारनी होती है। बे-उसूली ज़िंदगी पर अल्लाह तआला की मदद कभी नहीं उतरती। बे-उसूली की ज़िंदगी इंसानों की नहीं हैवानों की हुआ करती है। ढोर डंगरों की ज़िंदगी बे-उसूली की ज़िंदगी होती है।

मर्ज़ी की ज़िंदगी

इंसान सारी मख़्लूक़ से अशरफ़ है। उसकी ज़िंदगी का एक निज़ाम है न वह अपनी मर्ज़ी से दुनिया में आया है न वह अपनी मर्ज़ी से दुनिया से जाता है। उसे कोई हक़ नहीं पहुँचता कि वह बीच के वक़्फ़े में अपनी ज़िंदगी बसर करे।

फ़लाह की ज़िंदगी

जिस मालिक व ख़ालिक़ ने उसे भेजा जिसके हुक्म से वह दुनिया में आया है और जिसके हुक्म से वह दुनिया से वापस जाएगा अगर उसके हुक्मों के मुताबिक़ गुज़ारेगा तो फ़लाह पाएगा।

मक़सदे ज़िंदगी

इंसान की ज़रूरत और चीज़ है इंसान का मक़सद और चीज़ है। खाना पीना और दूसरी चीज़ें इंसान की ज़रूरत की हैं। मक़सदे ज़िंदगी तो अल्लाह की बंदगी है।

ज़िंदगी आमद बराए बंदगी
ज़िंदगी बे बंदगी शर्मिन्दगी

इंसानी ज़िंदगी का एक वर्क़

हर गुज़रने वाला दिन इंसान की ज़िंदगी का एक वर्क़ है। हम उस पर अच्छाई लिखते हैं या बुराई लिखते हैं, यह हमारा अपना काम है। यह बात पक्की और सच्ची है कि जो दिन इंसान की ज़िंदगी में गुज़र गया वह कभी लौटकर वापस नहीं आ सकता जो गुज़र चुका वह हाथों से निकल चुका है।

तीन दिन

एक बुज़ुर्ग फ़रमाया करते थे कि दिन तीन तरह के होते हैं। एक वह दिन जो गुज़र चुका, वह हाथों से निकल गया, एक वह दिन जो आगे आएगा यानी कल पता नहीं वह आए या उससे पहले मामला कुछ और बन जाएगा। एक आज का दिन है यह हमारे हाथों में है। इसलिए फ़रमाते थे कि ऐ इंसान! न गुज़िश्ता कल पर भरोसा कर और न आइंदा कल की उम्मीद रखना। तेरे हाथों में आज का दिन है तू चाहे तो इसी दिन में अल्लाह को राज़ी कर ले।

राबिया बसरिया रह० की बात

राबिया बसरिया रह० अल्लाह की नेक बंदी फ़रमाया करती थीं ऐ इंसान! अल्लाह तआला की नेमतें खाते-खाते तेरे दाँत घिस गए, उसकी तारीफ़ करते-करते तेरी ज़ुबान नहीं घिसी।

अजीब बात

हज़रत मौलाना अहमद अली लाहौरी रह० अपने दर्स में एक अजीब बात फ़रमाते थे कि मैं एक दफ़ा बाज़ार में गया। एक मज्ज़ूब अल्लाह वाले से मेरी मुलाक़ात हुई। मैं क़रीब हुआ, सलाम किया। उन्होंने मुझसे पूछा अहमद अली इंसान कहाँ बसते हैं? मैंने बाज़ार में खड़े लोगों की तरफ़ इशारा किया और कहा हज़रत ये सब इंसान ही तो हैं। मेरी बात सुनकर उन्होंने लोगों पर एक अजीब सी निगाह डाली और कहा अच्छा ये सब इंसान हैं। उनकी तवज्जेह का असर मुझ पर ऐसा हुआ कि मैंने देखा तो मुझे बाज़ार में कुत्ते, बिल्ली, ख़िन्ज़ीर चलते हुए नज़र आए। जब मेरी कैफ़ियत ख़त्म हुई तो मैंने देखा कि वह बुज़ुर्ग जा चुके थे। यह वाक़िआ बयान करने के बाद हज़रत फ़रमाते थे कि मालिक तो सब का एक है मालिक का कोई एक हज़ारों में न मिलेगा, लाखों में तू देख, कोई क़िस्मत वाला होता है, कोई नसीब वाला होता है जो सर के बालों से लेकर पाँव के नाख़ुनों तक अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया करता है।

﴿من كان لله كان الله له﴾

जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का हो जाता है फिर अल्लाह उसके हो जाया करते हैं।

अल्लाह तआला की सत्तारी

यह तो अल्लाह तआला की रहमत और उसकी मेहरबानी है कि हम अपनी मर्ज़ी की ज़िंदगी गुज़ारते हैं फिर भी दुनिया हमारी

तारीफ़ करती है। किताब 'अकमाले ऐशम' में एक अजीब बात लिखी है कि ऐ दोस्त जिसने तेरी तारीफ़ की उसने हक़ीक़त में तेरे परवरदिगार की सत्तारी की तारीफ़ की। मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने तेरे गुनाहों को ढांपा हुआ है। तेरे गुनाह लोगों की निगाह से ओझल हैं। इसलिए लोग तेरी तारीफ़ें करते हैं। जो तेरी तारीफ़ करता है हक़ीक़त में वह तेरे परवरदिगार की सत्तारी की तारीफ़ कर रहा है जिसने तुझे छुपाया हुआ है।

ऐ दोस्त! अगर अल्लाह तआला मख़्लूक़ की ज़बान से तेरी ऐसी तारीफ़ें करवाए जिसका तो हक़दार नहीं है तो तुझे चाहिए कि अपनी ज़बान से अल्लाह तआला की ऐसी तारीफ़ कर जिसका वह मुस्तहिक़ है।

अल्लाह की नाराज़गी की निशानी

अल्लाह तआला जब इंसान की तरफ़ मुतवज्जेह होते हैं यानी उसकी रहमत मुतवज्जेह होती है तो इसकी पहली निशानी यह है कि इंसान को अपने ऐब नज़र आते हैं।

जब अल्लाह नाराज़ होते हैं तो इसकी पहली निशानी यह है कि अपने ऐब नज़र से पोशीदा हो जाते हैं। इसलिए इंसान अपने ऊपर नज़र डाले, अपनी कोताहियाँ सामने हों

जिस दौर पे नाज़ां थी दुनिया हम अब वह ज़माना भूल गए
ग़ैरों की कहानी याद रही हम अपना फ़साना भूल गए

मुँह देख लिया आइने में पर दाग़ न देखे सीने में
जी ऐसा लगाया जीने में मरने को मुसलमां भूल गए

तकबीर तो अब भी होती है मस्जिद की फ़िज़ा में ऐ नूर
जिस ज़र्ब से दिल हिल जाते हैं वह ज़र्ब लगाना भूल गए

'ला इलाहा' की ज़र्बें लगाने वाले नौजवान

कहाँ गए वह नौजवान जो रात के आख़िरी पहर में उठकर 'ला इलाहा इलल्लाह' की ज़र्बें लगाया करते थे। उनके सीनों में दिल काँपते थे।

तेरी निगाह से दिल सीनों में काँपते थे
खोया गया है तेरा जज़्ब क़लन्दराना

अगर इंसान अपने आप को बनाए तो यह इतना ऊपर उठता है अल्लाह की क़सम यह सुरैय्या को भी पीछे छोड़ देता है।

कीमिया का नुस्ख़ा

यह क़ुरआन इसलिए भेजा गया है कि इंसान अपनी ज़िंदगी में उसे लागू कर ले फिर दुनिया में राज करे।

उतर कर हिरा से सूए क़ौम आया
और इक नुस्ख़ा कीमिया साथ लाया

वह बिजली का कड़का था या सूत हादी
अरब की ज़मीन जिसने सारी हिलाद दी

अरब को हिलाकर रख दिया था, क्यों? क़ुरआन ज़िंदगियों में लागू हो गया था। यह हक़ीक़तों का ख़ज़ाना, यह सदाक़तों का मजमूआ जिसे आज हमने अपने घर के ताक़ में रखा हुआ है, सहाबा की ज़िंदगियों में लागू था।

नुस्ख़ा-ए-शिफ़ा

एक इंसान दिल का मरीज़ हो और दुनिया के सबसे बड़े डाक्टर से नुस्ख़ा लिखवाने के बाद अपनी जेब में डाल ले। फिर कुछ अर्से के बाद कहे डाक्टर साहब मुझे फ़ायदा नहीं हुआ। डाक्टर साहब पूछें कि तुमने नुस्ख़ा इस्तेमाल किया था? यह जवाब में कहे डाक्टर साहब मैंने जेब में डाला हुआ है तो वह क्या कहेगा? वह कहेगा ऐ अक़्ल के अंधे यह नुस्ख़े जेब में डालने से शिफ़ा नहीं होनी थी, इसको खाने पीने से शिफ़ा होगी। यह क़ुरआन शिफ़ा का नुस्ख़ा है, यह ज़ाहिरी बातिनी बीमारियों की शिफ़ा है मगर हम उसे अपने ताक़ के अंदर रख देते हैं फिर कहते हैं कि शिफ़ा नहीं होती। फिर कहते हैं कि परेशानी ख़त्म नहीं होती। पीर साहब क्या करें एक परेशानी ख़त्म नहीं होती दूसरी ऊपर से आ जाती है, क्या करें पीर साहब घर का हर आदमी अफ़लातून बना हुआ है। जिसको देखो उसका रुख़ जुदा है। यह क्यों होता है? जब ज़िंदगियों से अल्लाह तआला के अहकाम निकल जाते हैं। फिर इंसान की ज़िंदगी से बरकत उठा ली जाती है।

मक़सदे हयात अल्लाह की याद

इंसान अल्लाह तआला की याद को अपनी ज़िंदगी का मक़सद बना ले। हर लम्हा उसकी याद हो और एक लम्हा भी उससे ग़ाफ़िल न हो। जिसका खाइए उसी के गीत गाइए।

गेहूँ का दाना और मेहनत

एक गेहूँ का दाना बनने के लिए किस क़दर मेहनत होती है। ज़मीन उसको अपने पेट में रखती है, ग़िज़ा पहुँचाती है, बादल पानी देते हैं, सूरज अपनी रोशनी देता है, हवा लगती है। कितनी चीज़ें इस पर अमल करती हैं फिर वह जाकर गेहूँ का दाना बनता है। वह गेहूँ का दाना जब इंसान के मुँह में आता है। इंसान खाने के बाद शुक्र भी अदा नहीं करता।

दुंबा अपने मालिक को पहचानता है

आप देखिए एक जानवर अपने मालिक को पहचानता है। आपने देखा होगा कि 'दुंबा' मालिक उसके गले की रस्सी खोल देता है, फिर जिधर चलता है दुंबा मालिक के पीछे-पीछे जाता है। ऐ इंसान! एक जानवर अपने मालिक को पहचानता है तू इंसान होकर अपने मालिक को नहीं पहचानता।

इंसान और घोड़े का फ़र्क़

आप देखते हैं कि एक घोड़ा जो कि हैवान है अगर कोई आदमी उसको पालता है कि यह मेरे लिए जंग में काम आएगा तो वह घोड़ा अपने मालिक की लाज रखता है। अगर मालिक उसे तांगे में जोत दे वह बे ज़बान थका हुआ बीमार सारा दिन काम करता है। अगर दूसरे दिन उसका मालिक फिर जोत देता है तो वह घोड़ा दरख़्वास्त नहीं दे सकता कि-मुझे आज बीमारी की छुट्टी चाहिए। वह इंकार नहीं कर सकता। अल्लाह तआला ने

उसे इंसान का इतना पाबंद बना दिया कि अपनी ज़रूरत भी पेश नहीं कर सकता। प्यासा होगा मगर नहीं कह सकता कि मुझे पानी पिला दीजिए। देखें तो कितनी गर्मी है, कहीं मालिक ने जाकर उसको रोका करीब गंदी नाली थी। उसी नाली में से पानी पीना शुरू कर दिया। चलता जा रहा है। उसे चलते चलते हाजत हो गई। वह चल भी रहा है लीद भी कर रहा है, रुकना नसीब नहीं होता। जो उसकी ज़िंदगी की ज़रूरतें हैं उनके लिए छुट्टी नसीब नहीं होती। सारे दिन का थका रात को घर आया। मालिक ने पता किया आज तो चारा आधा मिला चलो आधा ही डाल दें। वह नहीं कह सकता कि ऐ मालिक! तूने सारा दिन काम लिया था, खुराक तो पूरी दे देते। मालिक जाकर सर्दी की लम्बी रात में नरम गद्दों पर सो जाएगा। घोड़े के लिए वही ठंडी हवा है न बिस्तर है, न बीवी न बच्चे। खड़ा है थक जाएगा तो बैठ जाएगा। उसकी भी तो जान है। अगर उसको ज़ख़्म आए तो मालिक इसको फिर जोत देता है, यह कह नहीं सकता कि मेरे ज़ख़्म तो आपने कोई मरहम नहीं लगाया। उस पर दोबारा ज़ीन रख देने से मेरे पुराने ज़ख़्म हरे हो रहे हैं। कुछ तो ख़्याल करें, नहीं कह सकता। तकलीफ़ की वजह से भाग नहीं सकता। मालिक उसको कोड़ा लगा रहा है। मालिक की सख़्ती बरदाश्त कर रहा है, अपनी तरफ़ से हिम्मत लगा रहा है कि मालिक की मर्ज़ी को पूरा कर दे। यह घोड़ा जिसको मालिक ने पाला और मालिक उसको लेकर दुश्मन के मुक़ाबाले में आ जाए। सामने दुश्मन की सफ़ें हैं, मालिक घोड़े पर सवार है। वह घोड़े को ऐड़ी का इशारा करता है। उस मालिक की ऐड़ी को घोड़ा पहचानता है कि इस मालिक ने

ऐड़ी क्यों लगाई? यह चाहता है कि मैं आगे क़दम बढ़ाऊँ। घोड़ा बढ़ता ही चला जाता है, दुश्मन की सफ़ों को चीरता है, सामने भाले होते हैं, सामने तीर होते हैं, तलवारें होती हैं, घोड़े के जिस्म पर ज़ख़्म पर ज़ख़्म लग रहे होते हैं लेकिन अपने मालिक की ऐड़ की लाज रख लेता है। घोड़ा जान पर खेल जाता है, अपने मालिक के हुक्म की फ़रमांबरदारी करता है। अगर एक जानवर इंसान का इतना फ़रमांबरदार है तो इंसान को अपने मालिक का कितना फ़रमांबरदार होना चाहिए। हम तो खाकर भी उसका शुक्र अदा नहीं करते। इंसान के जिस्म में तीन सौ साठ जोड़ हैं। रोज़ाना हर हर जोड़ ठीक रहा। शाम को सोते हुए कितने अल्लाह के बंदे शुक्र अदा करते हैं कि या अल्लाह मेरे सब जोड़ सलामत रहे। तेरा करम व एहसान है।

अजीब वाक़िआ

हमारे एक दोस्त एक अजीब वाक़िआ सुनाने लगे। एक साहब का एक्सीडेंट हुआ। उसकी आँख के ऊपर का पर्दा कट गया। कहने लगे एक दो घंटे गुज़रें तो आँख पर मिट्टी जम जाए। आम आदमी मसहूस नहीं कर सकता कि हवा में कितनी बारीक-बारीक ज़र्रे मिट्टी की शक्ल में होते हैं जो जमते रहते हैं। अक्सर आप देखेंगे कि अगर कोई चीज़ रखें, दूसरे दिन उस पर मिट्टी नज़र आएगी। हमारी आँख के ऊपर अल्लाह तआला ने पर्दा बना दिया होता है। यह बंद होता है और खुलता है, बंद होता है और खुलता है। इसके साथ साथ थोड़ा थोड़ा पानी अंदर से निकलता है तो

पानी के साथ जैसे किसी चीज़ को झाड़ू लगाते हैं, यह अल्लाह तआला ने झाड़ू का इंतिज़ाम किया हुआ है। यह बंद होता है, खुलता है, झाड़ू चल रहा होता है। जब उसकी आँख का गोश्त का पर्दा कट गया तो आँख हर वक़्त बिल्कुल नंगी रहने लगी। मुसीबत यह बनी कि वह हवा में मुअल्लक़ ज़र्रात की वजह से आँख पर मिट्टी की तह आ जाए तो थोड़ी देर के बाद धोना पड़े फिर मिट्टी जम जाए फिर धोना पड़े। दिन में कोई पचास दफ़ा धोना पड़े। एक दिन में पचास दफ़ा पानी डाला जाता। लोग अयादत करने आए तो कहने लगे कि आँख का छोटा सा पर्दा कभी सोचा भी नहीं था कि अल्लाह तआला की कितनी बड़ी नेमत है। इंसान के जिस्म का एक छोटा सा हिस्सा है उसको देखो अल्लाह तआला की कितनी बड़ी नेमत है।

हम में से कितने हैं जो रात को सोते वक़्त इस नेमत का शुक्र अदा करते हैं। मांगते तो हम सब हैं मगर उसके देने का शुक्र अदा करने वाले थोड़े हैं। इसकी बुनियादी वजह इंसान के दिल में ग़फ़लत होती है। जब ग़फ़लत हो इंसान का रवैय्या और होता है। जब दिल में ध्यान हो, माअरिफ़त हो तो फिर रवैय्या कुछ और होता है।

इबरत अंगेज़ वाक़िआ

हमारे एक दोस्त ने क़िस्सा सुनाया कि एक आदमी इंडिया से हिजरत करके पाकिस्तान आया। उसके कई रिश्तेदार थे मगर सब इधर-उधर बिखर गए। उसका मामू भी आया था। वह भी

परेशानी के आलम में कहीं गुम हो गया। एक दूसरे को मिल न सके। उस आदमी ने मेहनत की, अल्लाह तआला ने उसे ख़ूब माल पैसे वाला बना दिया। कई साल गुज़र गए उसने सोचा कि मैं अपनी कोठी बना लूँ। अपनी कोठी बनाने लग गया। इसी दौरान एक बूढ़ा आदमी उसके पास आया। कहने लगा बेटा मैं क़िस्मत का मारा हूँ। कोई मेरा रिश्तेदार अज़ीज़ नहीं है। तेरे यहाँ चौकीदारी करूंगा। तू मुझे कुछ खाने के लिए दे देना, ग़रीब परवरी भी होगी। उसने सोचा चलो ठीक है, दिन रात यहीं पड़ा रहेगा, मेरा फ़ायदा है। उसने कहा बूढ़े मियाँ आप इधर बैठ जाया करो। मैं आपको इतने पैसे दे दूँगा। वह बूढ़ा आदमी काम करने लग गया। अब वह बूढ़ा आदमी कभी सेहत कभी बीमारी, कभी थकावट, कभी कुछ, कभी कुछ। जब उसे काम में देर हो जाए तो नौजवान उस पर बरस जाए, कोसने लग जाए कि तू ऐसा है तो वैसा है। वह बूढ़ा बेचारा रो पड़े। यह आदमी फिर किसी ग़लती पर डाँट दे तो वह बूढ़ा आदमी फिर रो पड़े। एक दिन उस नौजवान ने इतनी गालियाँ दीं कि वह बूढ़ा आदमी कहने लगा बेटा रिज़्क़ देने वाला तो अल्लाह है, तेरा दिल अगर ख़ुश नहीं तो मैं कहीं और चला जाता हूँ। क़िस्मत ने मुझे ऐसा ही बना दिया, वरना पीछे से तो मैं अपने रिश्तेदारों के साथ आया था, मालूम नहीं वे कहाँ चले गए। जब उसने यह बात कही तो उस नौजवान ने पूछा बाबा आपके कोई रिश्तेदार थे? बूढ़े ने कहानी सुना दी। उस कहानी को सुनने के बाद इस नौजवान को पता चला कि यह वही मेरा वह गुमशुदा मामू है जिनकी याद में अम्मी तड़पती रही है। अब पाँव पकड़ लिए और कहने लगा की माफ़ कर देना मामू,

मुझे माफ़ कर देना। मुझसे गलती हुई, मुझ से कोताही हुई। यह सारी कोठी आपकी है जहाँ चाहें तशरीफ़ ले जाएं। उसने कहा ना, ना बेटा मुझे अपनी अवकात का पता चल गया। नौजवान को एक दूसरे जानकारी नहीं थी, बर्ताव कुछ और था जब एहसास हो गया, अब बर्ताव कुछ और है। क़दमों में पड़ा रहा जैसे पहले ठोकरें लगा रहा था अब उसके क़दमों में पड़ रहा है। यही इंसान का हाल है कि जब तक उसे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की माआरिफ़त नसीब नहीं होती जानवरों की सी ज़िन्दगी गुज़ारता है और जब किसी अल्लाह वाले का हाथ लग जाता है और दिल धुल जाता है फिर एहसास होता हे फिर आँख खुलती है कि अब तक कैसी ज़िन्दगी बसर करता रहा।

सफ़ेद बाल वाले की उम्र बारह साल

एक सफ़ेद बाल वाले बुज़ुर्ग से किसी ने पूछा बाबा जी आपकी उम्र कितनी होगी? कहा कोई दस बारह साल होगी। बड़ा हैरान हुआ और कहने लगा बाबा जी! आपके बाल तो सफ़ेद और आप कहते हैं कि बारह साल की उम्र है। फ़रमाया हाँ बेटे जब से मैंने सच्ची तौबा की है बारह साल गुज़रे हैं। यही मेरी ज़िंदगी है इससे पहले मेरी ज़िंदगी नहीं शर्मिंदगी थी।

शैख़ की सोहबत के फ़ायदे

नेकों की सोहबत इंसान के दिल को जगा देती है। इंसान को ज़िंदा बना देती है। जैसे पौधे को माली के हाथ लग जाएं तो ख़ूबसूरत बन जाता है। इसी तरह सालिक को किसी कामिल शैख़ के हाथ लग जाएं तो उसके अंदर निखार पैदा हो जाता है।

क़ारून के धंसने का वाक़िआ और तौबा मांगना

अल्लाह तआला को इंसान की तौबा बहुत महबूब है। हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर क़ारून ने एक औरत के ज़रिए से इलज़ाम लगवाया। जब हक़ीक़त खुली तो मूसा अलैहिस्सलाम को बड़ा दुख हुआ। अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जेह हुए, ऐ अल्लाह! इसने मेरे ऊपर ऐसा इलज़ाम लगाया। फ़रमाया, ऐ मेरे नबी तो जो कुछ हुक्म देगा ज़मीन उसको मानेगी। मूसा अलैहिस्सलाम ने कहा, ऐ क़ारून! धंस जा। क़ारून कुछ धंस गया। क़ारून को फिर कहा क़ारून फिर धंस गया। अब क़ारून रो रहा है। मूसा अलैहिस्सलाम मुझे माफ़ कर दीजिए मगर मूसा अलैहिस्सलाम जलाल में थे। तीसरी बार फिर फ़रमाया ऐ ज़मीन इसको निगल जा। ज़मीन उसको निगल गई। जब ज़मीन निगल चुकी तो अल्लाह तआला ने मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ़ 'वही' फ़रमाई, ऐ मेरे प्यारे नबी! आप जलाल में थे आपने तीन दफ़ा हुक्म दिया ज़मीन ने उसे निगल लिया लेकिन मैं अपनी इज़्ज़त की क़सम खाकर कहता हूँ कि अगर उस वक़्त क़ारून मेरे सामने माफ़ी मांग लेता और मैं मामला कर रहा होता तो यक़ीनन उसकी तौबा को क़ुबूल कर लेता। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को बंदे की तौबा बहुत महबूब है।

सच्ची तौबा

एक बुज़ुर्ग जा रहे थे। कुछ बच्चे आपस में बहस कर रहे थे।

जब क़रीब से गुज़रे तो वे बच्चे कहने लगे, बाबा जी! हम आपस में किसी मस्‌अले पर बहस कर रहे हैं, आप ज़रा फ़ैसला करें। उसने कहा बेटा क्या मस्‌अला है? बच्चे ने कहा कि हम आपस में बहस कर रहे हैं कि एक आदमी बड़ा नेक है, कभी गुनाह न किया हो, उसके दिल पर अल्लाह तआला की ख़ास नज़र रहती है या एक आदमी बड़ा गुनाहगार हो और सच्ची तौबा कर ले उसके दिल पर ख़ास नज़र रहती है? वह बुज़ुर्ग फ़रमाने लगे बेटा मैं आलिम तो हूँ नहीं फिर भी एक बात तज्रिबे में आई है कि मैं कपड़ा बुनता हूँ। खड्डी चलाता हूँ, धागे होते हैं। मेरे तज्रिबे में एक बात आई है कि जो धागा टूट जाता है उसे गिरह लगाता हूँ। इसके बाद उस पर ख़ास नज़र रखता हूँ कि वह दोबारा टूट न जाए। मुमकिन है जो बंदा शैतान के रास्ते के छोड़कर सच्ची तौबा कर ले अल्लाह तआला से अपनी गिरह बाँध ले मुमकिन है उसके दिल पर अल्लाह की ख़ास नज़र रहती हो कि यह बंदा दोबारा टूट न जाए।

अल्लाह वालों की सोहबत

ग़ाफ़िल ज़िंदगी का ईलाज

हम लोग बहुत कमज़ोरी और ग़फ़लत में पड़े हुए हैं। किताबों में लिखा है कि अगर कोई किसी की ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर ले तो वह ज़मीन नीचे सात तबक़ तक क़यामत के दिन उठाकर उस बंदे के सर पर रख दी जाएगी। अब बताइए कि जो बंदा एक बाल्टी मिट्टी नहीं उठा सकता वह दूसरे की कई-कई कनाल ज़मीन क़ब्ज़े में लिए बैठा होता है।

शैतान का धोका

कुछ लोग कहते हैं कि असल दिल तो साफ़ होना चाहिए ऊपर से क्या होता है? मेरे दोस्त यह शैतान का धोका है। दिल भी साफ़ होना चाहिए मगर इसके असरात ज़ाहिर पर भी होने चाहिएं। दोनों ज़रूरी हैं। कई दफ़ा ऐसा होता है कि इंसान अपने ज़ाहिर को सही रखता है तो अल्लाह तआला उसके बातिन को सही कर दिया करते हैं। अबू महज़ूरा एक सहाबी हैं। लड़कपन की उम्र में इस्लाम क़ुबूल नहीं किया। कुछ और बच्चों के साथ बैठे हँसी मज़ाक़ कर रहे हैं और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु जिस तरह अज़ान देते थे उसकी नक़ल उतार रहे हैं। इधर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम गुज़रे। आपने भी देख लिया, सुन लिया। फ़रमाया अबू महज़ूरा! बात सुनो। क़रीब आए, घबरा गए, पसीना-पसीना हो गए। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया डर नहीं, जैसे अज़ान दे रहा था वैसे ही अज़ान दे। इसलिए उसने वैसे ही अज़ान देना शुरू कर दी। नक़ल उतारना शुरू कर दी। पढ़ते पढ़ते पढ़ा ﴿اشهد ان محمد رسول الله﴾ "अश्हदु अन्ना मुहम्मदुर्रसूलल्लाह।" अज़ान के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जाओ। कहने लगे अब अबू महज़ूरा कहाँ जाएगा, जहाँ आप जाएंगे वहाँ अबू महज़ूरा जाएगा। नक़ल उतार रहे थे। मेरे आक़ा ने अज़ान सुन ली तो अल्लाह तआला ने नक़ल को असल बना दिया। इन्हीं अबू महज़ूरा को अल्लाह के महबूब ने हरम शरीफ़ की चाबियाँ देकर मुअज़्ज़िन बना दिया। 60 साल तक हरम शरीफ़ में अज़ान देते

रहे। अल्लाह तआला हमारी नक़ल को असल बना दे और हमारी सूरत को हक़ीक़त में बदल दे। बक़ौल एक शख़्स के—

तेरे महबूब की या रब शबाहत लेकर आया हूँ
हक़ीक़त इसको तू कर दे मैं सूरत लेकर आया हूँ

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

﴿العلماء ورثة الانبياء﴾
उलमा अंबिया के
वारिस हैं।

उलमा-ए-किराम और उनकी ज़िम्मेदारियाँ

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من الشيطن الرجيم

بسم الله الرحمن الرحيم

انما يخشى الله من عباده العلماء. سبحان ربك رب العزة عما

يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

खुश नसीब

यह फ़क़ीर की खुश नसीबी है कि उलमा और नेक लोगों के इस नुमाइंदा इज्तिमा में कुछ सीखने वाले की तरह कुछ अर्ज़ पेश करने का मौक़ा दिया गया है।

इल्म की फ़ज़ीलत

अल्लाह तआला के यहाँ इल्म की इतनी फ़ज़ीलत है कि हदीस में उलमा को अंबिया अलैहिमुस्सलाम का वारिस कहा गया है। ये नबियों की विरासत है। नसीबों वालों को हासिल होती है। इल्म एक रोशनी है। इस रोशनी के हासिल होने के बाद इंसान को

अल्लाह तआला की माअरिफ़त नसीब होती है।

﴿که بے علم نتوان خدارا شناخت﴾

बे इल्म आदमी, जाहिल आदमी अल्लाह तआला को नहीं पहचान सकता।

कहते हैं कि रास्ते से वाक़िफ़ हो तो इंसान लंगड़े गधे को भी मंज़िल पर पहुँचा लिया करता है। हज़रत हसन बसरी रह० का क़ौल है कि अगर उलमा किराम न होते तो आम लोग ढोर डंगरों की सी ज़िंदगी गुज़ारते। यह उनका उम्मत पर एहसान है कि उन्होंने इल्म को अपने सीनों में महफ़ूज़ रखा और एक सीने से दूसरे सीने तक उसका पहुँचाते रहे। इस ज़िम्मेदारी को निभाया और आज वह इल्म हम तक पहुँच चुका है।

इल्मी की इतनी अहमियत है कि हदीस पाक में आया फ़रमाया,

﴿اطلبوا العلم من المهد الى اللحد.﴾

तुम इल्म हासिल करो पालने से लेकर क़ब्र में जाने तक।

सारी ज़िंदगी इंसान अपने को तालिबे इल्म समझता रहे। सुफ़ियान सौरी रह० फ़रमाया करते थे कि अगर नेक नीयत हो तो तालिब इल्म से कोई भी अफ़ज़ल नहीं होता। एक हदीस में आता है,

﴿عليكم بمجالسة العلماء.﴾

तुम्हारे ऊपर लाज़िम है कि उलमा की मजलिस में बैठो।

﴿واستماع كلام الحكماء.﴾

और तुम दानाओं (समझदारों) की बातों को सुनो।

فان الله تعالى يحى القلب الميت بنور

الحكمة كما يحى الارض الميتة بماء المطر.

अल्लाह तआला हिकमत व दानाई से मुर्दा दिलों को इसी तरह ज़िंदा कर देते हैं जिस तरह बारिश के बरसने से मुर्दा ज़मीन को ज़िंदा कर दिया जाता है।

अमल की अहमियत

जहाँ इल्म की अहमियत है वहाँ अमल की भी अहमियत है। एक बुज़ुर्ग का क़ौल है कि इल्म अमल का दरवाज़ा खटखटाता है, खुल जाए तो दाख़िल हो जाता है वरना हमेशा के लिए रुख़्सत हो जाता है। बस जिस आदमी के पास सिर्फ़ इल्म हो अमल न हो वह इल्म उसके लिए वबाल होता है,

﴿العلم بلا عمل وبال و العمل بلا علم ضلال.﴾

इल्म बग़ैर अमल के वबाल है और अमल बग़ैर इल्म के गुमराही है।

﴿العلم بلا عمل كشجر بلا ثمر.﴾

इल्म बिला अमल के ऐसा है जैसे पेड़ बग़ैर फल के होता है।

जिस तरह चिराग़ जले बग़ैर रोशनी नहीं देता, इल्म भी अमल के बग़ैर रोशनी नहीं देता। बे-अमल आलिम की मिसाल पारस की तरह है जो औरों को तो सोना बनाता है और खुद पत्थर का पत्थर ही रहता है। इल्म अल्लाह के ख़ौफ़ का दूसरा नाम है।

﴿انما يخشى الله من عباده العلماء.﴾

एक दफ़ा मुफ़्ती शफ़ी साहब रह० तशरीफ़ फ़रमा थे। तालिबे

इल्म हाज़िरे ख़िदमत हुए। हज़रत ने बच्चों से पूछा कि बताओ इल्म का क्या मफ़हूम है? किसी ने कहा पहचानना, किसी तालिब इल्म ने कहा जानना। फ़रमाने लगे नहीं मुझे समझाओ कि यह क्या चीज़ है? पढ़ने वाले बच्चे अपनी बातें करते रहे, हज़रत ख़ामोश रहे। आख़िर एक तालिब इल्म ने कहा आप ही बता दीजिए कि इल्म का क्या मफ़हूम है। हज़रत ने एक अजीब बात फ़रमाई कि इल्म वह नूर है जिसके हासिल हो जाने के बाद उस पर अमल किए बग़ैर चैन नहीं आता। अगर अमल के बग़ैर चैन आ गया तो यह नूर नहीं बल्कि वबाल है। इसलिए क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला ने बे-अमल सूफ़ियों को कुत्ते के साथ मिसाल दी और बे-अमल उलमा को गधे के साथ तश्बीह दी है। बलअम बाऔर बड़े सूफ़ी थे। ﴿فمثله كمثل الكلب﴾ जो बनी इस्राईल के बड़े उलमा थे तो उनके बारे में फ़रमाया,

﴿مثل الذين حملوا التوراة ثم لم يحملوها كمثل الحمار يحمل اسفارا﴾

उनकी मिसाल गधे की सी है जिसके ऊपर बोझ लादा गया हो।

इल्म के बाद अमल का दर्जा है। इंसान इल्म इस नीयत से हासिल करे कि इस पर अमल करना है। आम मुशाहिदा है कि इल्म हासिल करने के दौरान जो तालिब इल्म इस नीयत से रहे कि पहले मैं सारा इल्म हासिल कर लूँ फिर इकट्ठा उस पर अमल करू लूँगा तो आमतौर पर अमल से महरूम रह जाता है।

पिछले बुज़ुर्गों का यह मामूल था कि जिस बात का पता चलता उस पर फ़ौरन अमल करते थे। इल्म आता था साथ ही अमल भी आ जाता था। इसलिए इल्मे नाफ़े मांगने के लिए

दुआएं की गयीं हैं, ऐ अल्लाह हमें इल्मे नाफ़े अता फ़रमा ऐसा इल्म जो नफ़ा देने वाला हो।

इल्म और मालूमात में फ़र्क़

देखें एक मालूमात होती है और एक इल्म होता है। मालूमात और चीज़ है और इल्म और चीज़ है। दूसरे मज़हबों के लोग भी अरबी ज़बान पढ़ते हैं, ग़ैर-मुस्लिमों को फ़क़ीर ने बाहर मुल्कों में देखा है कि इतनी प्यारी अरबी बोल रहे होते हैं कि आदमी उनसे अरबी में बात करते हुए हैरान हो जाता है। यहूदी और ईसाई क़ुरआन पाक की तफ़्सीर जानते हैं और तर्जुमा पढ़ते हैं। जिसने सबसे पहले क़ुरआन पाक का अंग्रेज़ी तर्जुमा किया उसका नाम 'पिक्थोल' वह उस वक़्त ग़ैर-मुस्लिम था। यह तो अल्लाह की रहमत थी कि वह बाद में मुसलमान हो गया वरना तर्जुमा करने के दौरान वह ग़ैर-मुस्लिम था। हमें अंदाज़ा नहीं कि बाहर मुल्कों में यूनिवर्सटियों में क़ुरआन पर यहूदी कितना वक़्त देते हैं, कितनी मेहनत करते हैं मगर वह मालूमात होती हैं इल्म नहीं होता क्योंकि

﴿يضل به كثيرا ويهدى به كثيرا﴾

इसी क़ुरआन से बाज़ लोगों को गुमराही मिलती है बाज़ लोगों को हिदायत मिलती है।

मालूमात का होना और चीज़ है और इल्म का होना और चीज़ है। इसलिए फ़रमाया,

﴿افرأيت من اتخذ الهه هواه﴾

आपने देखा उसको जिसने अपनी ख़्वाहिशात को अपना माबूद बना लिया है।

﴿اضله الله على علم﴾

उसे अल्लाह तआला ने इल्म के बावजूद, इल्म के साथ उसको गुमराह कर दिया।

﴿وجعل على بصره غشوة﴾

और उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी।

﴿فمن يهديه من بعد الله﴾

कौन है अल्लाह के अलावा हिदायत देने वाला।

﴿افلا تذكرون﴾

तुम्हें अब भी नसीहत नहीं होती।

इल्म और अमल का एक दूसरे के ख़िलाफ़ होना

इल्म पहला दर्जा है और अमल दूसरा दर्जा है। बे-अमल आलिम की मिसाल गधे के साथ दी गई है कि यह उड़ता तो फ़िज़ाओं में है मगर हराम पर अमल कर रहा है। मसाइल तो वह जानता है जो औज सुरैय्या तक पहुँचाने वाले हैं मगर हरामकारी कर रहा होता है। आज वह वक़्त आ चुका है जो उलमा हलाल माल से अपना पेट नहीं भरा करते थे आज उनकी औलादें हराम माल से अपने पेटों को भर रही हैं। वे उलमा जो चटाई के ऊपर सारी नहीं सोया करते थे आज उनकी औलादें नरम बिस्तरों पर रात गुज़ारती हैं, वे उलमा जिनके चिराग़ के तेल का ख़र्चा उनके खाने पीने के ख़र्च से भी ज़्यादा हुआ करता था आज उनकी औलादें दुनियादारी के चक्करों में पड़ी हुई हैं।

इल्म, अमल और इख़्लास

जिसको अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इल्म अता फ़रमा दे, अमल भी नसीब फ़रमा दे, अब उसमें एक तीसरी चीज़ की ज़रूरत है जिसे इख़्लास कहते हैं। फ़रमाया :

﴿الا لله الدين الخالص.﴾

जान लो अल्लाह के लिए ख़ालिस दीन है।

इख़्लास के साथ अमल किया जाए तो अल्लाह के यहाँ क़ुबूल होगा वरना बग़ैर इख़्लास के अमल क़ुबूल नहीं किया जाएगा। ﴿مخلصين له الدين.﴾ ऐसा अमल जो इख़्लास से कर रहे हों, ख़ालिस अल्लाह तआला की रज़ा के लिए हो।

﴿الناس كلهم هالكون الا العالمون.﴾

इंसान सब के सब हलाक होने वाले हैं सिवाए उलमा के।

﴿العالمون كلهم هالكون الا العاملون.﴾

उलमा सब के बस हलाक होने वाले हैं सिवाए उनके जो अमल करने वाले हों।

﴿والعاملون كلهم هالكون الا المخلصون.﴾

और अमल करने वाले भी सब के सब हलाक होने वाले हैं सिवाए उनके जो मुख़्लिस हैं।

﴿المخلصون على خطر عظيم.﴾

और मुख़्लिस भी बड़े भारी ख़तरे में हैं।

कि मौत से पहले पहले शैतान उन पर भी डाका न मारे। तो ये

तीन मर्तबे हैं इल्म, अमल और इख़्लास। अमल ख़ालिस अल्लाह की रज़ा के लिए हो। फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़ंदी रह० ने एक अजीब मिसाल लिखी है। फ़रमाते हैं कि हमने इख़्लास गढरिए से सीखा। किसी ने कहा हज़रत इख़्लास आपने गढरिए से कैसे सीखा। फ़रमाया कि जब गढरिया बकरियों के बीच नमाज़ पढ़ रहा होता है तो उसके दिल में रत्ती बराबर भी यह ख़्याल नहीं होता कि ये बकरियाँ मेरी तारीफ़ करेंगी। हम ने यहाँ इख़्लास सीखा कि इंसान लोगों में बैठकर इस तरह इबादत करे कि दिल में रत्ती बराबर भी ख़्याल न हो कि लोग मेरी तारीफ़ करेंगे। जिस तरह गढरिया बकरियों से बेगाना होकर नमाज़ पढ़ता है इसी तरह अल्लाह वाले लोगों के बीच बैठकर इबादत करते हैं। वे भी लोगों से बेगाने होते हैं। मख़्लूक़ से कट जाते हैं। अल्लाह तआला से मिल जाते हैं। इसको कहा गया कि,

﴿ان تعبد الله كانك تراه فان لم تكن تراه فانه يراك.﴾

तू अल्लाह की इबादत ऐसे कर जैसे कि तू उसे देखता है और अगर यह कैफ़ियत नसीब नहीं तो ऐसे कर जैसे वह तुझे देखता है।

यह मक़ामे एहसान है जिसका हदीस जिब्रील में तज़्किरा आया है। इसकी बहुत अहमियत है।

हीरे मोतियों से क़ीमती आलिम

जब कोई आदमी इल्म भी हासिल कर ले, अमल भी और इख़्लास भी नसीब हो जाए तो अब यह हीरे मोती से भी ज़्यादा क़ीमती बन गया। अब इस पर आलिम का लफ़्ज़ फ़िट बैठता है जिनके बारे में फ़रमाया गया है :

﴿علماء امتى كانبياء بنى اسرائيل.﴾

मेरी उम्मत के उलमा बनी इस्राइल के अंबिया की तरह हैं।

﴿العلماء ورثة الانبياء.﴾

उलमा अंबिया अलैहिमुस्सलाम के वारिस होते हैं।

यह वारिस हैं जिनको क़यामत के दिन अंबिया अलैहिमुस्सलाम की लाईन में बची हुई ख़ाली जगह पर कुर्सियाँ देकर बिठाया जाएगा। सिर्फ़ इतना फ़र्क़ होगा कि इनके सरों पर नबुव्वत का ताज नहीं होगा वरना लाईन एक बन जाएगी। सुब्हानअल्लाह! हैरान होते हैं कि अल्लाह तआला कितने मर्तबे अता फ़रमाएंगे। ऐसा बंदा जिसने इन तीनों रुत्बों को हासिल कर लिया। अब उसका जागना तो इबादत है ही सही अल्लाह तआला ने उसके सोने को भी इबादत बना दिया :

﴿نوم العلماء عبادة﴾

उलमा की नींद भी इबादत हुआ करती है।

इल्म एक ताक़त है। ताक़त का इस्तेमाल हम नहीं जानते। जब इंसान इस ताक़त को इस्तेमाल करता है तो फिर अल्लाह तआला दुनिया में उसको इज़्ज़त अता फ़रमा देता है। देखिए हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम जिनके बारे में फ़रमाया :

﴿فلما بلغ اشده اتينه حكما وعلما وكذلك نجزى المحسنين.﴾

जब वह अपनी भरपूर जवानी की उम्र को पहुँच गए, हमने उनको हिकमत और इल्म अता किया और हम नेकोकारों को ऐसे ही जज़ा दिया करते हैं।

इल्म मिला, हिकमत मिली फिर आज़माईश आ गई। आज़माईश

भी कैसी, अल्लाहु अकबर। अज़ीज़े मिस्र की बीवी ने गुनाह की दावत दी मगर अल्लाह तआला ने हिफ़ाज़त फ़रमाई। फिर जेल में कई साल तक पड़े रहे। जब आज़ाद हुए तो फिर जिन औरतों ने उनको गुनाहों की तरफ़ माइल किया था उन्होंने ख़ुद कहा कि हमारा क़ुसूर था। यूसुफ़ अलैहिस्सलाम तो सिद्दीक़ हैं, सच्चे हैं। फिर उन्हें अज़ीज़े मिस्र ने बुलाया और कहा ﴿انك اليوم لدينا مكين امين.﴾ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कहा ﴿قال اجعلني على خزائن الارض.﴾ यूसुफ़ अलैहिस्सलाम फ़रमाने लगे कि मुझे आप ख़ज़ानों का निगहबान मुक़र्रर कर दें, ﴿انی حفيظ عليم﴾ मैं मुहाफ़िज़ भी हूँ, मेरे पास इसका इल्म भी है, सुब्हानअल्लाह। लिहाज़ा वे ख़ज़ाने उनके हवाले कर दिए गए। देखें कैसे अल्लाह तआला उनको तख़्त पर बिठा रहा है। लम्बी बातें हैं आप पहले ही जानते हैं बल्कि बेहतर जानते हैं। मैं तो कुछ तालिब इल्म की तरह कुछ अर्ज़ कर रहा हूँ। आख़िर वह वक़्त भी आया कि भाई दरवाज़े पर खड़े हैं। जब वे भाई दाख़िल हुए तो उन्होंने समझा कि यह अज़ीज़े मिस्र है। कहने लगे ﴿ياايها العزيز﴾ ऐ अज़ीज़े मिस्र! ﴿مسنا واهلنا الضر﴾ हमें और हमारे घरवालों को तंगदस्ती ने बेहाल कर दिया है। ﴿وجئنا ببضاعة مزجة فاوف لنا الكيل﴾ और हम ऐसी पूंजी लाए हैं जो पूरी नहीं है। माल भी पूरा नहीं है, हमें वज़न पूरा दे दें। ﴿وتصدق علينا﴾ हमारे ऊपर सदक़ा व ख़ैरात कर दें ﴿ان الله يجزى المتصدقين.﴾ अल्लाह तआला सदक़ा देने वालों को जज़ा देता है। जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने देखा कि मेरे भाईयों का यह हाल हो गया। आज मैं तख़्त पर बैठा हूँ और ये फ़र्श पर खड़े हैं। ये झोली फैलाकर कहते है ﴿وتصدق علينا﴾ हमारे ऊपर सदक़ा व ख़ैरात कर दें ﴿ان الله يجزى المتصدقين.﴾ अल्लाह तआला सदक़ा देने वालों को जज़ा देता है।

यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने पूछा ﴿ما فعلتم بيوسف﴾ तुमने यूसुफ़ के साथ क्या मामला किया था? कहने लगे ﴿انك لانت يوسف﴾ क्या आप यूसफ़ हैं? फ़रमाया ﴿انا يوسف﴾ मैं यूसुफ़ हूँ ﴿وهذا اخي﴾ और यह मेरा भी बिनयामीन है। ﴿قد من الله علينا﴾ तहक़ीक़ अल्लाह तआला ने हम पर एहसान किया। ﴿انه من يتق ويصبر﴾ जो शख़्स अपने अंदर तक़्वा पैदा करता है, सब्र व ज़ब्त पैदा करता है ﴿فان الله لا يضيع اجر المحسنين﴾ अल्लाह तआला नेकोकारों के अज्र को ज़ाए नहीं किया करता। हर दौर में और हर ज़माने में जो जानते बूझते हुए यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों की तरह गुनाहों में पड़ेगा अल्लाह तआला उसके फ़र्श पर खड़ा कर देगा और जो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की तरह गुनाहों से बचेगा अल्लाह तआला उसको अर्श पर बिठाएगा।

मोमिन का हथियार

इल्म ताक़त और क़ुव्वत का नाम है। जिन उलमा को यह क़ुव्वत नसीब होती है तो उनके हाथ उठते हैं अल्लाह तआला दुनिया का नक़्शा बदल देते हैं। सुब्हानअल्लाह, मुल्ला जीवन रह० का मशहूर क़िस्सा है। बादशाह को मुसीबत पड़ गई। हज़रत जब मुसल्ले पर बैठे कहने लगा हज़रत के हाथ उठ गए तो आइंदा के लिए मेरी नसल ही ख़त्म हो जाएगी। ये मोमिन के हाथियार होते हैं। ﴿والوضوء سلاح المومن﴾ मुसल्लाह तस्बीह ये मोमिन के हथियार हैं। इनसे वह काम होता है जो मीज़ाइलों से भी नहीं हो सकता। उनके हाथों के उठने से वह तब्दीलियाँ आती हैं जो दुनिया में ऐटम बमों के फेंकने से भी नहीं होतीं। यह उलमा किराम उम्मत के इमाम होते हैं। ﴿وجعلنا منهم ائمة﴾ और हम ने उनमें इमाम बनाए,

﴿يهدون بامرنا لما صبروا وكانوا بايتنا يوقنون.﴾

यह उनका फ़र्ज़े मंसबी होता है, ख़ुद यक़ीन हो और फिर दीन के लिए वह काम कर रहे हों।

इल्म, अमल और इख़्लास की क़ुव्वतें

तीन बातें हैं इल्म, अमल व इख़्लास। जब ये तीनों चीज़ें आ जाया करती हैं तो फिर यह एक क़ुव्वत बन जाया करती है। हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम ने अपनी एसेंबली की मीटिंग बुलाई हुई थी। फ़रमाया ﴿يا ايها الملاء﴾ ऐ मेरे अमीरों! ऐ मेरे एमएनए हज़रात! जब प्राइम मिनिस्टर वक़्त का नबी हो तो फिर एमएमए ऐसे होते हैं। ऐ मेरी एसेंबली के मिंबरों! ﴿ايكم ياتينى بعرشها قبل ان ياتونى مسلمين.﴾ कौन है तुम में से जो इस (बिलक़ीस) का तख़्त मेरे पास ले आए इससे पहले कि वह मेरे पास फ़रमांबरदार बन कर आ जाए? ﴿قال عفريت من الجن﴾ जिन्नों में से एक इफ़रैत बोला ﴿انا اتيك به قبل ان تقوم من مقامك﴾ मैं लेकर आता हूँ इससे पहले कि आप अपनी जगह से खड़े हों। फ़रमाया, यह देर है। ﴿قال الذى عنده علم من الكتاب﴾ कहा उसने जिसके पास किताब का इल्म था ﴿انا اتيك به قبل ان يرتد اليك طرفك﴾ मैं उसे आपके पास ले आता हूँ इस से पहले कि आपकी आँख झपके। ﴿فلما راه مستقرا عنده قال هذا من فضل ربى.﴾ सुब्हानअल्लाह जब इल्म, अमल और इख़्लास तीनों चीज़ें यकजा हो जाती हैं तो क़ुव्वते ईमानी क़ुव्वते रूहानी बन जाती हैं।

सहाबा की मिसालें

इल्म, अमल और इख़्लास यही चीज़ें सहाबा किराम में आप

देखेंगे। खड़े मदीना तैय्यबा में होते थे ﴿يا سارية الجبل﴾ हवा उनके पैग़ाम को हज़ारो मील दूर पहुँचा देती थी। कभी ऐसा होता था कि मदीना में बैठे हैं, ज़मीन में ज़लज़ला आता है तो ज़मीन पर ऐड़ी मारते हैं और कहते हैं तू क्यों हिलती है क्या उमर ने तेरे ऊपर अद्ल क़ायम नहीं किया तो ज़मीन का ज़लज़ला ख़त्म हो जाता है। कभी दरियाए नील में पर्ची डाली जाती है दरियाए नील आज भी चल रहा है और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की अज़मतों की गवाहियाँ दे रहा है। कभी मदीने की तरफ़ आग बढ़ती है। एक सहाबी जाते हैं और जैसे कोई चाबुक मारकर किसी जानवर को भगाता है इस तरह वह अपने कपड़े से मार मारकर आग को उस गुफ़ा में वापस पहुँचा देते हैं। एक सहाबी क़ाफ़िले से बिछड़ गए। शेर को देखा, अपनी तरफ़ बुलाया और कहा तुझे आदम की बू आती है तो रास्ता पहचान लेगा। मुझे क़ाफ़िले तक पहुँचा दे। शेर दुम हिलाता हुआ क़दमों में आ जाता है। सहाबी उस पर सवार होकर क़ाफ़िले तक पहुँच जाते हैं।

कहीं अमीर लश्कर दरिया से बाहर निकल कर पूछते हैं कि कोई चीज़ तो नहीं रह गई। एक सहाबी कहते हैं कि मेरा लकड़ी का प्याला रह गया है। दरिया को हुक्म देते हैं, उसी वक़्त एक मौज आती है और लकड़ी का प्याला उनके हवाले कर देती है। एक वक़्त था कि उनके सर के बालों से लेकर पाँव के नाख़ूनों तक अल्लाह के हुक्म लागू हो गए थे। बस अल्लाह तआला उनके हाथों को ख़ाली हाथ नहीं लौटाया करते थे।

हदीसे क़ुदसी में फ़रमाया, मेरे कुछ बंदे ऐसे हैं बिखरे बालों वाले कि अगर किसी दरवाज़े पर पहुँचें तो उन्हें धुतकार दिया जाए

मगर मेरे यहाँ वह मुक़ाम रखते हैं ﴿لو قسم على الله لا برہ﴾ अगर वह अल्लाह पर क़सम उठा लें तो अल्लाह उनकी क़सम ज़रूर पूरी कर दे। अल्लाह तआला के यहाँ फिर मर्तबा बन जाता है।

﴿من كان لله كان الله له﴾

जो अल्लाह का हो जाता है अल्लाह तआला उसका बन जाया करते हैं।

असबाब के बग़ैर अल्लाह की मदद

इल्म, अमल और इख़्लास इन तीनों चीज़ों के जमा होने का नाम एक क़ुव्वत है, एक ताक़त है और जब यह ताक़त मुसलमानों में थी तो उस वक़्त उनका रौब दुश्मनों के दिलों पर होता था। अल्लाह तआला बग़ैर असबाब के उनको कामयाब फ़रमा देते थे। फ़रमाया,

﴿ولا تهنوا ولا تحزنوا وانتم الاعلون ان كنتم مومنين﴾

तुम सुस्त न हो, तुम्हारे अंदर हुज़्न भी न हो, तुम्हीं आला और बाला रहोग अगर तुम ईमान वाले होगे।

अल्लाह तआला तो मदद के वादे फ़रमाते हैं,

﴿انا لننصر رسلنا والذين امنوا فى الحيوة الدنيا ويوم يقوم الشهاد﴾

हमारे ज़िम्मे है मदद अपने रसूलों की और ईमान वालों की, इस दुनिया की ज़िंदगी में भी और जिस दिन कि गवाहियाँ क़ायम होंगी।

अल्लाह तआला तो वादा फ़रमा रहे हैं,

﴿والله اعلم باعدائكم﴾

अल्लाह तआला तुम्हारे दुश्मनों को जानता है।

और दूसरी जगह फ़रमाया,

﴿ولن يجعل الله للكفرين على المومنين سبيلا.﴾

अल्लाह तआला कभी काफ़िरों का रास्ता नहीं देंगे कि वह ईमान वालों तक पहुँच सकें।

अल्लाह तआला उनके बीच आ जाएंगे, देखा। जंगे अहज़ाब में सारे चढ़ दौड़े थे कि मुट्ठी भर मुसलमानों को ख़त्म कर डालें। अल्लाह तआला ने उनके साथ क्या सुलूक किया? फ़रमाया,

﴿ورد الله الذين كفروا بغيظهم لم ينالوا خيرا.﴾

अल्लाह तआला ने उनको वापस लौटा दिया उनके ग़ैज़ के साथ और उनके पल्ले कुछ भी न आया।

इस तरह अल्लाह तआला बग़ैर असबाब के ऐसे लोगों के ऊपर ग़लबा अता फ़रमा देते हैं।

बनू क़रीज़ा के यहूदियों के पास बड़े बड़े क़िले थे। फ़क़ीर ने उनके कुछ खंडर देखे हैं। एक-एक मीटर चौड़ी चट्टानों की दीवारें बनाई हुई थीं, आदमी के क़द से ऊँची। वे समझते थे कि मुसलमान इन क़िलों को फ़तेह नहीं कर सकते और कहते थे कि अल्लाह के रास्ते में ये क़िले रुकावट बन जाएंगे। मगर अल्लाह तआला ने उनकी फ़तेह को भी आसान कर दिया। हुआ यह कि अल्लाह तआला ने उन यहूदियों के दिलों में मुसलमानों का रौब पैदा कर दिया। आपस में बैठकर मशवरा करने लगे कि मुसलमान जहाँ जाते हैं चढ़ दौड़ते हैं, कहीं हमारे ऊपर ही न चढ़ दौड़ें। बेहतर है कि ख़ुद ही शहर ख़ाली करके कहीं और चले जाओ।

अपना सामान बाँधकर भागने लगे। मुसलमानों को पता चला तो उन्होंने उनके भागने में मदद की, सुब्हानअल्लाह।

अल्लाह तआला अजीब अंदाज़ से फ़रमाते हैं ﴿هو الذی﴾ के अल्फ़ाज़ के साथ अल्लाह तआला अपना तारुफ़ करवाते हैं,

هو الذی اخرج الذین کفروا من اهل الکتب من دیارهم لاول

الحشر ما ظننتم ان یخرجوا وظنوا انهم ما نعتهم حصونهم من الله

فاتهم الله من حیث لم یحتسبوا وقذف فی قلوبهم الرعب یخربون

بیوتهم بایدیهم وایدی المومنین فاعتبروا یا اولی البصار.

तुम्हें गुमान भी नहीं था कि तुम उन्हें निकाल सकोगे और उनका अपना भी यह गुमान था कि उनके क़िले अल्लाह के रास्ते में रुकावट बन जाएंगे। अल्लाह तआला ऐसी तरफ़ से आया कि जिसका उनको गुमान भी नहीं था और उनके दिलों में मुसलमानों का रौब पैदा कर दिया कि अपने हाथों से अपने घरों को ख़राब करने लगे। फिर मुसलमानों ने उन्हें भागने में मदद दी। ऐ आँखों वालो इबरत हासिल करो।

जब अल्लाह मदद करने पर आते हैं तो बग़ैर असबाब के ग़लबा अता फ़रमा देते हैं।

وعد الله الذین امنوا منکم وعملوا الصلحت

لیستخلفنهم فی الارض کما استخلف الذین من قبلهم.

अल्लाह तआला के वादे हैं ईमान वालों से, नेक आमाल करने वालों से कि मैं तुम्हें अपनी ज़मीन का वारिस बनाऊँगा।

अल्लाह के ये वादे हैं ﴿ومن اصدق من الله قیلا﴾ कौन है अल्लाह ज़्यादा जो अपनी बातों में सच्चा हो।

ليمكنن لهم دينهم الذى ارتضى لهم وليبدلنهم من بعد خوفهم امنا

يعبدونني لا يشركون بي شيئا ومن كفر بعد ذالك واولئك هم الفسقون.

अल्लाह तआला की मदद के उसूल व क़ायदे

उसूल व क़ायदे बता दिए कि किस तरह इंसान को ग़लबा अता किया जाता है। सहाबा की भी शुरू में यही हालत थी कि टिमटिमाते हुए चिराग़ थे। काफ़िर कहते थे कि हम जब चाहेंगे फूंक मारकर बुझा देंगे। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

يريدون ليطفئو نور الله بافواههم والله متم

نوره ولو كره الكافرون، ولو كره المشركون.

एक वक़्त यह था फिर एक वह वक़्त भी आया कि जब अल्लाह तआला की तरफ़ से आयतें उतर रही हैं ﴿اليوم اكملت لكم دينكم﴾ उसी दिन ये आयतें भी उतरीं ﴿اليوم يئس الذين كفروا من دينكم.﴾ आज के दिन ये कुफ़्फ़ार तुम्हारे दीन से ना-उम्मीद हो चुके हैं। उनके दिलों में यह बात बैठ गई है कि मुसलमान लोहे के चने हैं इन्हें चबाना आसान काम नहीं है, सुब्हानअल्लाह। इर्शादे बारी तआला है,

﴿كم من فئة قليلة غلبت فئة كثيرة باذن الله والله مع الصابرين.﴾

कितनी बार ऐसा हुआ कि छोटी जमाअत बड़ी जमाअत पर ग़ालिब आ गई। अल्लाह तआला तो सब्र व ज़ब्त वालों के साथ है। अगर हम अपने अंदर इल्म और इख़्लास पैदा कर लें तो अल्लाह तआला की मदद होगी। जब अल्लाह की मदद आती है तो कश्ती हमेशा किनारे लग जाया करती है, कभी भंवर में नहीं

फँसी रहती। अल्लाह तआला जब चाहता है चिड़ियों से बाज़ मरवा दिया करता है। यह उसकी मदद हुआ करती है।

दीन का ग़म

आज उलमा किराम के ऊपर ज़िम्मेदारियाँ हैं। उम्मत परेशान हाल है। मुल्क और बाहर के मुल्की की बहुत सारी बातों को नज़र के सामने रखना बहुत ज़रूरी है, क्यों? उलमा किराम दीन का ग़म नहीं करेंगे तो दीन का ग़म और कौन करेगा? यह तो उनको विरासत में मिला है। जो वारिस हो उसी को ग़म करना पड़ता है। मुल्क में भी दीन के ख़िलाफ़ कितने-कितने फ़ितने उठ खड़े हुए हैं। यह फ़क़ीर इस वक़्त तक दुनिया के कई मुल्कों का सफ़र कर चुका है और इस दफ़ा अमरीका की 22 रियासतों का सफ़र करके आया है। अल्लाह का शुक्र है वहाँ के मुसलमानों की हालत को देखा, कुछ बातें ऐसी हैं जो आपके इल्म में लानी ज़रूरी हैं।

इस्लाम के दुश्मन

पहली बात तो यह है कि यूहदी और ईसाई दीने इस्लाम के पक्के दुश्मन हैं। ये साँप हैं जब मौक़ा मिलता है डसते हैं, ये बिच्छू हैं जब मौक़ा मिलता है काटते हैं। क़ुरआने पाक ने पहले ही फ़रमा दिया था,

﴿ولن ترضى عنك اليهود ولا النصارى حتى تتبع ملتهم﴾

यहूद व नसारा आपसे राज़ी नहीं हो सकते जब तक आप उनकी इत्तिबा न करें।

इत्तिबा के बग़ैर वे राज़ी नहीं हो सकते। वे उन उलमा से

राज़ी होंगे तो उलमा उनके मक़सद के तहत काम करेंगे और जो उलमा अल्लाह के दीन के लिए काम करने वाले होंगे वे उन उलमा को अपना दुश्मन समझेंगे।

उलमाए किराम के किरदार को गिराना

आज देखो दीन के काम करने वालों को दहश्तगर्द मशहूर कर दिया गया है। उनको बुनियाद परस्त मशहूर कर दिया गया है। यह उलमा की किरदार कशी करने की साज़िश है कि पूरी दुनिया में उनके किरदार को ख़राब कर दिया जाए।

इस्लाम के ख़िलाफ़ परोपेगंडा

यहूदियों और ईसाईयों ने इस क़दर हालत ख़राब कर रखी है कि हर वक़्त कोई न कोई इस्लाम के ख़िलाफ़ परोपेगंडा करते रहते हैं। आम लोगों को सही सूरते हाल मालूम नहीं होने देते। जब भी मौक़ा मिलता है इस्लाम की मुख़ालिफ़त करते हैं। इस्लामी तंज़ीमों में अपने डालर पैसे देकर उन्होंने ऐसी ऐसी सीटों पर अपने आदमी बिठा देते हैं कि मुसलमानों की तंज़ीमें उनके लिए काम कर रही होती हैं।

यहूदियों की साज़िशें

यहूदियों को अपने बारे में बड़ा गुमान है और कहते हैं कि ﴿نحن ابناء الله واحباؤه﴾ हम तो अल्लाह के बेटे हैं और बड़े चुने हुए हैं, अल्लाह के बड़े महबूब बंटे हैं। अपने बारे में उन्हें यह गुमान

है कि हम मार्शल-रेस हैं। बाक़ी सारी दुनिया रिआया है, हम हाकिम हैं। बनी इस्राईल पर जो अल्लाह तआला ने ईनामात किए थे ये समझते हैं कि ये ईनामात क़यामत तक हमारे लिए ही हैं।

लिहाज़ा उनके दिल में एक बड़ाई बैठ गई। माल व दौलत पर उनकी हुक्मरानी है। जिस मुल्क में चाहते हैं वहाँ पैसे के ज़रिए इंक़लाब ले आते हैं। जब चाहते हैं वहाँ की हुकूमत छीन लेते हैं, जिस मुल्क में चाहते हैं उस मुल्क में फ़ितना बरपा कर देते हैं। अच्छे भले जिहाद को फ़साद में तब्दील करके रख देते हैं। यहूदी इस्लाम का इतना मक्कार दुश्मन है कि आप इसका अंदाज़ा नहीं लगा सकते।

बरकत की जगह

देखें कहाँ जाकर बसे है। ये बैतुल मुक़द्दस से लेकर शाम की सर ज़मीन तक फैल गए हैं। जहाँ क़ुरआन पाक ने कहा कि हमने इसमें बरकत रखी हुई है। हो सकता है कि हम में से बाज़ को पता ही न हो। वे क़ुरआन पाक पढ़ते हैं। उन्होंने इसमें ग़ौर किया है। उन्हें पता है कि कुछ जगहें हैं जहाँ मुसलमानों की किताबें बताती हैं कि हमने इन जगहों में बरकत रख दी है। आज उस इलाक़े पर अपना क़ब्ज़ा किया हुआ है। क़ुरआन पाक ने पाँच जगहों पर बताया है कि हमने इस जगह बरकत रखी हुई है। देखें अल्लाह तआला फ़रमाता हैं,

سبحان الذى اسرى بعبده ليلا من المسجد
الحرام الى المسجد الاقصى الذى باركنا حوله.

देखें इसके आसपास क़ुरआन पाक कितनी वज़ाहत के साथ

बरकत का ज़िक्र कर रहा है।

ولسليمن الريح عاصفة تجرى بامره الى
الارض باركنا فيها وكنا بكل شئى علمين

बरकत के सुबूत में तीसरी आयत,

ونجينه ولوطا الى الارض التى باركنا فيها للعالمين.

चौथी आयत,

وجعلنا بينهم وبين القرى التى باركنا فيها قرى ظاهرة وقدرنا فيها السير.

पाँचवीं आयत,

وارثنا القوم الذين كانوا يستضعون مشارق الارض ومغاربها التى باركنا فيها.

पाँच जगहों पर क़ुरआन पाक इस बरकत के मौजूद होने के बारे में कहता है। इसलिए बनी इस्राईल इस जगह पर जमकर बैठा हुआ है।

फ़्राँस में यहूदियों के रोज़े रखने का वाकिआ

यह फ़कीर फ़्रांस गया तो एक दोस्त कहने लगे कि रमज़ानुल मुबारक आया। मुझे रोज़े रखने थे तरावीह पढ़नी थीं। मैंने प्रोफ़ेसर से कहा मुझे छुट्टी दे दो। उसने कहा क्यों? मैंने कहा मुझे रोज़े रखने हैं और तरावीह पढ़नी है। उसने कहा तुम्हें छुट्टी की क्यों ज़रूरत है? मैंने कहा मुझे फ़लां जगह जाना है और वहाँ से मैं रोज़ नहीं आ सकता। उसने कहा मैं तुम्हें यहीं जगह बता देता हूँ। मैंने कहा बहुत अच्छा। वह मुझे युनिर्वसिटी में एक जगह ले गए जहाँ पर गोरे चिट्टे नौजवान, काली दाढ़ियाँ, अमामे बाँधे

हुए, जुब्बे पहने हुए, मिसवाक से वुज़ू कर रहे हैं, नमाज़ें पढ़ रहे है, अज़ाने दे रहे हैं, क़ुरआन पाक एक आगे पढ़ रहा है बाक़ी पीछे सुन रहे हैं। रोज़े रख रहे हैं, पूरा महीना फिर एतिकाफ़ में भी बैठे। फिर सुबह शाम जैसे रोज़े की सहरी इफ़्तारी होती है उसके मुताबिक़ कर हैं। कहने लगे मैं ईद पढ़कर वापस आया। मैंने टीचर से कहा आपकी बड़ी मेहरबानी कि आपने मुझे ऐसे नेक लोगों से मिला दिया। मेरा रमज़ान शरीफ़ तो बड़ा अच्छा गुज़रा। वह मुस्कराकर कहने लगा कि आपको पता है? ये सब यहूदी थे। मैंने कहा मुझे तो पता नहीं। कहने लगा उन्होंने एक प्रोजेक्ट शुरू किया है कि इस्लाम में मुसमलानों को जैसे रोज़े रखने के लिए कहा गया है तुम भी ठीक उसी तरह एक महीना रहकर देखो कि इसमें क्या अच्छाइयाँ हैं, क्या बुराईयाँ हैं। अच्छाईयाँ होंगी हम बिन कहे क़ुबूल कर लेंगे जो कमियाँ होंगी उसके ख़िलाफ़ परोपेगंडा करेंगे।

अब बताइए दुनिया में यह काम हो रहा है। हमारे नौजवान बाहर मुल्कों में जिन युनिर्वसटियों से पीएचडी की डिग्रियाँ लेते हैं वहाँ पर इस्लामियात के हैड आफ़ दी डिपार्टमेंट यूहदी होते हैं। अब बताइए दुनिया में इस्लाम के ख़िलाफ़ इस वक़्त क्या कुछ नहीं हो रहा है, अल्लाहु अकबर। इस वक़्त हमारे सबसे बड़े दुश्मन दुनिया के अंदर यहूदी हैं जो अलग अलग ज़रियों से इस्लाम को हर वक़्त नुक़सान पहुँचाने की कोशिशें कर रहे हैं।

रशिया में यहूदी की साज़िश का वाक़िआ

फ़क़ीर एक दफ़ा रूस का सफ़र कर रहा था। मौलाना अब्दुल्लाह और दूसरे हज़रात सफ़र में साथ थे। ट्रेन में सफ़र कर

रहे थे कि एक आदमी आया। फ़क़ीर से मिला, औरों से भी मिला। दाढ़ी भी रखी हुई थी। फिर साथियों से बातें करने लगा। जब वह चला गया तो फ़क़ीर ने साथियों से पूछा कि क्या बातें कर रहा था? कहने लगे आपके बारे में पूछ रहा था कि यह कौन हैं? हमने कहा कि आलिम हैं, पीर हैं। कहाँ से आए हैं? बताया गया कि पाकिस्तान से आए हैं। कहने लगा आप भी रशियन हैं मैं भी रशियन हूँ, आप लोग इसको धोका दो। इसको कहीं बाहर बाहर फिराते रहो। इसका सारा पैसा ख़र्च करा दो तो फिर यह अपने आप यहाँ से चला जाएगा। हमें इन लोगों से क्या फ़ायदा है? इस को यहीं से टरख़ा दो ताकि यहाँ कोई दीने इस्लाम का काम न कर सके। इस किस्म के ज़ाती तजुरिबे और मुशाहिदे फ़क़ीर को कई दफ़ा हुए हैं। अब बात समझ में आई कि उनके दिलों में क्या गुस्से और नफ़रत की सूरत होती है। अल्लाह तआला ने सच फ़रमाया ﴿قل موتوا بغيظكم﴾ तुम मर जाओ अपने ग़ुस्से में।

﴿كبر كلمة تخرج من افواههم ان يقولون الا كذبا.﴾

और,

﴿قد بدت البغضاء من افواههم وما تخفي صدورهم اكبر.﴾

ज़बान से बातें करते हैं और उनके दिलों में इतना कुछ इस्लाम के ख़िलाफ़ छुपा हुआ होता है।

अमरीका में टाई उलमा की करतूत

अमरीका में असल मुसीबत वहाँ के टाई उलमा ने डाली हुई है यहूदियों और ईसाईयों के बाद अगर कोई इस्लाम को नुक़सान

पहुँचा रहा है तो वहाँ कि बसने वाले टाई उलमा हैं। उन्हें आलिम तो कहना ही नहीं चाहिए। अंग्रेज़ी ख़्वां हैं जिन्होंने मक़ाला लिख लिया है। उसके बाद वह समझते हैं कि हम दीन के चौधरी बन गए हैं, हम फ़क़ीहे वक़्त बन गए हैं, हम मुजद्दिद बन गए हैं और फिर फ़त्वे देने शुरू कर देते हैं। उनका काम होता है हर मस्‌अले में इज्तिहाद करना, हर मस्‌अले में अपनी मन मर्ज़ी करना। सूट-बूट पहनकर आते हैं, टाई लगाई होती है, नंगे सर नमाज़ पढ़ेंगे, नंगे सर बाज़ारों में जा रहे हैं, नंगे सर खड़े हुए खा रहे हैं, औरतों के साथ आना जाना, मेल मिलाप हो रहा है। ये वहाँ के इमाम और ख़तीब बने हुए हैं। अंग्रेज़ी में बहुत अच्छे लैक्चर देते हैं। हमने उन का नाम टाई उलमा रख दिया है क्योंकि बे हुरमती वाला नाम तो नहीं रख सकते। आख़िर इल्म से उनको निस्बत है, उलमा समझे जाते हैं और क़ुरआन व हदीस का तर्जुमा भी जानते हैं। हमने सोचा कि इन्हें क्या करें तो फिर हमने उनका नाम टाई उलमा रख दिया। इन टाई उलमा ने वहाँ दीन की शक्ल को बिगाड़कर रख दिया है।

टाई उलमा के मस्‌अले

टाई उलमा अजीब-अजीब मस्‌अले बयान करते हैं। मसलन क़यामत के दिन मुसलमानों से इस्लाम के बारे में पूछा जाएगा, ईसाईयों और यहूदियों से उनके दीन के बारे में पूछा जाएगा। फ़क़ीर ने एक टाई आलिम से पूछा आप कैसे कहते हैं कि उनसे उनके दीन के बारे में पूछा जाएगा? आगे से आयत पढ़ता है,

ان الذين آمنوا والذين هادوا والنصارى والصابئين من امن بالله واليوم

الاخرة فلهم اجرهم عند ربهم ولا خوف عليهم ولا هم يحزنون.

यह दलील के तौर पर पेश कर रहा है कि चाहे ईसाई हो, यहूदी हो, साइबीन में से हो उनके ऊपर कोई ख़ौफ़ नहीं होगा, कोई हुज़्न नहीं होगा। गोया यहूदियों और ईसाईयों को इस्लाम लाने की ज़रूरत नहीं, बस वे अपने दीन पर पक्के रहें। मैंने कहा अच्छा, क्या क़ुरआन पाक यह नहीं कहता,

﴿ومن يبتغ غير الاسلام دينا فلن يقبل منه.﴾

बस आपने एक ही पारा पढ़ा हुआ है और बाक़ी क़ुरआन नहीं पढ़ा हुआ है, ﴿افغير دين الله يبغون﴾ जब ख़ुद अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं,

اليوم اكملت لكم دينكم واتممت عليكم
نعمتي ورضيت لكم الاسلام دينا.

इस पर आज हमारे लिए अमल करना ज़रूरी है।

टाई उलमा के फ़त्वे

एक और फ़त्वा टाई उलमा ने दिया। कहते हैं कि जितने भी ईसाई हैं वे सब अहले किताब हैं हालाँकि आज ईसाईयों में से अंदाज़न हर दूसरा आदमी नास्तिकता को मानता है। कहते हैं उनके हाथ से ज़िब्ह किया हुआ जानवर हलाल है। किसी ने उनके सामने आयत पढ़ी कि वह तो अल्लाह का नाम नहीं लेते जब ज़िब्हा कर रहे होते हैं। कहने लगे अच्छा अगर ऐसा है तो वह चीज़ जब हाथ में आए तो उसे खाने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़कर खा ले वह बिल्कुल हलाल हो जाएगी। दूसरा फ़त्वा यह दिया कि औरतों के लिए चेहरा ढकना क़ुरआने पाक में कहीं नहीं आया,

तीसरा फ़त्वा यह दिया कि अमरीका में औरतों से हाथ मिलाने पढ़ते हैं, हम हाथ न मिलाएं तो उनका दिल टूटता है और दिल का तोड़ना बड़ा गुनाह है। इसलिए उमूम बलवा के तौर पर हाथ मिलाना जाएज़ है। फ़त्वा देखा।

अगर कभी बुध को ईद का दिन पड़ जाए तो कहते हैं कि ईद का मक़सद तो होता है मुसलमानों का आपस में मिलना जुलना, खुशी का इज़्हार करना। हम बुध के दिन तो फ़ारिग़ नहीं लिहाज़ा उसके बाद जो इतवार का दिन आ रहा है तो हम ईद की नमाज़ भी पढ़ेंगे और आपस में भी मिलेंगे। ये वहाँ के टाई उलमा हैं इसलिए जहाँ हक़ नहीं होगा, रोशनी नहीं होगी अंधेरा अपने आप होगा। इस्लाम को यहूदियों, ईसाईयों के बाद सबसे ज़्यादा नुक़सान इन टाई उलमा ने पहुँचाया है। दीन की शक्ल को बिगाड़कर रख दिया है। कहते हैं कि ﴿الدين يسر﴾ दीन आसान है। इसलिए तुम चारों इमामों में से किसी का भी क़ौल ले लो जो तुम्हें आसान नज़र आता है वह बिल्कुल ठीक होगा। जहाँ चारों इमामों के यहाँ मस्अला ज़रा सख़्त मिलता है तो फिर अपनी तरफ़ से आसान बना लेते हैं हालाँकि सारी दुनिया की ख़राबियाँ उस आदमी के अंदर आ जाती हैं जो दीन में यूँ आसानियाँ ढूँढता फिरता है। फिर तो उसके अंदर सारी की सारी ख़राबियाँ आ जाएंगी। आप उलमा हैं इसलिए आपके सामने कुछ नवादिरात नमूने के तौर पर पेश कर रहा हूँ। फ़त्वा इन चीज़ों पर नहीं है :

आप देखिए इमाम शाफ़ई रह० के नज़दीक शतरंज खेलना जाएज़ है, अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुमा के नज़दीक मौसीक़ी का जवाज़ बनता है, इमाम क़ासिम बिन मुहम्मद के

नज़दीक बे साया तस्वीर, तस्वीर के हुक्म में नहीं होती और इमाम समनून रह० जो कि इमाम मालिक रह० की पैरवी करते हैं उनके नज़दीक अपनी बीवी से पीछे के मुक़ाम में वती करना जाएज़ है और इमाम अमश रह० इस बात के क़ायल हैं कि रोज़े की शुरूआत सूरज उगने से होती है, इब्ने हज़्म रह० ज़ाहिरी कहते थे कि मंगेतर को बग़ैर कपड़ों के भी देखना जाएज़ है बल्कि फ़रमाते थे कि जिस औरत को किसी मर्द से पर्दा करना मुश्किल हो उम्र के जिस हिस्से में भी हो बस मर्द को दूध पिला दे बल्कि मर्द के मुँह में दूध डाल दे तो यह औरत का महरम बन जाएगा।

अता बिन अबी रबाह फ़रमाते हैं कि जो दिन ईद का होगा उस दिन जुमा और ज़ोहर की नमाज़ माफ़ हो जाएगी। अब बताइए इन नवादिरात (अजूबों) को जब इकट्ठा करें तो यह क्या चीज़ बन जाएगी। आज ऐसी बातों पर वहाँ के टाई उलमा अमल कर रहे हैं और करवा रहे हैं।

दीन का ग़म

मेरे दोस्तो! नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो दुआएं की थी,

﴿نضر الله امرء سمع مقالتی فوعاها ثم دعاها كما سمعها.﴾

आज उलमा किराम के सर पर एक बोझ है। इस बोझ से बरी होने के लिए उनको अपनी ज़िंदगियों को खपाना होगा। हम छोटी-छोटी बातों पर उलझने के बजाए देखें की इस्लाम के दुश्मन आज इस्लाम के साथ क्या सुलूक कर रहे हैं। इस वक़्त मग़रिबी (पश्चिमी) मुल्कों में कुछ ऐसी भी आबादियाँ हैं कि जहाँ पर

मुसलमान किराए पर मकान लेने के लिए जाएं तो उसे किराए पर मकान नहीं मिलता। यह हालत हो गई है।

एक वक़्त ऐसा था कि अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० के पड़ौस में यहूदी रहता था। यूहदी ने मकान बेचना चाहा। एक आदमी ने पूछा कितने में बेचोगे? कहने लगा में दो हज़ार दीनार में बेचूँगा। उस ख़रीदार ने कहा कि इस इलाक़े में इस मकान की क़ीमत ज़्यादा से ज़्यादा एक हज़ार दीनार है। यहूदी कहने लगा कि हाँ ठीक है। एक हज़ार तो मेरे मकान की क़ीमत है और एक हज़ार अब्दुल्लाह बिन मुबारक के पड़ौस की क़ीमत है। एक वक़्त था कि मुसलमानों के पड़ौस में जो मकान होते थे उन मकानों की क़ीमत बढ़ जाया करती थी और आज यह वक़्त आ चुका है यूरोप के कुछ इलाक़ों में मुसलमान मकान लेने जाते हैं तो उन्हें कोई मकान किराए पर देने के लिए तैयार नहीं है।

मोहतरम सामेइन! इस दीन का ग़म कौन खाएगा। आप उलमा ही हैं। फ़िर आप ही लोगों ने खड़े होना है। याद रखिए अंग्रेज़ ने दीन की जड़ें उखाड़ने की कोशिश की थी और पूरी क़ौम को दुनियादारी की तरफ़ लगा दिया था। आप ही थे जो चटाइयों पर बैठे रहे, आप ही तो थे जो मुसल्लों से चिपटे रहे, आप ही तो थे जो टूटे हुए हुज्रों के अंदर बैठे रहे। आपने अपने लिए ग़रीबी को पसंद किया, अपनी औलाद के लिए ग़रीबी को पसंद किया लेकिन आपने दीन को सीने से लगाए रखा। आप मुबारकबाद के क़ाबिल हैं। मैं सलाम कहता हूँ आपकी अज़मत को, मैं सलाम करता हूँ आपके तक़्वे को, मैं सलाम करता हूँ आपके जमने को कि आपने दुनिया को क़ुबूल करने के बजाए दीन को अपने सीने से लगाया

और क़ौम के सामने दीन को पहुँचाया।

﴿والربانيون والاحبار بما استحفظوا من كتاب الله وكانو عليه شهداء.﴾

यह उलमा और नेक लोगों की ज़िम्मेदारी होती है कि उन्होंने अल्लाह के दीन की और किताब की हिफ़ाज़त करनी होती है। अल्लाह का शुक्र है चौदह सदियों से कुछ ज़्यादा गुज़र चुका। दीन आज तक सलामत है। आज दीन को ग़लत लोगों के हाथों में न जाने दीजिए। आज इस दीन को बे-अमल लोगों के हाथों में न जाने दीजिए।

दीन के लिए क़ुर्बानियाँ देना

मोहतरम उलमाए किराम! यहाँ तलबा को तैयार कीजिए। ये तलबा दुनिया में फैल जाएं, दीन के नुमाइंदे और क़ासिद बनकर काम करें। याद रखिए कि कल क़यामत के दिन रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने क़ुबूलियत नसीब होगी। अल्लाह तआला हमें दीन की ख़ातिर जीने और दीन की ख़ातिर मरने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

क़ुव्वते इश्क़ से हर पस्त को बाला कर दे
दहर में इस्मे मुहम्मद से उजाला कर दे

﴿واخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

من تمسك بسنتي عند فساد
امتي فلــه اجر ماة شهيد۔

जिसने मेरी सुन्नत को फ़ित्ने फ़साद के दौर में मज़बूती से पकड़ा उसके लिए सौ शहीदों का अज्र है।

सुन्नते नबवी और जदीद साइंस

الحمد لله و كفى و سلام على عباده الذين اصطفى اما بعد

فاعوذ بالله من لاشيطن الرجيم

بسم الله الرحمن الرحيم

فالهمها فجورها وتقوها. سبحان ربك رب العزة عما

يصفون وسلام على المرسلين والحمد لله رب العالمين.

दुनिया इम्तिहान की जगह

अल्लाह तआला ने इंसान को बनाया। उसके अंदर ख़ैर का माद्दा भी रख दिया और शर का माद्दा भी रख दिया। शैतान बहकाने वाला बन गया, अंबिया अलैहिमुस्सलाम ख़ैर के रास्ते पर बुलाने वाले बन गए। इसी को कहा गया है कि दुनिया इम्तिहान की जगह है। यह सैर की जगह नहीं, तमाशे की जगह नहीं, इम्तिहान की जगह है। यह बात और है कि हमने इसको चारागाह बना लिया। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं :

﴿خلق الموت والحيوة ليبلوكم ايكم احسن عملا. (سورة الملك)﴾

मौत और ज़िंदगी को इसलिए पैदा किया कि देखें तुम में से

कौन अच्छे अमल करता है और फ़रमाया कि जब हम ने इंसान को पैदा किया ﴿فالهمها فجورها وتقوىها﴾ हमने इंसान के अंदर ख़ैर माद्दा भी रख दिया और शर का माद्दा भी रख दिया। शैतान शर की तरफ़ बुला रहा है और रहमान ख़ैर की तरफ़ बुला रहा है। देखना यह है कि इंसान किस रास्ते पर चलता है। अगर इंसान ख़ैर के रास्ते पर चलेगा तो वाक़ई कामयाब होगा और अगर शैतान के रास्ते पर चलेगा तो वाक़ई नाकाम होगा।

कलिमा और ग़ैर-मुस्लिम का वाक़िआ

बाहर के मुल्क में एक आदमी कहने लगा कि अगर कोई सिर्फ़ कलिमा पढ़ ले तो क्या वह जन्नत में जाएगा? फ़क़ीर ने कहा हाँ इन्शाअल्लाह जन्नत में जाएगा, गुनाहगार होगा तो उसको सज़ा मिलेगी, फिर भी आख़िर में जन्नत में जाएगा। उसने कहा अगर एक आदमी कलिमा न पढ़े? फ़क़ीर ने कहा कि वह जन्नत में नहीं जाएगा। कहने लगा अगर कलिमा न पढ़े और बड़ा नेक हो मसलन उसने रौशनी ईजाद की, बल्ब का ईजाद करने वाला बना, मेहमान ख़ाने बनवाए, अच्छे काम किए फिर भी वह इंसान जन्नत में नहीं जाएगा। फ़क़ीर ने कि फिर भी नहीं जाएगा। उसने कहा देखिए यह कितनी ना-इंसाफ़ी है, क्या इस्लाम में अदल नहीं? फ़क़ीर ने कहा क्यों? कहने लगा एक आदमी गुनाहगार है, कलिमा पढ़ लेता है। उसको जन्नत में भेज रहे हैं लेकिन एक आदमी सारे अच्छे काम करता है सिर्फ़ कलिमा नहीं पढ़ता तो उसे जहन्नम में भेज रहे हैं। फ़क़ीर ने कहा भाई उसूल तो यही है। कहने लगा यह उसूले फ़ितरत के ख़िलाफ़ है। फ़क़ीर ने कहा देखो

भाई हम जो आज हिसाब-किताब पढ़ते हैं जिस पर हमारे साइंस की बुनियाद है। जिस पर हम कहते हैं कि फ़ितरत के क़ानून लागू हैं, उसकी मिसाल दी जाती है, मान लो कोई आदमी अगर एक का अदद लिख देता है और फिर उसके दाईं तरफ़ ज़ीरो, ज़ीरो, ज़ीरो लिखता चला जाता है तो हर ज़ीरो जो लगती चली जाएगी तो वह उसकी क़ीमत को बढ़ाती चली जाएगी, जितने ज़ीरो लगाते जाएंगे क़ीमत बढ़ती चली जाएगी। अगर यह आदमी एक लगाना भूल गया या नहीं लगाता तो और सिर्फ़ ज़ीरो ज़ीरो लगाता चला जाता है और कहता है देखो जी मैंने तो दस अरब ज़ीरो लिख दी है तो इसकी क़ीमत तो ज़ीरो ही है। कहा जाएगा कि इन तमाम ज़ीरो की क़ीमत तो इस एक की वजह से होनी चाहिए थी। जब आपने एक ही न लिखा तो अब चाहे जितनी मर्ज़ी ज़ीरो लिखते रहे उसकी कोई क़ीमत नहीं। इसी तरह जो एक अल्लाह को नहीं मानता तो उसके कामों की क़ीमत भी ज़ीरो होती है। जब तक एक '*अल्लाह वाहदहु ला शरीक*' को न माने। वह कहने लगा बात तो आपने ठीक की, मुझे बात समझ में आ गई। फ़क़ीर ने कहा अच्छा अब एक दूसरी मिसाल समझें कि जो इंसान कलिमा पढ़ लेता है तो वह गोया अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के ख़ालिके काएनात, मालिके काएनात और वाहदहु ला शरीक होने का इक़रार कर रहा होता है। यह ऐसा ही है जैसा कि वह किसी मुल्क के अंदर रहे और बादशाह की बादशाहत को तसलीम कर ले मगर गुनाहगार हो तो बादशाह थोड़ी बहुत सज़ाएं देता रहता है या उसको तंबीह करता रहता है मगर उसको अपना शहरी बनने का मौक़ा देता है। एक आदमी बादशाह का ग़द्दार हो और कहे कि बादशाह को

तसलीम ही नहीं करता। वह तो उसे फिर कभी भी अपने मुल्क में रहने की इजाज़त नहीं देगा। कहेगा कि इस आदमी का फ़ौरन सर काट देना चाहिए। बात ऐसी ही है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने हम लोगों को कलिमे की नेमत अता की है। अल्लाह का तसव्वुर बड़ी नेमत है।

यूरोपी लोगों के पागल होने की वजह

यूरोप में अगर किसी का कारोबार ठप हो जाता है तो कई ऐसी मिसालें भी है कि वह अपना हाथ चबा लेता है और कहता है कि मैंने ठीक फ़ैसले नहीं किए, मैंने यह नहीं किया, वह नहीं किया। बस इस तरह सारे के सारे नुक़सान को अपने सर ले लेते हैं। जब वह बोझ अपने सर पर लेते हैं तो दिमाग़ तो ख़राब होने ही हैं। आप हैरान होंगे कि न्युयार्क के एक शहर में सौ से ज़्यादा पागल ख़ानों की शाख़ें हैं और हमारे पूरे मुल्क में कितने पागल ख़ाने हैं हमें पता ही नहीं, क्यों? इसलिए कि यहाँ लोगों के पागल होने की दर बहुत कम है।

पागल होने की बुनियादी वजह

पागल होने की असली वजह यह है कि ज़िंदगी में जो परेशानी आती है उसे अपने ऊपर ले लेते हैं। मसलन बीवी तलाक़ लेकर चली गई, बीवी बेवफ़ाई कर गई। वह ख़ुद पागल हो गए। कारोबार ठप हुआ तो ऐसा ग़म सर पर सवार हुआ कि पागल हो गए।

अल्लाह तआला पर ईमान के फ़ायदे

एक बंदा अल्लाह पर यक़ीन रखता है, ईमान रखता है। अब उस पर कितनी ही बड़ी मुसीबत क्यों न आ जाए वह यही कहेगा जो अल्लाह को मंज़ूर। जब उसने कहा जो अल्लाह को मंज़ूर तो सारा ज़हनी बोझ ख़त्म हो गया। मिसाल के तौर पर एक आदमी के घर को आग लग जाए, एक आदमी के बीवी बच्चे जलकर मर जाएं, एक आदमी का एक्सीडेंट में सब कुछ तबाह हो जाए और उसके पास जाकर दूसरे लोग अफ़सोस करें तो वह कहेगा जो अल्लाह को मंज़ूर। जब उसने यह बोल कह दिए कि जो अल्लाह को मंज़ूर तो सारे का सारा मामला अल्लाह के सुपुर्द कर दिया। लिहाज़ा वह पागल होने से बच गया। अल्लाह तआला की ज़ात के तसव्वुर और यक़ीन का फ़ायदा यह है कि इंसान एक बेहतरीन ज़िंदगी गुज़ारता है। नफ़्स और शैतान से बचना उसके लिए आसान हो जाता है।

अच्छा सवाल

एक आदमी ने सवाल किया और उसने बड़ा पेचीदा सवाल किया। वह कम्युनिस्ट था। कहने लगा आप शैतान को क्यों मानते हैं?

अच्छा जवाब

अगर हम सोचें तो ज़ाहिर में इसका जवाब हमें समझ में नहीं आता कि हम शैतान को क्यों मानते हैं? क्या ज़रूरत है शैतान

को मानने की? फ़क़ीर ने उसको एक बात समझाई कि देखें भाई मान लो मैं चाँद पर चला जाऊँ और चाँद पर जाकर मुझे कहीं गुलक़ंद पड़ी नज़र आ जाए तो गुलक़ंद देखकर मैं एक नतीजा निकालूँगा कि यहाँ चाँद पर कहीं न कहीं गुल भी है और कहीं न कहीं क़ंद भी है और वह दोनों आपस में मिले तो गुलक़ंद बन गई। गुलक़ंद का वजूद गुल के वजूद और क़ंद के वजूद के ऊपर दलील है। जहाँ भी मजमूआ मौजूद होता है वह हिस्सों के मौजूद होने की दलील होता है। हिस्से मिले तो मजमुआ बना। इस तरह अगर पानी मौजूद है तो यह इस बात का सुबूत है कि यहाँ हाइड्रोजन और आक्सीजन मौजूद है। पानी मौजूद होना हाइड्रोजन और आक्सीजन के वजूद पर दलील है। इसी तरह गुलक़ंद का मौजूद होना इस बात की दलील है कि कहीं न कहीं कोई चीज़ है जो सरासर गुल है और कहीं न कहीं कोई चीज़ है जो सरासर क़ंद है और जब ये दोनों चीज़ें आपस में मिलीं तो गुलक़ंद बन गई। कहने लगे बात तो सही है। फ़क़ीर ने कहा अगर ग़ौर करें तो इंसान ख़ैर और शर का मजमूआ है। इंसान में ख़ैर का माद्दा भी है और शर का माद्दा भी है। यह अच्छाई और बुराई का मजमूआ है। अब यह मजमूआ इस बात की दलील है कि कहीं न कहीं कोई ऐसी चीज़ मौजूद है जो सरासर ख़ैर हो और कहीं न कहीं कोई ऐसी चीज़ मौजूद हो जो सरासर शर हो, जो सरासर ख़ैर हो उसको हम फ़रिश्ते कहते हैं और सरासर शर है उसको हम शैतान कहते हैं और जो दोनों का मजमूआ है उसे इंसान कहते हैं।

अपनी मर्ज़ी की ज़िंदगी

इंसान अपनी ज़िंदगी में देखता है कि पैसे से काम बन रहे हैं तो जाएज़ नाजाएज़ तरीक़े से पैसे समेटने शुरू कर देता है। यह माल की मुहब्बत बिल्कुल ऐसी ही है जैसे किसी को क्लोरोफ़ार्म सुघां दिया जाए। क्लोरोफ़ार्म सुघां देने से जैसे कोई आदमी मदहोश हो जाता है, यह माल की मुहब्बत इंसान को मदहोश कर देती है। फिर उसे कुछ समझ में नहीं आता। मालदार आदमी की आवाज़ के अंदर माल की झंकार शामिल होती है। फिर वह देखता है कि सही और ग़लत काम पैसे की वजह से हो जाते हैं। इसलिए वह माल हासिल करने के पीछे पड़ जाता है। उसे अपनी अना की तसकीन के लिए शोहरत की ज़रूरत होती है। वह ओहदे के पीछे पड़ जाता है। वह चाहता है कि उसके पास ऐसी कोठी हो कि उस जैसी कोठी किसी के पास न हो। बीवी ऐसी अच्छी मिले, पौशाक मेरी ऐसी हो, गाड़ी मेरी ऐसी होनी चाहिए। इंसान के अंदर इस तरह की चाहतें पैदा होती हैं।

ख़्वाहिशों वाली ज़िंदगी

अब देखना यह है कि क्या इंसान इन ख़्वाहिशों को पूरा अल्लाह के हुक्मों के मुताबिक़ करता है या फिर अल्लाह के हुक्मों को एक तरफ़ रखकर अपनी चाहतों के पीछे पड़ जाता है। आमतौर पर देखा गया है कि ये चाहते इंसान को बिल्कुल अंधा बना देती हैं, आँखों पर पट्टी बाँध देती हैं और इंसान इल्म के बावजूद गुमराह हो जाता है। अल्लाह तआला फ़रमाते हैं ﴿افرئيت

﴿من اتخذ الٰهه هواه﴾ क्या देखा आपने उसको जिसने अपनी ख़्वाहिशों को अपना माबूद बना लिया ﴿واضله الله على علم.﴾ और अल्लाह तआला ने इल्म के बावजूद उसको गुमराह कर दिया। इल्म के बावजूद गुमराह होने का मतलब है देखे एक आदमी सिगरेट पीता है मगर सिगरेट नुक़सानों से वाक़िफ़ होता है। वही बच्चों के बीच बैठकर नसीहत कर रहा होता है कि देखो भाई हम तो इस काम में पड़ गए हैं, मजबूर हैं, तुम न पीना। मालूम हुआ कि यह आदमी इसके नुक़सान को भी जानता है औरों को भी इससे मना कर रहा है बल्कि सिगरेट बनाने वाली कम्पनी ऊपर लिख भी देती है कि सिगरेट पीना सेहत के लिए मुज़िर है। पीने वाला भी जानता है कि वह सेहत के लिए मुज़िर है लेकिन उसके बावजूद उसके अंदर एक ऐसी तलब पैदा होती है कि वह फिर मजबूर होकर सिगरेट पीना शुरू कर देता है। इसे कहते हैं इल्म के बावजूद गुमराह हो जाना। इंसान कभी-कभी ख़्वाहिशों के हाथों ऐसा मजबूर हो जाता है वह जानता है कि यह बुरा काम है फिर भी कर गुज़रता है और यही एक अच्छे और बुरे इंसान में फ़र्क़ होता है।

उसूलों वाली ज़िंदगी

अच्छा इंसान जब देखता है कि यह बुरा काम है तो वह ऐसा क़दम नहीं उठाता चाहे उसे बुराई की दावत मिल रही हो और यह समझता हो कि क़दम उठाना मेरे लिए अच्छा है चाहे उसके अंदर सुस्ती हो फिर भी अच्छा क़दम उठाता हो। इसलिए एक समझदार आदमी अपने अंदर सब्र व ज़ब्त पैदा करता है। अगर

कोई आदमी उसूल पैदा करना चाहता है तो सबसे पहले यह काम उसकी ज़ात से शुरू होता है। वह अपने अंदर उसूल पैदा करे। उसूल की पाबंदी एक ऐसी चीज़ है कि मग़रिब (पश्चिमी) की दुनिया इसके पीछे पड़ रही है कि इससे ज़िंदगी अच्छी गुज़रती है।

अमरीकी ग़ैर-मुस्लिम का वाक़िआ

मुझे एक साहब मिले। कहने लगे मैं रोज़े रखता हूँ। वह अमरीकन थे। मैंने कहा वह क्यों तुम तो ग़ैर-मुस्लिम हो, तुम कैसे रोज़े रखते हो? कहने लगा कि साल में कुछ वक़्त इंसान पर ऐसा गुज़रना चाहिए कि वह डायटिंग करे। जब कुछ अर्से के लिए हम डाइजेस्टिव सिस्टम को फ़ारिग़ रखते हैं तो जिस्म के अंदर कुछ रतूबतें ऐसी होती हैं जो कि ख़त्म हो जाती हैं। बहुत सी पेचीदा क़िस्म की बीमारियाँ ख़त्म हो जाती हैं। भूखा रहने से हाज़मे का निज़ाम पहले से ज़्यादा मज़बूत हो जाता है और बेहतर तरीक़े से काम करने लगता है। मैंने और मेरी बीवी ने फ़ैसला किया है कि हम साल में एक महीना इस तरह रोज़े रखकर डायटिंग करेंगे। मैंने कहा कि यह सुन्नत है कि हर महीने अय्यामे बीज़ (महीने के बीच की तारीख़) के तीन रोज़े रखें ख़ासतौर पर वे लोग जो ग़ैर शादी-शुदा हों वह ज़्यादा रोज़े रखें। यह भूखा रहना इंसान के अंदर एक उसूल की पाबंदी और सब्र व ज़ब्त पैदा करता है। कुँवारे आदमी को इसकी ज़्यादा ताकीद की गई है ताकि उसकी शहवानी क़ुव्वत मुनासिब रह सके। आज के ग़ैर-मुस्लिम इसके अंदर माद्दी फ़ायदे देखकर इसको अपनाने की कोशिश कर रहे

हैं। फ़क़ीर ने सुन्नते नबवी में सौ से ज़्यादा ऐसी मिसालें सुन्नत में देखी हैं कि जिनको ठीक उसी तरह साइंस की दुनिया तसलीम करती है।

सुन्नत और साइंस के इख़्तिलाफ़ की बुनियादी वजह

सुन्नत को जहाँ साइंस नहीं मान रही है उसकी बुनियादी वजह यह है कि रिसर्च अभी पूरी नहीं हुई। जब भी सांइस मंज़िल पर पहुँच गई तो इसने तसलीम कर लेना है कि सुन्नत में ही फ़ायदा है।

सुन्नते नबवी का चैलेंज

हम अल्लाह के बहुत शुक्र गुज़ार हैं कि उसने हमें ज़िंदगी गुज़ारने का एक ऐसा तरीक़ा समझा दिया है जो दुनिया में गुज़ारने का बेहतरीन तरीक़ा है। इससे बेहतर तरीक़ा और कोई नहीं हो सकता। फ़क़ीर का यह दावा है कि जिस तरीक़े से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खाना खाया उससे बेहतर खाना खाने का दुनिया में कोई तरीक़ा नहीं हो सकता। जिस तरीक़े से पानी पिया उससे बेहतर तरीक़ा पानी पीने को और कोई नहीं हो सकता। जिस तरह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोए उससे बेहतर तरीक़ा सोने का दुनिया में कोई और नहीं हो सकता। इसी तरही तमाम तरीक़ो समझा जा सकता है। यह एक दावा है। फ़क़ीर ने इस दावे को मग़रिबी मुल्कों के बड़े पढ़े लिखे लोगों के सामने पेश किया है कि मेरे सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक सुन्नत बता दो जिसमें हिकमत न हो।

खाने की सुन्नतें और जदीद साइंस

खाना खाने में रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतें कितनी प्यारी और अच्छी हैं। पहली बात कि आप जब भी खाना खाते थे अपने पेट के कुछ हिस्से को ख़ाली रखते थे। मतलब एक तो खाना इतना खाया कि डकार न आएं। दूसरी यह कि थोड़ी सी भूख अभी बाक़ी है तो खाना छोड़ दे। आज साइंस की दुनिया कहती है कि खजूर इंसान के जिस्म में जाकर इतनी कैलोरी पैदा कर देती है कि वह आदमी भूख की वजह से तीन दिन तक नहीं मर सकता। सोचिए हम जो इतनी इतनी ग़िज़ा खाते है इसका दस फ़ीसद हमारे जिस्म का हिस्सा बनता है और नव्वे फ़ीसद ऐसा होता है जो हम क्रश करके बाहर निकाल देते हैं यानी हम आदत के लिहाज़ से पेट तो भर रहे होते हैं लेकिन जिस्म इसको क्रश करके बाहर निकाल देता है। पूरी ग़िज़ा का दसवां हिस्सा हमारे जिस्म का हिस्सा बनता है। तो हमने अपने मेदे को ख़ूब भर लिया जिसकी वजह से कई दफ़ा फ़लाँ बीमारी, गैस की तकलीफ़, पेट का बढ़ना ये सारी बीमारियाँ पैदा होती हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब खाते थे तो पहला उसूल कि जितनी भूख होती थी उससे ज़रा कम खाते थे, दूसरी बात एक वक़्त में एक खाना खाते थे। दो खानों को मिलाकर नहीं खाते थे। हम तो एक दस्तरख़्वान पर चार पाँच खानों को मिलाकर खाते हैं। मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि जितनी तरी वाली ग़िज़ाएं हमने तैयार की हुई होती हैं आप उनमें से थोड़ा-थोड़ा लेकर एक बर्तन में डाल दे तो देखें क्या बनता है। उसको देखने को भी दिल नहीं चाहेगा।

पीने की सुन्नतें और जदीद सांइस

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पीने की सुन्नत क्या है? आप मुस्तक़िल खाना खाते थे और मुस्तक़िल पानी पीते थे। मसलन मान लें आपने खाना खाया है तो मुस्तक़िल अलग से पानी पीते थे। आज की साइंस कहती है कि मुस्तक़िल पानी पिए तो असरात जिस्म पर पड़ते हैं और अगर खाने के साथ मिलाकर पानी पिएं तो उसके असरात जिस्म पर मुख़्तलिफ़ पड़ते हैं। देखिए सिर्फ़ खाने पीने में हुज़ूर की सुन्नतें कितनी अच्छी हैं।

सिरका और जदीद साइंस

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खाने में सिरका इस्तेमाल करते थे। आज साइंस की दुनिया कहती है कि सिरके के इस्तेमाल करने से इंसान का हाज़मा बेहतर हो जाता है। हैरान होते हैं कि एक-एक सुन्नत में किस क़दर फ़ायदे हैं।

लुक़्मा ज़्यादा चबाना और जदीद साइंस

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब खाना खाते थे तो अच्छी तरह चबा चबाकर खाते थे। आमतौर पर देखा गया है कि हम जिस लुक़्मे को खाते हैं तो उसे चार पाँच दफ़ा चबाकर निगल जाते हैं। अगर लुक़्मे को इससे भी ज़्यादा चबा लिया जाए तो मेदे का बोझ कम हो जाता है। यह कितनी समझ में आने वाली बात है कि एक आदमी लुक़्मे को मुँह में अच्छी तरह चबा लेगा तो मेदे को काम कम करना पड़ेगा।

कम चबाना और डाक्टरों की तहक़ीक़

कम चबाने वाले लोगों के दाँत आमतौर पर ज़्यादा ख़राब होते हैं। इसकी वजह यह है कि दाँतों की वरज़िश ज़रूरी है। इसलिए अगर कोई एक तरफ़ से खाने का आदी हो तो उसके दूसरी तरफ़ के दाँत ख़राब हो जाते हैं। इसलिए डाक्टर लोग कहते हैं कि कभी एक तरफ़ से चबाओ कभी दूसरी तरफ़ से चबाकर खाओ ताकि तुम्हारे सारे दाँतो की मश्क़ होती रहे। अब बताइए एक सुन्नत पर अमल रने के कितने फ़ायदे समझ में आ रहे हैं।

सोने की सुन्नतें और जदीद साइंस

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दाएं तरफ़ सोया करते थे। आज साइंस की दुनिया कहती है कि बायीं करवट सोने से बहुत गहरी नींद और डरावने ख़्वाब आते हैं जब कि दायीं करवट सोने वाले को गहरी नींद तो आती है मगर नींद जल्द पूरी हो जाती है यानी वह जल्दी उठ भी जाता है और तबियत तर व ताज़ा हो जाती है।

डरावने ख़्वाब क्यों आते हैं

एक नई तहक़ीक़ के बारे में पढ़ रहा था कि बायीं तरफ़ सोने वालों को डरावने ख़्वाब ज़्यादा आते हैं। और इसकी दलील यह दी हुई थी कि दिल बायीं तरफ़ है और इंसान की कुछ आँते दिल के ऊपर पड़ती हैं और दिल पर फ़िज़िकल दबाव पड़ता है और जब यह दबाव दिल के ऊपर होता है तो फिर इंसान को डरावने

ख़्वाब नज़र आते हैं। जैसे किसी ने दिल को पकड़ा हुआ होता है और जकड़ा हुआ होता है। देखिए ये दायीं तरफ़ सोने की हिकमतें थीं। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दायीं तरफ़ सोया करते थे।

वुज़ू की हिकमतें और मोतिया बिंद का ईलाज

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब सुबह उठते तो वुज़ू किया करते थे। आज साइंस की दुनिया कहती है कि आँखों के मोतिया बिंद का बुनियादी ईलाज यह है कि इंसान सुबह सुबह आँखों के अंदर पानी के छींटे मारे। जो आदमी तहज्जुद के लिए उठेगा और वुज़ू करेगा तो आँख पर भी अच्छी तरह छींटे लगा ले। मोतिया बिंद का ईलाज हो गया, सुब्हानअल्लाह।

कान और डिश ऐन्टीना

अल्लाह तआला ने हमारे कान का डिज़ाइन ऐसे बनाया है जैसे कि डिश ऐन्टीना हो। लिहाज़ा कान की तहक़ीक़ पर एक मुस्तशरिक़ साइंसदान सोचता रहा, सोचता रहा। आख़िरकार उसने अपनी किताब में लिखा कि ऐ कान के पैदा करने वाले तू ख़ुद कैसे बहरा हो सकता है यानी जिसने कान को पैदा कर दिया सुनने के लिए जो इतना बेहतरीन आला है तो वह ख़ुद कैसे बहरा हो सकता है। वह ख़ुद भी सुनने वाला होगा।

वाशिंगटन का डाक्टर नमाज़ का क़ायल

एक दफ़ा वाशिंगटन में एक डाक्टर साहब से मुलाक़ात हुई।

वह कहता था कि मेरा दिल करता है कि सारे मुल्क में नमाज़ लागू कर दूँ। फ़कीर ने कहा क्यों? कहने लगा कि इसके अंदर इतनी हिकमतें हैं कि कोई हद नहीं। वह जिस्द का स्पेशलिस्ट था। कहने लगा इसकी हिकमत आप तो (इंजीनियर हैं) समझ लेंगे। फ़कीर ने कहा अच्छा जी बताइए। कहने लगा इंसान के जिस्म को माद्दी नज़र से देखा जाए तो इंसान का दिल पम्म की तरह है। इसका इनपुट भी है आउटपुट भी है। सारे जिस्म में ताज़ा ख़ून जा रहा है और दूसरा वापस आ रहा होता है। उसने कहा जब इंसान बैठा होता है या खड़ा होता है तो जिस्म के जो हिस्से नीचे होते हैं उनमें प्रेशर निस्बतन ज़्यादा होता है और जो हिस्से ऊपर होते हैं उनमें प्रेशर किसी क़दर कम होता है। मसलन तीन मंज़िला बिल्डिंग हो और नीचे पम्म हो और नीचे पानी ज़्यादा होगा और दूसरी मंज़िल पर भी कुछ पानी जाएगा जबकि तीसरी मंज़िल पर बिल्कुल नहीं पहुँचेगा। वही पम्प अगर नीचे पूरा पानी दे रहा है, उससे ऊपर वाली मंज़िल में कुछ पानी दे रहा है और सबसे ऊपर वाली मंज़िल में बिल्कुल पानी नहीं जा रहा है। इस मिसाल को अगर आप सामने रखते हुए सोचें तो इंसान का दिल ख़ून को पम्प कर रहा होता है और यह ख़ून नीचे के हिस्से में तो पहुँच रहा होता है लेकिन ऊपर के आज़ा में उतना नहीं पहुँच रहा होता। जब कोई ऐसी सूरत आती है कि इंसान का सर नीचे होता है और दिल ऊपर होता है तो ख़ून सर के अंदर भी अच्छी तरह पहुँचता है। मसलन जब इंसान नमाज़ के सज्दे में जाता है तो महसूस होता है गोया पूरे चेहरे में ख़ून भर गया। आदमी सज्दा थोड़ा लम्बा करे तो महसूस होता है कि चेहरे की जो बारीक

बारीक शीराएं हैं उन में भी ख़ून पहुँच गया। तो वह कहने लगा कि आमतौर पर इंसान बैठा होता है या खड़ा होता है या लेटा होता है। बैठे खड़े और लेटे में इंसान का दिल नीचे ही होता हे और सर ऊपर होता है। एक ही ऐसी सूरत है कि नमाज़ में जब इंसान सज्दे में जाता है तो उसका दिल ऊपर होता है और सर नीचे होता है। लिहाज़ा ख़ून अच्छी तरह चेहरे की जिल्द में पहुँच जाता है।

दाइमी ख़ूबसूरती का राज़

नमाज़ पढने वाले आदमी का चेहरे पर ताज़गी रहती है क्योंकि नमाज़ और सज्दे की वजह से उसकी तमाम शीराओं में ख़ून पहुँचता रहता है और जो नमाज़ नहीं पढ़ते उनके चेहरों पर एक बे रौनक़ी सी छाई रहती है। इसीलिए हदीस में कहा गया है जो नमाज़ पढ़ता है उसके चेहरे पर नूर होता है।

औरतों को नमाज़ पढ़ने का मश्वरा

वह डाक्टर कहने लगा कि यक़ीन जानें औरतों को अगर पता चल जाए नमाज़ में लम्बे सज्दे की वजह से चेहरा तर व ताज़ा और ख़ूबसूरत हो जाता है तो वे सज्दे से सर ही न उठाएं।

मिसवाक की सुन्नत

आज की साइंसी तहक़ीक़ यह बताती है कि इंसान जो चीज़ें खाता है तो मुँह के अंदर प्लाज़्मा पैदा हो जाता है। अब यह प्लाज़्मा सिर्फ़ कुल्ली करने से साफ़ नहीं होता। मिसवाक करना

ज़रूरी है। सोने की हालत में दाँत ज़्यादा ख़राब होते हैं। वजह यह कि जब इंसान सो जाता है तो उसका मुँह बिल्कुल बंद होता है और बंद मुँह के अंदर जरासीम के लिए तबाही फैलाना बहुत आसान होता है। दिन के वक़्त में कभी आदमी बोल रहा होता है, ज़बान चल रही होती है, कभी खा रहा होता है, कभी पी रहा होता है। दिन के वक़्त हरकत करने की वजह से प्लाज़्मे को काम करने का मौक़ा नहीं मिलता और रात के वक़्त जब मुँह बंद होता है तो काम करने का मौक़ा मिल जाता है। इसलिए रात के वक़्त दाँत ज़्यादा ख़राब होते हैं। सुबह को दाँत साफ़ करें या न करें मर्ज़ी है लेकिन रात को सोते वक़्त ज़रूर करन चाहिएं।

नबी अलैहिस्सलातु वस्सलाम की सुन्नतें और दाँत

अल्लाह का शुक्र है कि हमारे नबी की सुन्नत है कि रात के वक़्त वुज़ू के साथ सोते थे और वुज़ू बग़ैर मिसवाक के नहीं किया करते थे। जब भी इंसान खाना खाएगा और खाना खाकर वुज़ू करेगा, मिसवाक करेगा अल्लाह का शुक्र है नुक़सान से बचेगा बल्कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खाने से पहले हाथ धोते थे और खाने के बाद कुल्ली करते थे और आज लोग खाना खाकर इसी तरह उठकर चले जाते हैं हालाँकि उनके मुँह में मीठी चीज़ खाने के असरात काफ़ी देर तक रहते हैं और अगर उसी वक़्त कुल्ली करने की आदत पड़ जाए तो कितना फ़ायदा हो जाए और फिर दिन में पाँच बार वुज़ू करता है तो फिर अलैहिदा मुँह साफ़ रहता है।

फ्रांस के सर्जन का वाक़िआ

तबलीग़ी जमाअत के एक दोस्त फ्रांस गए। वह फ़रमाते हैं कि वहाँ मैं वुज़ू कर रहा था तो एक आदमी खड़ा ग़ौर से देख रहा है। मैंने महसूस तो किया लेकिन ख़ैर मैं वुज़ू करता रहा। जब मैंने वुज़ू पूरी की तो उसने मुझे बुलाकर पूछा कि आप कौन हैं? मैंने कहा कि मुसलमान हूँ। कहाँ से आए हो? मैंने कहा पाकिस्तान से। कहने लगा कि पाकिस्तान में कितने पागलख़ाने हैं? बड़ा अजीब सा सवाल था मैंने कहा दो हैं या चार, मुझे तो पता नहीं। वह कहने लगा, तुम नहीं जानते? मैंने कहा मैं तो नहीं जानता। कहने लगा यह अभी आपने क्या किया? मैंने कहा वुज़ू किया। कहने लगा रोज़ाना करते हो? मैंने कहा हाँ बल्कि दिन रात में पाँच दफ़ा करते हैं।

वह कहने लगा, Oh I see! मैंने जब उससे पूछा भाई आपका क्या मतलब है? वह कहने लगा मैं यहाँ पागल लोगों के हस्पताल में सर्जन हूँ। मैं तहक़ीक़ करता रहता हूँ कि लोग पागल क्यों होते हैं। मेरी तहक़ीक़ यह है कि इंसान के दिमाग़ के सिगनल पूरे जिस्म के अंदर जाते हैं तो हमारे जिस्म के हिस्से काम करते हैं। इस दिमाग़ से कुछ बारीक-बारीक रगें हमारी गर्दन की पुश्त से पूरे जिस्म को जा रही हैं। मैंने रिसर्च की है कि अगर बाल बहुत बढ़ा दिए जाएं और इस गर्दन के पिछले हिस्से को बहुत ख़ुश्क रखा जाए तो रगों के अंदर कभी-कभी ख़ुश्की पैदा हो जाती है। रगें खिंचती हैं तो कई दफ़ा ऐसा भी होता है कि इंसान का दिमाग़ काम करना छोड़ देता है। इसलिए डाक्टरों ने सोचा कि इस जगह

को दिन में चार दफ़ा तर करना चाहिए। मैंने आपको देखा कि आप ने हाथ मुँह तो धोया ही लेकिन यहाँ गर्दन के पिछली तरफ़ भी आपने कुछ किया। इसलिए आप लोग कैसे पागल हो सकते हैं।

सोचने की बात

अब सोचिए कि एक डाक्टर की सारी उम्र की रिसर्च एक मुस्तहब पर आकर ख़त्म हो जाती है। अगर मुस्तहब की हिकमतें इतनी हैं तो फिर फ़राईज़ व वाजिबात और सुन्नतों की क्या क्या हिकमतें होंगी।

ज़ाती वाक़िआ और सुन्नत के फ़ायदे

मेरी एक दफ़ा मीटिगं थी जिसमें अमरीकन कम्पनी के तीन डायरेक्टर और जर्नल मैनेजर वग़ैरह थे। हम एक मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे। फ़क़ीर ने देखा कि वे अमरीकन लोग भी हाथ से खाना खा रहे हैं हालाँकि छुरी-काँटे एक तरफ़ रखे हुए थे। फ़क़ीर हैरान हुआ और पूछा कि आपने यह छुरी-काँटे इस्तेमाल नहीं किए? तो उन्होंने कहा हमें हाथों से खाना खाना पसन्द है। आज पहली बार चिट्टी चमड़ी वालों को देखा कि यह छुरी कांटे को छोड़कर इस तरह उंगलियों से खा रहे हैं। जब हम खाना खा चुके तो उन्होंने बारी-बारी मुँह में लेकर सारी उंगलियों को साफ़ किया। फ़क़ीर ने उनसे सवाल किया कि आपने यह क्यों किया? तो वे कहने लगे कि यह नई तहक़ीक़ है कि जब इंसान उंगलियों से खाना खाता है तो उनके मसाम (खाल के सुराख़) से प्लाज़्मा

निकलता है जिसको माइक्रो-स्कोप की आँख से देखा जा सकता है और यह प्लाज़्मा खाने के साथ इंसान के मुँह में जाता है और हाज़मे में काम आता है। कहने लगे कि अब हम छुरी-कांटों के बजाए उंगलियों से खाना पसन्द करते हैं।

कामयाब ज़िंदगी

दुनिया जहाँ भी जाएगी उन्हें एक न एक दिन मेरे सरदार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरे-दौलत पर आना होगा। इस दुनिया को एक न एक दिन परेशान होकर दरे-मुस्तफ़ा पर आना पड़ेगा। यह हमारी ख़ुशनसीबी है कि अल्लाह तआला ने हमें मुसलमान होने की और सुन्नत पर अमल करने की नेमत अता फ़रमाई। अल्लाह तआला हम सब को आगे बढ़ने और पूरी ज़िंदगी सुन्नत के मुताबिक़ गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दे। (अमीन)

❋ ❋ ❋